Presented by: https://jafrilibrary.com

तारीख़े करबला

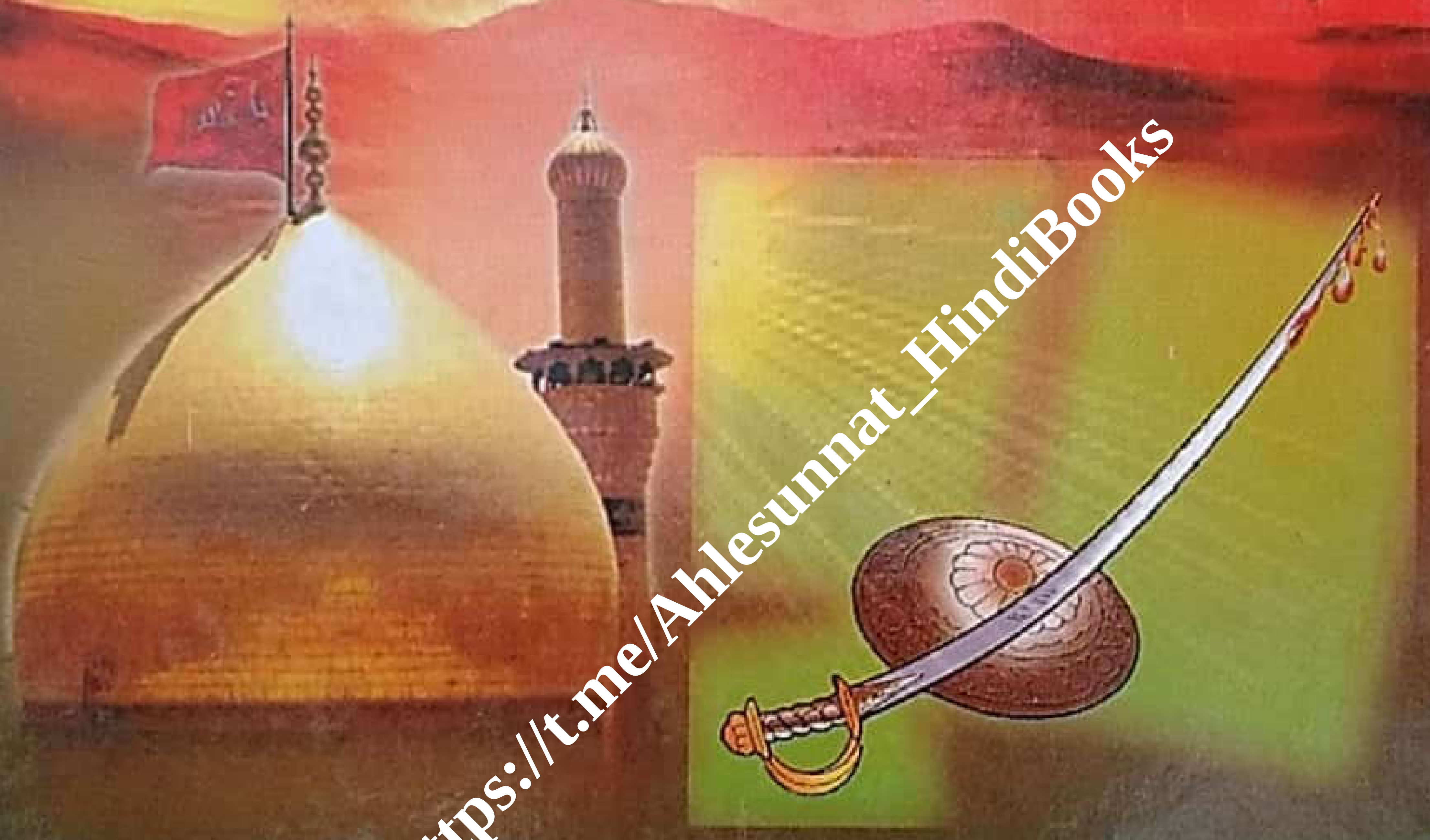

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

मौलाना अमीनुल क़ादरी

रज़वी किताब घर

Bilal

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़ुहूर अहमद क़रशी औरंगाबादी की रुसवाए ज़माना किताब
'आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें'
का
मुफ़स्सल, मुदल्लल और मुस्कित जवाब

तारीख़े करबला

लेखक

मौलाना मुहम्मद अमीनुल-क़ादरी रज़वी

प्रकाशक
—रज़वी किताब घर—
425, उर्दू मार्केट, मटिया महल, दिल्ली-110006
Phone : 011 - 23264524

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

© रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
ISBN 81-89201-15-8

(नोट : नाशिर के बग़ैर इजाज़त किसी भी सफ़्हा का अक्स लेना क़ानूनन जुर्म है।)

नाम किताब : **तारीख़े करबला**
बजवाब 'आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें'

विषय : शहादते इमाम आली मक़ाम और इब्ने यज़ीद का जवाब

लेखक : मुहम्मद अमीनुल–क़ादरी रज़वी

पहला एडीशन : मुहर्रम सन् 1412 हि. / जुलाई सन् 1991 ई.

दूसरा एडीशन : मुहर्रम सन् 1429 हि. / जनवरी सन् 2008 ई.

बइहतमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

नज़रे सानी : मुहम्मद ज़फ़रुद्दीन बरकाती

प्रूफ़–रीडिंग : जमील अख़्तर ख़ाँ

कम्पोज़िंग : अबरार अहमद शाकिर

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली–6

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली–6

हिन्दी एडीशन : पहली बार **2008**

तादाद : 1100

सफ़्हात : 432

क़ीमत

रज़वी किताब घर
425, मटिया महल,
जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006
फ़ोन: नं० : 23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पता:
रज़वी किताब घर
114, ग़ैबी नगर, भिवंडी,
ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोन: नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर रोड,
भिवंडी (महाराष्ट्र)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुसैनु मिन्नी व अना मिन हुसैनिन
अहब्बल्लाहु मन अहब्बा हुसैना।
(तिमिर्ज़ी जिल्द दोम)

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन, दीं-पनाह अस्त हुसैन
सर दाद, न दाद दस्त, दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला-इलाहा अस्त हुसैन
(हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अ़लैहिर्रहमः)

क्या बात रज़ा इस चमनिस्ताने करम की
ज़ुहरा है कली जिसमें, हुसैन और हसन फूल
(इमाम अहमद रज़ा क़ादरी अलैहिर्रहमा)

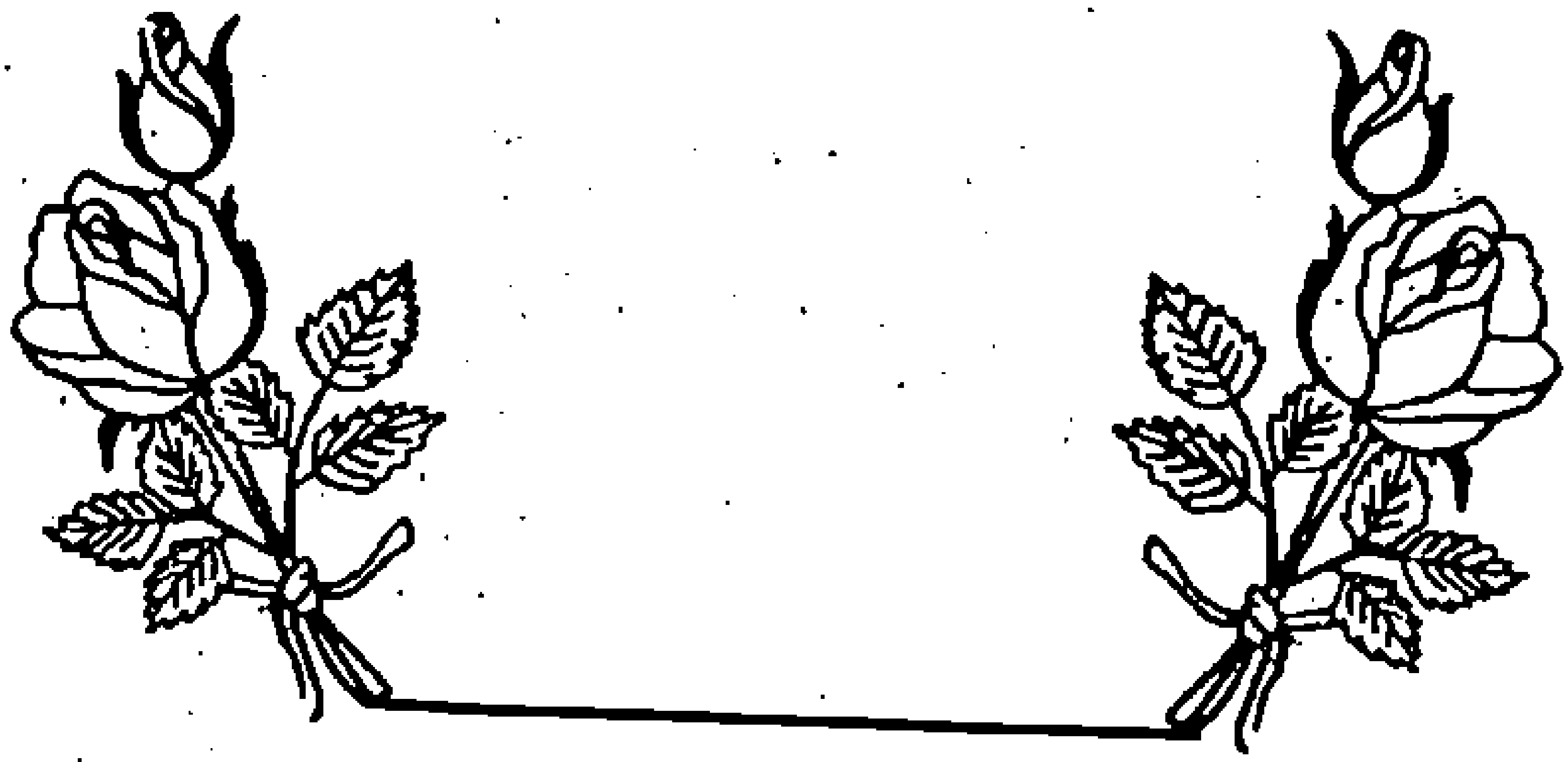

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शर्फ़े इंतेसाब

मैं अपनी इस काविश को बसद ख़ुलूस व मुहब्बत फ़रज़ंदे रसूल जिगर गोशए बतूल, ताजदारे करबला हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और जुमला शुरका व शुहदाए करबला की बारगाह में बतवस्सुते सैय्यदी व मुर्शिदी हुजूर मुफ़्ती आज़म हज़रत अल्लामा अलहाज मुस्तफ़ा रज़ा खान अलैहिर्रहमा, पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अलहाज मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खान साहब क़िबला अज़हरी दामत बर्कातुहुमुल आलिया और पीरे तरीक़त हज़रत सैय्यद मुहियुद्दीन सलीमुल्लाह शाह अलहम्दानी अलक़ादरी अर्रिफ़ाई मद् द ज़िल्लहुल आलि अल–मारूफ़ (हज़रत सलीम बाबा साहब) सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया (सूरत) पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूं।

गर कुबूल उफ़तद ज़हे इज़ व शरफ़
सगे कूच-ए- अह्ल-बैते नुबुव्वत

मुहम्मद अमीनुलक़ादरी अर्रज़वी माले गांवी
हज़रत मलबारी साहब का टेकरा
सूरत (गुजरात)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तक़रीज़े जलील

हज़रत मौलाना
मुहम्मद नसीम रज़ा रज़वी सलामी

सदर मुदर्रिस व मुफ़्ती-ए-दारुल-ऊलूम, ख़्वाजा दाना, सूरत, गुजरात

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सैयदिल–मुर्सलीन व अ़ला आलिही व सहबिही अजमईन।

जेरे नज़र किताब "हक़ीक़ते तारीख़े करबला" हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीनुल–क़ादरी साहब की अह्ले–बैते अतहार से मुहब्बत व अक़ीदत का एक महकता हुआ गुलदस्ता है जिसमें मौसूफ़ ने अह्ले–बैत की फ़ज़ीलत के तअ़ल्लुक़ से बहुत–सी किताबों का ख़ुलासा और निचोड़ रख दिया है। साथ ही हज़राते खुलफ़ाए राशिदीन नीज़ हज़रत अमीर मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन की मुख़्तसर सीरत भी पेश की है। चूंकि अह्ले सुन्नत व जमाअ़त ही वस्ते उम्मत का मज़हरे अतम हैं। लिहाज़ा उन हज़रात का तज़किरा भी अह्ले–बैत के साथ करते हैं। और किताब चूंकि एक यज़ीद परस्त ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी की किताब **"आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें"** का रद्दे अमल है; यही सबब है कि मौलाना की अक़ीदत को ठेस पहुंची और उन्होंने सैयदुश्शुहदा की हक़ीक़त का गुलदस्ता सजा कर अक़ीदतमन्दों को यह दर्स दिया है कि अह्ले–बैते अतहार के दामने करम से वाबस्तगी ही जन्नत का रास्ता है। किताब '**आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें**' क्या है? अह्ले–बैत की दुशमनी और यज़ीद पलीद को ख़लीफ़–ए–बरहक़ अमीरुल–मोमिनीन साबित करने की एक मज़मूम कोशिश है। जिसमें तहक़ीक़ के नाम पर इंतिहाई ग़ैर मुतहक़्क़िक़ बातें, कमज़ोर रिवायात की भरमार है। मौलाना अमीन साहब ने किताबे मज़कूर के तअ़ल्लुक़ से जो सवालात क़ायम किए हैं और फिर उनके जवाबात तहरीर किए हैं वह इंतिहाई मुदल्लल और मुस्कित हैं। नाज़िरीन उन जवाबों को इंतिहाई तवज्जह से पढ़ें, खुसूसन हदीस का जवाब जो इंतिहाई अ़र्क़रेज़ी के साथ मुस्तनद और मोतबर हवालों से गुज़ैयन किया गया है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मौला तआला से दुआ है कि वह अपने महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलै वसल्लम के तुफ़ैल किताब को मक़बूले आम फ़रमाए और हम सब अहले–बैते अतहार की मुहब्बत में ज़िन्दा रखे और उसी पर ख़ात्मा फ़रमाए! आमीन।

मुहम्मद नसीम रज़ा रज़वी सलामी

सदरुल-मुदर्रिसीन दारुल-ऊलूम ख़्वाजा दाना,
सूरत, गुजरात
7 ज़ीक़ादः सन् 1411 हि०

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

उनवानात सफ़ा

सबबे तालीफ़,
नाते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम.
मनक़बत
अह्ले–बैते नुबुव्वत पाक हैं
आयते ततहीर का शाने नुज़ूल
रिज्स क्या है ?
पन्जतन पाक और आयते मुबाहला
शाने नुज़ूल और तफ़्सीली ब्यान
आयते मुबाहला में **अब्नाउना** से मुराद
मुहब्बते अह्ले–बैत और कुरआने हकीम
आयते मुवद्दत में **कुरबा** से मुराद
सख़ावते अह्ले–बैत और क़ुरआने मजीद
अह्ले–बैत पर दुरूद और क़ुरआने मजीद
अह्ले–बैते अतहार और अहादीसे करीमा
कुरआन मजीद और अह्ले बैत का दामन थामने वाला
अह्ले–बैत की फ़ज़ीलत पर चालीस हदीसें
अह्ले–बैत और सहाबए किराम व सुलहाए उम्मत
ताज़ीमे अह्ले–बैत के चन्द वाकिआ़त
लफ़्ज़े 'सैयद' की तशरीह और फ़ज़ाइल
फ़ज़ाइले सहाबा क़ुरआन व हदीस की रौशनी में
सहाबा-ए-किराम और कुरआने हकीम
सहाबा-ए-किराम और फरमाने नब्वी
फ़ज़ाइले ख़ुलफ़ाए राशिदीन
ख़लीफ़ाए अव्वल हज़रत अबू–बकर सिद्दीक़
हज़रत सिद्दीक़ अकबर और आयाते क़ुरआन
हज़रत सिद्दीक़ अकबर और अहादीसे करीमा
हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर क़ुरआनी आयात
हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर अहादीसे करीमा
हज़रत सिद्दीक़ अकबर की ख़िलाफ़त पर इजमाए सहाबा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनवानात सफ़ा
सिद्दीक़ व उमर की ख़िलाफ़त का इनकार करने वाले
ख़लीफ़-ए-दोम : हज़रत उमर फ़ारूक़
हज़रत फ़ारूके आज़म और क़ुरआने हकीम
हज़रत फ़ारूके आज़म और अहादीसे करीमा
हज़रत फ़ारूके आज़म और सहाबा व सुलहाए उम्मत
हज़रत फ़ारूके आज़म की ख़िलाफ़त
गुस्ताख़ाने सिद्दीक़ व उमर की सज़ाएं
ख़लीफ़-ए-सोम : हज़रत उस्मान ग़नी
हज़रत उस्मान ग़नी और क़ुरआने हकीम
हज़रत उस्मान ग़नी और अहादीसे करीमा
हज़रत उस्मान ग़नी और सहाबा व सुलहाए उम्मत
हज़रत उस्मान ग़नी की ख़िलाफ़त
ख़लीफ़-ए-चहारुम – हज़रत अ़ली मुर्तज़ा
हज़रत अ़ली और क़ुरआने हकीम
हज़रत अली और अहादीसे करीमा
हज़रत अली और सहाबा व सुलहाए उम्मत
खुलफ़ाए सलासा की ख़िलाफ़त और हज़रत अली
हज़रत अली की ख़िलाफ़त
फ़ज़ायल ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा
हज़रत फ़ातिमा का निकाह
हज़रत फ़ातिमा और उमूरे ख़ानादारी
हज़रत फ़ातिमा और इबादात
हज़रत फ़ातिमा और अहादीसे करीमा
हज़रत फ़ातिमा का विसाल
फ़ज़ायल सैयदना इमाम हसन
हज़रत इमाम हसन और अह्दे नब्वी
हज़रत इमाम हसन और खुलफ़ाए राशिदीन
हज़रत इमाम हसन और अहादीसे करीमा
हज़रत इमाम हसन की ख़िलाफ़त से दस्तबर्दारी
हज़रत इमाम हसन की करामात
हज़रत इमाम हसन की कसरते इज़्दवाज
हज़रत इमाम हसन और ज़हर–ख़ुरानी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनवानात सफ़ा

फज़ायल हज़रत अमीर मुआविया
हज़रत अमीर मुआविया की अलालत और वफ़ात
फज़ायल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन
हसनैन करीमैन और अहादीसे करीमा
शहादते इमाम हुसैन की शोहरत
यज़ीद पलीद का तज़किरा
यज़ीद : अहादीस और अक़वाले अइम्मा की रौशनी में
यज़ीद पलीद की तख़्तनशीनी
हज़रत इमाम हुसैन की मदीने से रवानगी
अह्ले कूफ़ा के ख़ुतूत और वुफ़ूद की आमद
इमाम मुस्लिम की कूफ़ा रवानगी
हज़रत इमाम मुस्लिम की तलाश और इब्ने ज़्याद का जासूस
हज़रत इमाम मुस्लिम और इब्ने ज़्याद
हज़रत इमाम मुस्लिम की शहादत
फ़रज़न्दाने इमाम मुस्लिम की शहादत
इमाम हुसैन की मक्का से कूफ़ा रवानगी
करबला जाने वाले अह्ले-बैत की तादाद
क़ासिदे इमाम हज़रत क़ैस की शहादत
शहादते इमाम मुस्लिम की ख़बर
मुहर्रम 61 हिजरी : ख़ूनी साल का आग़ाज़
इमाम हुसैन का मक़ामे बैज़ा में ख़ुतबा
इमाम हुसैन का नैनवा और करबला में क़याम
इमाम हुसैन और असहाब पर पानी बन्द किया जाना
इमाम हुसैन और अमर बिन सअ्द की मुलाक़ात
दसवीं मुहर्रम के दिलदोज़ वाकिआत
मैदाने करबला में करामाते इमाम हुसैन
इमाम के साथियों की शुजाअत व शहादत
हज़रत इमाम हुसैन की शहादत
हुज़ूर रहमते आलम को सदमा
वाक़िआते बाद शहादत
अह्ले-बैत की करबला से कूफ़ा रवानगी
सरे अनवर दरबारे इब्ने ज़्याद में
सरे इमाम की कूफ़ा में तशहीर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सरे अनवर दरबारे यज़ीद में
अह्ले–बैत की मदीना मुनव्वरा वापसी
यज़ीद पलीद का मदीना मुनव्वरा पर हमला
यज़ीद पलीद का मक्का मुकर्रमा पर हमला
क़ातिलाने इमाम का इबरतनाक अंजाम
फ़ज़ाइले आ़शूरा
आ़शूरा और साले नौ की नफ़्ल नमाज़ें
खिचड़ा और सबीले इमाम हुसैन
मजालिसे मुहर्रम और ताज़ियादारी
ख़ुराफ़ाते मुहर्रम
आ़शूरा को क्या करना चाहिए?
ज़ुहूर अहमद की किताब का दन्दाँ शिकन जवाब
मक़ामे हुसैन और वाक़िआ़ते करबला : औरंगाबादी की नज़र में
नौ अदद सवालात व जवाबात

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सबबे तालीफ़

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वस्सलातु वस्सलामु अला ख़ातिमिन्नबीयीन व अला आलिहित्तैयबीनत्ताहिरीन व असहाबिहिल मुकर्रमीन वल मुअज़्ज़मीन वल खुलफ़ाइर्राशिदीन व अलैना म अ हुम अजमईन इला यौमिद्दीन। अम्मा बाद !

सतीज़ा कार रहा है अज़ल से ता इमरोज़
चिराग़े मुस्तफ़वी से शरारे बू–लहबी

बिरादराने इस्लाम! खुदावन्दे क़ुद्दूस का लाख–लाख शुक्र और करोड़हा एहसान है कि जिसने अपने महबूब पाक ताजदारे अंबिया हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल इस हक़ीर फ़क़ीर सरापा तक़सीर की मुद्दते मुदीद से दिल में मचलने वाली आरज़ूओं को पूरा होने का बेशबहा मौक़ा नसीब फ़रमाया। आज मैं अपना यह अक़ीदत व मुहब्बत से भरा हुआ नज़राना ब–शकले किताब, सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके लाडले व नवासे व फ़र्ज़न्द हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु की बारगाहे आलिया में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ।

इससे पहले **'फ़ज़ाइले दुरूद व सलाम'** और **'इस्लामी महीने और नूरानी रातें'** ज़ेवरे तबअ् से आरास्ता होकर मन्ज़रे आम पर आ चुकी हैं और अलहम्दुलिल्लाह हर ख़ास व आम में अपनी मक़बूलियत हासिल की हैं। अब यह तीसरी किताब **"तारीख़े करबला"** तबअ् होकर हदिया–ए–नाज़ेरीन हैं।

हालांकि वाक़िआते करबला को सदियां गुज़र गयीं और इस तवील अरसे में उम्मते मुस्लिमा के अज़ीम तरीन मुहक़्क़िक़ीन, मुफ़क्किरीन, फ़ुक़हा व मुहद्दिसीन, सूफ़ियाए किराम और उलमाए किराम की मुक़द्दस जमाअतें आयीं जिन्होंने वाक़िआते करबला पर बेशुमार किताबें लिखीं और वाक़िआते करबला अज़ अव्वल ता आख़िर को निहायत मुस्तनद व मोतबर हवालजात की रौशनी में पेश करने की सआदत हासिल फ़रमाई। लेकिन इनमें से किसी ने भी वाक़िआते करबला की असल सूरत को मस्ख़ करने या उसके

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़िलाफ़ क़लम उठाने की कोशिश और जसारत न की। इंतिहाई दुख और अफ़सोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि इधर चन्द सालों में हिन्द व पाक में ऐसे नापाक नाहन्जार ख़ारजी यज़ीदी, पैदा हो गए हैं जो वाक़िआते करबला को एक फ़र्ज़ी दास्तान साबित करने और शहज़ादा–ए–रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु की शान में नाज़ैबा कलिमात और आपकी ज़ात बाबर्कात पर रकीक हमले करने का बीड़ा उठा लिया है। यह ख़ारजी यज़ीदी हज़रत इमाम हुसैन को बाग़ी और नाफ़रमान लिखते हैं। यज़ीद जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर, शराबी, ज़ानी, दुशमने रसूल व आले रसूल को अमीरुल –मोमिनीन, इमामुल मुत्तक़ीन और जन्नती मानने के लिए एक नापाक मुहिम शुरू कर रखी है।

ऐसी ही एक कोशिश आज से चन्द साल पेशतर सरज़मीने पाकिस्तान में एक ज़ालिम इब्न–यज़ीद महमूद अब्बासी ने **"ख़िलाफ़ते मुआ़विया व यज़ीद"** नामी किताब लिखकर मुहिब्बाने अह्ले–बैत के दिल को ठेस पहुंचाई थी। जिस वक़्त यह किताब मन्ज़रे आम पर आयी थी उस वक़्त उलमाए अह्ले सुन्नत व जमाअ़त ने उसकी सतर–सतर की धज्जियां उड़ा दी थीं और जिन तारीख़ी किताबों के हवालों से महमूद अब्बासी ने दुशमनीए हुसैन में शर्मनाक बद–दियान्ती की थी उसका पर्दा फ़ाश कर दिया था। अब उसी ख़ब्बीस के नक़्शे क़दम पर चलते हुए सरज़मीने औरंगाबाद (महाराष्ट्र) पर एक ख़ब्बीस दुशमने रसूल व आले रसूल ख़ारजी, यज़ीदी, जुहूर अहमद नामी एक शख़्स पैदा हुआ है जिसने एक किताब **आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें** तहरीर की है। जो इंतिहाई मुस्लिम आज़ार, दिलख़राश, ग़ैर–मुस्तनद, किज़्ब व इफ़तरा और तारीख़ी बद–दियान्ती और दुशमनीए इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अ़न्हु से भरपूर है जिसमें इमाम आली मक़ाम को बाग़ी और बादशाहत के मुतमन्नी और हमलावर लिखा है। करबला के ख़ूनी वाक़िआत की पूरी–पूरी ज़िम्मेदारी हज़रत इमाम हुसैन और आपके रूफ़क़ा पर डाली है। यज़ीद या उसके अहलकारों को उससे बरी करने की नापाक कोशिश की है। नीज़ यज़ीद पलीद को जन्नती साबित करने के लिए इबारती बद–दियान्ती का भी सुबूत दिया है। ऐसा लगता है कि यह सब कुछ एक समझे बूझे मन्सूबे के तहत महज़ अपनी शोहरत कमाने या सऊदी पेट्रो डालर की हिर्स व तमअ़ में किया जा रहा है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़ुहूर अहमद यज़ीदी की किताब जैसे ही हमारे हाथों में आयी हमने फ़ौरन उस पर नोटिस लिया और उसके मुंह तोड़ जवाब के लिए और जो तारीख़ी बद–दियान्ती की गई उसका पर्दा–फ़ाश करने के लिए कोशिशें शुरू कर दीं। अलहम्दुलिल्लाह ! उसमें हम किस हद तक कामयाब हुए हैं उसका फ़ैसला क़ारिईन को करना है।

हमने इस किताब में इन्तहाई कोशिश और पूरी जद्दो–जेहद से ज़ुहूर अहमद यज़ीदी औरंगाबादी की बद–दियान्ती का दामन मुकम्मल तौर से चाक कर दिया है और मुकम्मल तौर पर निशानदही कर दी है कि इस नंगे ज़माना नाम–निहाद मुअल्लिफ़ ने किस–किस इबारत में किस–किस तरह क़ता व बुरीद करके अवामुन्नास को धोखा देने की नापाक कोशिश की है। हमने यज़ीद पलीद के हिमायती के इस खुले फ़रॉड को भी उरयां कर दिया है जो उसने दुशमनीए अह्ले–बैत के पेशे नज़र यज़ीद की हिमायत में खेला है। यहां तक कि तारीख़ के चेहरे पर डाले जाने वाले धोखे और फ़रेब के तमाम तर नक़ाबों को नोच कर रख दिया है। अब आप का फ़र्ज़ है कि पूरे अज़्म व एहतमाम के साथ अर्ज़े हिन्द व पाक से ख़ारजीयत और यज़ीदियत का नाम व निशान मिटाने की जद्द–व–जेहद में भरपूर किरदार अदा करें और हमारे कांधे से कांधा मिलाकर दुशमनाने इमाम आली मक़ाम का मुकम्मल सफ़ाया कर दें।

अब मौसमे बहार को आवाज़ दीजिए!
ताराज कर चुकी है चमन को ख़िज़ां बहुत!!

अब हम उन तमाम मुहिब्बाने किराम से, जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ख़ानवादए रसूले मुअज़्ज़म अलैहिस्सलाम वस्सना की मुहब्बत व अक़ीदत की शमें रौशन कर रखी हैं, उनकी ख़िदमत में गुज़ारिश करते हैं कि अह्ले–बैते नुबुव्वत से अपने जोशे अक़ीदत व मुहब्बत को महज़ यहां तक महदूद न रखें कि जब किसी मर्दूद, मलऊन, ख़ारजी, यज़ीदी की शैतनत से भरपूर किताब मार्केट में आए तो वक़्ती तौर पर सिर्फ़ सदाए इहतिजाज बुलन्द करके ख़ामोश न बैठें बल्कि उसका मुस्तक़िल हल यह है कि ऐसे दरीदा देहन दुशमने रसूल व आले रसूल मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन की क़लमों पर ब्रेक लगाएं। उनकी शाये कर्दा किताबें और उनकी जायदादें ज़ब्त करायें। अगर आपने यह काम मुनज़्ज़म पैमाने पर इश्क़े हुसैन से सरशार होकर किया तो इन्शाअल्लाहुल–अज़ीज़ इसके

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नताइज यक़ीक़नन मुरत्तब अंदाज़ में ज़ाहिर होंगे।

आख़िर में उन तमाम हज़रात का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने इस किताब की इशाअत में मेरा मुकम्मल तआवुन फ़रमाया। बिल्ख़ुसूस पीरे तरीक़त हज़रतुस्सैयद मुहीयुद्दीन सलीमुल्लाह शाह अलहम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई दामत बर्कातहुमुल आलिया, (सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया) सूरत का बेहद ममनून व मशकूर हूं जिन्होंने अपने क़ीमती और नायाब कुतुबख़ाने से मुझे इस्तिफ़ादा हासिल करने का पूरा–पूरा मौक़ा इनायत फ़रमाया। नीज़ अपने ज़ाती ख़र्च से हिन्द व पाक से किताबें मंगवाकर मुझे इनायत फ़रमाई। आपके अलावा मेरे बिरादर गिरामी वक़ार आली जनाब इब्राहीम खान रज़वी, हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद साहब क़ादरी, हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद रफ़ीक़ साहब (ख़तीब व इमाम मस्जिद हाशमीया मान दरवाजा, सूरत), मौलाना गुलाम मुस्तफ़ा बरकाती साहब अराकीन व असातज़ा दारुल–उलूम ख़्वाजा दाना, जनाब शमशेर अहमद खान साहब, जनाब सैयद अब्बास अली साहब(पाकिस्तान) जनाब अबदुर्रऊफ़ साहब ख़तीब, जनाब मुहम्मद रफ़ीक़ ख़तीब (जीलानी पान सेंटर), नजमुद्दीन साहब (करीम पान सेंटर), अबदुस्सलाम टेलर साहब, फ़ख़रुद्दीन बापू, जनाब असग़र बापू और अराकीने हज़रत पीर मुहम्मद शाह लाइब्रेरी (अहमदाबाद) ने भी मुकम्मल तआवुन फ़रमाया है। उन तमामी हज़रात के लिए मैं ख़ुद भी दुआ करता हूँ। तमाम नाज़रीन से इल्तिजा करता हूँ कि उनके लिए अपने मख़्सूस औक़ात में दुआएं ख़ैर करते रहें। ऐ मौलाए करीम! उन लोगों को और क़यामत तक आने वाली उनकी नस्लों को शाद व आबाद रखना। हवादिस व आफ़ात से महफ़ूज़ रखना और अपनी रहमते बेग़ायत से हमेशा नवाज़ते रहना और उनसे राज़ी रहना। जुमला अह्ले इस्लाम को हवारियाने यज़ीद बनने के बजाए गुलामाने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाना। आमीन सुम म आमीन। बजाह हबी ब क अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

मुहम्मद अमीनुलक़ादरी

रबीउल–आख़िर 1411 हिजरी मुताबिक़ 1 नवम्बर सन् 1990 ई०

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नाते मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

बरस्ता नहीं देखकर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

मदीने के खित्ते खुदा तुझको रखे
ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले

तू ज़िन्दा है वल्लाह! तू ज़िन्दा है वल्लाह!
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

हरम की ज़मीं और क़दम रखके चलना
अरे! सर का मौक़ा है ओ जाने वाले

तेरा खाएं, तेरे ग़ुलामों से उलझें
हैं मुन्किर अजब खाने गुर्राने वाले

रहेगा यूंही उनका चर्चा रहेगा
पड़े खाक हो जाएं जल जाने वाले

रज़ा! नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तूने देखे हैं चन्दराने वाले

अज़

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हदिय-ए-तशक्कुर और एतज़ार

हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नसीम रज़ा साहब रज़वी सलामी ने किताबे-हाज़ा को अज़ अव्वल ता आख़िर देखा और तसहीह फ़रमाई और अपने मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ा। मैं हज़रत का तहे दिल से मशकूर हूँ। किताब की सेहत पर अज़हद तवज्जह दी गयी है ताहम क़ारिईन को कोई ग़लती नज़र आए तो फ़ितरते बशरी पर महमूल फ़रमाते हुए दरगुज़र फ़रमाएं।

मुख़लिस

मुहम्मद अमीनुल-क़ादरी अर्रज़वी

हज़रत मलबारी साहब का टेकरा,

सग्राम पुरा, सूरत (गुजरात)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहब्बते रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हुजूर की मुहब्बत ऐन ईमान है!

अल्लाह की सर ता ब-क़दम शान हैं यह
इन-सा नहीं इन्सान, वह इन्सान हैं 'यह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

(आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अ़लैहिर्रहम:)

मुहतरम क़ारिईन! इस फ़ानी और ज़वाल–पज़ीर दुनिया में फ़ना होने वाली हमारी इस फ़ानी ज़िन्दगी की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ के लिए जिस तरह पानी और हवा वग़ैरह की ज़रूरत पड़ती है और बग़ैर इसके हमारी ज़िन्दगी बाक़ी भी नहीं रह सकती। बिल्कुल उसी तरह हमारे ईमान की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ के लिए भी हुजूर फ़ख़्रे काइनात ताजदारे अंबिया हज़रत सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत व उलफ़त इससे भी कई गुना ज़्यादा अहम और ज़रूरी है। आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत ईमान की जान है। यह बात तर्जुबे से साबित है कि जिसको महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत जितनी ज़्यादा होगी उसी क़दर उसका ईमान मज़बूत और क़वीतर होगा और जिसका दिल मुहब्बते रसूल से ख़ाली होगा, उसका ईमान उतना ही कमज़ोर और ज़ईफ़–तर होगा, इसीलिए मज़हबे इस्लाम ने उस अहम उनवान पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है कि मुसलमान अपने आक़ा व मौला हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम की मुहब्बत व उलफ़त में इतने सरशार हो जाएं कि आपकी मुहब्बत आलम की तमाम मुहब्बत पर ग़ालिब आ जाए। चुनांचे इरशादे बारी तआ़ला है: **क़ुल इन का न आबाउकुम व अबनाउकुम व इख़्वानुकुम व अज़्वाजुकुम व अ़शी-र-तुकुम**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

व अमवालु निक्तरफ़्तुमूहा व तिजारतुन तख़्शौ न कसादहा व मसाकिनु तरज़ौनहा अहब्ब ब इलैकुम मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन फ़ी सबीलिही फ़तरब्बसू हत्ता यतियल्लाहु बिअमरिह। वल्लाहु ला यहदिल क़ौमल फ़ासिक़ीन। (सूरह तौबा प–१०, रु–६)

(ऐ मेरे महबूब)! तुम फ़रमाओः अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद का मकान–यह चीज़ें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो। यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म लाए (यानी अज़ाब) और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता। (कन्ज़ुल–ईमान)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह तौर से फ़रमा दिया कि ऐ महबूब! दुनिया वालों को यह बात बतला दो कि तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारी औरतें, तुम्हारे कुंबे, तुम्हारे माल और वह सौदा जिसके नुक़सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे मकानात – यह तमाम चीज़ें अगर अल्लाह तबारक व तआला और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा प्यारे और महबूब हैं तो अब तुम अल्लाह तआला के अज़ाब का इन्तज़ार करो। इससे पता चलता है कि एक मोमिन के लिए हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत न सिर्फ़ फ़र्ज़ है बल्कि तमाम क़रीबी रिश्तेदारों और तमाम क़ीमती मता पर सबसे ज़्यादा होना चाहिए। और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है : **ला युमिनु अहदुकुम हत्ता अकू न अहब ब इलैहि मिंव्वालेदिही व वलदिही वन्नासि अजमईन।**(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द अव्वल) किताबुल–ईमान–सफ़ा १०४) यानी तुममें से कोई मोमिन नहीं जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसके बाप और उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। इस हदीस पाक ने तो बिल्कुल साफ़ तौर पर यह वाज़ेह कर दिया कि मोमिने कामिल वही है जिसके दिल में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत आलम के तमाम लोगों से ज़्यादा हो। यहां तक कि अगर वह उसका बाप हो या उसका बेटा हो या उसकी अपनी औलाद ही क्यों न हो। इसीलिए एक मर्तबा हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के उस फ़रमान पर कि ऐ अल्लाह के रसूल!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम! आप मुझे अपनी जान के अलावा हर चीज़ से ज़्यादा महबूब–तर हैं, तो उस पर अल्लाह के रसूल हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–**लैं युमिनु अहदुकुम हत्ता अकू न अहब ब इलैहि मिन नफ़्सिह**–(किताबुश–शिफ़ा जिल्द दोम–सफ़ा ५७) यानी तुममें से कोई भी शख़्स उस वक़्त तक मोमिने कामिल हो ही नहीं सकता जब तक कि मैं उसे उसकी जान से ज़्यादा बढ़कर महबूब न हो जाऊं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उन मुक़द्दस कलिमात का ऐसा असर हुआ कि हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़ौरन बोल उठे : या रसूलल्ल्लाह! उस ज़ाते पाक की क़सम जिसने आपको हक़ व सदाक़त के साथ किताबे हिदायत देकर मबऊस फ़रमाया है। अब तो आप मुझे मेरी जान, माल, औलाद और आलम की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब हैं। तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उमर! अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हुआ। इसलिए जनाब हफ़ीज़ जालंधरी ने क्या खूब कहा है :

मुहम्मद की मुहब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ नामुकम्मल है
मुहम्मद की गुलामी है सनद आज़ाद होने की
खुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की

बुख़ारी शरीफ़ (जिल्द दोम) किताबुल–अंबिया सफ़ा –३६० में हज़रत सैयदना अनस रज़िअल्लाहु अ़न्हु से एक हदीसे पाक मरवी है कि किसी शख़्स ने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सवाल किया कि या रसूलुल्लाह मतस्साअ़:? या रसूलुल्ल्लाह क़्यामत कब आएगी ? ग़ैब–दां नबी ने फ़रमाया कि तुमने उसके लिए क्या तैयार कर रखा है? उसने कहा कि मेरे पास तो कोई अ़मल नहीं सिवाये इसके कि मैं अल्लाह और उसके महबूबे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता हूं। इस पर हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया : **अन त म अ़ मन अहबब त** तुम उनके साथ हो जिनसे मुहब्बत रखते हो। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मुझे इतना किसी चीज़ ने ख़ुश नहीं किया जितना हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इस फ़रमान ने किया।

सहिबे तफ़सीरे कबीर हज़रत इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमः ने अपनी अरबी तफ़सीर के अलजुज़उर्राबे सफ़ा–२३१ पर इसी हदीसे पाक को तहरीर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमाते हुए लिखते हैं कि वह शख़्स एक आराबी था। उसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से सवाल किया कि **या रसूलुल्लाह! मतस्साअ:?** ऐ अल्लाह के रसूल! क़यामत कब आएगी? तो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **मा आददत लहा** तूने इसके लिए क्या तैयारी की है? उस आराबी ने बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम में अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! **मा आददतु कसीर सलातिंव्वला सियामिन इल्ला इन्नी उहिब्बुल्ला ह व रसूलह** ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास इसके लिए कोई तैयारी नहीं; न मेरे पास नमाज़ों का ज़खीरा है और न ही रोज़ों का। मगर हां, मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूं। बस यही एक ज़ख़ीरा है। आराबी की इन बातों को सुन कर अल्लाह के रसूल हुज़ूर मालिके कौनैन सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया **अल-मरउ म अ़ मन अहब ब** तू उनके साथ है जिनको तू महबूब रखता है।

मदारिजुन्नुबुव्व: जिल्द अव्वल सफ़ा :५२१ पर सैयदुल–मुहक़्क़िक़ीन हज़रत शाह अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहम: हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस पाक नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया **मन अहब्बनी का न मइयां फ़िल-जन्न:** जो मुझसे मुहब्बत रखता है वह जन्नत में मेरे साथ होगा।

मज़कूरा बाला आयते करीमा और दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला और अल्लाह के महबूबे हक़ीक़ी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत मां–बाप व औलाद, अज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्त व अहबाब, माल व दौलत, मस्कन व वतन और ख़ुद अपनी क़ीमती जान की मुहब्बत से भी ज़्यादा ज़रूरी और लाज़िम है, और अगर मां–बाप व औलाद अज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्त व अहबाब, अल्लाह और उसके रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अक़ीदत व मुहब्बत न रखते हों तो उनसे दोस्ती व मुहब्बत रखना जायज़ नहीं। क़ुरआन करीम में इस मज़मून की मुतअद्दिद आयतें आयी हैं। लेकिन हम यहां सिर्फ़ एक आयते करीमा पेश कर रहे हैं। इरशादे बारी तआला है। **ला तजिदु क़ौमैं यूमिनू न बिल्लाहि वल-यौमिल आख़िरि युवाद्दू न मन हाद्दल्ला ह व रसूलहू वलौ कानू आबाअहुम औ अब्नाअहुम औ इख़वानहुम औ अशीरतहुम** (पारा २८ सूरह हश्र) तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि दोस्ती करें उनसे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुखालफ़त की अगरचे वह उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे वाले हों।

(कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा ७८८)

इस आयते करीमा से भी यह बात बिल्कुल वाज़ेह और साफ़ हो जाती है कि एक मर्दे मोमिन जो अल्लाह और पिछले दिन पर यक़ीन रखता है। वह अल्लाह तआला और उसके रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता है और जो उनके दुशमन हैं उनसे दूरी इख़्तियार करता है। अगरचे वह उसके बाप या बेटे या कुंबे वाले ही क्यों न हों। ग़रज़ यह कि ईमान और नजात का दार वँ मदार हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मुहब्बत पर हैं। तो जिस मोमिन के दिल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मुहब्बत होगी उसके दिल में हर उस चीज़ की मुहब्बत होगी जिसका तअल्लुक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते पाक से होगा। यह क़ुदरती बात है कि इन्सान जिससे मुहब्बत रखता है उससे मुहब्बत और तअल्लुक़ रखने वाली उन तमाम चीज़ों को भी महबूब रखता है। लिहाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखने वाले आपकी औलाद, आपके असहाब, आपके अहले–बैत अतहार और हर उस चीज़ को जिसका रूहानी या जिस्मानी तौर से आपका तअल्लुक़ है, दिल व जान से महबूब रखते हैं। क्योंकि उनकी मुहब्बत ऐन मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। तो गोया उनकी मुहब्बत हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुहब्बत है। जो बदबख़्त, शक़ीयुल–क़ल्ब, इब्ने–यज़ीद, उनमें से किसी एक के साथ भी बुग्ज़ व अदावत रखे या उनकी तौहीन व बे–अदबी करे, चाहे वह ज़ुबान से हो या तहरीरी शक्ल में हो, वह ईमान से महरूम और दुशमने ख़ुदा व रसूल है। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे बदबख़्त और दुशमने ख़ुदा व रसूल का समाजी बाईकाट करें। उनकी मजलिसों में न ख़ुद जाएं और न किसी को जाने दें और न उनके पास बैठें।

मुसलमानो! ग़ौर का मक़ाम है ज़रा ठंडे दिल से सोचो कि अगर कोई शख़्स या जमाअत तुम्हारे बाप की दुशमन है तो क्या तुम उनके पास बैठना, उनसे ख़ुशी से बात करना गवारा करोगे? तो तुम्हारा जवाब नफ़ी ही में होगा तो फ़िर तुमने दुशमनाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दुशमनाने अहले–बैत व दुशमनाने असहाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उठना बैठना और उनसे खुशी से बात करना कैसे गवारा कर लिया?

मुसलमानो! खूब याद रखो अह्ले–बैते अतहार और सहाबाए–इज़ाम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन की मुहब्बत ऐन मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। उनकी अदावत ऐन अदावते रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि वह अपने दिल में उन मुक़द्दस नुफ़ूस की मोहब्बत रखें और अपनी ज़ुबान और अपनी तहरीरों से उन नुफ़ूसे कुदसिया की शान में मुहब्बत भरे अलफ़ाज़ बोलें और तहरीर करें। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अह्ले–बैते किराम से मुहब्बत करने के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया है : **वल्लाहि ला यदखुलु क़ल ब रजुलिनिलईमानु हत्ता युहिब्बुहुम लिल्लाहि व लिक़राबतिहिम मिन्नी** (इब्ने माजा (जिल्द अव्वल) सफ़ा ७१) खुदा की क़सम ! किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल न होगा जब तक (अह्ले–बैत) से अल्लाह के लिए और मेरी क़राबत की वजह से मुहब्बत न करे। दूसरी जगह इरशादे नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है : **अहब्बु अह्ल-बैती लिहुब्बी** (तिर्मिज़ी शरीफ़ (जिल्द दोम) सफ़ा ७६८) यानी मुझसे मुहब्बत रखते हो तो इस बिना पर मेरे अह्ले–बैत से भी मुहब्बत करो।

देखिए एक हदीस पाक में अह्ले–बैत की मुहब्बत को ईमाने कामिल और दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का दार व मदार मुहब्बते अह्ले–बैत क़रार दिया जा रहा है। क्योंकि अह्ले–बैत अतहार से मुहब्बत हुज़ूर पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से मुहब्बत का बय्यिन सुबूत है। हुज़ूर की मुहब्बत तमाम मख़लूक़े खुदा पर फ़र्ज़ है। तो अह्ले–बैते अतहार की मुहब्बत भी ज़िमनन फ़र्ज़ हुई। इंशाअल्लाह इस सिलसिले में आप आइन्दा सफ़हात में आयाते क़ुरआनी व अहादीसे करीमा से दलाइल मुलाहज़ा फ़रमाऐंगे।

अह्ले–बैते अतहार की मुहब्बत सरमायए ईमान और रज़ाये खुदा व रसूल है। इसलिये हम सबसे पहले अह्ले–बैत की शान में सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः के भाई हज़रत अल्लामा हसन रज़ा ख़ान साहब अलैहिर्रहमः की एक मनक़बत तहरीर कर रहे हैं। फिर फ़ज़ाइले अह्ले–बैत क़ुरआने करीम व अहादीसे मुबारका की रौशनी में पेश करेंगे। बादहू सहाबा–ए–किराम के फ़ज़ाइल व मनाक़िब पेश किए जाएंगे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लअ़्नतुल्लाहि अ़लैकुम दुशमनाने अह्ले-बैत

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मदह–ख़्वाने अह्ले–बैत
तुम को मुज़दा नार का ऐ दुशमनाने अह्ले–बैत
किस ज़बां से हो ब्याने इज़्ज़ व शाने अह्ले–बैत
मदह गोए मुस्तफ़ा है मदह–ख़्वाने अह्ले–बैत
उनकी पाकी का ख़ुदाए पाक करता है ब्यां
आयते ततहीर से ज़ाहिर है शाने अह्ले–बैत
उनके घर में बे–इजाज़त जिब्रईल आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्र व शाने अह्ले–बैत
रज़्म का मैदां बना है जलवा–गाहे हुस्न व इश्क़
करबला में हो रहा है इम्तिहाने अह्ले–बैत
फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
ख़ून से सींचा गया है गुल्सिताने अह्ले–बैत
हूरें करती हैं उरूसाने शहादत का सिंगार
ख़ूबरू दूल्हा बना है हर जवाने अह्ले–बैत
जुमा का दिन है किताबें ज़ीस्त की तय करके आज
खेलते हैं जान पर शहज़ादगाने अह्ले–बैत
ऐ शबाबे फ़स्ले गुल! यह चल गयी कैसी हवा
कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अह्ले–बैत
ख़ुश्क हो जा ख़ाक होकर ख़ाक में मिल जा फ़ुरात
ख़ाक तुझ पर देख तू! सूखी ज़ुबाने अह्ले–बैत
बाग़े जन्नत छोड़ कर आए हैं महबूबे ख़ुदा
ऐ ज़हे क़िस्मत तुम्हारी कुश्तगाने अह्ले–बैत
हूरें बेपरदा निकल आयी हैं सर खोले हुए
आज कैसा हश्र है बरपा म्याने अह्ले–बैत
घर लुटाना, जान देना, कोई तुझसे सीख जाये
जाने आलम हो फ़िदा, ऐ ख़ानदाने अह्ले–बैत
सर शहीदाने मोहब्बत के हैं नेज़ों पर बुलन्द
और ऊंची की ख़ुदा ने, क़द्र व शाने अह्ले–बैत
ज़ख़्म खाने को, तो आबे तेग़ पीने को दिया
ख़ूब दावत की बुला कर दुशमनाने अह्ले–बैत
अह्ले–बैते पाक से गुस्ताख़ियां बे–बाकियां
लअ़नतुल्लाहि अ़लैकुम दुश्मनाने अह्ले–बैत
बेअदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ **हसन**
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अह्ले–बैत

(अल्लामा हसन रज़ा ख़ाँ हसन बरेलवी)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैते नुबुव्वत पाक हैं

अह्ले–बैते नुबुव्वत यह वह मुक़द्दस हस्तियां हैं कि जिस तरह हुज़ूर नबीए करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम सारे नबियों और रसूलों के सरदार हैं। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अह्ले–बैते अतहार तमाम अंबियाए किराम व रसूलाने इज़ाम के अह्ले–बैत के सरदार हैं। उन पाकीज़ा नुफ़ूस की शाने आ़लिया में अल्लाह जल ल शानुहू अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इरशाद फ़रमाता है–**इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अ़न्कुमुर्रिज स अह्लल बैति व युतह्हिरुकुम तत्हीरा** (सूरह अहज़ाब पारह २२ रुकू १) ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमाए और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे (कंज़ुल–ईमान)। आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमा रहा है कि ऐ मेरे महबूब! आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह तआला मेरे अह्ले–बैत से नापाकी दूर फ़रमाकर उन्हें पाक व साफ़ फ़रमा रहा है।

सबसे पहले तो हमें यह समझना है कि इस आयते करीमा में अह्ले–बैत से कौन–कौन लोग मुराद हैं। लफ़्ज़े अह्ल के लुग़वी माना हैं 'वाला'। इसीलिए कहा जाता है – अह्ले–इल्म, अह्ले–दौलत, अह्ले–मुल्क, अहले–राय वग़ैरा। यानी इल्म वाला, दौलत वाला, मुल्क वाला, राय वाला। लिहाज़ा अह्ले–बैत के माना हुए घर वाले, और अह्ले–बैते नबी के माना हुए नबी के घर वाले। फिर घर वाला होने की तीन सूरतें हैं : एक, यह कि नबी के घर में पैदा हों और घर ही में रहते हों। जैसे हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चारों फ़र्ज़न्द : तैय्यब, ताहिर, क़ासिम, इब्राहीम। दूसरे, यह कि नबी के घर में पैदा हों मगर फिर बाद में दूसरे घर में रहें। जैसे: हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम की चारों साहिबज़ादियां हज़रत ज़ैनब, कुल्सूम, रुक़ैया, और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा। यह हुज़ूर के घर में पैदा हुई मगर निकाह के बाद अपने ससुराल में रहीं। उन दोनों को अह्ले–बैते विलादत कहा जाता है। तीसरे, यह कि पैदा और जगह हों मगर बाद में हुज़ूर के घर में रहने लगे हों। जैसे : हुज़ूर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की अज़वाजे मुतह्हिरात कि उनकी विलादत अपने वालिदैन के घर हुई मगर हुज़ूर से निकाह के बाद यह हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के घर में रहने लगीं। उन्हें अह्ले–बैते सुकूनत कहते हैं। यह तीन क़िस्म के हज़रात अह्ले–बैते रसूल हैं। हमारे उर्दू मुहावरे में भी बीवी–बच्चों को अह्ले ख़ाना या अह्ल व अयाल या घर वाले कहा जाता है। लिहाज़ा इस तशरीह के मुताबिक़ हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की तमाम औलाद, साहिबज़ादे, साहिबज़ादियां और तमाम अज़वाजे मुतह्हिरात हुज़ूर के अह्ले–बैत हैं। लेकिन हक़ यह है कि अह्ले–बैत का इत्तलाक़ हज़रात इमाम हसन व इमाम हुसैन व हज़रत अ़ली व हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ही की ज़ाते गिरामी पर होता है।

आयते ततहीर का शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

आयत करीमा **इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अ़न्कुमुर्रिज स अह्लल बैति व युतहहिरुकुम तत्हीरा** में अह्ले–बैत से कौन लोग मुराद हैं? इसके बारे में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं। लेकिन अकसर मुफ़स्सिरीन का ख़्याल है और ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद इरशाद फ़रमाया कि आयते ततहीर अ़ली, फ़ातिमा, हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई हैं। बाज़ का ख़्याल है कि यह आयत आपकी बीवियों के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई हैं। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है **वज़्कुर न मा युतला फ़ी बुयूतिकुन्न न** यह क़ौल हज़रत सैयदना इब्ने अ़ब्बास और हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का है। क्योंकि वही आपके सुकूनती मकान में रिहाइश पज़ीर थीं। अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल **वज़्कुर न मा युतला फ़ी बुयूतिकुन्न न** की वजह से भी इस आयत को आपकी बीवियों के मुतअ़ल्लिक़ क़रार दिया गया है। आपके अह्ले–बैत आपके नसब वाले भी हैं। जिन पर सदक़ा हराम क़रार दिया गया है। एक जमाअ़त ने इस पर एतमाद किया है और इसी को तरजीह दी है। इब्ने कसीर ने भी इसकी ताईद की है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ४८४)

बहरहाल जो लोग अह्ले–बैत से उम्महातुल–मोमिनीन मुराद लेते हैं और वह लोग जो अह्ले–बैत से हज़रात पंजतन पाक मुराद लेते हैं – दोनों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जमाअतों के पास दलाइल मौजूद हैं। मगर अकसरियत दूसरे क़ौल के हक़ में है। इसीलिए अह्ले–बैत का लफ़्ज़ अक्सर हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम के लिए शाये व मशहूर है। इस सिलसिले में हम अहादीसे करीमा पेश करके अपने क़ौल के क़वी होने का सुबूत पेश कर रहे हैं। चुनांचे मिश्कात शरीफ़ बाब मनाक़िबे अह्ले–बैत में उम्मुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा आयते ततहीर के मुतअ़ल्लिक़ जो रिवायत ब्यान करती हैं, वह यह है : **अ़न आई श त क़ालत ख़ र र जन्नबिय्यु सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़दा त व अ़लैहि मिरतुन मुरह्हलुम मिन शअ़रि अस व द फ़ जाअल हसनुब्नु अ़लीइन फ़अ़दख़लहू सुम्म मजाअल हुसैनु फ़ दख़ल मअ़हू सुम्म म जाअत फ़ातिमतु फ़अदख़ ल हा सुम्म मजाअ अ़लीयुन फ़अदख़ लहू सुम्म म क़ा ल इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि व अ़नकुमुर्रिज स अह्ललबैति व युतह्हिरुकुम तत्हीरा रवाहु मुस्लिमु** (मिर्अतुल–मनाजीह शरह मिश्कातुल–मसाबीह, सफ़ा ४५१)। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक सुबह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए। आप पर काले ऊन के बालों की मुख़त्तत चादर थी। पस हज़रत हसन बिन अ़ली आए। हुज़ूर ने उन्हें अपने चादर में दाख़िल फ़रमा लिया। फ़िर जनाब हुसैन आए तो वह भी उनके साथ चादर में दाख़िल हो गए। फिर हज़रत फ़ातिमा आयीं उन्हें भी दाख़िल फ़रमा लिया। फ़िर हज़रत अली आए उन्हें भी दाख़िल फ़रमा लिया। फ़िर फ़रमाया : ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह चाहता है कि तुमसे गन्दगी दूर कर दे और तुमको ख़ूब–ख़ूब पाक व साफ़ फ़रमा दे।

दूसरी रिवायत उम्मुल–मोमिनीन हज़रत सैयदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से इस तरह मर्वी है : **अ़न उ म रबनि अबी सलमा रबीबिन्नबीय्यी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम क़ाल : लम्मा न ज़ लत हाज़िहिल आयतु अ़लन्नबीय्यी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम : 'इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अ़न्कुमुर्रिज स अह्लल बैति व युतह्हिरुकुम ततहीरा।' फ़ी बैति उम्मे सलमा फ़ दआ़ फ़ातिम त व हसनन व हुसैनन फ़जल्ल ललहू बिकसाइन व अ़लीय्युन ख़ल फ़ ज़हरिही फ़ ज़ल्ललहू बिकसाइन सुम्म म क़ा ल हाउलाइ अह्लु बैती फ़ज़हब अ़न्हुमुर्रिज स व**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तह्हिरहुम ततहीरा। का़लत उम्मे सलमा व अ न म अ़ हुम या नबीयल्लाहि का़ ल अन्ति अ़ला मकानिकि व अन त अ़ला ख़ैरिन (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा–४८५) उमर इब्ने अबी सलमा, जो रबीब हैं नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के, उन्होंने कहा : जब आयते करीमा **इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अ़न्कुमुर्रिज स** नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा के घर में हज़रत फ़ातिमा और हसन और हुसैन को बुलाया और उन सब पर एक चादर डाल दी। आपके पीछे हज़रत अ़ली थे। फ़िर अ़र्ज़ किया आपने : या अल्लाह! यह मेरे अह्ले–बैत हैं, तू इनसे हर क़िस्म की आलूदगी दूर करके खूब पाकीज़ा फ़रमा दे। हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि मैं ने कहा या रसूलुल्लाह! मैं भी उनके साथ हूं। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने मकान पर हो और ख़ैर पर हो।

साहिबे तफ़सीर हुसैनी आयते ततहीर की तफ़सीर लिखते हुए फ़रमाते हैं : जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपना सर कमली के अन्दर करके बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम! में अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या मैं आपके अह्ले–बैत से नहीं हूं? आपने फ़रमाया **इन्न क अ़ला ख़ैरिन** यानी तुम ख़ूबी पर हो। इसी जेहत से उन्हीं पांच को आले अ़बा बोलते हैं। (तफ़सीरे हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा–२६२)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से यह तीसरी रिवायत इस तरह मर्वी है कि **अन्न न रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का न यमुर्रु बिबाबि फ़ातिम त सित्त त अशहुरिन इज़ा ख़ र ज लिसलातिल फ़ज्रे यकूलु या अह्लबैति! इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अ़न्कुमुर्रिज स अह्लल-बैति व युतह्हिरुकुम ततहीरा** (तिर्मिज़ी शरीफ़–जिल्द दोम सफ़ा–५३८) रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की छः महीने तक यही आदते करीमा थी कि जब आप सुबह को नमाज़े फ़ज्र के लिये निकलते तो हज़रत बीबी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के दरवाज़े पर गुज़रते तो फ़रमाते कि ऐ अह्ले–बैत अल्लाह तआ़ला तुमको हर क़िस्म की नापाकी से दूर फ़रमा दे और तुम्हें खूब–खूब पाकीज़ा फ़रमा दे। (तफ़सीर हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा–२६३)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

चौथी रिवायत मशहूर सहाबीए रसूल हज़रत अबू–सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **न ज़ लत हाज़िहिल आयतु फ़ी ख़म्सतिन फ़िय्या व फ़ी अलिय्यिन व फ़ातिम त व हसनिन व हुसैनिन इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुर्रिज स अह्लल बैति व युतह्हिरुकुम ततहीरा।** यह आयते करीमा **इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुर्रिज स** पांच शख़्सीयतों के बारे में नाज़िल हुई है। मेरे बारे में और अली और फ़ातिमा और हसन और हुसैन के बारे में। (मनाक़िब अह्ले–बैत, सफ़ा : ६८)

बहरहाल यह बात रोज़े रौशन की तरह बिल्कुल ज़ाहिर हो गई कि आयते ततहीर में अह्ले–बैत से मुराद हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम और खुद सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस ज़ाते पाक है। नीज़ मज़कूरा वाला तमाम हदीसों में आपने देखा कि अह्ले–बैत की नब्वी तफ़सीर कभी क़ौलन तो कभी फ़ेअ़लन आपने अह्ले–बैत को ज़ाहिर फ़रमा दिया है। यह कितनी अहम और ज़रूरी बात है। क्या इसके ख़िलाफ़ कोई बात तस्लीम की जा सकती है?

रिज्स क्या है?

अल्लाह तआला ने आयते ततहीर **इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हि ब अन्कुमुर्रिज स अहलल बैति व युतह्हिरुकुम ततहीरा** की इब्तेदा **इन्नमा** के लफ़्ज़ से फ़रमाई है जो हसर के लिये आता है। इसमें अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि वह अह्ले–बैत से उस नापाकी को दूर फ़रमा देगा जो ईमानियात में गुनाह और शक का मोजिब होती हैं और उन्हें दीगर अख़लाक़ व अहवाले मज़मूमा से पाक कर देगा। ख़त्मे आयत पर **ततहीरा** की तन्वीन ताज़ीम व तकसीर के लिए है। यानी मामूली तहारत नहीं बल्कि बहुत–ही ज़्यादा उमदा और आ़ला तहारत है। बाज़ तुर्क़ में उनका आग पर हराम होना भी ब्यान हुआ है। यह उस ततहीर का फ़ायदा है जिसकी ग़ायत इनाबत इलल्लाह का इलहाम और आमाले सालिहा पर मदावमत इख़्तियार करना है। जब मुलूकियत के बाइस उनसे ज़ाहिरी ख़िलाफ़त का ख़ात्मा हो गया और यह ख़ात्मा हज़रत इमाम हसन पर हुआ तो उन्हें उसके एवज़ ख़िलाफ़ते बातनी अ़ता की गई। यही वजह है कि हर ज़माने के कुतुब, औलिया उन्हीं में से हुए। यह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लोग खुद भी मादने विलायत और मरजए सलासिले औलियाए उम्मत हुए। इसीलिए हज़रत अ़ल्लामा हसन रज़ा ख़ान बरैलवी ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

उनकी पाकी का ख़ुदाए पाक करता है ब्यान
आयते ततहीर से ज़ाहिर है शाने अह्ले–बैत

आयते ततहीर में **इन्नमा** के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है **युरीदुल्लाहु।** यानी अल्लाह तआ़ला का यह इरादा है कि (अह्ले–बैत को) अरजास से पाक कर दे। तो क्या अल्लाह तआ़ला का इरादा फ़रमा लेना ही काफ़ी नहीं है। जबकि किसी भी काम के पूरा करने के लिए अल्लाह तआ़ला का इरादा फ़रमा लेना ही काफ़ी है। इस पर क़ुरआन करीम गवाह है कि **इज़ा अरादल्लाहु शैअ़न कुन फ़ यकून।** उधर युरीदुल्लाह है इधर अरादल्लाहु है। कहा और हो गया। फिर उस बशारते खुदावन्दी के बाद मुस्तज़ाद यह कि सैयदुल–अंबिया हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही वसल्लम इमाम हुसैन और दूसरे हज़राते अह्ले–बैत को कमली में लेकर बारगाहे ख़ुदावंदी में दुआगो हैं कि या अल्लाह! यह मेरे अह्ले–बैत हैं उनसे अरजास व आलूदगी को दूर रख। तो क्या इमामुल–अंबिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह मुबारक दुआ़ शर्फ़ कुबूलियत को पहुंची कि नहीं? क्या कोई मुसलमान यह गुमान कर सकता है कि महबूबे ख़ुदा की दुआ़ कुबूल नहीं हुई, जबकि आपसे बढ़कर दोनों आ़लम में कोई मुस्तजाबुद्दावात पैदा ही नहीं हुआ।

अब यह देखना है कि वह 'रिज्स' क्या है जिससे उस ख़ानवादए तक़दीस व अ़ज़मत को अलाहदा रखा गया। तो उसके मुतअ़ल्लिक़ भी तवीलतरीन मबाहिस हमारे सामने मौजूद हैं। मुख़्तसरन यह है कि **क़ा ल इब्ने अ़तीया अर्रिज्सु इस्मु यक़अ् अ़लल इस्मि वल-अ़ज़ाबि व अ़लन्नजासात। व क़ा ल इमाम नववी क़ी ल हु व शक्कुन व क़ीलल अ़ज़ाबु व क़ीलल इस्म। क़ालज़्ज़ुहरी अर्रिज्सु इस्मुन लिकुल्लि मुस्तक़ज़रिम मिन अ़ म लिन वग़ैरहि।**

(अशरफुल–मवीद सफ़ा : १९, शहीद इब्ने शहीद, जिल्द दोम, सफ़ा : ३६६)

इब्ने अ़तीया कहते हैं : रिज्स का वुक़ू है ऊपर गुनाहों के, और अ़ज़ाब के, और ऊपर नजास्तों के। इमाम नववी कहते हैं कि रिज्स शक को, अज़ाब को और गुनाह को कहते हैं। ज़ुहरी कहते हैं कि रिज्स आमाल वग़ैरा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के तमाम गुनाहों का नाम है। नीज़ अहले–लुगत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि रिज्स के माना पलीदी, गुनाह, कुफ़्र और हर बुरा काम है।

व क़ा ल इब्ने अब्बास अर्रिज्सु अमलश्शैतानि मा लै स लिल्लाहि फ़ीहि रज़ा। व क़ीलर्रिज्सु : अश्शक्कु व क़ीलस्सू (ख़ाज़िन जिल्द ५ सफ़ा : ३११)

व क़ा ल इमाम फ़ख़रुद्दीन अर्राज़ी-अर्रिज्सु अय यज़ीलु अन्कुमुज़्ज़ुनूब (तफ़सीरे कबीर (अ़रबी) अज्जुज़्उल–ख़ामिस वल–इशरून सफ़ा : २०६)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं : रिज्स अ़मले शैतान है, और हर वह काम है जो रज़ाये इलाही के ख़िलाफ़ हो। और रिज्स शक और बुराई को कहते हैं।

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी तफ़सीरे कबीर में फ़रमाते हैं कि रिज्स अहले–बैत से गुनाहों को ख़त्म करने का नाम है।

बहरहाल यह मुसल्लमा अम्र है कि रिज्स गुनाह और बुराई और हर उस काम को कहते हैं जो रज़ाये ख़ुदावन्दी के ख़िलाफ़ हो। यह क़ुरआन व हदीस की नुसूस और मुफ़स्सिरीन के अक़वाल से साबित है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रात अहले–बैत अतहार को रिज्स से मुकम्मल तौर पर अलाहिदा करके ताहिर व मुतह्हिर फ़रमा दिया है। तमाम एतक़ादी और अ़मली नापाकियों और बुराईयों से बिल्कुल पाक और मुनज़्ज़ह फ़रमा कर क़लबी सफ़ाई, अख़लाक़ी सुथराई और तज़कीए ज़ाहिर व बातिन का वह आला मक़ाम अ़ता फ़रमा दिया जिसकी वजह से वह दूसरों से मुमताज़ व फ़ाइक़ हैं।

अल्लाह तआ़ला अहले–बैत के तुफ़ैल हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा कर दरजाते आ़लिया अ़ता फ़रमाए। आमीन।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पंजतन पाक

और

आयते मुबाहला

पंजतन पाक यह मुक़द्दस हस्तियां हैं :

1. हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही वसल्लम
2. हज़रत सैयदना अ़ली इब्ने अबी–तालिब कर्रमल्लाहु वज्हः
3. हज़रत सैयदना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा
4. हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु
5. हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आयते मुबाहला यह है :

फ़मन हाज्ज ज क फ़ीहि मिम्बादि मा जा अ क मिनल इल्मि फ़क़ुल तआ़लौ नदऊ अबनाअना व अबनाअकुम व निसाअना व निसाअकुम व अन्फ़ुसना व अन्फ़ुसकुम सुम्म म नबतहिल फ़नजअ़ल लानतल्लाहि अ़लल काज़िबीन। (सूरह आले इमरान पारह ३ रुकू १४)

तर्जुमा : (फ़िर ऐ महबूब) ज़ो तुमसे ईसा के बारे में हुज्जत करें बाद उसके कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उनसे फ़रमा दो – आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें, फ़िर मुबाहिला करें, तो झूठों पर अल्लाह की लानत डालें। (कन्ज़ुल–ईमान)

शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

यह आयते करीमा नजरान के ईसाईयों के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मुतअ़ल्लिक़ बहस करने आए थे। नजरान, मक्का मुअ़ज़्ज़मा से जानिबे यमन सात मन्ज़िल के फ़ासले पर एक बड़ा वसी व अरीज़ शहर है जो नजरान बिन ज़ैद बिन यशहुब बिन यारब के नाम से मौसूम है। यह शहर मुल्के अ़रब में ईसाई मज़हब का बहुत बड़ा मर्कज़ था। ७३ गांव इससे मुतअ़ल्लिक़ थे। यहां एक अ़ज़ीम गिरजा था जिसको ईसाई 'काबा' कहते थे। इसी में उनके बड़े–बड़े पादरी रहते थे। हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के विसाल से एक साल पेशतर यहां के ईसाईयों का एक वफ़्द जो साठ अफ़राद पर मुश्तमिल था, मदीना मनुव्वरा आया। इन में लॉर्ड बिशप भी था जिसका नाम अबू–हारसा था। उन साठ अफ़राद में चौबीस (२४) अफ़राद ईसाइयों के अशराफ़ लोगों में से थे। फिर इन २४ में से तीन मरजए कुल थे। उनमें से एक का नाम अ़ब्दुल मसीह और आ़क़िब लक़ब था यह अपनी क़ौम का सरदार था। जिसकी राय के बग़ैर ईसाई कोई काम नहीं करते थे। दूसरे का नाम ऐहम था। यह अपनी क़ौम का अफ़सरे माल था जिसके ज़िम्मे सारी क़ौम के ख़ुर्द व नोश और रसद का इंतज़ाम था। तीसरे का नाम अबू–हारसा बिन अ़ल्क़मा था। जो नसारा के तमाम उलमा पादरियों का बड़ा पेशवा था। यह गिरोह नमाज़े

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अस्र के वक़्त मदीना मुनव्वरा पहुंचा। इस वफ़्द के तमाम शुरका निहायत उम्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शान व शौकत के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुनाज़िरा करने आए थे। सहाबा–ए–किराम रिज़वानुल्लाहु अलैहिम फ़रमाते हैं कि हमने आज तक ऐसी शान व शौकत वाली जमाअत न देखी थी। यह लोग सीधे मस्जिद नब्वी में आए। नमाज़ का वक़्त था। फ़ौरन उन लोगों ने वहीं जानिबे शर्क़ मुतवज्जह होकर नमाज़ शुरू कर दी। हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उन्हें अपनी नमाज़ पढ़ लेने दो।

(तफ़सीरे नईमी जिल्द सोम–सफ़ा : २६८)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी आदते करीमा के मुताबिक़ इस वफ़्द को दावते इस्लाम दी। लेकिन वह रू–ब–रू न हुए और मुबाहिसा करने लगे। उनका मर्कज़ी मसअला यह था कि हज़रत ईसा मसीह ख़ुदा थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके जवाब में आयते क़ुरआनिया पढ़ीं जिनके दलाइले क़तईया से साबित किया गया कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं, ख़ुदा नहीं। बिना बाप के पैदा होना इस बात की दलील नहीं कि वह ख़ुदा हैं। आख़िर हज़रत आदम अलैहिस्सलातु वस्सलाम भी तो बिन माँ–बाप के मिट्टी से पैदा किए गए। तो जब उन्हें अल्लाह की मख़लूक़ और उसका बंदा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह की मख़लूक़ और बन्दा मानने में क्या तअज्जुब व रुकावट है? जबकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का तो हज़रत मरयम से पैदा होना भी साबित है। लेकिन ईसाइयों का यह वफ़्द दलाइले क़ातिआ सुनने के बावजूद अपनी ज़िद्द पर क़ायम रहा तो अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर इन आयाते मुबाहिला को नाज़िल फ़रमाया। इरशादे बारी तआला हुआ कि ऐ महबूब! उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो आओ हम और तुम अपने बाल–बच्चों को लेकर अल्लाह तआला के सामने दुआ करें कि जो अपने दावे में झूठा हो उस पर अल्लाह तआला की लानत हो और वह अज़ाबे ख़ुदावन्दी का मुस्तहिक़ बने। अहले इस्लाम उसी को मुबाहिला के नाम से याद करते हैं। इस हुक्मे मुबारक के बाद वफ़्द के उलमाए नसारा ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से एक दिन की मोहलत माँगी कि हम कल आपको इसका जवाब देंगे। जब वह जमा हुए तो उन्होंने अपने सबसे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बड़े आलिम और साहिबे राय शख़्स आ़क़िब से कहा : ऐ अ़ब्दुल मसीह! आप की क्या राय है ? उसने कहा : ऐ जमाअ़ते नसारा! तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व वसल्लम) नबी मुर्सल ज़रूर हैं। अगर तुमने उनसे मुबाहिला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानियत पर क़ायम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और अपने-अपने घर लौट चलो। यह मशवरा करने के बाद वह तमाम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमते आ़लिया में हाज़िर हुए तो उन्होंने देखा कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की गोद में इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में इमाम हसन का हाथ है और हज़रत फ़ातिमा व हज़रत अ़ली हुज़ूर के पीछे हैं। हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम उन लोगों से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूँ तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सबसे बड़े पादरी बिशप ने जब उस नूरानी क़ाफ़िले को देखा तो कहने लगा ऐ गिरोहे नसारा! **इन्नी लअरा वुजूहन लौ सअ्लुल्ला ह ऐंयुज़ी ल ज ब लम मिम मकानिही लअज़ालहू बिहा फ़ला व तबाहिलू फ़तुहलिकू वला यब्क़ा अ़ला वजहिल अर्ज़े नसरानीयुन इला यौमिल क़्याम :** (तफ़सीरे कबीर अल-जुज़उस्सामिन-सफ़ा : ८५) यानी बेशक मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर यह लोग अल्लाह तआ़ला से पहाड़ को इसकी जगह से हटाने की दुआ़ करें तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला पहाड़ को उसकी जगह से हटा देगा। पस हरगिज़ उनसे मुबाहिला मत करो वरना हलाक हो जाओगे और क़्यामत तक रूए ज़मीन पर कोई ईसाई बाक़ी न रहेगा। चुनांचे ईसाइयों ने अपने पादरी की बात मान ली और मुबाहिला से राहे फ़रार इख़्तियार की और जिज़या देना मन्ज़ूर कर लिया कि हम हर साल दो हज़ार जोड़े कपड़े (जिनमें एक जोड़े की क़ीमत चालीस दीनार से कम न होगी) देंगे। एक हज़ार माहे सफ़र में और एक हज़ार माहे रज्जब में। और तीस (३०) ऊँट, ज़िरह और ३० नेज़े पेश करते रहेंगे। साहिबे तफ़सीरे नईमी ने इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखा है कि ईसाई बतौरे जिज़या दो हज़ार जोड़े, ३३ ज़िरह, ३३ ऊँट और ३४ घोड़े दिया करेंगे।

तारीख़े इस्लाम मुअल्लिफ़ अ़ब्दुर्रहमान शौक़ अमृतसरी अपनी किताब के सफ़ा २८१ जिल्द अव्वल में तहरीर करते हैं कि ईसाइयों ने जहां जिज़या देना क़ुबूल किया इसी के साथ-साथ यह सुलहनामा भी लिखा गया कि (१) मुसलमानों की तरफ़ से जो भी क़ासि़द उनके पास आएगा वह उसकी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मेहमान नवाज़ी करेंगे।(२) न सूद लेंगे और न सूद का कारोबार करेंगे। (३) मुसलमान उनके दीन और उनकी आज़ादी के निगराँ रहेंगे। इस सुलहनामा पर नामवर सहाबा किराम ने दस्तख़त फ़रमाई और उनके हवाले कर दिया गया। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही इन्नल हला क क़द तदल्ली अ़ला अह्ले नजरान वलौ लअ़्नुल मसख़ू क़िरदतुन व ख़नाज़ीरु वला ज़तरम अ़लैहिमुल वादी नारौं वला सतासिलल्लाहु नजरान व अहलिही हत्तत तै र अ़ला रुऊसुश्श ज रे व लमा हालल हौलु अ़लन्नसारा कुल्लुहुम हत्ता युह्लिकू।(सीरत रसूले अ़रबी व तफ़सीरे कबीर जुज़ सामिन सफ़ा : ८५)

यानी क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि अह्ले नजरान पर यक़ीनी हलाकत तारी हो जाती अगर वह हमसे मुबाहिला करतें तो बन्दरों और सूअरों की सूरत में मस्ख़ कर दिए जाते और अज़ाबे इलाही की आग से जंगल जल जाते। नजरान और वहाँ के रहने वाले हत्ता कि दर्ख़्तों पर बैठे हुए परिन्दे जल जाते और एक साल की मुद्दत में तमाम ईसाई हलाक हो जाते। मवाहिबुल—लदुन्निया ने लिखा है कि जिस किसी ने भी मुबाहिला किया है अगर वह बातिल पर है तो उस पर रोज़े मुबाहिला से एक साल भी नहीं गुज़रेगा कि वह हलाक हो जाएगा।

ख़साइस कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४३ पर एक हदीस पाक हज़रत अबू—नईम के हवाले से तहरीर फ़रमाई है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अह्ले नजरान की हलाकत की ख़बर देने वाला आ गया था हत्ता कि परिन्दे भी उनकी हलाकत की ख़बर दे रहे थे अगर वह मुबाहिला करते तो हलाक हो जाते।

सही मुस्लिम शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : २७८ और साहिबे मिर्अतुल—मनाजीह ने जिल्द हशतुम सफ़ा : ४५० पर बहवाला मुस्लिम एक हदीस पाक हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से नक़ल फ़रमाई हैं कि **लम्मा न ज़ लत हाज़िहिल आयतु नदऊ अबनाअना व अबनाअकुम दआ़ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अ़लीय्यन व फ़ातिम त व हसनन व हुसैनन फ़क़ा ल अल्लाहुम्म म हाउलाइ अह्लु बैती।**

जब यह आयत यानी आयते मुबाहिला नाज़िल हुई कि हम अपने और तुम्हारे बेटों को बुलाएं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली और फ़ातिमा और हसन व हुसैन को बुलाया और फ़रमाया : यह मेरे घर वाले हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

साहिबे सवाइक़ मुहर्रक़ा ने सफ़ा ५२४ पर कश्शाफ़ के हवाले से लिखा है कि उससे बढ़कर चादर वालों की फ़ज़ीलत में कोई क़वी दलील नहीं। वह हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा और हसनैन करीमैन हैं। क्योंकि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन्हें बुलाया और हुसैन को गोद में लिया, हसन का हाथ पकड़ा और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत अ़ली आप के पीछे थे। पस मालूम हो गया कि आयत से मुराद हज़रत फ़ातिमा की औलाद और उनकी ज़ुर्रीयत है जिन्हें वह अपने बेटे कहते हैं और आपकी तरफ़ मन्सूब होते हैं।

आयते मुबाहला में अबनाअना व निसाअना व अंफ़ुसना से कौन लोग मुराद हैं?

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि **अंफ़ुसना** से मुराद हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। और **निसाअना** से मुराद जनाब सैयद फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं। और **अबनाअना** से मुराद हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा हैं। अ़रबी इबारत यह है। **क़ा ल जाबिर : अंफ़ुसना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम व अ़ली व निसाअना फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अबना अना अल-हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा।** (तफ़सीरे इब्ने कसीर पारा ३ सूरा आले इमरान सफ़ा ७६ तफ़सीरे कबीर जुज़उस्सामिन सफ़ा : ८६ पर लिखा है कि—**हाज़िहिल आयः दाल्लतु अ़ला अन्नल हसनु वल हुसैनु अलैहुम अस्सलामु कानन नबई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वअ़दा ऐं-यदऊ बनाउहू फ़दअ़ल हसनु वल हुसैनि फ़वजबएं यकू न इब्नैह।** यानी यह आयते करीमा दलील है इस बात की कि इमाम हसन और इमाम हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम हुज़ूर सरवरे कौनैन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बेटे हैं।

मुहतरम क़ारिईन किराम! आयते मुबाहिला की यह तफ़सीर दर–हक़ीक़त हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की अ़मली तफ़सीर है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने **'अबनाअना'** में अपने फ़र्ज़न्दों यानी इमाम हसन और इमाम हुसैन को पेश कर दिया कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह मेरे बेटे हैं; और **'निसाअना'** में अपने घर की औरतों में से अपनी सबसे चहीती बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा को पेश कर दिया और **'अंफ़ुसना'** की जगह ख़ुद अपनी ज़ाते गिरामी और हज़रत मौला अ़ली को पेश कर दिया। इससे आप अन्दाज़ा लगाएं कि क़ुरआन मजीद और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इस अ़मली तफ़सीर ने हज़रात पंजतन पाक यानी हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुम की फ़ज़ीलत को कितना बढ़ा दिया है। इसलिए उलमाए किराम ने फ़रमाया है कि हज़रात पंजतन पाक का वसीला दुआ की क़ुबूलियत के लिए अकसीरे आज़म है कि उनके वसीले से माँगी हुई दुआ इन्शाअ़ल्लाह रद्द न होगी।

मुहब्बते अहले-बैत और क़ुरआने हकीम

जब तक मुसलमानों के हाथों में क़ुरआने हकीम और अहले–बैते अतहार का दामन रहा वह कभी गुमराह और रुसवा नहीं हुए बल्कि हमेशा फ़तह व कामरानी उनके क़दम चूमती रही। लेकिन जैसे ही मुसलमानों ने उन दोनों के दामन से अपनी वाबस्तगी छोड़ी हर जगह ज़िल्लत व रुसवाई उनके सामने आती चली गयी। आज जो आ़लमे इस्लाम के मुसलमानों पर मुट्ठी भर इसराईलियों का दबदबा और ग़ल्बा है उसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि मुसलमानों ने क़ुरआने हकीम और अहले–बैते नुबुव्वत को भुला दिया। आज भी वक़्त है अगर मुसलमान वही सुर्ख़ुरूई और फ़तह व कामरानी चाहता है तो अपने आपको क़ुरआने हकीम और अहले–बैते नुबुव्वत से वाबस्ता कर ले और अपने दिल को अहले–बैते नुबुव्वत की मुहब्बत का मदीना बना ले तो इन्शाअ़ल्लाह फ़तह व कामरानी फिर तुम्हारे क़दम चूमेगी।

अहले–बैते अतहार की मुहब्बत का मक़ाम और उसकी अहमियत इतनी ज़्यादा है कि ख़ुद ख़ुदा ने अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इरशाद फ़रमाया कि **कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरन इल्लल मवद्द त फ़िल-क़ुर्बा** (सूरह शूरा पारा २५ रुकूअ़ ४) तुम फ़रमाओ मैं उस पर तुमसे कुछ उजरत नहीं माँगता मगर क़राबत की मुहब्बत। यानी मैं तुमसे अपने क़राबतदारों की मुहब्बत का मुतालबा करता हूँ।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शाने नुज़ूल और तफ़सीली ब्यान

इस आयते करीमा के शाने नुज़ूल के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर सदरुल–अफ़ाज़िल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी अ़लैहिर्रहमः अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत सैयदना इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अंसार ने देखा कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और (बज़ाहिर) माल भी कुछ नहीं है तो उन्होंने आपस में मशवरा किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक़ूक़ और एहसानात याद करके हुज़ूर की खिदमते आ़लिया में पेश करने के लिए बहुत–सा माल जमा किया और उसको लेकर हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बारगाहे आ़लिया में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत मिली। हम ने गुमराही से नजात पायी। हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़्यादा हैं इसलिए हम खुद्दामे आस्ताना यह माल आपकी ख़िदमत में नज़र के लिये लाए हैं। उम्मीद है कि हुज़ूर क़ुबूल फ़रमा कर हमारी इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाएंगे। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने वह अमवाल वापस फ़रमा दिए।

साहिबे तफ़सीरे कबीर हज़रत इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमः तफ़सीरे कश्शाफ़ के हवाले से लिखते हैं कि **लम्मा न ज़ लत हाज़िहिल आयः क़ी ल या रसूलल्लाहि! मन क़राबति क हाउलाइल्लज़ी न व जबत अ़लैना मवद्दतुहुम फ़क़ा ल अ़लीय्यन व फ़ाति म त व अबनाहुमा** (तफ़सीरे कबीर अल–जुज़उस्साबी वल इशरून सफ़ा : १६६)

जब यह आयत **(कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरा)** नाज़िल हुई तो सहाबए किराम ने बारगाहे नब्वी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आपके वह कौन रिश्तेदार हैं जिनकी मोहब्बत हम पर वाजिब कर दी गई है। इमामुल–अंबिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : वह अ़ली, फ़ातिमा और उनके दोनों फ़र्ज़न्द (इमाम हसन व इमाम हुसैन) हैं। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने एक खुतबे में इरशाद फ़रमाया :

मन अ़ र फ़नी फ़क़द अ़ र फ़नी व मल लम यारिफ़नी फ़अनल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हसनुबनु मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुम्म म तला वत्तबअ्तु मिल्लल त आबाई इबराहीम (आय:) सुम्म म क़ा ल अनबनुल बशीरु अनबनुन्नज़ीरु सुम्म म क़ा ल व अना मिन अह्लिल बैतिल्लज़ीनफ़ त र ज़ल्लाहु अ़ज़्ज़ व जल ल मवद्दतहुम व मवालातहुम फ़ क़ा ल फ़ीमा अन्ज़ ल अ़ला मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। **कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरन इल्लल मवद्द त फ़िल-कुर्बा** (अस्सवाइकुल मुहर्रक़ा सफ़ा : ५७०)

यानी जो मुझे पहचानता है वह तो मुझे पहचानता ही है और जो नहीं पहचानता वह भी जान ले कि मैं हसन हूँ, फ़र्ज़न्दे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई **वत्तबअ्तु मिल्ल त आबाई इबराहीम** (आख़िर तक), फिर फ़रमाया : मैं बशीर व नज़ीर का फ़र्ज़न्द हूँ और मैं अहले–बैते नुबुव्वत से हूँ जिनकी मुहब्बत व दोस्ती अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने तुम पर फ़र्ज़ फ़रमाई है। इस बारे में उसने अपने महबूब हज़रत सैयदना मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर यह आयत **कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरा** नाज़िल फ़रमाई है।

तबरानी ने रिवायत ब्यान फ़रमाई है जब हज़रत सैयदना इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपने वालिदे गिरामी हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत के बाद असीरी की हालत में दमिश्क़ की एक जगह पर खड़ा किया गया तो एक ज़ालिम जफ़ाकार शामी ने आप से कहा : **अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी क़ त लकुम वस्तासलकुम व क़ त अ़ क़रनल फ़ितन:। फ़ क़ा ल लहू अमा क़ र त कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरन इल्लल मवद्द त फ़िल-कुर्बा। क़ा ल व अन्तुम हुम? क़ा ल नअ़म।**

(अस्सवाइकुल–मुहर्रक़ा सफ़ा : ५७१–व तफ़सीर इब्ने कसीर सूरह शूरा सफ़ा : १३)

ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुम्हारा ख़ात्मा किया और तुम्हारी जड़ों को काटा और फ़ितनागरों को मिटाया (मआज़ल्लाह) आपने उससे फ़रमाया : क्या तूने क़ुरआने करीम में यह आयत नहीं पढ़ी **कुल ला असअलुकुम अ़लैहि अजरा।** उसने कहा क्या वह तुम हो? फ़रमाया : हाँ! बिला शुब्हा।

हज़रत अ़ल्लामा नबहानी ने भी इस वाक़िआ को लिखा है। इस वाक़िआ के बाद वह लिखते हैं कि मैं इस बदबख़्त को ईमान वाला नहीं समझता।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इसलिए कि एक ईमानदार शख़्स जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया है उसकी ज़ुबान से कभी भी ऐसे क़बीह और मुलहिदाना कलिमात निकल ही नहीं सकते।

हम कहते हैं कि ऐसे बदबख़्त और मुलहिद के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो जिगर गोशए रसूल, राहते जान, ख़ातूने जन्नत के शहीद किए जाने पर ख़ुश हो और अल्लाह का शुक्र अदा करता हो। मैं, अल्लाह और रसूल का उस मुलहिद से ज़्यादा दुशमन किसी को नहीं समझता।

हम सगे बारगाहे अह्ले–बैत कहते हैं कि इस ज़माने में भी ऐसे बदबख़्त और मुलहिद बेईमान लोग बहुत मिलेंगे जो अह्ले–बैते नुबुव्वत और ख़ानदाने रिसालत और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से नफ़रत और दुशमनी करते हैं और उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब के आयात व अहादीस को ज़ईफ़ और ग़लत माना देकर उनके मनाक़िब को ख़त्म करने की नापाक कोशिश कर रहे हैं। उनकी मुक़द्दस ज़ात पर तरह–तरह के रकीक और नाज़ेबा कलिमात अदा करके उनकी शान को घटाने की सई–ए–ला हासिल करते हैं। जब कोई मुहिब्बे अह्ले–बैते, आ़शिक़े रसूल, साहिबे इल्म व फ़ज़्ल उन मुक़द्दस हज़रात की तारीफ़ व तौसीफ़ ब्यान करता है तो उन यज़ीदियों और ख़ारजियों के चेहरे बदल जाते हैं और फ़ौरन ऐसी हदीस को ज़ईफ़ साबित करने के लिए उठ खड़े होते हैं और अपने आपको दुशमनाने अह्ले–बैत की सफ़ में शामिल कर लेते हैं। ऐसा ही एक बदबख़्त इब्ने यज़ीद, ख़ारजी, बेईमान और मुलहिद फ़ासिक़ व फ़ाजिर औरंगाबाद (महाराष्ट्र) की सरज़मीन पर पैदा हुआ है जो हज़रत इमाम आ़ली मक़ाम सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु और आपके रुफ़क़ाए किराम को बाग़ी क़रार दे रहा है और यज़ीद जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स को जन्नती साबित करने में सफ़हात के सफ़हात सियाह करके अपने ईमान से हाथ धो बैठा है। ऐसे ही नापाक और नाहन्जार यज़ीदियों के लिए हम एक बहुत ही मशहूर और मारूफ़ बुज़ुर्ग, जो तमाम अ़क़ाइद वालों के नज़दीक मुसल्लम व मोतबर शख़्सियत हैं, उनकी एक मशहूर व मारूफ़ तफ़सीर **"तफ़सीरे कबीर"** से अह्ले–बैते अतहार की फ़ज़ीलत में और उनसे बुग्ज़ व हसद रखने वालों के लिए बतौरे इबरत उन तमाम अहादीसे करीमा को नक़ल कर रहे हैं। साहिबे तफ़सीरे कबीर हज़रत अ़ल्लामा इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमः लिखते हैं कि हुज़ूर नबी करीम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : **मम मा त अ़ला हुब्बि आलि मुहम्मदिम मा त शहीदन** जो अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा उसने शहादत की मौत पाई। और फ़रमाया **अला व मम मा त अला हुब्बि आले मुहम्मदिम् मा त मग़फ़ूरल लहू** आगाह हो जाओ जो शख़्स अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा वह ऐसा है कि उसके गुनाह बख़्श दिए गए। और फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आले मुहम्मदिन मा त ताइबन** आगाह हो जाओ जो शख़्स अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा वह गुनाहों से ताइब होकर मरा। फिर फ़रमाया : **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आले मुहम्मदिम मा त मूमिनम मुस्तकमिलुल ईमान** ख़बरदार हो जाओ जो शख़्स अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा वह मुकम्मल ईमान के साथ इन्तक़ाल किया। और फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आलि मुहम्मदिन बशशरहु म ल कुल मौत बिल जन्नति सुम्मम मुन्कर व नकीर** आगाह हो जाओ जो अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा उसे हज़रत इज़राईल (मौत के फ़रिशते) और मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत देंगे। फ़िर इरशाद फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आलि मुहम्मदिन यज़िफ़ु इलल जन्नति कमा यज़िफ़ुल उरूसु इला बैति ज़ौजिहा** आगाह हो जाओ जो अह्ले-बैत की मोहब्बत में मरा उसको ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा जैसे दुल्हन को उसके शौहर के घर ले जाया जाता है। और फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आले मुहम्मदिन फ़ु त ह लहू फ़ी क़बरिही बाबाने इलल जन्नः** ख़बरदार हो जाओ जो अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा उसकी क़ब्र में जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिए जाएंगे। फ़िर फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आलि मुहम्मदिन जअ़लल्लाहु क़बरहू मज़ारि मलाइकतिर्रहमः** आगाह हो जाओ जो अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा अल्लाह तआ़ला उसकी क़ब्र को रहमत के फ़रिशतों की ज़ियारतगाह बना देगा। फ़िर इरशाद फ़रमाया **अला व मम मा त अ़ला हुब्बि आलि मुहम्मदिम मा त अ़लस्सुन्नति वल जमाअ़:** ख़बरदार हो जाओ जो अह्ले-बैत की मुहब्बत में मरा वह मसलके हक़्क़: अह्ले-सुन्नत व जमाअ़त पर मरा। (तफ़सीरे कबीर अल-जुज़्उस्साबे वल-इशरून सफ़ा : १६५-१६६ तफ़सीरे कश्शाफ़ अल-जुज़्उस्सालिस सफ़ा : ४६७)

यह सारी बशारतें और ख़ुशख़बरियाँ उन लोगों के लिए हैं जो अह्ले-बैते अतहार और ख़ानदाने नुबुव्वत से मुहब्बत व उलफ़त रखते हैं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और अपने हर क़ौल व फ़ेल और अपनी तहरीरों से अहले–बैत की मुहब्बत का इज़हार फ़रमाते हैं।

इन्शाअल्लाह आइन्दा सफ़हात में आप अहले–बैत के फ़ज़ाइल पर चालीस अहादीस का एक मजमूआ पढ़ेंगे तो ईमान ताज़ा हो जाएगा। जो लोग अहले–बैते रिसालत और ख़ानदाने रिसालत से बुग्ज़ व हसद रखते हैं और अपने क़ौल व फ़ेल और अपनी तहरीरों से उन मुक़द्दस नुफ़ूस की शान में गुस्ताख़ियाँ करते हैं उनके लिए चन्द अहादीस पेश क़ी जाती हैं।

हुज़ूर फ़ख़्रे काइनात सैयदुल इन्स वल जिन्न सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं **अला मम मा त अ़ला बुग्ज़े आलि मुहम्मदिम जा अ यौमल-क़्यामति मकतूबम बै न ऐनैहि आयसुम मिर्रहमतिल्लाह** आगाह हो जाओ जो अहले–बैत की बुग्ज़ व दुशमनी में मरा वह क़्यामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसकी दोनों आँखों के दरमियान लिखा होगा "अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद" और फ़रमाया **अला मम मा त अ़ला बुग्ज़े आलि मुहम्मदिम मा त काफ़िरन** ख़बरदार हो जाओ जो अहले–बैत की दुशमनी व बुग्ज़ में मरा, वह काफ़िर मरा। और इरशाद फ़रमाया **अला व मम मा त अला बुग्ज़ि आले मुहम्मदिक लम यशुम्मु राइहतल जन्नः** आगाह हो जाओ जो अहले–बैत की बुग्ज़ व अ़दावत में मरा वह जन्नत की ख़ुशबू से महरूम हो गया।

(तफ़सीर कबीर अल–जुज्उस्साबे वल इशरून सफ़ा : १६६)

नोटः- पूरी हदीसे पाक में **आले मोहम्मद** का तर्जुमा अहले–बैत से इस लिए किया गया कि अहले–बैत के आले रसूल होने में किसी का इख़तिलाफ़ नहीं। दूसरों को आले रसूल होना इख़्तलाफ़ी है। तफ़सील के लिए तफ़सीरे कबीर अल–जुज़्उस्सांबे वल इशरून (अ़रबी) (हिस्सा २७) का मुतालआ़ फ़रमा लें।

अब उन गुस्ताख़ाने अहले–बैत को सोचना चाहिए कि उनका ठिकाना किधर है ? यज़ीद जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर इन्सान को अमीरुल–मोमिनीन, जन्नती और इमाम आ़ली मक़ाम सैयद इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मआ़ज़ल्लाह सद मआ़ज़ल्लाह ! बाग़ी, गुनहगार, और मुजरिम कहने और लिखने वालो अपने अन्जाम को सोचो। एक–न–एक दिन मरना है। अब भी वक़्त है। तौबा का दरवाज़ा बन्द नहीं हुआ है। बारगाहे ख़ुदावन्दी में बवसीलए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम माफ़ी माँग कर अहले–बैते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अतहार के चौखट के सग बन जाओ। इसलिए कि यह वही घर है जहाँ से तुम्हें नजात का परवाना मिलेगा; यही वह घर है जो सफ़ीनए नजात है। इन्हीं के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे रसूल है कि अगर उनको छोड़ोगे तो ग़र्क़ हो जाओगे। इसलिए ऐ इमामैन करीमैन के नाना जान का कलिमा पढ़ने वालो! अपने नबी के हक़ को पहचानो और उनके अहले–बैत से अक़ीदत व मुहब्बत रखो, इन्शाअल्लाह! अल्लाह और उसके रसूल की खुशनूदी तुम्हें ज़रूर हासिल होगी। इसलिए आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अ़लैहिर्रहमः ने क्या ख़ूब कहा है –

क्या बात रज़ा इस चमनिस्ताने करम की।
ज़ुहरा है कली जिसकी हुसैन और हसन फूल

आयते मवद्दत में क़ुर्बा से कौन लोग मुराद हैं

आयते करीमा में क़ुर्बा से कौन लोग मुराद हैं? इसके मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्दिद अक़्वाल हैं। एक क़ौल यह है कि उससे हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा और हज़रात हसनैन करीमैन मुराद हैं। एक क़ौल यह है कि उससे आले अ़ली व आले अ़क़ील और आले जाफ़र मुराद हैं। एक क़ौल यह है कि इससे अज़्वाजे मुतह्हरात और वह रिश्तेदार मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है। (तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान)

लेकिन जैसा की आपने मज़कूरा बाला हदीसे पाक में पढ़ा कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो सहाबा–ए–किराम के पूछने पर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बिल्कुल वाज़ेह तौर पर फ़रमा दिया कि मुहब्बत व मवद्दत के सही हक़दार अ़ली, फ़ातिमा और उनके दोनों साहबज़ादे हैं। क़ुरआने हकीम हुज़ूर सैयदुल–अंबिया सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। तो जब साहिबे क़ुरआन ने खुद उसकी तफ़सीर फ़रमा दी तो फिर तावीलों और दीगर अक़्वाल की क्या ज़रूरत रह जाती है ? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मालिक व मुख़्तार हैं। साहिबे इख़्तियारे नबी हैं। जिसको चाहें जो एजाज़ अ़ता फ़रमाएं उनका यह करम है। इसीलिए सरकारे आला हज़रत अ़लैहिर्रहमः फ़रमाते हैं :

ख़ालिक़े कुल ने आपको मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आपके क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सख़ावते अह्ले-बैत और कुरआने हकीम

अह्ले–बैते अतहार का तअ़ल्लुक़, उनकी परवरिश और तरबीयत का पूरा–पूरा मामला हुजूर सैयदुल अंबिया वल–मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुक़द्दस व मुतह्हर ज़ाते करीमा से रहा। उसी तअ़ल्लुक़ और तालीम व तरबीयत का यह असर है कि अह्ले–बैते नुबुव्वत में हुजूर सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अख़लाक़े हसना, आदाते करीमा, ईसार व कुर्बानी और ग़रीबों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ल्बी मुहब्बत का असर उन हज़रात अह्ले–बैते नुबुव्वत पर भी पड़ना यक़ीनी अम्र है। इस वक़्त हम ऐसा ही एक वाक़िआ जो अह्ले–बैत नुबुव्वत की ग़ुर्बानवाज़ी से तअ़ल्लुक़ रखता है, क़ारिईन की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। यह वाक़िआ ऐसा है कि अल्लाह तबारक व तआला ने भी अह्ले–बैते नुबुव्वत के इस फ़ेल पर इतना खुश हुआ कि अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इस वाक़िआ को ब्यान फ़रमा दिया। मुलाहज़ा फ़रमाइए –

पूरा वाक़िआ हम तफ़सीरे कबीर (अ़रबी) अल–जुज़्उत्तासि वल–इशरून सफ़ा : २४४–तफ़सीर मुवज़्जेहुल क़ुरआन सफ़ा : ६०८ तफ़सीर हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा : ६४४ और तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान मुसन्निफ़ अ़ल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अ़लैहिर्रहमः के हवाले से तहरीर कर रहे हैं कि जमहूर मुफ़स्सिरीन इस बात पर हैं। रावी हज़रत सैयदना इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा हैं। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बीमार हुए तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा–ए–किराम की एक जमाअ़त के साथ हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की अ़यादत के लिए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तशरीफ़ ले गए। तो किसी सहाबी ने या ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को मशवरा दिया कि तुम्हारे फ़र्ज़न्द बीमार हैं तो अल्लाह के लिए कुछ नज़र मान लो। चुनांचे हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा और आपकी लौंडी हज़रत फ़िज़्ज़ा ने तीन रोज़ों की नज़्र मानी। दोनों शहज़ादे अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से बहुत जल्द सेहतयाब हो गए। तो उन तीनों हज़रात ने रोज़े रख लिए। मगर काशानए मौला अली में उस दिन खाने के लिए कुछ भी नहीं था। हज़रत अली शमऊन ख़ैबरी यहूदी के पास गए और तीन साअ् जौ बतौर क़र्ज़ ले आए। हज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक तिहाई हिस्सा जौ अपने हाथ से पीसा और पाँच आदमियों के हिसाब से शाम की रोटियाँ तैयार फ़रमा लीं और इफ़्तार के वक़्त खाना सामने लाकर रख दिया। अभी रोज़ा इफ़्तार करने की तैयारी थी अचानक एक शख़्स काशानए अली पर आवाज़ देता है। ऐ अह्ले–बैते रसूलुल्लाह! मैं एक मिस्कीन मुसलमान हूँ, भूखा हूँ, तुम्हारे दरवाज़े पर आया हूँ। अल्लाह के नाम पर कुछ खाना दे दो अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत के ख़्वानों पर खिलाएगा। यह सुन कर उन मुक़द्दस हज़रात ने वह सारी रोटियाँ उस मिस्कीन के हवाले कर दीं और ख़ुद पानी पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लिया और सो गए। दूसरे रोज़ फ़िर रोज़ा रखा और एक तिहाई जौ की रोटियाँ बनाईं। और जब इफ़्तार करने बैठे तो फ़िर दरवाज़े पर दस्तक हुई और कोई आवाज़ देने वाला आवाज़ दे रहा है कि ऐ अल्लाह के रसूल के घर वालो! मैं यतीम हूँ, भूखा हूँ, मुझे अल्लाह के लिए कुछ खाना दे दो। उन हज़रात ने फिर तमाम रोटियाँ उस यतीम को दे दीं और ख़ुद पानी पी कर रोज़ा इफ़्तार कर लिया। तीसरे रोज़ फ़िर रोज़ा रखा और बक़िया जौ को पीस कर रोटियाँ बनाईं कि अचानक फिर एक साइल ने आवाज़ दे दी। ऐ अह्ले–बैत अतहार! मैं असीर (क़ैदी) हूँ, भूखा हूँ, अल्लाह के लिए कुछ खाना दे दो। तीसरे रोज़ भी उन हज़रात ने तमाम की तमाम रोटियाँ उस क़ैदी को दे दीं और ख़ुद पानी से रोज़ा इफ़्तार कर लिया। और ख़ुदा वन्द क़ुद्दूस का शुक्र अदा किया कि अब हमारी नज़्र पूरी हो गई।

चौथे रोज़ सुबह उठे तो भूख की शिद्दत और ज़ोफ़ से चलने फ़िरने की ताक़त न थी। हज़रत मौला अली ने हज़रात हसनैन का हाथ पकड़ा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमतें आलिया में ले गए। दोनों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

साहिबज़ादे भूख की शिद्दत की वजह से काँप रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनको देखा तो रंज पैदा हुआ। फ़िर आप हज़रत अ़ली के काशाने पर हाज़िर हुए। उस वक़्त हज़रत सैयदा नमाज़ पढ़ रही थीं। हुज़ूर ने उनको देखा तो बहुत बेक़रार हो गए। यहाँ तक कि आँखें अश्कबार हो गयीं। उसी वक़्त हज़रत जिब्राईले अमीन अ़लैहिस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपके अह्ले–बैत को मुबारक हो, अल्लाह तआ़ला उनकी शान में अपने मुक़द्दस कलाम में फ़रमा रहा है कि :

यूफ़ू न बिन्नज़रि व यख़ाफ़ू न यौमन का न शर्रुहू मस्ततीरा । व युतइमूनत्तआ़ म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनौं व यतीमौं व असीरा।इन्नमा नुतइमुकुम लिवजहिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम जज़ाऔं वंला शुकूरा।

(सूरह दहर पारा २६)

यानी अपनी मिन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई फैली हुई है। और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को। उनसे कहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए खाना देते हैं। तुमसे कोई बदला या शुक्रगुज़ारी नहीं माँगते।

(कन्ज़ुल–ईमान)

अल्लाह! अल्लाह! यह है सख़ावते अह्ले–बैत रसूलुल्लाह की कि तीन दिन से लगातार सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर लिया और अपने हिस्से की तमाम रोटियाँ साइल को दे दीं। लेकिन साइल को वापस नहीं किया। क्या कोई ऐसी मिसाल पेश कर सकता है ?

अल्लाह तआ़ला हमें और तमाम मुसलमानों को अह्ले–बैत अतहार के तुफ़ैल ऐसा ही जज़्बा–ए–ईसार अ़ता फ़रमाए।

आमीन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अहले-बैत पर दुरूद और कुरआन मजीद

हुजूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद व सलाम भेजना वाजिब है। हर एक मजलिस में आपके ज़िक्र करने वाले पर और सुनने वाले पर भी एक मर्तबा वाजिब और उससे ज़्यादा मुस्तहब है। यही क़ौल मोतमद है और इस पर जमहूर उलमा का फ़तवा है। और आपके ताबे करके आपके आल व असहाब पर भी दुरूद शरीफ़ भेजा जा सकता है। यानी आपके नामे अक़दस के बाद आपकी आल को शामिल किया जा सकता है। मगर मुस्तक़िल तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सिवा उनमें से किसी पर दुरूद शरीफ़ भेजना मकरूह है। हुजूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शाने पाक के मुतअ़ल्लिक़ इरशादे ख़ुदावन्दी है –

इन्नल्ला ह व मलाइकतहू युसल्लू न अ़लन्नबीय याऐय्युहल्लज़ी न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा। (सूरह अहज़ाब–प–२२)

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर। ऐ ईमान वालो! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

(कन्ज़ुल–ईमान)

शाने नुज़ूल

हज़रत काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हमने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम **क़द अ़ल्लमना कै फ़ नुसल्लिमु अ़लै क** **क़ा ल क़ूलू अल्लाहुम्म म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मिदिन**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com..

कमा सल्लै त अ़ला इबराही म व अ़ला आलि इबराही म इन्न न क हमीदुम्मजीद। (अशअ़तुल–लम्आत जिल्द दोम–सफ़ा : २६६)

बेशक अल्लाह तआ़ला ने हमें सिखा दिया है कि आप पर सलाम किस तरह पढ़ें। अब आप फ़रमाएं कि हम आप पर दुरूद किस तरह पढ़ें? तो फ़रमाया : यूं कहो, ऐ अल्लाह! दुरूद भेज हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपकी आ़ल पर जैसा की दुरूद भेजा तूने हज़रत इब्राहीम और उनकी आल पर। बेशक तू हम्द व बुर्ज़ुगी वाला है।

एक रिवायत में फ़रमाया : यूं कहो **अल्लाहुम्म म सल्ले अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला अज़वाजिही व जुर्रियतिही कमा सल्लै त अ़ला इब्राही म इन्न न क हमीदुम मजीद।** (अशअ़तुल–लम्आत जिल्द दोम सफ़ा : २६८)

ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा (हज़रत) मुहम्मद और आपकी अज़वाज और आपकी औलाद पर जैसा कि तूने रहमत नाज़िल फ़रमाया आले इब्राहीम पर। बेशक तू हम्द व बुर्ज़ुगी वाला है।

ग़ौर फ़रमाइए सहाबा–ए–किराम ने अपने सवाल में यह दर्याफ़्त नहीं किया कि आप पर और आपके अह्ले–बैत पर कैसे दुरूद भेजें? बल्कि सिर्फ़ आप पर दुरूद भेजने की कैफ़ियत पूछी ? मगर आपने अपनी तबईय्यत में अपने अह्ले–बैत को भी अपने साथ मिला लिया। बल्कि जिस दुरूद में आपके साथ आपके अह्ले–बैत को न मिलाया जाए उसे नाक़िस क़रार दिया। कामिल दुरूद वह है जिसमें आपके साथ आपके अह्ले–बैत का नाम भी शामिल हो। चुनांचे फ़रमाया :

ला तुसल्लू अ़लैयस्सलातल बुतरा फ़क़ालू वमस्सलातुल बुतरा क़ा ल तक़ूलू न अल्लाहुम्म म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन व तुमसीकू न बल क़ुलू अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन।

(अस्सवाइक़ुल–मुहर्रक़ा–सफ़ा : ४६५)

मुझ पर नाक़िस दुरूद न भेजा करो। सहाबा ने पूछा : या रसूलल्लाह! नाक़िस दुरूद कौन–सा है ? फ़रमाया : तुम कहते हो **अल्लाहुम्म म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन** और यहीं रुक जाते हो बल्कि यूं कहा करो **अल्लाहुम्म म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन** यानी आल का नाम लिए बग़ैर पढ़ना नाक़िस है और आल के नाम के साथ पढ़ना कामिल दुरूद शरीफ़ है।

हज़रत अबू मस्ऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि क़ा ल **रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम : मन सल्ला सलातल लम**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

युसल्लि फ़ीहा अ़लैया व अ़ला अहले-बैती लम तुक़बलु मिन्हु।

(इमाम पाक और यज़ीद सफ़ा : २४६)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो नमाज़ पढ़े और उसमें मुझ पर और मेरे अह्ले–बैत पर दुरूद न पढ़े उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी।

चुनांचे इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह के नज़दीक तशह्हुद में आप पर और आपके अह्ले–बैत पर दुरूद पढ़ना वाजिब है। इस सिलसिले में उनके यह अशआ़र बहुत ही मशहूर व मारूफ़ हैं –

या अह्ले–बैते रसूलिल्लाहि हुब्बुकुम
फ़र्ज़ुम मिनल्लाहि फ़िल क़ुरआने अन्ज़लहू
यकफ़ीकुम मिन अ़ज़ीमिल क़द्रे इन्नकुम
मल लम युसल्लि अ़लैकुम ला सलात लह

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ५०१)

ऐ अह्ले–बैते रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी मुहब्बत को फ़र्ज़ क़रार दिया है उस क़ुरआन में जिसको उसने नाज़िल किया है। तुम्हारी अ़ज़मत व शान के लिए यही काफ़ी है कि जिसने तुम पर दुरूद नहीं पढ़ा उसकी नमाज़ ही क़ुबूल नहीं।

वैलमी ने ब्यान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम और अह्ले–बैत पर दुरूद न पढ़ा जाए, दुआ़ क़ुबूलियत से रुकी रहती है।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ५७७)

अबू–दाऊद ने रिवायत की है कि जो शख़्स हम अह्ले–बैत पर दुरूद पढ़कर पूरा–पूरा सवाब का वज़न लेकर ख़ुश होना चाहता है वह कहे **अल्लाहुम्म म सल्लि अ़लन्नबीई मुहम्मदिंव व अज़्वाजिही उम्महातिल मोमिनी न व ज़ुर्रियतिही व अह्ले बैतिही कमा सल्लै त अ़ला इबराही म इन्न न क हमीदुम्मजीद।** (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ४९६)

बहरहाल हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का सलात व सलाम में अपने अह्ले–बैते अतहार का अपने साथ मिलाना उनकी अ़ज़मत व शान की बहुत बड़ी दलील है।

दुरूद व सलाम के फ़ज़ाईल व मसाइल के लिए मुअल्लिफ़े हाज़ा की किताब **'फ़ज़ाइले दुरूद व सलाम'** का मुताला किया जाए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैते अतहार और अहादीसे करीमा

हुज़ूर नबीए करीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के अह्ले–बैते अतहार के फ़ज़ाइल आसमान के तारों और ज़मीन के ज़र्रों की तरह बेशुमार व बे–इन्तिहा हैं। और क्यों न हों कि जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के रुमाल से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपना दस्ते मुबारक पोंछ लें तो वह रुमाल आग में न जले। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बौले शरीफ़ (पेशाब) पी लें तो उनके पेट का दाइमी दर्द ख़त्म हो जाए और आइन्दा कभी पेट का मर्ज़ न होने की बशारत मिल जाए। उम्मुल–मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जब आपका बौले शरीफ़ पी लिया तो उन्हें जहन्नम से नजात का परवाना मिल गया। तो वह नुफ़ूसे कुद्दसिया जिन्हें अह्ले–बैते अतहार के नाम से याद किया जाता है जिनका ख़मीर ख़ूने सैयदुल–मुर्सलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मिला हुआ और जिनके मुतअ़ल्लिक़ आपने फ़रमाया हो कि यह मुझसे हैं और मैं इनसे हूँ तो उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब का कोई शुमार कर सकता है ?

अह्ले–बैते नुबुव्वत के फ़ज़ाइल क़ुरआने करीम की रौशनी में आपने गुज़िशता सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमाया। अब हम अह्ले–बैत के फ़ज़ाइल अहादीसे करीमा की रौशनी में पेश करने की सआ़दत हासिल कर रहे हैं:

१. हदीसे सक़लैन

हदीसे सक़लैन दरहक़ीक़त हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम की एक वसीयत है जो मुतअ़द्दिद सहाबा किराम से मरवी है। हम यहाँ पर मुस्लिम शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : २७६ की रिवायत जो मशहूर सहाबीए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रसूल हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है, तहरीर कर रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि क़ा म रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यौमन फ़ीना ख़तीबन बिमाइन युदआ़ ख़ुम्मा बै न मक्क त वल मदीन त फ़हमिदल्ला ह व असना अ़लैहि व व अ ज़ व ज़क्क र सुम्म म क़ा ल अम्मा बाद ! अला ऐय्युहन्नासु इन्नमा अ न बशरुं यूशिकु ऐंय्यातियनी रसूलु रब्बी फ़उजी ब व अ न तारिकुन फ़ीकुमुस्सक़लैनि अव्व ल हुमा किताबुल्लाहि फ़ीहिल हुदा वन्नूरु फ़ख़ुज़ू बिकिताबिल्लाहि वस्तमसिकू बिही फ़हस स अ़ला किताबिल्लाहि व रग़ ब फ़ीही सुम्म म क़ा ल व अहलु बैती उज़क्किरुकुमुल्ला ह फ़ी अह्लेबैती उज़क्किरुकुमुल्ला ह फ़ी अह्लेबैती उज़क्किरुकुमुल्लाह फ़ी अह्लेबैती। एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मक्का और मदीना के दरमियान उस पानी के मक़ाम पर जिसे ख़ुम कहा जाता है, खड़े होकर ख़ुतबा दिया। जिसमें अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना की और वाज़ व नसीहत फ़रमाई। फ़िर हम्द व सना के बाद फ़रमाया : लोगो! ख़बरदार हो जाओ मैं एक बशर हूँ। अन्क़रीब मेरे पास मेरे रब का क़ासिद आ जाए और मैं उसका बुलावा क़ुबूल कर लूँ। और मैं तुम लोगों में दो वज़नी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। जिनमें पहली तो अल्लाह तआ़ला की किताब है जिसमें हिदायत व नूर है। तुम अल्लाह की किताब लो और उसे मज़बूती से पकड़ लो। फ़िर किताबुल्लाह पर उभारा और तरग़ीब दी। फ़िर फ़रमाया और (दूसरी चीज़) मेरे अह्ले–बैत हैं। मैं तुमको अपने अह्ले–बैत के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह से डराता हूँ। मैं तुमको अपने अह्ले–बैत के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह से डराता हूं, मैं तुमको अपने अह्ले–बैत के मुतअल्लिक़ अल्लाह से डराता हूं।

क़ारिईने किराम! हदीसे सक़लैन के आख़री जुमले पर जिसे हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन बार फ़रमाया, बड़ी अहमीयत व अफ़ज़लीयत का हामिल है। इससे यह मतलब हासिल होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने अह्ले–बैत के मुतअ़ल्लिक़ अपनी उम्मत को यह याददहानी फ़रमा रहे हैं कि मेरे अह्ले–बैत का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखना। उनकी ताज़ीम व तकरीम में कभी फ़र्क़ न आने देना और उनके हुक़ूक़ वग़ैरा बराबर अदा करते रहना। दूसरी बात जो इस हदीस से हासिल होती है वह यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ैब–दां नबी हैं। आपको इस बात का इल्म था कि मेरे अह्ले–बैत अतहार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

में से जो ख़ास मेरे फ़र्ज़न्द हैं यानी हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा उनको तरह–तरह की तकालीफ़ दी जाएंगी और उनके साथ नाज़ेबा सुलूक किया जाएगा कि उनमें से एक को ज़हर देकर और दूसरे को तीन दिन का भूखा प्यासा रखकर एक वीरान और चटियल मैदान में शहीद किया जाएगा। इसलिए आपने बतौरे ख़ास तीन बार इन मुक़द्दस नुफ़ूस के मुतअ़ल्लिक़ आगाही फ़रमा कर उम्मत को उनके साथ अच्छे सुलूक की वसीयत फ़रमा दी। लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस कि अपने आपको उम्मते मुहम्मदिया में शुमार करने वाले रसूले करीम का कलिमा पढ़ने वाले उन नाम निहाद मुसलमानों ने हज़रात हसनैन करीमैन और दीगर अहले–बैते अतहार पर जो मज़ालिम ढाए हैं। आलमे इन्सानियत ऐसे वाक़िआत पेश करने से क़ासिर है।

तीसरी बात यह कि हदीसे सक़लैन में ख़िताब सहाबा–ए–किराम से हो रहा था तो आप ग़ौर फ़रमाएं जब सहाबए किराम से अहले–बैत अतहार के हुक़ूक़ की ताकीद फ़रमाई जा रही है तो हम तुम किस शुमार में हैं। हमें उनका कितना अदब व एहतराम करना चाहिये और उनसे कितनी अ़क़ीदत व मुहब्बत रखनी चाहिये।

(२) क़ुरआन मजीद और अहले-बैत का दामन थामने वाला गुमराह न होगा

ऊपर जो हदीसे सक़लैन लिखी गई है वह मक़ामे ख़ुम में हुज़ूर अनवर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक अहम ख़ुतबा और अहले–बैते अतहार के लिए एक वसीयत–नामा है।

इसी क़िस्म का एक अहम ख़ुतबा हज्जतुल–विदा में अ़र्फ़ा के दिन रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़ारों सहाबा–ए–किराम के सामने ब्यान फ़रमाया था जिसे हम सु न ने तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा ७३५ के हवाले से सहाबा–ए–रसूल हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है, तहरीर फ़रमा रहे हैं। आप फ़रमाते हैं कि **अ़न जाबिरिन क़ा ल रऐतु रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़ी हज्जातेही यौ म अ़ र फ़ त व हु व अ़ला नाक़तिहिल क़सवा यख़तुबु फ़ समिअ़तुहू यक़ूलु**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

या ऐयुहन्नास! इन्नी तरकतु फ़ीकुम मा इन अख़ज़्तुम बिही लन तज़िल्लु किताबुल्लाहि व इतरती अहलु बैती। रिवायत है हज़रत जाबिर से, फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आपके हज में अर्फ़ा के दिन देखा जबकि आप अपनी ऊँटनी क़सवा पर ख़ुतबा पढ़ रहे थे। मैंने आपको फ़रमाते सुना : ऐ लोगो ! मैंने तुममें वह चीज़ छोड़ी है कि जब तक तुम उनको थामे रहोगे, गुमराह न होगे। अल्लाह की किताब और मेरी इतरत यानी अह्ले-बैत।

इस हदीसे पाक में भी सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम हिदायत चाहते हो और गुमराही और ज़लालत से अपने आपको दूर रखना चाहते हो तो मेरे अह्ले-बैत का दामन थाम लो, कभी गुमराह न होगे।

यह इरशादे आली भी सहाबए किराम जैसी मुक़द्दस जमाअत से हो रहा है। इससे आप अन्दाज़ा लगाएं कि अह्ले-बैते अतहार का दर्जा कितना बुलंद व बाला है कि सहाबा-ए-किराम से फ़रमाया जा रहा है कि अपने आपको अह्ले-बैते अतहार से वाबस्ता रखो। तो हम तुम किस शुमार व क़तार में हैं। हमें अह्ले-बैते अतहार का दामन थामना कितना ज़रूरी और अहम हो जाता है।

अह्ले-बैत से वाबस्ता रहने की एक और हदीस

हदीसे सक़लैन में अल्लाह के रसूल सलल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बार अपने अह्ले-बैत के हुक़ूक़ के बारे में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिलाया। उसके बाद की हदीस में अह्ले-बैत से वाबस्तगी का समरा यह ब्यान फ़रमाया कि अह्ले-बैत से वाबस्ता रहने वाले कभी गुमराह नहीं होंगे। अब जो हदीस पाक ब्यान की जा रही है उसमें आप का इरशादे गिरामी है कि मेरे अह्ले-बैत से जो लोग वाबस्ता होंगे और उनके हुक़ूक़ अदा करते रहेंगे तो क़यामत के दिन मेरे अह्ले-बैत उनकी सिफ़ारिश करेंगे।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म इस हदीसे पाक के रावी हैं। वह फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन्नी तारिकुन फ़ीकुम मा इन तमस्सकतुम बिही लन तज़िल्लू बादी अ ह दुहुमा आज़मु मिनल आख़िरी किताबुल्लाहि हबलुम मम्दूदुम मिनस्समाइ इलल अर्ज़े व इतरती अह्लु बैती वलैं यतफ़र्रक़ा हत्ता यरि द अलैयल हौ ज़ फ़न्ज़ुरू

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कैफ़ तख़्लुफ़ूनी फ़ीहिमा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६७)

बेशक ! मैं तुममें वह चीज़ छोड़ता हूँ कि अगर तुम उसे थामे रहोगे तो मेरे बाद गुमराह न होगे। उनमें से एक दूसरी से बड़ी है। अल्लाह की किताब जो ज़मीन से आसमान तक (नूर की) एक दराज़ रस्सी है। और मेरी इतरत यानी मेरे अह्ले–बैत। यह दोनों जुदा न होंगे, हत्ता कि मेरे पास हौज़ पर आ जाएं। तो ग़ौर करो तुम उन दोनों के साथ मेरे बाद क्या मामला करते हो।

इस हदीसे पाक में भी बिल्कुल वाज़ेह अल्फ़ाज़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे उम्मतियो! अगर तुम गुमराही व ज़लालत से बचना चाहते हो तो क़ुरआने हकीम और मेरे अह्ले–बैत से अपने आपको वाबस्ता कर लो। मगर अफ़सोस और दुख का मक़ाम है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतनी ताकीद फ़रमाने के बाद भी उम्मते मुहम्मदिया में अपने आपको शामिल करने वाले गिरोह ने क़ुरआने हकीम पर तरह–तरह के हमले किए और अह्ले–बैते अतहार की शान में गुस्ताख़ियाँ और बदसुलूकियाँ कीं जिससे तारीख़े इस्लाम के सफ़हात भरे पड़े हैं।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइले अहले-बैत के मुतअल्लिक़ ४० हदीसें

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया गया कि इल्म की गायत और मर्तबा कौन–सा है जिस पर पहुंच कर मर्द फ़क़ीह कहलाता है। और फ़ुक़हा के ज़ुमरे में शामिल होता और उनका सवाब पाता है ? रसूले करीम सल्लल्लाहु व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जो दीन से मुतअल्लिक़ चालीस हदीसें याद करे और लोगों तक पहुंचाए तो अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन गिरोहे फ़ुक़हा में उठाएगा। और मैं क़यामत के दिन उसके गुनाहों की शफ़ाअत करूंगा और उसके ईमान व ताअत की गवाही दूंगा। (मिश्कातुल–मसाबीह)

इस हदीसे पाक की रौशनी में सल्फ़ व ख़ल्फ़ अकाबिर उलमाए किराम ने हुज़ूर ताजदारे अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत के उम्मीदवार बनने और आपको शाहिद बनाने के लिए अरबईनियात (चालीस हदीसों) को जमा किया और उसे तहरीर फ़रमा कर शाये फ़रमाया।

इस हक़ीर फ़क़ीर सरापा तक़सीर सगे बारगाहे अह्ले–बैत ने भी चालीस हदीसों का एक मजमूआ अपनी तालीफ़ करदा किताब **'फ़ज़ाइले दुरूद व सलाम'** उर्दू और गुजराती में तहरीर किया है। अलहम्दुलिल्लाह! दारुल–उलूम मुहम्मदिया (बम्बई) में दरसे आलिया निज़ामिया की फ़राग़त के बाद सबसे पहले जिस तालीफ़ की मुझे तौफ़ीक़ हुई वह यही किताब **'फ़ज़ाइले दुरूद व सलाम'** थी।

अब दोबारा फिर इस नयी तालीफ़–करदा किताब में जो आपके हाथों में है **'फ़ज़ाइले अह्ले-बैत'** के तअल्लुक़ से चालीस हदीसों का एक मजमूआ हवालजात की रौशनी में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ। उम्मीद है कि शर्फ़े कुबूलियत से नवाज़ा जाएगा और मुहिब्बाने अह्ले–बैत के लिए भी एक मीनारए नूर होगा।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैत की फ़ज़ीलत पर चालीस हदीसें

(१) हज़रत मौला अ़ली कर्रमुल्लाह तआ़ला वजहहुल–करीम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हसनैन करीमैन के हाथ को अपने दस्ते मुबारका में लेकर फ़रमाया : जो मुझसे मेरे इन दोनों फ़रज़न्दों और उनके वालिदैन से मुहब्बत करेगा वह क़यामत के दिन मेरे साथ होगा और जन्नत के भी उस दर्जा में रखा जायेगा जहां मैं रहूंगा।

(शेफ़ा शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा ५६)

(२) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मेरे अह्ले–बैत उम्मत के लिए अ़मान हैं। जब अह्ले–बैत न रहेंगे तो उम्मत पर वह आएगा जो उनसे वादा[1] है। (१–यानी ज़ुहूरे किज़्ब)

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ५१४–अल–अमन वल उला सफ़ा २६)

(३) वैल्मी ने रिवायत की कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ १. अपने नबी की उल्फ़त व मुहब्बत २. अह्ले–बैते अतहार की उल्फ़त व मुहब्बत ३. क़ुरआने करीम की क़िर्अत (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ५७७)

(४) बैहक़ी और वैल्मी ने रिवायत किया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया :

कोई बन्दा–ए–मोमिने कामिल नहीं हो सकता यहां तक कि मैं उसको उसकी जान से ज़्यादा प्यारा न हूँ और मेरी औलाद उसको अपनी जान से ज़्यादा प्यारी न हो और मेरे अह्ल उसको अपने अह्ल से ज़्यादा महबूब न हों और मेरी ज़ात उसको अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न हो।

(सवानेहे करबला सफ़ा ५३)

(५) इमाम अहमद ने रिवायत किया कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स अह्ले–बैत से बुग्ज़ रखता है वह मुनाफ़िक़ है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ७६४)

(६) वैल्मी ने रिवायत किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो मुझसे तवस्सुल की तमन्ना रखता हो और यह चाहता हो कि उसको मेरी बारगाहे करम में रोज़े क़यामत हक़्क़े शफ़ाअ़त हो तो उसे चाहिये। कि वह मेरे अह्ले–बैत की न्याज़मन्दी करे और उनको हमेशा ख़ुश रखे। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़: ५८८)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(७) वैल्मी ने हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुममें ज़्यादा वेहतर वह है जो मेरे बाद मेरे अह्ले–बैत के लिये साबित हो। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६२२)

(८) हज़रत अबू–सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिसके दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है जिसने मेरे अह्ले–बैत से बुग्ज़ रखा ख़ुदावन्द क़ुद्दूस उसको दौज़ख में डालेगा।

(ख़साइसुल–कुब्रा जिल्द दोम सफ़ा ४६६)

(६) अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना मौला अ़ली मुशकिल कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरी इतरत यानी अह्ले–बैत और अन्सार के हुक़ूक़ को न पहचाने और उनके हुक़ूक़ अदा न करे तो उसमें उन तीन बातों में कोई एक बात ज़रूर होगी – या तो वह मुनाफ़िक़ होगा या ज़िना की औलाद होगा या फ़िर वह हैज़ व निफ़ास–जैसी नापाकी की हालत में उसकी माँ की पेट में रहा होगा। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ५८०)

(१०) वैल्मी ने हज़रत मौला अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैं ने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया : जो लोग हौज़े कौसर पर पहले आएंगे वह मेरे अह्ले–बैत होंगे। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६२२)

(११) अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना उस्मान इब्ने अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने दुनिया में औलादे अब्दुल–मुत्तलिब या औलादे बनी हाशिम यानी अह्ले–बैत से कुछ नेकी या अच्छा सुलूक या एहसान किया फ़िर वह अह्ले–बैत उस का बदला न दे सके तो क़यामत के रोज़ उस सैयद की तरफ़ से मैं पूरा–पूरा बदला अता करूंगा। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ७६२)

(१२) हाकिम और वैल्मी ने हज़रत अबू–सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तीन चीज़ें ऐसी हैं जो शख़्स उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी दुनिया और दीन दोनों की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। और जो शख़्स उन बातों को ज़ाए करेगा अल्लाह तआ़ला उसके किसी काम की हिफ़ाज़त नहीं फ़रमाएगा। (१) इस्लाम की इज़्ज़त (२) मेरी इज़्ज़त (३) मेरे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कराबत दारों और अह्ले–बैत की इज़्ज़त। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(१३) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : आसमान के तारे अह्ले ज़मीन के लिये सफ़रे दरिया में डूबने से बचाने में बाइसे पनाह और मोजिबे अमान हैं। मेरे अह्ले–बैत मेरी उम्मत को इख़तिलाफ़ और तफ़रक़ा में पड़ने से बचाने में बाइसे अमन हैं। जब मेरे अह्ले–बैत से कोई गिरोह इख़तिलाफ़ करके अलग हो जाए तो वह गिरोह शैतानी गिरोह समझा जाएगा। (ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा ४६७)

(१४) वैल्मी ने हज़रत अबी सईद से ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरे औलाद के मुतअ़ल्लिक़ मुझे अज़ीयत देगा उस पर सख़्त गज़बे इलाही नाज़िल होगा।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ६२१)

(१५) वैल्मी ने हज़रत अबी–सईद से ब्यान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स यह चाहता है कि उसकी उम्र लम्बी हो और अल्लाह तआला ने जो उसे दिया है उससे लुत्फ़–अन्दोज़ हो तो उसे चाहिए कि मेरे अह्ले–बैत के बारे में मेरा अच्छा जांनशीन बने। और जो उनके बारे में मेरे बाद उनका अच्छा जांनशीन न हुआ तो उसकी उम्र काट दी जायेगी और वह क़यामत के दिन मेरे पास रूस्याह होकर आएगा। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ६२१)

(१७) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम लोग किसी के वास्ते खड़े न हो मगर हसन और हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) और उनकी औलाद के लिए खड़े रहा करो। (ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६७)

(१८) हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझ पर और मेरे अह्ले–बैत पर सदक़ा हराम कर दिया है। (ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४३०)

(१६) हज़रत उम्मे–सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह मस्जिद जुंबी और हाइज़ा के लिए हलाल नहीं है मगर मेरे लिए और मौला अली फ़ातिमा और उनके साहिबज़ादे हसन व हुसैन के लिए।

(ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४५२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(२०) रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैंने अपने रब से दुआ की कि वह अह्ले–बैत में से किसी को आग में दाख़िल न फ़रमाए तो उसने मेरी यह दुआ क़ुबूल फ़रमा ली।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ६२२)

(२१) मुहिब्बे तबरी ने एक रिवायत नक़ल फ़रमाई है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने तुम पर जो मेरा अज्र मुक़र्रर किया है वह मेरे अह्ले–बैत से मुहब्बत करना है। और मैं कल तुमसे उनके बारे में दर्याफ़्त करूंगा।(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा ७५३)

(२२) हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो नेमतें अल्लाह तआ़ला तुमको दे रहा है उनके बाइस उनसे मुहब्बत रखो और मुझसे ख़ुदाए तआ़ला की मुहब्बत की वजह से मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अह्ले–बैत से मुहब्बत रखो। (तिर्मिज़ी शरीफ़–जिल्द दोम सफ़ा : ७६८)

(२३) तबरानी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक रिवायत नक़ल फ़रमाई है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आख़री कलाम यह फ़रमाया कि मेरे अह्ले–बैत के मुतअ़ल्लिक़ मेरे जांनशीन बनो। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ५०७)

(२४) हज़रत अबू–बक्र ख़्वारज़मी के हवाले से रिवायत नक़्ल की गयी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आपका रुख़े अनवर इस तरह तलअ़तबार था जैसे चाँद का दायरा। हज़रत अ़बदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस मुसर्रत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे मेरे परवरदिगार की तरफ़ से बशारत दी गयी है कि मेरे चचाज़ाद भाई अ़ली और मेरी चहेती बेटी फ़ातिमा को अल्लाह तआ़ला ने रिश्तए ज़ौजीयत में मुन्सलिक फ़रमाकर रिज़वाने ख़ाज़िने जन्नत को हुक्म फ़रमाया कि वह जन्नती दरख़्त तूबा को हिलाए और उसके गिरने वाले तमाम पत्ते मुहिब्बाने अह्ले–बैत की तादाद के मुताबिक़ उठा लिये जाएं। फ़िर तूबा के नीचे नूर से फ़रिश्ते पैदा किए और वह पत्ते फ़रिशतो को दिए गए। पस जब क़्यामत क़ाइम होगी तो फ़रिशते तमाम मख़लूक़ात में निदा फ़रमाएंगे और मुहिब्बाने अह्ले–बैत में से कोई शख़्स भी ऐसा शख़्स न होगा जिसे वह पत्ता न दिया जाए और उस पत्ते पर मुहिब्बाने अह्ले-बैत के लिये जहन्नम से रिहाई के बारे में लिखा होगा। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ५८१)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(२५) तबरानी और हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसूले काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अगर कोई शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ के एक गोशा और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान चला जाये और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे फ़िर वह अह्ले–बैत की दुशमनी पर मर जाए तो जहन्नम की आग में जाएगा।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७६५)

(२६) रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला मेरे अह्ले–बैत पर ज़ुल्म करने वाले, उनसे जंग करने वाले और उन्हें बुरा कहने वाले इन सब पर जन्नत हराम कर दिया है।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७६५–ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६६)

(२७) तबरानी ने ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया : तू और तेरे अह्ले–बैत और तुम्हारे चाहने वाले (मुहिब्ब) जिन्होंने मेरे सहाबा को गाली देने की बिदअत एख़्तियार नहीं की वह हौज़े कौसर पर सैराब और सफ़ेद–रू ज़ाहिर होंगे। और तुम्हारे दुशमन प्यासे और सर उठाए हुए आएंगे।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(२८) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : आले मुहम्मद से एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है और मुझसे और मेरे अह्ले–बैत से मुहब्बत रखना सात ख़तरनाक मक़ाम पर फ़ायदा बख़्श है। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(२६) मुहिब्बे तबरी ने शर्फ़ुन्नुबुव्वत में हज़रत अबी–सईद से बिला असनाद ब्यान किया है कि मैं और अह्ले–बैत जन्नत का दरख़्त हैं और उसकी शाख़ें दुनिया में हैं जो उनसे वाबस्ता रहेगा वह अपने रब की तरफ़ रास्ता पाएगा। (सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ७८०)

(३०) हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुममें से सबसे ज़्यादा पुलसिरात पर साबित क़दम रहने वाला वह शख़्स होगा जो मेरे अह्ले–बैत और मेरे असहाब की मुहब्बत में ज़्यादा मज़बूत क़वी और सख़्त होगा।

(सवाइक़े मुहर्रका सफ़ा : ६२४)

(३१) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जिसने मेरे अह्ले–बैत को बुरा–भला कहा तो वह अल्लाह तआला और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस्लाम से मुरतद हो गया और जिसने मेरी औलाद को तकलीफ़ दी उस पर अल्लाह की लानत होगी। (सवाइके़ मुहर्रका सफ़ा : ७६५)

(३२) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मारफ़त (पहचान) दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात का बाइस है और मुहब्बत रखना आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से पुलसिरात से गुज़र जाने की सनद है और विलायते आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की अमान है अ़ज़ाब से।

(शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६७)

(३३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में सबसे पहले मेरी शफ़ाअ़त अपने अह्ले–बैत के लिये होगी।

(सवाइके़ मुहर्रका सफ़ा : ७७८)

(३४) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : क़्यामत के रोज़ चार क़िस्म के आदमियों की शफ़ाअ़त करूंगा। एक, जो मेरी ज़ुर्रीयत की इज़्ज़त करेगा; दूसरे, जो उनकी ज़रूरियात को पूरा करेगा; तीसरे, जब वह किसी काम में परेशान हो जायें तो उनके उमूर को पाए तकमील तक पहुंचाने के लिए सरगरमे अ़मल हो जाए; और चौथे, जो अपने दिल और ज़ुबान से उनका चाहने वाला हो।

(मनाक़िबे अह्ले–बैत सफ़ा : ७०–सवाइके़ मुहर्रका सफ़ा : ७६२ व ५८६)

(३५) तबरानी शरीफ़ में है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे अह्ले–बैत के बारे में मेरी मुहब्बत का ख़्याल रखो। इसलिए कि जो शख़्स अह्ले–बैत से और हमसे मुहब्बत रखते हुए अल्लाह तआ़ला से मिलेगा तो वह हमारी शफ़ाअ़त से जन्नत में दाख़िल होगा। उस ज़ात की क़सम जिसके क़बज़ए क़ुदरत में मेरी जान है किसी शख़्स का कोई भी नेक अ़मल उसको कुछ फ़ायदा न देगा जब तक कि वह हमारे हुक़ूक़ को न पहचाने और उनको अदा न करे।

(सवाइके़ मुहर्रका सफ़ा : ७६६)

(३६) वैल्मी ने ब्यान किया है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स ख़ुदाए तआ़ला से मुहब्बत रखता है वह क़ुरआन से मुहब्बत रखता है (और जो क़ुरआन से मुहब्बत रखता है वह मुझसे मुहब्बत रखता है।) और मुझसे मुहब्बत रखता है। वह मेरे असहाब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और करावतदारों से मुहब्बत रखता है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(३७) मुहिब्बे तबरी ने रिवायत किया है कि मोमिन और मुत्तक़ी अहले-बैत से मुहब्बत रखता है और मुनाफ़िक़ और शक़ी अहले-बैत से बुग्ज़ रखता है। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६७)

(३८) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने मेरे अहले-बैत के किसी आदमी से बुग्ज़ रखा वह मेरी शफ़ाअत से महरूम रहेगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ७६४)

(३९) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे अहले-बैत हौज़े कौसर पर आएंगे और मेरी उम्मत में जो शख़्स उनसे मुहब्बत करेगा वह दो उंगलियों की तरह उनके साथ इकट्ठा होगा। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ५१६)

(४०) हाफ़िज़ इब्ने असाकिर की रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद मेरी मुहब्बत और मेरे अहले-बैत की मुहब्बत है। (मनाक़िब अहले-बैत सफ़ा : ६१)

❖❖❖

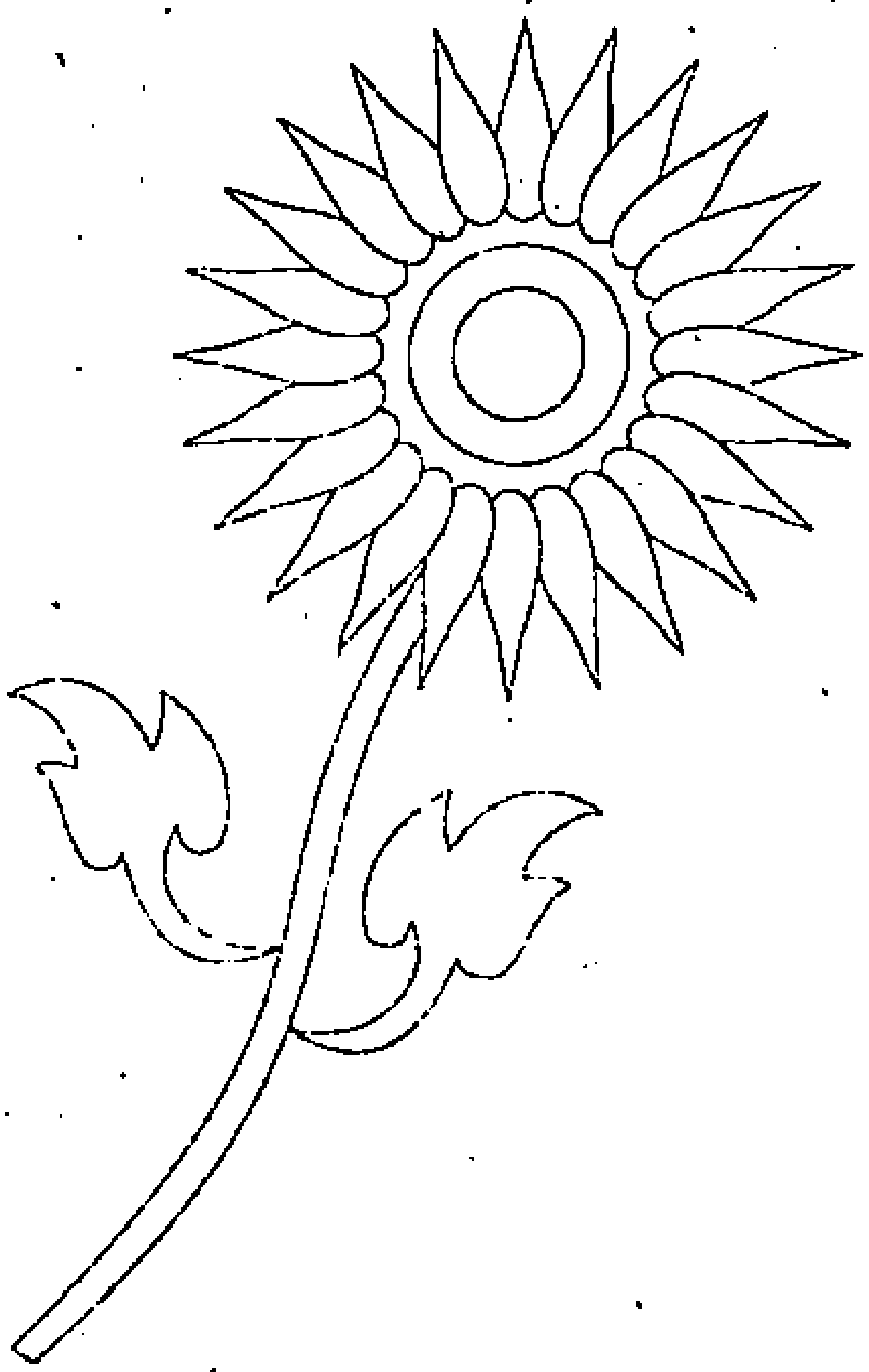

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैत और सहाबा-ए-किराम व सुलहाए उम्मत

हुजूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है कि आले मुहम्मद को पहचानना आतिशे दोज़ख़ से नजात का ज़रिया है। आले मुहम्मद से मुहब्बत रखना पुलसिरात से गुज़ारता है। आले मुहम्मद से अक़ीदत अज़ाबे इलाही से अमान है। उसके इलावा और बहुत-सी अहादीस हैं जिसे आपने पिछले औराक़ में पढ़ लिया है। अल्लाह के रसूल हमारे आक़ा व मौला हुजूर ताजदारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा अह्ले-बैत अतहार की ताज़ीम व तकरीम की तालीम अपने सहाबा किराम को देते रहे। यही वजह है कि सहाबा किराम ताबेईन तबा ताबेईन और अइम्मए एज़ाम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन भी हमेशा अह्ले-बैत अतहार की बहुत ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम करते रहे और उनसे मुहब्बत व उल्फ़त रखते और अपने आपको उनसे वाबस्ता रखने में फ़ख़्र महसूस करते रहे। चुनांचे ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत सैयदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु अह्ले-बैते अतहार से अपनी मुहब्बत का इज़हार इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाते हैं : **वल्लज़ी नफ़सी बियदिही लक़राबतु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल म अहब्बु इलैया अन असि ल- मिन क़राबती।** ख़ुदा की क़सम ! जिसके क़बजए क़ुदरत में मेरी जान है मुझको अपने अक़रबा से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के अक़रबा महबूब-तर हैं। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०५)

इन्हीं का एक और इरशाद है : **उर्क़ुबू मुहम्मदन सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ी अहले-बैतिही** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४१५) यानी मुहाफ़िज़त करो (हज़रत) सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उनके अह्ले-बैत में। यानी इज़्ज़त व हुरमते मुहम्मदी उसमें है कि उनके अह्ले-बैत की ताज़ीम व तकरीम की जाये।

उनकी उल्फ़त जब है ऐने उल्फ़ते ख़ैरुल-वरा
यूं हुए महबूबे रब्बे जुलकरम हज़रत हुसैन

ख़लीफ़ए दोम हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी अपनी औलाद से ज़्यादा अह्ले–बैते अतहार से मुहब्बत फ़रमाया करते थे और हर मौक़ा पर उनको फ़ौक़ियत दिया करते थे। चुनांचे एक मरतबा आप ने माले ग़नीमत जो आपके अ़हदे खिलाफ़त में शहरे मदाइन के फ़तह के वक़्त आया था, हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को हज़ार–हज़ार दिरहम दिए और अपने फ़रज़न्द अर्जमन्द हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सिर्फ़ पांच सौ दिरहम दिए तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने कहा : या अमीरुल–मोमिनीन ! मैं हुज़ूर सैय्यदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़हदे मुबारक में जवान था और आपके हुज़ूर जिहाद करता था और हज़रात हसनैन उस वक़्त बच्चे थे, मदीना मुनव्वरा की गलियों में खेला करते थे। आपने उनको हज़ार–हज़ार दिरहम दिये ? आपनें फ़रमाया : बेटा पहले वह मक़ाम और अफ़्ज़लीयत तो हासिल करो जो हसनैन को हासिल है फ़िर हज़ार दिरहम का मुतालबा करना। उनके बाप हज़रत अ़ली, माँ हज़रते फ़ातिमा, नाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, नानी हज़रत ख़दीजतुल–कुबरा हैं। यह सुन कर हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़ामोश हो गये।

(तारीख़े इस्लाम, बाब खुलफ़ाए राशिदीन–१३६)

हज़रत उमर बिन अब्दुल–अ़ज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा किसी ज़रूरत से चले गए तो आपने फ़रमाया : अगर आइन्दा आपको कोई ज़रूरत पेश आए तो किसी को मेरे पास भेज दिया कीजिये या ख़त लिखकर बुला लिया कीजिए मैं उस वक़्त निहायत शर्मशार हो जाता हूँ जब आप मेरे दरवाज़े पर किसी ज़रूरत के लिये आ जाते हैं।

(शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : १०० सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०२)

इसी तरह एक मरतबा हज़रत फ़ातिमा बिन्ते अ़ली आपके पास आयीं तो आपने उनका बहुत एज़ाज़ व इकराम किया और फ़रमाया : खुदा की क़सम ! ये अह्ले–बैत, रूए–ज़मीन पर तुमसे ज़्यादा महबूब कोई नहीं और तुम मुझे मेरे अह्ल से ज़्यादा महबूब हो।(सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा : ७८६)

हज़रत सैयदना इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अह्ले–बैते नुबुव्वत की बहुत ताज़ीम करते थे। उनके ज़ाहिरी और पोशीदा नादार लोगों पर खूब ख़र्च करके उनकी क़ुरबत हासिल करना चाहते थे। कहते हैं आपने उनमें से एक खुफ़िया नादार आदमी को बारह हज़ार दिरहम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

भिजवाए। और अपने साथियों को भी अह्ले–बैत की ताज़ीम का दर्स दिया करते थे। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०४)

हज़रत सैयदना इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अह्ले–बैत से बे–इन्तिहा मुहब्बत फ़रमाया करते थे। चुनांचे आपने अपनी एक तवील नज़्म में इरशाद फ़रमाया : आले नबीयुल्लाह तआला के पास पहुंचने के लिए मेरा ज़रिए और वसीला हैं। मुझे उम्मीदे कामिल है कि कल वह उनके ज़रिए मेरे आमाल–नामा को मेरे दायें हाथ में देगा। एक बार फ़रमाया : जब मैंने लोगों को देखा कि वह उन लोगों की राह पर चल रहे हैं जो हलाकत और जिहालत की समुन्दर में गर्क़ हैं तो मैंने अल्लाह का नाम लेकर नजात के सफ़ीने में सवार हो गया और वह नजात का सफ़ीना हुज़ूर ख़ातमुन्नबीयीन सलल्ल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अह्ले–बैत हैं।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०४–इमाम पाक सफ़ा : ६४३)

एक मरतबा अह्ले–बैत से अपनी जोशे मुहब्बत का इज़हार इस तरह फ़रमाया –

इन का न रिफ़ज़न हुब्बु आले मुहम्मदिन
फ़ल यशहदिस्सक़लानि अन्नी राफ़िज़ीयुन

(तफ़सीरे कबीर अल–जुज़्उस्साबे वल इशरून सफ़ा : १६६)

अगर आले रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत ही का नाम रफ़ज़ है तो दोनों जहान में गवाह रहें कि मैं बेशक राफ़िज़ी हूँ।

हज़रत सैयदना इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब अ़ब्बासी हाकिम जाफ़र बिन सुलैमान ने ज़द–व–कूब किया और कोड़ों से आपके जिस्मे मुबारक को मारना शुरू किया तो आप बेहोश हो गए। जब होश आया तो आपने हाज़िरीन से फ़रमाया : मैंने उस अज़ीयत देने वाले को माफ़ कर दिया है। लोगों ने आपसे उस माफ़ी की वजह पूछी तो आपने फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़ हुआ कि अगर इस हालत में मेरी मौत वाक़े हो जाये और हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुलाक़ात हो जाए तो मुझे उस वक़्त नदामत व शर्मिन्दगी न उठानी पड़े कि मेरी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक कुराबतदार को अ़जाबे दौज़ख़ का मज़ा चखना पड़े। इसके मिस्ल एक और वाक़िया मशहूर है कि जब अमीर मन्सूर ने आपको जाफ़र से क़िसास दिलाना चाहा तो इमाम साहब ने फ़रमाया : ख़ुदा की पनाह! कोड़ा लगते वक़्त जो कोड़ा मेरे जिस्म से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलाहदा होता था मैं उसी वक़्त जाफ़र को क़राबते रसूल की वजह से माफ़ कर देता था। (किताबुश्शिफ़ा सफ़ा : १०१–सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०३)

हज़रत सैयदना इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हमेशा अहले–बैते अतहार की ताज़ीम व तकरीम करते थे। जब कोई औलादे अहले–बैत में से उनके पास आता तो अपनी जगह से उठ जाते और उन्हें मुक़द्दम फ़रमाया करते और खुद उनके पीछे बैठते थे।

(सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०४)

साहबे किताबुश्शिफ़ा हज़रत अ़ल्लामा क़ाज़ी अ़याज़ बिन मूसा अल हसबी अ़लैहिर्रहम : फ़रमाते हैं कि उन मुक़द्दस नुफ़ूस यानी अहले–बैत अतहार उम्महातुल–मोमिनीन और सहाबए किराम की तनक़ीस करना हराम है और यह तन्क़ीस करने वाला मलऊन है। जैसा कि मिशकात शरीफ़ बाबुल–ईमान जिल्द अव्वल सफ़ा : २२ की हदीस से ज़ाहिर है।

(किताबुश्शिफ़ा जिल्द दोम : ४८८)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैत की ताज़ीम के चन्द वाक़िआत

अह्ले–बैते नुबुव्वत का सहाबए किराम, ताबेईन तबा–ताबेईन और अइम्मए इज़ाम की नज़र में कितना बलन्द व बाला मक़ाम है और यह हज़रात उन नुफूसे क़ुदसीया की कितनी ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम करते थे, उनके हुकूक़ का कितना ख़्याल फ़रमाते थे, इसके मुतअ़ल्लिक़ अभी आपने इनके अक़वाल और अफ़आ़ल का मुताला फ़रमाया। अब हम उन्हीं हज़रात के ताज़ीम व तकरीम के वाक़िआत जो अह्ले–बैत अतहार के मुतअ़ल्लिक़ हैं, तहरीर कर रहे हैं। जिनसे अह्ले–बैत अतहार की शान रोज़े रौशन की तरह ज़ाहिर हो जायेगी।

इब्ने असाकिर अबुल–बख़तरी से रिवायत करते हैं कि एक रोज़ हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मेज़ पर खुतबा के लिए तशरीफ़ ले गये। वहां हज़रत हुसैन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी मौजूद थे। आपको मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा देखकर फ़रमाया : मेरे बाबा जान के मिम्बर से उतरिए। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : बेशक यह आपके बाबा जान हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही का मिम्बर है, मेरे बाप का नहीं। मगर यह तो बताओ तुम्हें किसने सिखाया है ? हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुन कर खड़े हो गए और फ़रमाया : वल्लाह! मैंने इनसे कुछ नहीं कहा है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौरन फ़रमाया : आप सच्चे हैं। मैं आप पर बदगुमानी नहीं करता हूँ। उसके बाद हज़रत इमाम हुसैन को अपने पहलू पर बिठा लिया और फ़रमाया : ऐ इमाम हुसैन! हमने यह बुलन्दी तो तुम्हारे बाबा जान के ज़रिए ही पायी है। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २२४) और इसी के मिस्ल हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का वाक़िआ भी मन्कूल है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ५६२)

एक मरतबा अमीरुल–मोमिनीन हज़रत हसन मुजतबा रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

काशानए ख़िलाफ़त पर तशरीफ़ ले गए वहां देखा कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु काशाना के बाहर खड़े हुए हैं और इजाज़त तलब कर रहे हैं। इत्तिफ़ाक़ से उनको हाज़िर होने की इजाज़त न मिली तो हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु यह ख़्याल करके कि जब उन्होंने अपने साहिबज़ादे को अन्दर आने की इजाज़त नहीं दी तो मुझे कब देंगे? वापस हो गये। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इस ख़्याल से वापस चले गये हैं तो आपने फ़ौरन उनको बुलावाया। उन्होंने आकर कहा : या अमीरुल–मोमिनीन! मैंने सोचा की जब आपने अपने साहिबज़ादे को इजाज़त नहीं दी तो मुझे कब देंगे? तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : **अन त अहक़्क़ु बिल इज़्नि मिन्हु वहल अनबतश्शा'र फ़िर्रासि बादल्लाहि इल्ला अन्तुम** तुम उससे ज़्यादा इजाज़त के मुस्तहिक़ हो और यह बाल सर पर अल्लाह तआला के बाद किसने उगाए सिवा तुम्हारे। यानी तुम्हारे बदौलत राहे रास्त पायी और तुम्हारी बरकत से इस मरतबे को पहुंचे। (अल–अम्न वल–उला सफ़ा : ७८)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ के पास तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना नौ–उम्र थे और आपकी ज़ुल्फ़ें बड़ी–बड़ी थीं। हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ ने आपको बुलन्द जगह पर बिठाया और उनकी तरफ़ खुसूसी तवज्जह फ़रमा कर उनकी जो ज़रूरियात थीं उनको फ़ौरन पूरा कर दिया। जब हज़रत अब्दुल्लाह चले गये तो आप की क़ौम ने हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ को मलामत किया कि एक नौ–उम्र लड़के की आपने इतनी इज़्ज़त फ़रमाई। आपने फ़रमाया : मुझसे सिक़ा आदमी ने ब्यान किया है और मुझे यूँ महसूस होता है कि मैं उस हदीस को रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबाने पाक से खुद सुन रहा हूँ कि फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है; जो उसे खुश करेगा, वह मुझे खुश करेगा। मैं जानता हूँ कि हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा बक़ैदे हयात होतीं तो मैंने उनके बेटे के साथ जो सुलूक किया है उससे वह यक़ीनन खुश होतीं। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६०२)

ताज़ीम आले रसूल के मुतअल्लिक़ इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदेदीन व मिल्लत हज़रत सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान का एक ईमान अफ़रोज़ और बे–मिसाल वाक़िआ शहनशाहे क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल–क़ादरी साहब दामत बरकातुहुम के अल्फ़ाज़ में तहरीर कर रहा हूँ। आप फ़रमाते हैं कि एक मरतबा इमामे अह्ले सुन्नत अपने ही शहर बरैली शरीफ़ के एक महल्ले में तशरीफ़ ले जाने वाले थे। इसलिये पालकी आपके दरवाज़े पर लगा दी गई। सैकड़ों मुशताक़ाने दीदार इन्तिज़ार में खड़े थे। आपने वुज़ू फ़रमाया। कपड़े ज़ैबे तन फ़रमाए, अमामा बांधा और इन्तिहाई आलिमाना शान व शौकत के साथ बाहर तशरीफ़ लाए। चेहरए अनवर से फ़ज़्ल व तक़वा की किरण फूट रही थी। शब–बेदार आँखों से फ़रिश्तों का तक़द्दुस बरस रहा था। तलअते जमाल की दिलकशी से मजमा पर एक रिक़्क़त अंगेज़ बेख़ुदी का आलम तारी था। गोया परवानों के हुजूम में एक शमा फ़रोज़ां मुस्कुरा रही थी और अन्दलीबाने शौक़ की अन्जुमन में एक गुले राना खिला हुआ था। बड़ी मुशकिल से सवारी तक पहुंचने का मौक़ा मिला। पाबोसी का सिलसिला ख़त्म होने के बाद कहारों ने पालकी उठाई। आगे–पीछे, दाहिने–बायें नियाज़मन्दों की भीड़ हमराह चल रही थी। कहार पालकी लेकर थोड़ी ही दूर चले थे कि इमामे अह्ले सुन्नत ने आवाज़ दी : पालकी रोक दो। हुक्म के मुताबिक़ पालकी रख दी गयीं। हमराह चलने वाला मजमा भी वहीं रुक गया। इज़्तिराब की हालत में बाहर तशरीफ़ लाए। कहारों को अपने क़रीब बुलाया और भर्राई हुई आवाज़ में दर्याफ़्त किया। आप लोगों में से कोई आले रसूल तो नहीं ? अपने जद्दे आला का वास्ता ! सच बताइए। मेरे ईमान का ज़ौक़े लतीफ़ तने जानां की ख़ुशबू महसूस कर रहा था। इस सवाल पर अचानक उनमें से एक शख़्स के चेहरे का रंग फ़क़ हो गया। पेशानी पर ग़ैरत व पशीमानी की लकीरें उभर आयीं। बे–नवाई आशुफ़्ता हाली और गरदिशे ऐयाम के हाथों एक पामाल ज़िन्दगी के आसार उसके अंग–अंग से आशकारा थे। काफ़ी देर ख़ामोश रहने के बाद नज़रें झुकाए दबी ज़ुबान से कहा : मज़दूर से काम लिया जाता है, ज़ात–पात नहीं पूछा जाता। आह! आपने मेरे जद्दे आला का वास्ता देकर मेरी ज़िन्दगी का एक सरबस्ता राज़ फ़ाश कर दिया। समझ लीजिए कि मैं उसी चमन का एक मुरझाया हुआ फूल हूँ जिसकी ख़ुशबू से आपकी मशामे जां मुअत्तर है। रगों का ख़ून नहीं बदल सकता इसलिए आले रसूल होने से इंकार नहीं है। लेकिन अपनी ख़ानमां बरबाद ज़िन्दगी को देखकर यह कहते हुए शर्म आती

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

है। चन्द महीने से आपके इस शहर में आया हुआ हूँ। कोई हुनर नहीं जानता कि उसे अपना ज़रियए मआश बनाऊँ। पालकी उठाने वालों से राबता क़ाइम कर लिया है। हर रोज़ सवेरे आकर उनकी झुण्ड में आकर बैठ जाता हूँ और शाम को अपने हिस्से की मज़दूरी लेकर अपने बाल-बच्चों में लौट जाता हूँ।

अभी उसकी बात तमाम भी न होने पायी थी कि लोगों ने पहली बार तारीख़ का यह हैरत-अंगेज़ मन्ज़र देखा कि आलमे इस्लाम के एक मुक़तदर इमाम की दस्तार उसके क़दमों पर रखी हुई है और वह बरसते हुए आंसुओं के साथ फूट-फूट कर इल्तिजा कर रहा था।

मुअज़्ज़्ज़ शहज़ादे मेरी गुस्ताख़ी माफ़ कर दो। लाइल्मी में यह ख़ता सरज़द हो गयी है। हाय ग़ज़ब हो गया! जिनके कफ़्श-पा का ताज मेरे सर का सबसे बड़ा एजाज़ है उनके कांधे पर मैंने सवारी की। क़यामत के दिन अगर कहीं सरकार ने पूछ लिया कि अहमद रज़ा! क्या मेरे फ़रज़न्दों का दोशे नाज़नीन इसीलिए था कि वह तेरी सवारी का बोझ उठाएं तो मैं क्या जवाब दूंगा। उस वक़्त भरे मैदाने हश्र में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी बड़ी रुस्वाई होगी ?

आह! इस हौलनाक तसव्वर से कलेजा शक़ हुआ जा रहा है। देखने वालों का ब्यान है कि जिस तरह एक आशिक़ दिलगीर रूठे हुए महबूब को मनाता है बिल्कुल उंसी अन्दाज़ में वक़्त का एक अज़ीमुल-मर्तबत इमाम उसकी मिन्नत व समाजत करता रहा और लोग फटी आँखों से इश्क़ की नाज़-बरदारियों का यह रिक़्क़त-अंगेज़ तमाशा देखते रहे। यहां तक कि कई बार ज़ुबान से माफ़ कर देने का इक़रार करा लेने के बाद इमाम अह्ले सुन्नत ने फिर अपनी इल्तिजाए शौक़ पेश की। राहे इश्क़ में ख़ूने जिगर से ज़्यादा वजाहत व नामूस की कुरबानी अज़ीज़ है। इसलिए लाशुऊरी की इस तक़सीर का कफ़्फ़ारा जब ही अदा होगा कि अब तुम पालकी में बैठो और मैं पालकी उठाऊं। इस इल्तिजा पर जज़्बात के तलातुम से लोगों के दिल दहल गए। वुफूरे अस्र से फ़िज़ा में चींखें बुलन्द हो गयीं। हज़ार इन्कार के बावजूद आख़िर सैयदज़ादा को इश्क़े जुनूँख़ेज़ की ज़िद्द पूरी करनी पड़ी।

आह! वह मन्ज़र कितना रिक़्क़त-अंगेज़ और दिलगुदाज़ था जब अह्ले सुन्नत का जलीलुल-क़द्र इमाम कहारों की क़तार से लग कर अपने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इल्म व फ़ज़्ल जुब्बा व दस्तार अपनी आलमगीर शोहरत का सारा एज़ाज़ ख़ुशनूदी–ए–हबीब के लिए एक गुमनाम मजदूर के क़दमों पर निसार कर रहा था। शौकते इश्क़ का यह ईमान अफ़रोज़ नज़ारा देखकर पत्थरों के दिल पिघल गए; कदूरतों का गुबार छट गया; गफ़लतों की आँख खुल गयी और दुशमनों को भी मान लेना पड़ा कि आले रसूल के साथ जिसके दिल अक़ीदत व इख़लास का यह आलम है खुद रसूल के साथ उसकी वाबस्तगी का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है ? अह्ले इन्साफ़ को इस हक़ीक़त के एतराफ़ में अब कोई तअम्मुल नहीं हो सकता कि नज्द से लेकर सहारनपुर तक रसूल के गुस्ताखों के खिलाफ़ अहमद रज़ा की बरहमी क़तअन हक़ बजानिब है। सहराए इश्क़ के इस रूठे हुए दीवानें को अब कोई नहीं मना सकता। वफ़ा पेश दिल का यह गैज़ ईमान का बख़्शा हुआ है, नफ़सानी हैजान की पैदावार नहीं।

है उन के इत्र बूए गरीबां से मस्त गुल
गुल से चमन, चमन से सबा और सबा से हम

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लफ़्ज़ 'सैयद' की तशरीह और फ़ज़ाइल

सैयद के लुग्वी माना हैं – इमाम, पेशवा और सरदार।

अल्लाह तबारक व तआला हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ सूरह आले इमरान में इरशाद फ़रमाता है : **अन्नल्ला ह युबश्शिरु क बियह्या मुसद्दिक़म बिकलिमतिम मिनल्लाहि व सैयिदौं व हसूरौं व नबीयम मिनस्सालिहीन।**

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की औलाद को आज हमारे यहाँ 'सैयद' कहते हैं। वह यहीं से लिया गया है। सैयद के मुतअल्लिक़ बाज़ का क़ौल यह है कि सैयद वह है कि जिस का ग़ुस्सा उसकी अक़्ल पर ग़ालिब न हो। बाज़ ने फ़रमाया : सैयद वह है जो ख़ैर व बरकात में दूसरों से बढ़कर हो।

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया **इन्नबनी हा ज़ सैयिदुन।** मेरा यह बेटा सैयद है। इसी तरह दूसरी रिवायत में हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन के मुतअल्लिक़ फ़रमाया : **अल ह स नु वल-हुसैनु सैइदन शबाबि अहल्लि जन्नः** यानी हसन और हुसैन जन्नती नौजवान के सरदार हैं। इन्हीं अहादीसे करीमा के पेशे नज़र हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की औलाद को लफ़्ज़े सैयद से पुकारा जाने लगा। दूसरे इसलिए कि सैयद के माना सरदार के हैं और हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब है सैयदुल–मुर्सलीन। यह हज़रात उनकी औलाद से हैं तो रसूलों के सरदार की औलाद भी मुसलमानों की सरदार कहलाती है। हुज़ूर नबियों के सरदार, हज़रत अली शेरे ख़ुदा वलीयों के सरदार, हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा मुसलमान बीवियों की सरदार और हज़रात हसनैन करीमैन जन्नत के जवानों और शहीदों के सरदार।

हज़रत अली शेरे ख़ुदा की वह औलाद जो हज़रत ख़ातूने जन्नत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा से है उसे 'सैयद' कहते हैं। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वह औलाद जो दूसरी बीवियों के बतन से है उसे 'अलवी' कहते हैं, सैयद नहीं कहते। जैसे मुहम्मद बिन हनफ़िया वग़ैरहुम।

सैयद वह होगा जिसका बाप सैयद होगा। अगर माँ सैदानी है और बाप ग़ैर–सैयद है तो सैयद नहीं। क्योंकि नसब बाप से होता है, माँ से नहीं। और अगर बाप सैयद है, माँ ग़ैर–सैयद तो वह सैयद है। और अगर माँ–बाप दोनों सैयद हैं तो वह नजीबुत्तरफ़ैन सैयद है। जैसे हुज़ूर ग़ौसुस्सक़लैन रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हसनी सैयद हैं और वालिदा हुसैनी सैयद हैं। फ़ी–ज़माना हसनी सैयद कम और हुसैनी सैयद ज़्यादा हैं। मगर दोनों वाजिबुत्ताज़ीम हैं।

नोट: फ़ी–ज़माना बहुत से अह्ले इल्म मुसलमान मोमिन अपने उलमाए किराम और पीराने एज़ाम को सैयदना के नाम से याद करते हैं हालाँकि वह सैयद नहीं होते। तो उसका माना सरदार या पेशवा या इमाम के करना चाहिए यानी उससे मुराद हमारे सरदार या हमारे पेशवा या हमारे इमाम होते हैं। जैसे सैयदना आला हज़रत या सैयदना हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिन्द वग़ैरह।

फ़ी–ज़माना नक़ली सैयद बहुत बन गए हैं कि सैयद नहीं मगर अपने आप को सैयद कहलाते हैं। यह सख़्त हराम व शदीद तरीन जुर्म है। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है : **मनिद्दआ इला ग़ैरि अबीहि फ़अलैहि लानतुल्लाहि वल मलाइ कति वन्नासे अजमईन। ला युक़ब्बिलुल्लाहु मिन्हु यौमल क़्यामति सरफ़ों वला अदला।** (फ़तावा रज़वीया जिल्द पन्जुम सफ़ा : ६६७) यानी जो अपने बाप के सिवा दूसरे की तरफ़ अपने आपको मन्सूब करे उस पर ख़ुदा और सब फ़रिश्तों और आदमियों की लानत है। अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसका न फ़र्ज़ क़ुबूल करेगा और न नफ़्ल।

सैयदज़ादों के फ़ज़ाइल

(१) तक़ी बिन फ़हद हाफ़िज़ हाशमी मक्की ने ब्यान किया है कि मेरे पास शरीफ़ (सैयद) अक़ील बिन अक़ील आए। उन्होंने मुझसे रात का खाना तलब किया। मैंने माज़रत की और कुछ न दिया। उसी रात या

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

दूसरी रात को ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत नसीब हुई तो आपने मुझसे मुंह फेर लिया। मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर ! मैं आपकी हदीस का ख़ादिम हूँ। आप मुझसे क्यों एराज़ फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया : मैं तुझसे क्यों एराज़ न करूँ। मेरा बच्चा तुझसे रात का खाना तलब करता है और तू उसे खाना नहीं देता। वह कहते हैं सुबह हुई तो मैंने उस शरीफ़ सैयद साहब के पास जाकर माज़रत की और जो हाज़िर था वह दे दिया और उनसे हुसन सुलूक भी किया। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ८०६)

(२) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मुबारक रहमतुल्लाह अलैह एक बड़े मजमा के साथ मस्जिद से निकले तो एक सैयदज़ादे ने कहा : ऐ अब्दुल्लाह! यह कैसा मजमा है? देख मैं फ़रज़न्दे रसूल हूँ। और तेरा बाप तो ऐसा न था। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मुबारक ने ज़वाब दिया : मैं वह काम करता हूँ जो तुम्हारे नाना जान ने किया था और तुम नहीं करते। और यह भी कहा कि बेशक तुम सैयद हो और तुम्हारे वालिद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और मेरा वालिद ऐसा न था। मगर तुम्हारे वालिद से इल्म की मीरास बाक़ी रही। मैंने तुम्हारे वालिद की मीरास ली। तुम इज़्ज़त न पा सके।

उसी रात ख़्वाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि चेहरा अनवर आपका मुतग़य्यर है। अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! यह रंजिश क्यों है? फ़रमाया : तुमने मेरे एक बेटे पर नुक्ताचीनी की है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक जागे और उस सैयदज़ादे की तलाश में निकले ताकि उससे माफ़ी तलब करें। इधर उस सैयदज़ादे ने भी उसी रात ख़्वाब में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा तो हुज़ूर ने उससे यह फ़रमाया : कि बेटा ! अगर अच्छा होता तो वह तुम्हें क्यों ऐसा कलिमा कहता। वह सैयदज़ादे भी जागे और अब्दुल्लाह बिन मुबारक की तलाश में निकले। चुनांचे दोनों की मुलाक़ात हो गयी और दोनों ने अपने-अपने ख़्वाब सुनाकर एक दूसरे से माज़रत तलब कर ली।

(सच्ची हिकायात-हिस्सा अव्वल सफ़ा : ६३)

(३) हुज़ूर मुफ़तीए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमः आले रसूल की ताज़ीम व तकरीम के मुतअल्लिक़ इर्शाद फ़रमाते हैं कि सैयद से जब तक कुफ़्र न सादिर हो वह वाजिबुत्ताज़ीम है। यह इसलिए है कि उनका गुनाह बख़्शा जाएगा। अल्लाह तआला उनकी ग़ल्तियों से दरगुज़र फ़रमाएगा। उन्हें मौत से पहले तौबा की तौफ़ीक़ अता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमा देगा जैसा कि आयते ततहीर से ज़ाहिर है।

इसी तरह अहले नुबुव्वत के फ़ासिक़ की इज़्ज़त उनके फ़िस्क़ और बे–अमली की वजह से नहीं की जाती है बल्कि उनके मुबारक निस्बत, जो उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हासिल है, उसकी बिना पर की जाती है। इसलिए उनका फ़ासिक़ होना उन्हें अहले–बैते नुबुव्वत से खारिज नहीं कर देगा।

हज़रत अबू–मुहम्मद फ़ास रहमतुल्लाह अलैह मदीना मनव्वरा के बाज़ हुसैनी सैयदों से उनके फ़िस्क़ की वजह से बुग्ज़ व इनाद रखते थे। तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब में उनको फ़रमाया : ऐ अबू–मुहम्मद फ़ास! क्या बात है मेरी औलाद से बुग्ज़ रखते हो। उन्होंने कहा : या रसूलल्लाह ! वह आपकी सुन्नत के खिलाफ़ करते हैं। इसलिये मैं उनसे मुहब्बत नहीं करता। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या यह फ़िक़्ही मसअला नहीं कि नाफ़रमान औलाद नसब से वाबस्ता रहती है? मैंने अर्ज़ किया हां फ़रमाया : यह नाफ़रमान औलाद है। हज़रत अबू–मुहम्मद फ़ासी फ़रमाते हैं कि जब मैं बेदार हुआ तो मेरे दिल से उनकी अदावत दूर हो चुकी थी। फ़िर तो मैं उनमें से जिससे भी मिलता उनकी खूब ताज़ीम व तकरीम करता।

(खुतबाते मुहरिम सफ़ा : २५०)

सैयद हज़रात रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस फ़रमाने आली को अपने मद्दे नज़र रखें कि सुन्नत के खिलाफ़ अमल करने वाले को आपने अपनी नाफ़रमान औलाद फ़रमाया है। जबकि आम वालिदैन की नाफ़रमानी गुनाह कबीरा है तो सादाते किराम अपने जद्दे आला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी करें तो क्या हाल होगा ?

इसलिए बाज़ मुहक़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि ख़ुदा–न–ख़ास्ता अगर किसी सैयद से ज़िना, शराब–खोरी, या चोरी जैसा जुर्म सरज़द हो जाए और उस पर हद्द जारी करने का मौक़ा आए तो यह समझना चाहिए कि शहज़ादे के बदन पर धूल लग गयी है उसे साफ़ कर रहा हूँ।

अल्लाह तआला हमें अहले–बैत नुबुव्वत की ताज़ीम व तकरीम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जिन्दा रहें तो उनकी मुहब्बत में और इस दुनिया से जाएं तो उनकी मुहब्बत में इंतिक़ाल हो। आमीन।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल सहाबा-ए-किराम

कुरआन व हदीस की रौशनी में

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

असहाबी कन्नुजूमे, फ़बिऐइहिम इक़तदैतुम इहतदैतुम
(मिशकात)

मेरे सहाबा तारों की तरह हैं तो तुम उनमें से जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सहाबी किसे कहते हैं?

सहाबी वह ख़ुशनसीब मोमिन हैं जिन्होंने ईमान व होश की हालत में हुज़ूर सैयदुल–अंबिया वल–मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक नज़र देखा; या उन्हें हुज़ूर की सोहबत नसीब हुई हो फिर उनको ईमान पर ख़ात्मा भी नसीब हुआ हो। लिहाज़ा हज़रत इब्राहीम व तैयब व ताहिर फ़र्ज़न्दाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, जो बचपन ही में वफ़ात पा गए, सहाबी नहीं। क्योंकि उन्होंने शीरख़्वारगी में हुज़ूर को देखा जबकि होश नहीं होता। हज़रत सैयदना अबदुल्लाह इब्ने मकतूम नाबीना सहाबी हैं। क्योंकि वह बुज़ुर्ग अगरचे नाबीना होने की वजह से हुज़ूर को देख न सके मगर उस सोहबत में हाज़िर तो हुए।

जो लोग हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मुरतद होकर मरे। जैसे मुसैलमा कज़्ज़ाब पर ईमान ले आने वाले। वह सहाबी नहीं। क्योंकि सहाबियत में ईमान पर ख़ात्मा होने की शर्त है। अलबत्ता वह लोग जो मुर्तद होकर फिर ईमान ले आए जैसे अशअस बिन क़ैस या ज़माना सिद्दीक़ी में ज़कात के मुन्किर जो बाद में ताइब हो गए, वह सहाबी हैं। (मिर्आतुल–मनाज़ीह सफ़ा : ३३४, अमीर मुआविया सफ़ा११)

मज़हबे इस्लाम में सहाबियत सबसे बड़ा दर्जा है। पैग़म्बर के बाद सहाबी ही आला रुत्बे वाले हैं। तमाम दुनिया के औलिया, अक़ताब व अबदाल, ग़ौस – सहाबी के गर्द को भी नहीं पहुंच सकते। क्यों न हो? सहाबी सोहबत याफ़तए हुज़ूर सैयदुल–अंबिया वल–मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है।

सहाबए किराम का मामला दुनिया के आम अफ़राद की तरह नहीं है कि उनके मक़ाम व फ़ज़ाइल का फ़ैसला किसी तारीख़ और उसके ब्यान करदा हालात के ताबे किया जाए जैसा कि कुछ मुनाफ़िक़ और इब्ने–यज़ीद इमाम आली मक़ाम और हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुम के मुतअल्लिक़ बकवास बकते हैं। बल्कि सहाबए किराम एक ऐसे मुक़द्दस गिरोह का नाम है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और तमाम उम्मत के दर्मियान अल्लाह तआला का अता किया हुआ एक वास्ता हैं। इस वास्ते के बग़ैर न उम्मत को क़ुरआने करीम हाथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आ सकता है और ना ही हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक और आपकी तालीमात का इल्म हो सकता है। और न ही क़ुरआने करीम की उन आयात का जो मुजमल हैं जिनका ब्यान हुजूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक पर छोड़ा गया है। तो ऐसे गिरोह के फ़ज़ाइल क़ुरआने करीम और अहादीसे करीमा ही से मिल सकते हैं और उनके मुतअल्लिक़ हुजूर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो ब्यान फ़रमाया है इसकी हैसियत हर्फे आखिर की है। तो अगर ऐसे मुक़द्दस गिरोह के मक़ाम को कोई मुनाफ़िक़ या यज़ीदी तारीख़ी किताबों से ब्यान करके उनकी शान में गुस्ताखियां करे तो उससे बड़ा ज़ालिम और एहसान फ़रामोश कौन हो सकता है ?

सहाबए किराम हुजूर सैयदुल–मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िन्दगी के साथी, आपकी तालीमात को तमाम दुनिया में फैलाने वाले और अपने अहल व अयाल और खुद अपनी जान से ज़्यादा हुजूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चाहने वाले और आपके एक इशारे पर अपनी जान व माल क़ुरबान कर देने वाले हैं। उनकी सीरत हुजूर सैयद आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत का एक जुज़्ए ला युनफक है। इसलिये आपका इरशादे गिरामी है : **असहाबी कन्नुजूम फ़बिऐइहिम इक़्तदैतुम इहतदैतुम ।** (मिर्अतुल–मनाजीह सफ़ा:३४५)

यानी मेरे सहाबा तारों की तरह हैं तो तुम उनमें से जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे।

एक और हदीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : **फ़अलैकुम बिसुन्नती** व **सुन्नतिल-खुलफ़ाइर्राशिदीन अल-महदिईन तमस्सकू बिहा** (अशअतुल लम्आत व इब्ने–माजा जिल्द अव्वल सफ़ा : ४३) यानी अपने ऊपर मेरी सुन्नत और मेरे खुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम कर लो। इसलिए यह मुक़द्दस गिरोह आम लोगों की तरह सिर्फ़ कुतुबे तवारीख़ से नहीं पहचाने जाएंगे बल्कि आयाते कुरआनिया व अहादीसे करीमा से पहचाने जाएंगे।

इसलिये हम सबसे पहले **सहाबए किराम क़ुरआन की रौशनी में** पेश करेंगे। बादहू उनके फ़ज़ाइल, जो सही अहादीसे करीमा से साबित हैं, पेश करने की सआदत हासिल करेंगे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सहाबा-ए-किराम और क़ुरआने हकीम

सहाबए किराम के फ़ज़ाइल में कसरत से आयाते क़ुरानिया वारिद हुई हैं। यह आयात दो किस्म की हैं। एक तो वह जो किसी ख़ास सहाबी के हक़ में नाज़िल हुई हैं। जैसे हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में चार आयात। हज़रत अली मुर्तज़ा व हसनैन करीमैन व फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा और हज़रत फ़िज़्ज़ा के फ़ज़ाइल में सूरह दहर की १५ आयात, हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अज़वाजे मुतह्हिरात के फ़ज़ाइल में सूरह अहज़ाब की आठ आयत, हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के फ़ज़ाइल में सूरह नूर की उन्नीस आयत वग़ैरह। और दूसरी किस्म की वह आयात जो आम सहाबए किराम के फ़ज़ाइल में वारिद हुई हैं, वह भी बहुत हैं। हम बतौरे इख़्तिसार कुछ आयतें पेश करेंगे जिनसे नाज़िरीन अपने रब का फ़रमान देखेंगे और ग़ौर करेंगे कि रब्बे करीम ने किस शान से सहाबा किराम के तक़वा, तहारत, ईमान, दियानत, सिद्क़, अमानत और अदालत का एलान फ़रमाया है। इरशादे ख़ुदावन्दी है :

(१) **वल्लज़ी न म अ हू अशिद्दाउ अलल-कुफ्फ़ारि रु ह मा उ बै नहुम तराहुम रुक्कअन सुज्जदन।** (सूरह फ़तह—प—२६)

और उनके साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल। तू उन्हें देखेगा रुकू करते, सज्दे में गिरते हुए। (कन्ज़ुल—ईमान सफ़ा : ७४४)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला सहाबए किराम की इबादत, उनके रुकू और सज्दे और उनका आपस में एक दूसरे पर मेहरबान होना ब्यान फ़रमा रहा है। तो फ़िर कैसे हो सकता है कि वह आपस में एक दूसरे के दुशमन हों। सहाबए किराम की वह तमाम जंगें चाहे वह जंगे जमल हो या जंगे सिफ़्फ़ीन — यह सब अल्लाह तआला के लिए थीं। उनमें से बाज़ को ग़लतफ़हमी हुई थी, बाज़ बिल्कुल हक़ पर थे। मगर जिनसे ग़लती हुई वह इजतिहादी थी जो शरअन जुर्म नहीं। उसका खुला हुआ सबूत उन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उमूर से मिलता है कि अमीरुल–मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को जंगे जमल में शिकस्त दी। और जब हज़रते आइशा का ऊँट जिस पर आप सवार थीं, गिरा दिया गया तो उन्हें गिरफ़्तार न किया गया बल्कि निहायत एहतराम व इज़्ज़त के साथ वालिदए मुहतरम का अदब फ़रमाते हुए मदीना मुनव्वरा वापस पहुंचा दिया। न उनके माल पर क़ब्ज़ा फ़रमाया और न उनके किसी सिपाही पर कोई सख़्ती फ़रमाई। जब ख़्वारिज ने आप पर एतराज़ किया कि आपने दुशमन पर क़ब्ज़ा पाकर उसे क्यों छोड़ दिया ? तो आप ने जवाब दिया हज़रत आइशा सिद्दीक़ा बहुक्मे क़ुरआन हमारी माँ हैं। रब फ़रमाता है व **अज़वाजुहू उम्महातुहुम** नबी की बीवियां मुस्लमानों की माँ हैं। और माँ क़ुरआनी हुक्म से बेटे पर हराम है। क़ुरआन पाक में है **हुर्रिमत अलैकुम उम्महातुकुम** तुम पर तुम्हारी मांएं हराम की गईं। अगर तुम हज़रते आइशा को माँ नहीं मानते तो काफ़िर और अगर उन्हें माँ जान कर उनको लौंडी बना कर रखना जायज़ मानते तो काफ़िर। (सवाइक़े मुहर्रक़ा–सफ़ा : ७१५)

(ब) हज़रत अली और हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दरमियान जो जंग हुई उसे जंगे सिफ़्फ़ीन कहते हैं। यह जंग हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के खून के क़िसास के लिए थी। लेकिन उसमें हज़रत अमीर मुआविया को ग़लतफ़हमी हुई जिससे ऐसी ख़तरनाक जंग का मामला हो गया। लेकिन जब सुलह सफ़ाई हो गई और हज़रत अली के भाई हज़रत अक़ील अमीर मुआविया के पास गए तो आपने उनका बहुत अदब व एहतराम किया और सालाना एक लाख का वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दिया। इसी तरह हज़रत अमीर मुआविया के दरबार में एक शाइर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ में चन्द क़सीदे पढ़े तो आप बहुत खुश हुए। और शाइर को एक हज़ार अशरफ़ी ईनाम में दिया। किसी ने पूछा कि ऐ अमीर! जब आप हज़रत अली के ऐसे मोतक़िद हैं तो आपने उनसे जंग क्यों फ़रमाई? आपने फ़रमाया **अलमलिकु अक़ीम**। यह मज़हबी जंग नहीं, मुल्की मामलात की जंग है। यानी ख़ूने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की। (हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र। सफ़ा : १७)

तबरानी ने एक सही रिवायत रिवायत ब्यान फ़रमाई कि किसी ने हज़रत अली कर्रमुल्लाह वज्हहुल–करीम से जंगे सिफ़्फ़ीन के ज़माना में अमीर मुआविया के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया **क़तलाना व क़तला मुआविया फ़िल-जंन्नः** हमारे और मुआविया के मक़तूलीन सब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जन्नती हैं। नीज़ हज़रत सैयदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीर मुआविया के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया **इख़्वानना बग़वु अलैना** यह लोग हमारे भाई हैं, हमसे बग़ावत कर बैठे।

('हज़रत अमीर मुआविया एक नज़र में'। सफ़ा : ४३)

सहाबए किराम की आपसी जो लग़ज़िशें हुई हैं उनके मुतअल्लिक़ हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि मेरे सहाबा से जो लग़ज़िश होगी उनके उन साबिक़ा आमाल की बिना पर जो मेरे साथ उन्होंने किए होंगे। अल्लाह तआला बख़्श देगा उस लग़ज़िश पर। जब एक क़ौम मेरे बाद अमल करेगी तो अल्लाह तआला उनको मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा। (ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

सहाबए किराम क़े आपसी मुशाजिरात के बारे में सैयदना गौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी किताब गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा : १६५ पर इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत अली कर्रमुल्लाहु वज्हह, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के दरमियान जो जंग हुई उसके बारे में हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु ने तशरीह फ़रमाई है कि उसमें और सहाबा की तमाम जंगों में बहस करने से बाज़ रहना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला उनके तमाम कदूरतों को क़यामत के दिन दूर फ़रमा देगा। हज़रत अली उन सहाबा से जंग करने में हक़ पर थे और जो उनकी इताअत और फ़रमांबरदारी से खारिज हुआ और उनके मुक़ाबिल जंग आज़मा हुआ उसने इमामे बरहक़ से बग़ावत की। लिहाज़ा उससे जंग जाइज़ हुई। जिन बुज़ुर्गों ने हज़रत अली मुर्तज़ा से जंग की जैसे हज़रत तलहा, ज़ुबैर, अमीर मुआविया — उन्होंने हज़रत उस्मान ग़नी के ख़ून के बदले का मुतालबा किया जो कि ख़लीफ़ए बरहक़ और मज़लूम होकर शहीद किए गए। उस्मान के क़ातिलैन हज़रत अली के फ़ौज में शामिल थे। लिहाज़ा उनमें से हर एक सही तावील की तरफ़ गए।

('अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा : ६५)

और उसी गुनीयतुत्तालिबीन के सफ़ा : १६७ में अहले सुन्नत का अक़ीदा यूं ब्यान फ़रमाते हैं कि सारे अहले सुन्नत उस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सहाबए किराम के जंगों में बहस से बाज़ रहा जाए और उन्हें बुरा कहने से परहेज़ किया जाए। उनके फ़ज़ाइल और ख़ूबियां ज़ाहिर की जाएं और उन बुज़ुर्गों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

का मामला रब तआला के सुपुर्द किया जाए। जैसे वह इख़्तिलाफ़ात जो हज़रत अली और हज़रत आइशा, मुआविया, तलहा व जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में वाके हुए। हमारे इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल जिसे मुल्ला अली क़ारी ने फ़िक्हः अकबर सफ़ा : ८५ में नक़ल फ़रमाया है कि **फ़तवल्लाहुम जमीऔं यला नज़कुरुस्सहाब त इल्ला बिख़ैरिन** हम अह्ले–सुन्नत तमाम सहाबा से मुहब्बत करते हैं और उन्हें भलाई ही से याद करते हैं।

मुहतरम क़ारिईन! आपने हज़रत सैयदना ग़ौसे पाक और हज़रत सैयदना इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा रज़ियल्लहु अन्हुमा के अक़वाल पढ़ लिए। अब अगर आप वाक़ई उन बुर्जुगों के मानने वाले हैं और सच्चे पक्के सुन्नी हन्फ़ी हैं तो सहाबए किराम की आपसी जंगों के बारे में बहस नहीं करेंगे। इस मामले को अल्लाह तआला के सुपुर्द करके ख़ुदा व रसूल की ख़ुशनूदी के मुस्तहिक़ बनेंगे।

आयते करीमा **वल्लज़ी न म अ हू अशिद्दाऊ अलल कुफ्फ़ार** से हज़रत सैयदना इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने रवाफ़िज़ के कुफ़्र का मफ़हूम अख़ज़ किया है जो आपकी एक रिवायत में ब्यान हुआ है। क्योंकि यह लोग सहाबा से बुग्ज़ रखते हैं। फ़रमाते हैं – क्योंकि सहाबा उन लोगों को गुस्सा दिलाते हैं और जिसे सहाबा गुस्सा दिलाएं वह काफ़िर है। हज़रत इमाम शाफ़ई ने भी रवाफ़िज़ के कुफ़्र में आमसे इत्तिफ़ाक़ किया है। इसी तरह अइम्मा की एक जमाअत भी आपसे मुत्तफ़िक़ है।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६६६)

(२) **व अन्ज़महुम कलिमतत्तक़्वा व कानू अहक़्क़ बिहा व अहलहा।** (सूरह फ़तह–पारह २६) और परहेज़गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया और वह उसके ज़्यादा सज़ावार और उसके अहल थे।

(कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ७४३)

इस आयते करीमा से मालूम हुआ कि तमाम सहाबा के लिए तक़्वा व तहारत ऐसी लाज़िम है जैसे सूरज के लिए रौशनी और आग के लिए गरमी। जैसे आग ठण्डी नहीं हो सकती सूरज क़ाला नहीं होता। ऐसे ही कोई सहाबी फ़ासिक़ या ग़ैर–आदिल नहीं हो सकता।

(३) **व कज़ालि क जअलनाकुम उम्मतौं व स तल लितकूनू शुहदा अ अलन्नासि व यकूनर्रसूलु अलैकुम शहीदा।** (सूरः बक़र–प–२) और बात

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यूं ही है कि हमने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़ज़ल। कि तुम लोगों पर गवाह हो और यह रसूल तुम्हारे निगहबान और गवाह।

(कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ३३)

हक़ीक़तन इससे पहली आयत और इस आयत में सहाबा को हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़ुबान से बिलमुशाफ़ा ख़िताब किया गया है। क़ुदरते इलाही पर ग़ौर करो अल्लाह तआला ने उनको आदिल और नेक बनाया है। ताकि क़यामत के रोज़ बक़िया उम्मतों पर गवाह हों। अल्लाह तआला ग़ैर-आदिल और नबी करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के परदा फ़रमाने के बाद मुरतद हो जाने वालों के बारे में कैसे इस क़िस्म की गवाही दे सकता है। अल्लाह तआला उन राफ़ज़ियों को ज़लील करे और उन पर लानत करे और उनको बे यार व मददगार छोड़ दे। यह किस क़दर झूठे, जाहिल और इफ़तरा परदाज़ी और बुहतान तराशी से गवाही देने वाले हैं कि सिवाए छः आदमियों के सब सहाबा रसूले करीम के बाद मुरतद हो गए।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६६२)

(४) लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मोमिनी न इज़ युबाइऊन क तहतश्शजरते। (सूरतुल-फ़तह-प-२६)

बेशक अल्लाह राज़ी हुआ ईमान वालों से जब वह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे। इस आयत में अल्लाह तआला सराहत के साथ उन लोगों से इज़हारे रज़ामन्दी फ़रमाया और यह कोई चौदह सौ के क़रीब थे। जिससे अल्लाह राज़ी हो उसकी मौत कुफ़्र पर नहीं हो सकती। यह आयत मुलहिदीन मुनकिरीने क़ुरआन के मज़ऊमात की तरदीद कर रही है। जबकि क़ुरआन पर ईमान लाने से यह बात साबित व लाज़िम होती है कि उसमें जो कुछ ब्यान है उस पर भी ईमान लाया जाए। आपको यह इल्म हो चुका है कि क़ुरआने करीम में सहाबा के ख़ैरुल-उमम, आदिल और नेक क़रार दिया है और यह कि अल्लाह उनसे राज़ी है। अब जो शख़्स उनके मुतअल्लिक़ इन बातों की तसदीक़ न करे वह क़ुरआने करीम का मुकज़्ज़िब है और जो क़ुरआन की तकज़ीब करे जिसकी कोई तावील न हो सके तो ऐसा गिरोह या शख़्स काफ़िर, मुन्किर, मुलहिद और दीन से खारिज है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६६२)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सहाब-ए-किराम

और फ़रमाने नब्वी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

फ़ज़ाइले सहाबा के सिलसिले में क़ुरआने हकीम की आयाते करीमा अभी आपने पढ़ीं। अब हम फ़ज़ाइले सहाबा के मुतअल्लिक़ अहादीसे करीमा पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए –

(१) हज़रत अबू–सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **ला तसुब्बू असहाबी फ़लौ अन्न न अ ह दकुम अन्फ़ क़ मिस ल उहुदिन ज़ ह बम मा ब ल ग़ मुद द अ ह दिहिम वला नसीफ़हू।** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम–सफ़ा : ३८४)

मेरे किसी सहाबी को गाली न दो (बुरा न कहो) क्योंकि अगर तुममें का कोई उहुद (पहाड़) भर सोना ख़ैरात करे तो उनके एक मुद्द या निस्फ़ के बराबर भी सवाब को नहीं पहुंचेगा।

(२) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **ला तमुस्सुन्नारु मुस्लिमन रआनी औ रआ मन रआनी।** (तिर्मिज़ी–जिल्द दोम–सफ़ा : ७६०)

उस मुसलमान को आग न छुएगी जिसने मुझे देखा या मेरे देखने वाले को देखा।

(३) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अल्लाह! अल्लाह! फ़ी असहाबी ला तत्तख़िज़ुहुम ग़रज़म मिम बादी फ़मन अहब्बहुम फ़बिहुब्बी अहब्बहुम वमन अब ग़ ज़हुम फ़ुबुग़िज़नी अ ब ग़ ज़हुम वमन आज़ाहुम फ़क़द अज़ानी वमन आज़ानी फ़क़द अज़ल्लाहु वमन अज़ल्लाहु फ़यूशकु ऐंयाख़ुज़हू** (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६२)

यानी मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो। अल्लाह से डरो। मेरे बाद उन्हें निशाना न बनाओ। क्योंकि जिसने उनसे मुहब्बत की तो मेरी मुहब्बत की वजह से मुहब्बत की। और जिसने बुग़्ज़ रखा तो मेरे बुग़्ज़ की वजह से उनसे बुग़्ज़ रखा। जिसने उन्हें सताया और जिसने उनको ईज़ा दी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसने मुझे ईज़ा दी। और जिसने मुझे ईज़ा दी। उसने अल्लाह को ईज़ा दी। तो क़रीब है कि अल्लाह उसे पकड़े।

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **मा मिन अ ह दिम मिन असहाबी यमूतु बिअरज़िन इल्ला बु इ स क़ाइदन औ नूरल्लहुम यौमल-क़्यामतः** (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६३)

मेरा कोई सहाबी किसी ज़मीन में वफ़ात नहीं पाता मगर वह क़्यामत के दिन उनका पेशवा और नूर होगा।

(ख़साइसुल—कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

(५) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **इज़ा रऐतुमुल्लज़ी न यसुब्बू न असहाबी फ़कूलू लान्तुल्लाहि अला शर्रिकुम** (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७६३)

यानी जब तुम ऐसे लोगों को देखो कि वह मेरे सहाबा की शान में गुस्ताख़ियां कर रहे हैं तो उनसे कह दो – तुम्हारी इस बुरी हरकत पर अल्लाह तआला की लानत हो।

(६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **मसलु असहाबी फ़ी उम्मती कल मिलहि फ़ित्तआमे ला युस्लिहुत्तआमु इल्ला बिलमिल्ह।** (ख़साइसुल—कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : ४६८)

मेरे सहाबी की मिसाल मेरी उम्मत में खाने में नमक की—सी है कि खाना बग़ैर नमक के दुरुस्त नहीं होता।

(७) वैल्मी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब अल्लाह तआला मेरी उम्मत के किसी आदमी से भलाई चाहता है तो उसके दिल में मेरे सहाबा की मुहब्बत पैदा फ़रमा देता है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४७)

(८) हुज़ूरे अनवर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरे सहाबा को बुरा कहने वालों पर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है। और अल्लाह तआला उनके फ़राइज़ और नवाफ़िल को भी कुबूल नहीं फ़रमाएगा। (शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४८८)

(६) मुख़बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आख़िरी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़माने में एक क़ौम पैदा होगी जो मेरे सहाबा को गाली देगी। तुम उनके साथ नमाज़ न पढ़ना और न उनकी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करना। उनसे शादी ब्याह भी न करना और न उनके पास बैठना। अगर वह बीमार हों तो उनकी इआदत न करना। नीज़ आपने फ़रमाया जो सहाबा को बुरा कहे उसको मारो। (शिफ़ा शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४८६)

नोटः- यह क़ौम खौजह, बोहरी, राफ़िज़ी, शीआ हैं जो हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा और हज़रत अमीर मुआविया व हज़रत आइशा सिद्दीक़ा की शान में गुस्ताख़ियां और तबर्रह बाज़ी करते हैं। अल्लाह तआला उन तमाम के हक़ को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

(१०) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करे उसको क़त्ल करो। और जो शख़्स मेरे सहाबा में से किसी को बुरा कहे उसको सज़ा दो। (शिफ़ा शरीफ़. जिल्द दोम सफ़ा : ३८३)

(११) हज़रत उवैम बिन साइदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इन्नल्लाहख़्तारनी वख़्तारली असहाबन फ़ ज़ अ ल ली मिन्हुम वु ज़ राअ व अन्सारौं व अस्हारन फ़मन सब्बहुम फ़अलैहि लान्तुल्लाहि वल मलाइकति वन्नासि अजमईन वला यक़बलुल्लाहु मिन्हु सरफ़ौं वला अदला।**

(मज़ाहिरे हक़ जिल्द चहारुम सफ़ा : ८४)

बेशक अल्लाह तआला ने मुझे मुन्तख़ब फ़रमाया और मेरे लिए सहाबा को मुन्तख़ब फ़रमाया। पस उनको मेरा वज़ीर और मददगार बनाया। जो उनको बुरा कहे उसपर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है। अल्लाह तआला उसका कोई फ़र्ज़ और नफ़्ल कुबूल न फ़रमायेगा।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन

उलमाए अह्ले सुन्नत व जमाअत का इस पर इजमा और इत्तिफ़ाक़ है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत सैयदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ए अव्वल और बरहक़ इमाम हैं। उनके बाद हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़; फ़िर हज़रत सैयदना उस्मान ग़नी और उनके बाद हज़रत अली रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन। उनके बाद अशरए मुबश्शरा, उनके बाद आम सहाबा अहले–बद्र, फ़िर तमाम बैअ़तुर्रिज़वान के सहाबा, फिर वह जिन्होंने दोनों क़िबलों की जानिब नमाज़ प़ढ़ी। फिर उनके बाद फ़त्हे मक्का के दिन या उसके बाद ईमान लाने वाले सहाबा अफ़ज़ल हैं। अबू मन्सूर बग़दादी ने भी लिखा है कि इसी पर उम्मते मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १०८ तकमीलुलईमान सफ़ा : २५३। अमीर मुआविया सफ़ा : १२। शरह फ़िक़्हे अकबर सफ़ा : १४५)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के फ़ज़ाइल बेशुमार हैं। उन बुज़ुर्गों के नामों को रब तआला और उसके हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वह क़ुरबत हासिल है कि सुब्हानल्लाह ! **ला इला ह इल्लल्लाह** के हुरूफ़ बारह हैं। इसी तरह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह, अबू बक्र सिद्दीक़, उमर इब्नुल ख़त्ताब, उस्मान इब्ने अफ्फ़ान, अली बिन अबी तालिब तमाम में बारह–बारह हुरूफ़ ही हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया **ख़ैरुल क़ुरूनि क़रनी यानी** तमाम ज़मानों में मेरा ज़माना ज़्यादा बेहतर है। क़रनी में 'क़ाफ़' से इशारा सिद्दीक़े अकबर की तरफ़ है। 'रे' से उमर फ़ारूक़। 'नून' से उस्मान ग़नी और 'ये' से हज़रते अली की तरफ़ इशारा है। गोया उन बुज़ुर्गों का ज़माना हुज़ूर ही का ज़माना है। इसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्र ६३ साल हुई। इन तमाम ख़ुलफ़ा में से हर एक की उम्र भी ६३ साल हुई। सिवाए हज़रत उस्मान ग़नी के। अल–मुख़्तसर यह कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मरातिब बहुत ही बुलन्द व बाला हैं। इसलिए हम सबसे पहले उन ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मनाक़िब में जो आयाते क़ुरआनिया नाज़िल हुई हैं, उनको तहरीर करेंगे। बादहू अहादीसे करीमा और उनके हालाते ज़िन्दगी पर भी मुख़्तसरन रौशनी डालेंगे। ❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़लीफ़ा-ए-अव्वल

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

अबू-बक्र सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

सायाए मुस्तफ़ा, मायाए इस्तफ़ा
इज़्ज़ व नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम
यानी उस अफ़ज़लुलख़ल्क़ बादर्रुसुल
सानी-यसनैने हिजरत पे लाखों सलाम
असदक़ुस्सादिक़ीन सैयदुल-मुत्तक़ीन
चश्म व गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

(आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु)

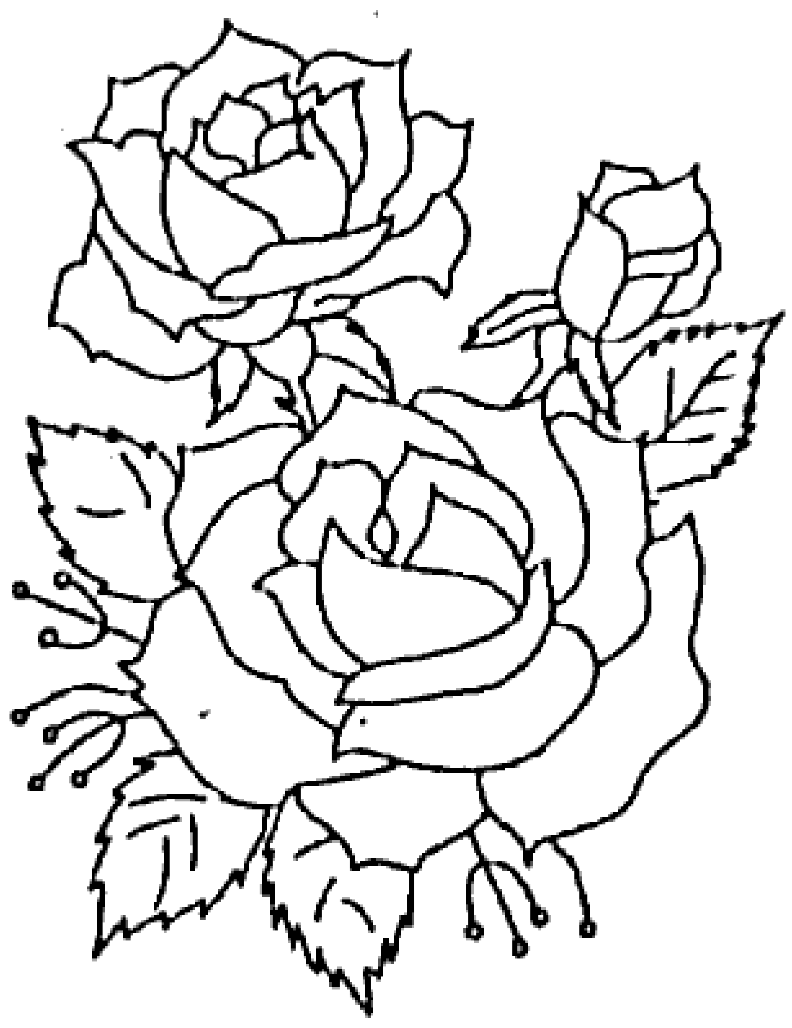

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु। आपका नाम अब्दुल्लाह और 'अबू–बक्र' कुन्नीयत और 'सिद्दीक़' व 'अतीक़' आपका लक़ब है। आपके वालिदे गिरामी का नाम उस्मान और अबू–क़हाफ़ा कुन्नीयत है। वालिदा माजिदा का नाम 'सलमा' और कुन्नीयत 'उम्मुल–ख़ैर' है। आपका सिलसिलए नसब यह है। अब्दुल्लाह इब्ने अबी–क़हाफ़ा उस्मान बिन आमिर बिन अमरू बिन काब बिन साद बिन क़ैइम बिन मुर्रह विन काब लौवय बिन ग़ालिबुल क़रशी अत्तयमी। आपका नसब मुर्रह बिन काब पर रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिल जाता है।

आपका लक़ब सिद्दीक़ है। उसके पाने के मुतअल्लिक़ तहरीर है कि मेराज की सुबह को मेराज की शानदार तसदीक़ की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तसदीक़ फ़रमाया। हज़रत बिलाल को आज़ाद करने के बाद आपको 'अतीक़' यानी जहन्नम से आज़ाद का लक़ब मिला। आपके फ़ज़ाइल आसमान के तारों और ज़मीन के ज़र्रों की तरह बेशुमार हैं। बाद अंबिया आप अफ़ज़लुलख़ल्क़ हैं। आपके इस्लाम लाने के बारे में हुजूर नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मैंने पहले पहल जिस शख़्स को भी दावते इस्लाम दी उसने थोड़ा बहुत तअम्मुल व तवक्कुफ़ किया लेकिन अबू–बक्र कि दावते इस्लाम के बाद फ़ौरन बग़ैर दलील व बुरहान के मुझ पर ईमान ले आए और मेरे मुसद्दिक़ (तस्दीक़ करने वाले) बने। (शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा : २५८)

सबसे पहले आपने इस्लाम लाया। इस्लाम लाने के बाद कभी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुदा नहीं हुए। तमाम ग़ज़वात में हुजूर के साथ रहे। सफ़ेद रंग, दराज़ क़द, दुबले बदन वाले और चौड़ी पेशानी वाले उस मर्दे मुजाहिद ने हिजरत के लिए अपने अहल व अयाल को ख़ैर आबाद कह दिया। अपने आक़ा व मौला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ ग़ारे सौर की तरफ़ रवाना हो गये। ग़ारे सौर और तमाम रास्ते आप की ख़िदमत में रहे। सुलह हुदैबिया में मक्का शरीफ़ में दाख़िल न होने के बाइस लोगों के दिलों में जो शुकूक पैदा हो गये थे, उनका इरतेफ़ा (दूर करना) और रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम का यह इरशादे गिरामी सुनकर "अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को दुनिया में रहने या आख़िरत कुबूल कर लेने का एख़्तियार दिया है"– आपका आह व ज़ारी करना ;

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त सहाबाए किराम की तस्कीने ख़ातिर के लिए आपकी इस्तिक़ामत और खुत्बे के ज़रिए उनमें तस्कीने क़ल्ब पैदा करना; मुस्लमानों की मसलेहत के पेशे नज़र बारे ख़िलाफ़त को क़ुबूल कर लेना; मुरतदीन से जंग के लिए हज़रत उसामा बिन ज़ैद की क़्यादत में शाम की जानिब लशकर रवाना करना और उस अज़्म पर साबिते क़दम रहना; सहाबा किराम को यह बसुबूत व दलाइल हक़ से आगाह करना; और मुर्तदीन की जंग में उनको अपना हमनवा बनाना। मम्लकते शाम की जानिब फ़ौजों को रवाना करना; फिर उस लशकर की फ़तह होना – हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहम फ़ज़ाइल हैं। नीज़ हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने बाद ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करना यह बहुत बड़ी फ़ज़ीलत का हामिल है। आपने सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ को जमा फ़रमाया और किताबी शकल दी। बादहू हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो क़ुरआन शरीफ़ को किताबी शकल में जमा फ़रमाया : यह वही क़ुरआन पाक था जिसे हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने किताबी शकल दी थी।

आपके माँ–बाप, आपकी सारी औलाद और आपकी औलाद की औलाद सब सहाबी हैं। यह शर्फ़ किसीं और को नसीब नहीं हुआ। आप ही ने मस्जिदे नब्वी की असल ज़मीन दस दीनार में ख़रीद कर वक़्फ़ की।

(हाशिया इब्ने माजा सफ़ा : ५४)

आपकी विलादत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत व सआदत से दो साल दो माह क़बल मक्का में हुई। ६३ साल की उमर पाकर २२ जमादिल उख़रा शब मंगल सन १३ हिजरी में मग़रिब व इशा के दरम्यान मदीना मनव्वरा में वफ़ात पाई। बिला फ़सल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में मदफ़ून हुए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़िअल्लाहु अन्हु और आयाते कुरआन

क़ारिईने किराम ! हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ में क़ुरआने करीम की बहुत–सी आयात का नुज़ूल हुआ है। हम उनमें से चन्द आयाते करीमा लिखने की सआदत हासिल कर रहे हैं –

(१) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है **इल्ला तन्सुरूहु फ़क़द न स रहुल्लाहु इज़ अख़रजहुल्लज़ी न क फ़ रू सानियसनैने इज़ हुमा फ़िल ग़ारे इज़ यकूलु लिसाहिबिही ला तहज़न। इन्नल्ला ह म अ ना फ़अन्ज़लल्लाहु सकीनतहु अलैहि व ऐयदहु बिजुनूदिल्लम तरौहा व ज अ ल कलिमतल्लज़ी न कफ़रुस्सुफ़ला व कलिमतुल्लाहि हियल उलया वल्लाहु अज़ीज़ुन हकीम** (सूरह तौबह रूकू १२–प–१०)

तर्जुमा:- अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमाई। जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ। सिर्फ़ दो जान से, जब वह दोनों ग़ार में थे। जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा। बेशक। अल्लाह हमारे साथ है। तो अल्लाह ने उसपर अपना सकीनत उतारा और उन फ़ौजों से उनकी मदद की जो तुमने न देखीं। और काफ़िरों की बात नीचे डाली। अल्लाह ही का बोलबाला है। और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है। (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : २८०)

तमाम मुसलमानों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस आयते करीमा में साहिब से मुराद हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सकीना (सुकूने ख़ातिर व तसल्ली) तो कभी ज़ायल न हुआ। बस जिन पर सकीना नाज़िल हुआ वह हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। (शरह फ़िक्हे अकबर : अज़ मुल्ला अली क़ारी सफ़ा : ८५)

बहरहाल यह आयत हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तारीफ़ व तौसीफ़ में बिल्कुल वाज़ेह ब्यान है। आप सहाबीए रसूल हैं इस पर भी नस्से क़तई है। इसीलिये हज़रत हसन बिन फ़ज़ल रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की सहाबियत का इन्कार करे, वह नस्से क़ुरआनी के इन्कार करने के सबब काफ़िर है। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : ११ व सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा:३३७)

अरबी इबारत यह है **मन का ल इन्ना अबा बकरिल्लम यकुन** साहि **ब रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ हु व काफ़िरुल्लिइन्कारिही नस्सुल क़ुरआन।** (तफ़सीर कबीर अलजुज़्उस्सादिस अशर सफ़ा : ८२)

(२) व **सयुजन्नबुहल अतक़ल्लज़ी यूती मा लहू य त ज़क्का** वमा **लिअ ह दिन इन्दहु मिन नेमतिन तुज्ज़ा इल्लबतिग़ा अ वजहि** रब्बिहिल **आला** (सूरह वल्लैल–प : ३०)

तर्जुमा:- और बहुत उससे (जहन्नम से) दूर रखा जाएगा जो सबसे बड़ा परहेज़गार, जो अपना माल देता है कि सुथरा हो। और किसी का उस पर कुछ एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाए, सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है। (कन्जुल–ईमान सफ़ा : ८६८)

यह आयते करीमा भी हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई। (तफ़सीरे कबीर अल–जुज़्उल हादी वस्सलासून सफ़ा : २०५–तफ़सीरे मुरादिया सफ़ा : २३५)

साहिबे सवाइक़ मुहर्रक़ा इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं कि इसमें यह तसरीह मौजूद है कि आप सारी उम्मत से ज़्यादा इतक़ा (परहेज़गार) हैं, और इतक़ा अल्लाह तआला के नज़दीक मुकर्रम होता है। जैसा कि इरशादे बारी तआला है : **इन्न न अकरमकुम इन्दल्लाहि अतक़ाकुम** यानी बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक तुममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुममें ज़्यादा परहेज़गार है।

इन दोनों आयाते करीमा से मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु खुदाए तआला के नज़दीक तमाम उम्मत से ज़्यादा मुकर्रम और इज़्ज़त वाले हैं। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : २२८)

हज़रत सदरुल–अफ़ाज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान और हज़रत इमाम राज़ी तफ़सीरे कबीर में इस आयते करीमा की तफ़सीर ब्यान करते हुए लिखते हैं कि जब हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ ने हज़रत बिलाल को ज़रे कसीर देकर आज़ाद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

करवा लिया तो कुफ्फ़ार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हजरत सिद्दीके अकबर ने ऐसा इसलिये किया कि बिलाल का उनपर कोई एहसान है जो इतनी कसीर रक़म देकर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया। इसपर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया कि बिलाल का कोई एहसान नहीं है बल्कि यह काम अबू–बक्र ने महज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए किया है।

(तफ़सीरे कबीर अलजुज्उल हादी वस्सलासून सफ़ा : २०६)

(३) **वल्लज़ी जा अ बिस्सिदके व सद्द क़ बिही उलाइ क हुमुल मुत्तकून।**

(सूरह ज़ुमर–प : २४)

तर्जुमा:- और वह जो यह सच लेकर तशरीफ़ लाए और वह जिन्होंने उनकी तस्दीक़ की यही डर वाले हैं। (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ६६८)

यह आयते करीमा भी हज़रत सैयदना सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत का एलान कर रही है। जैसा कि बज़्ज़ार और इब्ने असाकिर ने ब्यान किया है कि हक़ लाने वाले हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और हक़ की तस्दीक़ करने वाले आपके यारे ग़ार हज़रत सैयदना सिद्दीके अकबर हैं। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : २३१)

साहिबे तफ़सीरे कबीर इमाम राज़ी अलैहिर्रहमः तफ़सीरे कबीर अल–जुज्उस्सादिस वल इशरून सफ़ा : २७६ में इस आयते करीमा की तफ़सीर ब्यान फ़रमाते हुए लिखते हैं कि **अन्नल मुरा द शख़्सुं वाहिदुन फ़ल्लज़ी जा अ बिस्सिदके मुहम्मदुन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वल्लज़ी सद्द क़ बिही हु व अबू-बकरिन व हाज़ल क़ौलु मरवीयुन अन अली इब्ने तालिबिन रज़ियल्लाहु अन्हु व जमाअतुम मिनल मुफ़स्सिरीन रज़ियल्लाहु अन्हुम।**

यानी इससे एक ही शख़्स मुराद है कि **जा अ बिस्सिदक़** से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात पाक है और **वल्लज़ी सद्दक़ बिही** से हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं। और यह क़ौल हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और दीगर मुफ़स्सिरीन का है।

लिहाज़ा उन मुफ़स्सिरीनें किराम की तफ़ासीर से यह साबित हो गया कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी मुत्तक़ी फ़रमाया है। इसीलिये

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आप क़्यामत तक पैदा होने वाले तमाम मुत्तक़ियों के सरदार और सैयदुल-मुत्तक़ीन हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमा इसीलिये तो फ़रमाते हैं :

असदकुस्सादिक़ीन सैयदुल-मुत्तक़ीन
चश्म व गोशे वज़ारत पे लाखों सलाम

(४) **ला यस्तवी मिन्कुम मन अन्फ़ क़ मिन क़ब्लिल फ़तहे व क़ातल ऊलाइ क आज़मु द र जतन मिनल्लज़ी न अन्फ़क़ू मिम्बादु व क़ातलू व कुल्लौं व अ़दल्लाहुल हुसना। वल्लाहु बिमा तामलू न ख़बीर।**

(सूरह हदीद-प : २७)

तर्जुमा: तुम में बराबर नहीं, वह जिन्होंने फ़तह मक्का से क़बल ख़र्च किया और जिहाद किया। वह मर्तबा में उनसे बड़े हैं जिन्होंने बादे फ़तह के ख़र्च किया और जिहाद किया। और उन सबसे अल्लाह जन्नत का वादा फ़रमा चुका और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

(कन्ज़ुल-ईमान सफ़ा : ७७६)

कलबी ने कहा कि यह आयत हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में नाज़िल हुई। क्योंकि आप पहले शख़्स हैं जो इस्लाम लाए और पहले शख़्स हैं जिसने राहे ख़ुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिमायत की। (तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान सफ़ा : ७७६)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी क़ादरी अपनी तफ़सीर के सफ़ा : ५०८ पर इस आयते करीमा के तहत लिखते हैं कि यह आयत हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में नाज़िल हुई है। इस वास्ते कि आप ही वह पहले शख़्स हैं जो ईमान लाए और ख़र्च किया और काफ़िरों से जंग की।

इब्ने हज़्म ने कहा कि तमाम सहाबा क़तई तौर पर जन्नती हैं और मज़कूरा बाला आयते करीमा तिलावत फ़रमाई। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ६६८)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़िअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में कस्रत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। उनमें से चन्द पेशे ख़िदमत हैं।

(१) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु का ब्यान है कि मैंने रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि **मन अन्फ़ क़ ज़ौजैने मिन शैइन मिनल अशयाइ फ़ी सबीलिल्लाहि दु इय मिन अब्वाबिन यानी अल जन्न त या अब्दल्लाहे हा ज़ ख़ैरुन फ़मन का न मिन अहलिस्सलाति दु इ य मिम बाबिल जिहादे वमन का न मिन अहलिस्सदक़ते व मन का न मिन अहलिस्सियामे दु इ य मिन बाबिस्सियामे बाबिर्रैयाने फ़ क़ा ल अबू बकरिन मा अला हाज़ल्लज़ी युदआ मिन तिल्कल अब्वाबे मिन ज़रूरतिन व क़ा ल हल युदआ मिन्हा कुल्लिहा अ ह दुन या रसूलल्लाहे क़ा ल नअम! व अरजू अन तकू न मिन्हुम या अबा बकरिन।** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८०)

तर्जुमा: जो अल्लाह की राह में एक चीज़ का जोड़ा ख़र्च करे तो अल्लाह उसे जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाएगा। जो मुजाहिद है उसे जिहाद वाले दरवाज़े से; जो ख़ैरात करता है उसे ख़ैरात वाले दरवाज़े से; और जो रोज़े रखेगा उसे रोज़ों वाले बाबुर्रैयान से बुलाया जाएगा। हज़रत अबू–बक्र कहने लगे जो उन सारे दरवाज़ों से बुलाया जाए तो उसे ख़दशा ही किया ? फ़िर अर्ज़ गुज़ार हुए या रसूलुल्लाह! क्या कोई ऐसा भी है जिसको तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा? फ़रमाया : हाँ ऐ अबू–बक्र मुझे उम्मीद है तुम ऐसे लोगों में से हो।

(२) हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फ़रमाया : रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि **मा लि अ ह दिन इन्दना**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यदुन इल्ला वक़द काफ़ीनाहु मा ख़ला अबा बकरिन फ़इन्न न लहू इन्दना यदन युकाफ़ीहिल्लाहु बिहा यौमल क़्यामति वमा न फ़ अनी मालु अ ह दिन क़त्तु मा न फ़ अनी मालु अबी-बकरिन वलौ कुन्तु मुत्तख़िज़ न ख़लीलल लत्तख़ज़्तु अबा बकरिन ख़लीलन अला व इन न साहिबकुम ख़लीलुल्लाह। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६८८)

तर्जुमाः हम पर किसी का एहसान नहीं मगर हमने उसका बदला कर दिया सिवाए अबू—बक्र के कि हम पर उनका एहसान है कि अल्लाह उन्हें उसका बदला क़्यामत के दिन देगा। और मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा न दिया जितना अबू—बक्र के माल ने दिया। और अगर मैं किसी को दोस्त बनाता तो अबू—बक्र को दोस्त बनाता। ख़्याल रखो कि तुम्हारे साहब अल्लाह के दोस्त हैं।

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू—बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया **अन त साहिबी फ़िलग़ारे व अन त साहिबी अलल हौज़** तुम मेरे ग़ारे सौर के साथी हो और हौज़ पर भी मेरे साथ रहोगे।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ६६२)

(४) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि मेरे वालिद गिरामी हज़रत अबू—बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर नबीए करीम सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो हुज़ूर ने फ़रमाया **अन त अतीकुन मिनन्नार** यानी अल्लाह तआला ने तुझे जहन्नम से आज़ाद फ़रमाया है। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि उसी रोज़ से मेरे वालिदे मुहतरम का नाम 'अतीक़' हो गया।

(५) अबू—दाऊद शरीफ़ की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू—बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया **अमा इन्न क या अबा बकरिन अव्वलु मैंयदख़ुलुल जन्न त मिन उम्मती।**

(मिर्अतुल—मनाजीह शरह मिशकातुल—मसाबीह सफ़ा : ३५७)

यानी ऐ अबू—बक्र! सुन लो कि मेरी उम्मत में सबसे पहले तुम जन्नत में दाख़िल होगे।

(६) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आप फ़रमाती हैं कि एक चाँदनी रात में जब की रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था। मैंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्या किसी शख़्स की नेकियां आसमान के तारों के बराबर होंगी? फ़रमाया : हाँ! वह उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की नेकियां इतनी ही हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने फिर पूछा और अबू–बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) की नेकियां कहाँ गईं? तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: **इन्नमा जमीउ ह स नाते उ म र लिह स न ते वाहिदतिन मिन ह स ना ते अबी बकरिन** (मिर्अतुल–मनाजीह सफ़ा : ३६०)

यानी उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सारी नेकियां अबू–बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) की एक नेकी के बराबर हैं।

(७) इब्ने असाकिर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **हुब्बु अबी बकरिन व शुकरुहू वाजिबुन अला कुल्लि उम्मती** (तारीखुल–खुलफ़ाए सफ़ा : १२१) यानी अबू–बक्र से मुहब्बत करना और उनका शुक्र अदा करना मेरी पूरी उम्मत पर वाजिब है।

(८) इब्ने असाकिर ने हज़रत मिक़दाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि एक दफ़ा हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अक़ील बिन अबी–तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु में कुछ बदमज़गी हो गई। हज़रत अबू–बक्र फ़हीम व होशमन्द थे। दूसरे हज़रत अक़ील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़राबतदार भी थे। हज़रत अबू–बक्र ने उनसे कुछ न कहा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तमाम माजरा ब्यान किया। हज़रत अबू–बक्र की शिकायत सुनकर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाज़रीन में खड़े हुए और फ़रमाया **अला तदऊ न ली साहिबी मा शानुकुम व शानुहू फ़वल्लाहि मा मिन्कुम रजलुन इल्ला अला बाबे बैतिही ज़ुल्मतुन इल्ला बाबु अबी बकरिन फ़इन्नना अला बाबिहिन्नूर फ़वल्लाहि लक़द क़ुल्तुम कज़ब त वक़ा ल अबू-बकरिन सदक़ त व अम्सकतुमुल अमवाल व जा द ली बिमालिही व ख़ज़लतुमूनी ववासानी वत्त व अनी।** (तारीख़ुल–खुलफ़ा सफ़ा : ११७)

तर्जुमा : यानी लोगो!. तुम मेरे दोस्त को मेरे लिये छोड़ दो। तुम्हारी हैसियत क्या है और उनकी हैसियत क्या है (तुम को उसका अन्दाज़ा है)। वख़ुदा! तुम सब लोगों के दरवाज़ों पर अन्धेरा है लेकिन अबू–बक्र का दरवाज़ा नूरानी है। ख़ुदाए ज़ुल–जलाल की क़सम! तुमने मेरी तकज़ीब की और अबू–बक्र ने मेरी तस्दीक़ की। इस्लाम के लिए तुमने माल ख़र्च करने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

में बुख्ल से काम लिया और अबू–बक्र ने माल खर्च किया। और तुम लोगों ने मेरी मदद नहीं की मगर अबू–बक्र ने मेरी गमख्वारी की और मेरी इत्तिबा की।

यह चन्द हदीसें हैं जो हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल पर दलालत करती हैं। अब हम हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त क़ुरआने करीम की रौशनी में पेश कर रहे हैं। बादहू आपकी ख़िलाफ़त पर अहादीसे करीमा पेश की जाएंगी।

❖❖❖

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अकबर पर आयाते क़ुरआनी

ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का इस्तिदलाल उलमाए किराम की एक जमाअत ने इस आयते करीमा से किया है –

या ऐयुहल्लज़ी न आमनू मैंयर त द्द मिन्कुम अन दीनिही फ़सौ फ़ यतियल्लाहु बिक़ौमिं युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहु। अज़िल्लतिन अलल मोमिनी न अइज़्ज़तिन अलल-काफ़िरीन। युजाहिदू न फ़ी सबीलिल्लाहि वला यख़ाफ़ू न लौम त लाइमन। ज़ालि क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मैंयशाउ। वल्लाहु वासिउन अलीम। (सूरह माइदा–प : ६)

तर्जुमा:- ऐ ईमान वालो! तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अन्क़रीब अल्लाह ऐसे लोगों को लायेगा कि वह अल्लाह के प्यारे और अल्लाह उनका प्यारा। मुसलमानों पर नरम और काफ़िरों पर सख़्त अल्लाह की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अंदेशा न करेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है। (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : १७०)

उलमाए किराम ने उसकी तफ़सीर में कहा है कि क़ौम से मुराद हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके असहाब ही हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के विसाल फ़रमाने के बाद जब कुछ अरब मुर्तद हो गये तो हज़रत अबू–बक्र और उनके असहाब ही ने उनसे जिहांद किया और फिर उनको मुसलमान बनाया।

यूनुस बिन बुकैर ने हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया तो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अरब के बहुत से लोग मुर्तद हो गये हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे क़िताल किया। उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमा **फ़सौ फ़ यातियल्लाहु बिक़ौमिं युहिब्बुहुम व युहिब्बूनहू** हज़रत अबू–बक्र और उनके असहाब की ही शान में नाज़िल हुई है।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२८)

बैहक़ी ने हज़रत इमाम बसरी से रिवायत की है कि उन्होंने क़सम खाकर फ़रमाया कि इस आयत से मुराद हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ७५).

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी ने तैसीर के हवाले से लिखा है कि हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हुम इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि आयते करीमा में क़ौम से मुराद हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके यार मुहाजिर और अन्सार रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं कि उन्होंने मुर्तदों से जंग की। (तफ़सीरे हुसैनी जिल्द अव्वल सफ़ा : २३१)

(२) आपकी ख़िलाफ़त पर दलालत करने वाली दूसरी आयत यह है: **कुल लिलमुख़ल्लफ़ी न मिनल आराबि सतुदऔ न इला क़ौमिन उली बासिन शदीदिन तुक़ातिलूनहुम औ युसलिमू न फ़इन तुतीऊ यूतिकुमुल्लाहु अजरन ह स ना। व इन त त वल्लौ कमा तवल्लैतुम मिन क़बलु युअज़्ज़िब्कुम अज़ाबन अलीमा।** (सूरह फ़तह–प:२६–रूकू१०)

तर्जुमा:- उनके पीछे रह गये हुये गंवारों से फ़रमाओ। अन्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की तरफ़ बुलाये जाओगे कि उनसे लड़ो या वह मुसलमान हो जायें। फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे, अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गये तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा।' (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ७४१)

सदरुल–अफ़ाज़िल हज़रत अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः इस आयते करीमा की तफ़सीर में लिखते हैं कि उस क़ौम से बनी हनीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं, वह मुराद हैं जिनसे हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंग फ़रमाई। यह आयते करीमा शैख़ैन जलीलैन हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सेहते ख़िलाफ़त की दलील है कि उनकी इताअत पर जन्नत का और मुख़ालिफ़त पर जहन्नम का वादा है।

(ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान सफ़ा : ७४१)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इब्ने अबी हातिम और इब्ने कुतैबा कहते हैं कि मज़कूरा बाला आयत करीमा। हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर हुज्जत और वाज़ेह दलील है। क्योंकि आप ही ने मुर्तदीन से क़िताल करने की दावत दी है। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२८)

इमाम अह्ले सुन्नत हज़रत शैख़ अबुल हसन अशअरी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने अबू–अब्बास बिन शुरैह से सुना है कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त क़ुरआने करीम की इस आयत से साबित है इसलिये कि तमाम उलमाए किराम का उस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद जिन लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और मुर्तद हो गये थे। उन लोगों से हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने जंग की। पस यह आयत आपकी ख़िलाफ़त पर दलालत करती है। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२८–सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ८१)

❖❖❖

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अकबर पर अहादीसे करीमा

ख़लीफ़तुल–मुस्लिमीन हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम उनमें से चन्द पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

(१) हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में एक औरत हाज़िर हुई तो आपने उससे फ़रमाया कि फिर आना। उस ख़ातून ने अर्ज़ किया : अगर मैं फ़िर आऊँ और आपको न पाऊँ तो क्या करूँ? उसकी मुराद शायद वफ़ात से थी। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इल लम तजिदीनी फ़ातिया अबा बकरिन** अगर तू मुझे न पाये तो अबू–बक्र के पास आ जाना। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३७८)

(२) इब्ने असाकिर ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हवाले से लिखा है कि एक ख़ातून हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई जो आपसे कुछ दर्याफ़्त करना चाहती थीं। आपने उनसे कहा : फ़िर आना। उन्होंने कहा अगर मैं आऊं और आपको न पाऊं और हुज़ूर का विसाल हो चुका हो। तब आपने फ़रमाया **इन जिअ त फ़लम तजिदीनी फ़ाति अबी बकरिल ख़लीफ़त मिम बादी।**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यानी अगर तुम आओ और मुझको न पाओ तो अबू–बक्र के पास आना। मेरे बाद वही ख़लीफ़ा होंगे।

(तारीखुल–खुलफ़ाए सफ़ा १२४ सवाइके मुहर्रका सफ़ा ८५)

(३) मुस्लिम ने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है कि हजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी अलालत के दौरान फ़रमाया कि **उदई ली अबा बकरिन अबा क व अख़ा क हत्ता अकतु व किताबन फ़इन्नी अख़ाफु ऐं यतमन्न न मु त म न्निंउ व यकूलु क़ाइलुन अ न। वला याबल्लाहु वल मूमिनूना इल्ला अबा बकरिन।** यानी तुम अपने वालिद और भाई को बुला लो ताकि मैं कुछ उन्हें लिखकर दे दूं क्योंकि मुझे ख़ौफ़ है कि मेरे बाद कोई तमन्ना करने वाला या कहने वाला कहे कि मैं ख़िलाफ़त का मुस्तहिक़ हूँ। फ़िर फ़रमाया कि रहने दो इसलिये कि अल्लाह तआला और मोमिनीन किसी से राज़ी न होंगे।

(मिर्अतुल–मनाजीह शरह मिशकात जिल्द चहारुम सफ़ा–३४८ तारीखुल खुलफ़ा सफ़ा : १२४ सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ६४ मज़ाहिरे हक़ जिल्द चहारुम सफ़ा : ६२ ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : १६१)

अहमद और दूसरे मुहद्दिसीन ने इस हदीस को इन अल्फ़ाज़ में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है। उन्होंने फ़रमाया कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मर्ज़ुल–मौत में इरशाद फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान बिन अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुला लो ताकि अबू–बक्र के लिये एक वसीयत (दस्तावेज़) लिख दूं ताकि मेरे बाद कोई उनसे इख़तिलाफ़ न करे। फ़िर फ़रमाया : अच्छा रहने दो कि अबू–बक्र के मामले में मोमिनीन इख़्तिलाफ़ न करेंगे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा–६४ तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : १२४–शरह फ़िक़्हे अकबर–सफ़ा : ७४)

मज़ाहिरे हक़ ने क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह से नक़ल किया है कि यह हदीस अजवद है। इसमें इशारा है कि मेरे बाद ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। शीआ जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर और वसीयत का उनके हक़ में करते हैं वह महज़ बातिल है इसकी कुछ असल नहीं।

(मज़ाहिरे हक़ जिल्द ४ सफ़ा : ६२)

(४) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **ला यम्बग़ी लिक़ौमिन फ़ीहिम अबू**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बकरिन ऐंयउम्महुम गैरुहू (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६६३)

यानी जिस क़ौम में अबू–बक्र हों उन्हें लाइक़ नहीं कि उनकी इमामत अबू–बक्र के सिवाए कोई और करे। इस हदीस पाक से हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत साबित हो रही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम सहाबए किराम जिनमें हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उसमान ग़नी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी शामिल हैं – उन सबकी मौजूदगी के बावजूद हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी न्याबत के लिये फ़रमा रहे हैं। इससे साबित हो रहा है कि आप तमाम सहाबा से अफ़ज़ल और अअ़लमे क़ुरआन थे क्योंकि इमाम उसी को बनाया जाता है जो सबसे ज़्यादा आलिम और अफ़ज़ल हो। मेराज में सारे नबियों की इमामत हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई। क्योंकि आप तमाम नबियों और रसूलों से अफ़ज़ल और बड़े आलिम थे। हज़रत सिद्दीक़े अकबर का इमामत के लिये अपनी मौजूदगी में आगे बढ़ाना आपकी ख़िलाफ़त की तरफ़ एक इशारा था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं कि ये सिद्दीक़ अकबर आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हमारे दीन में हमारा पेशवा बना दिया तो दुनिया में आपको (ख़िलाफ़त के लिये) पीछे करने वाला कौन है? (मिर्अतुल–मनाजीह सफ़ा : ३५५ मज़ाहिरे हक़ जिल्द दोम सफ़ा : ६४)

(५) हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इक़तदू बिल्लज़ी न मिम बादी अबी बक़रिन व उ म र रज़ियल्लाहु अन्हुमा**

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६८६)

यानी मेरे बाद अबू–बक्र व उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की इक़्तिदा करो। इस हदीस पाक से तो बिल्कुल वाज़ेह तौर पर हज़रत सिद्दीक़ अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िलाफ़त का सुबूत मिल रहा है। फिर उसमें भी अव्वल हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का नामे मुबारक है इसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ का यानी पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ होंगे उसके बाद हज़रत उमर फ़ारूक़।

एक दूसरी हदीस पाक में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हैं कि बनी मुस्तलिक़ के सफ़ीरों ने मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपसे पूछूँ कि अगर हम आइन्दा साल आयें और आपको न पायें तो सदक़ात किसको दें। मैंने आपसे अर्ज़ किया : आपने फ़रमाया : उमर को दें। मैंने उन लोगों से कह दिया। उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करो अगर उमर को ना पायें तो किसको दें। आपने फ़रमाया : उसमान को दें और जिस रोज़ उसमान शहीद हों उस रोज़ तुम्हें हलाकत हो।

(ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : १६१)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दोनों रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नब्वी की तामीर शुरू फ़रमाई तो पहला पत्थर हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठाया। फिर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक पत्थर उठाया, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह असहाब मेरे बाद खुलफ़ा होंगे।

(ख़साइसुल–कुबरा–जिल्द दोम–सफ़ा : १८६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़िअल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर सहाब-ए-किराम का इज्मा

अस्दुस्सुन्नः ने फ़ज़ाइल में मुआविया बिन कुर्रः के हवाले से ब्यान किया है कि सहाबए किराम ने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में कभी शक नहीं किया। वह आपको हमेशा ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ही कहते रहे। इलावा अज़ीं सहाबए किराम का इजमा कभी भी ख़ता व ज़लाल पर नहीं हो सकता था। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२६)

हाकिम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि आम मुसलमानों ने जिस चीज़ को अच्छा समझा वह अल्लाह के नज़दीक भी अच्छी है और जिस चीज़ को आम मुसलमानों ने बुरा जाना वह अल्लाह के नज़दीक भी बुरी है। चूंकि तमाम सहाबा ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त को अहसन और पसंदीदा समझा है। पस वह अल्लाह तआला के नज़दीक भी अहसन है। हाकिम ही ने मुस्तदरक और ज़हबी ने अपने सही में मिर्अतुत्तैयब के हवाले से लिखा है कि अबू-सुफ़ियान इब्ने हरब एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आये और कहा कि लोगों को क्या हो गया कि उन्होंने कुरैश के एक मामूली आदमी से बैअत कर ली (यानी हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ से)। अगर आप चाहते तो आपको बहुत आसानी से ख़िलाफ़त मिल जाती। तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। अबू-सुफ़ियान! तुम इस्लाम और मुसलमानों दोनों के दुशमन हो। मुझे तो अबू-बक्र की ख़िलाफ़त में कोई ख़राबी नज़र नहीं आती क्योंकि वह हर तरह उसके अहल थे। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा सफ़ा : १२६)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इस क़ौल से राफ़ज़ी, शीआ, बोहरा और दीगर दुशमनाने सिद्दीक़ को सबक़ हासिल करना चाहिये जो यह कहते हैं कि ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रात सिद्दीक़ व उमर की ख़िलाफ़त का इन्कार करने वाले काफ़िर हैं –

हुज़ूर सैयदुल–अंबिया वल–मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ए बरहक़ व इमामे मुतलक़ हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। फ़िर हज़रत उमर फ़ारूक़, फ़िर हज़रत उसमान ग़नी, फ़िर हज़रत मौला अली। फ़िर छः महीने के लिये हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुम हुये। उन हज़रात को ख़ुलफ़ाये राशिदीन और उनकी ख़िलाफ़त को 'ख़िलाफ़ते राशिदा' कहते हैं कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची न्याबत का पूरा–पूरा हक़ अदा फ़रमाया है।

हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ और आपके बाद दोनों ख़ुलफ़ा की ख़िलाफ़त को हज़रत अली हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन ने कुबूल फ़रमाया और उनके मातहत रह कर जंगें लड़ीं और उनके पीछे नमाज़ें पढ़ते रहे। लेकिन फ़िरक़ए रवाफ़िज़ व फ़िरक़ए इमामिया ने हज़रत सिद्दीके अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िलाफ़त का इंकार किया। उनकी शान में तरह–तरह की गुस्ताख़ियां और नाज़ेबा अल्फ़ाज़ बकते रहे। हम इस सिलसिले में क़ुदवतुल–मुहक़्क़िक़ीन सनदुल मुहद्दसीन हज़रत मौलाना शाह अबदुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः के फ़तावा अज़ीज़िया से चन्द इक़तिबास पेश कर रहे हैं' मुलाहज़ा फ़रमाइये –

बिला शुब्हा फ़िरक़ए इमामिया हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त से मुन्किर हैं और फ़िक़्ह की किताबों में लिखा है जो हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त से इन्कार करे तो वह इजमा क़तई का मुन्किर हुआ और वह काफ़िर हो गया। चुनांचे फ़तावा आलमगीरी में लिखा है **अर्राफ़िज़ीयु इज़ा का न यसुब्बुश्शैख़ैने व यलअनुहुमा अल अयाज़ु बिल्लाह फ़हु व काफ़िरून व इन का न युफ़ज़्ज़िलु अलीयन कर्रमल्लाहु वजहहुलकरीमे अला अबी बकरिन रज़ियल्लाहु अन्हु ला यकूनु काफ़िरन लाकिन्नहु मुबतदिउन वलौ क़ ज़ फ़ आइश त रज़ियल्लाहु अन्हा बिज़्ज़िना फ़क़द कफ़र** यानी राफ़ज़ी जो बुरा कहता हो हज़रात शैख़ैन और उन हज़रात पर लानत भेजता हो, नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक! तो वह काफ़िर है। और अगर बुरा न कहता हो मगर उस अम्र का क़ायल हो कि हज़रत अबू–बक्र पर हज़रत अली की फ़ज़ीलत है तो वह काफ़िर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नहीं बिदअती है। अगर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शान में कज़फ़ का मुरतकिब हो तो वह भी काफ़िर है। और फ़तावा आलमगीरी में यह भी लिखा है कि **मन अन्क र इमाम त अबी बकरिनिस्सिद्दीके रज़ियल्लाहु अन्हु फ़हु व काफ़िरुन व अला क़ौले बाज़ेहिम हु व मुबतदिउन व लै स बिकाफ़िरिन वस्सहीहु अन्नहु काफ़िरुन व कज़ालि क मन अन्क र ख़िलाफ़ त उ म र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ी असहिहिल अक़्वाल** यानी जिसको हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इमाम होने से इन्कार हो तो वह काफ़िर है। और बाज़ उलमा के नज़दीक वह बिदअती है, काफ़िर नहीं। सही यह है कि वह काफ़िर है। ऐसा ही जिसको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इमाम होने से इन्कार हो तो ज़्यादा सही क़ौल यह है कि वह भी काफ़िर है। (फ़तावा अज़ीज़िया सफ़ा ४४०)

साहिबे बहारे शरीअत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली साहबे आज़मी अलैहिर्रहमः बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल सफ़ा : ७४ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रात शैख़ैन (हज़रत अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ख़िलाफ़त से इन्कार फ़ुक़हाये किराम के नज़दीक कुफ़्र है।

रवाफ़िज़ हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान में तबर्रा–बाज़ी भी करते हैं। इसके मुतअल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है **हुब्बु अबी बकरिन व उ म र ईमानुन व बुग्ज़ुहुमा कुफ़रुन.....**

यानी हज़रत अबू–बक्र और हज़रत उमर की मुहब्बत ईमान की अलामत है और उनसे दुशमनी कुफ़्र है। (मज़ाहिरे हक़–जिल्द चहारुम–सफ़ा : ८४) और ख़ुलासा में है कि **मन अन्क र ख़िलाफ़तस्सिद्दीक़े फ़हु व काफ़िरुन** यानी जिसने हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का इन्कार किया वह काफ़िर है। (मज़ाहिरे हक़ जिल्द चहारुम सफ़ा:८४)

अल्लाह तआला से दुआ है कि हम सबको अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची मोहब्बत व गुलामी अता फ़रमाये। आपके सच्चे जांनशीन हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहब्बत व उल्फ़त से हमारा दिल मुनव्वर व मुजल्ला फ़रमा दे।

आमीन! बजाह सैयदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़लीफ़ा-ए-दोम

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

उमर फ़ारूक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

वह उमर जिसके आदा पे शैदा सक़र
उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम
फ़ारूक़े हक़ व बातिल, इमामुलहुदा
तेग़े मसलूले शिद्दत पे लाखों सलाम
तर्जुमाने नबी, हम ज़ुबाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

(सैय्यदना आला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमः)

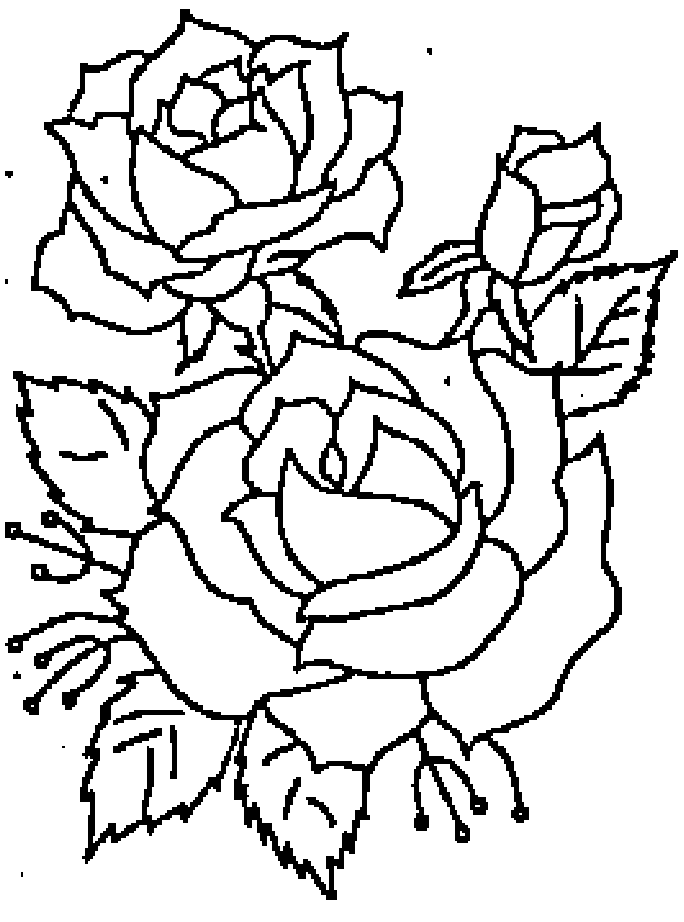

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नाम व नसबः ख़लीफ़ए दोम का नाम उमर, कुन्नीयत अबुल–हफ़्स और लक़ब फ़ारूक़े आज़म है। आपके वालिद का नाम ख़त्ताब और माँ का नाम अन्तमा है जो हिशाम बिन मुग़ीरह की बेटी हैं। आपका नसबनामा यूं है : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन रियाह बिन कुर्त बिन रज़्ज़ाह बिन अदी बिन काब बिन लुवैय। आठवीं पुश्त में आप का शजरए नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ानदाने शजरा से मिलता है।

आप का इस्लाम कुबूल करना : वाक़िअए फ़ील के तेरह साल बाद आप की विलादत हुई। नुबुव्वत के छटे बरस सत्ताईस बरस की उम्र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ से इस्लाम लाये **अल्लाहुम्म म अइज़्ज़ल इस्ला म लिउ मरिब्निल ख़त्ताबि ख़ास्सतन**

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १८३ बहवाला हाकिम)

इलाहल–आलमीन ! उमरबनिल ख़त्ताब से इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमा।

आपके इस्लाम लाने से आसमान के फ़रिश्तों ने ख़ुशियां मनाईं। इस्लाम की शौकत व कुव्वत में इज़ाफ़ा हुआ। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से पहले जो हज़रात इस्लाम लाये थे वह छुप–छुपकर इबादत व बन्दगी किया करते थे। लेकिन जैसे ही हज़रत उमर फ़ारूक़ मुसलमान हुये आपने एलान फ़रमा दिया कि अब अल्लाह तआला की इबादत छुप कर नहीं बल्कि खुल्लम–खुल्ला ज़ाहिर में होगी। चुनांचे तमाम मुसलमान दो सफ़ें बनाकर निकले। एक सफ़ में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और एक सफ़ में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उसी तरह सफ़ों की शकल में मुसलमान मस्जिदे हराम में दाख़िल हुये। जब क़ुरैश ने हज़रत हमज़ा और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा को मुसलमानों की जमाअत के साथ देखा तो उनको हद दर्जा मलाल हुआ। उसी रोज़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको 'फ़ारूक़' का लक़ब मर्हमत फ़रमाया क्योंकि इस्लाम ज़ाहिर हुआ और हक़ व बातिल में फ़र्क़ पैदा हो गया। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १७६)

आपका शुमार अशराफ़ व अकाबिर क़ुरैश में होता था। ज़मानए जाहिलीयत में आपके ख़ानदान से सफ़ारत मुख़्तस और मख़सूस थी। यानी जब कभी क़ुरैशी ख़ानदान के दरमियान या किसी मुल्क से जंग होती थी तो आपही के ख़ानदान के अफ़राद सुलह व सफ़ाई के लिये सफ़ीर बना कर भेजे जाते थे। या अगर कभी तफ़ाख़ुरे नसब के इज़हार की ज़रूरत पेश आती तो आप ही के बुज़ुर्ग उस काम के लिये रवाना किये जाते थे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आपने जिस वक़्त ईमान लाया तो चालीस मर्द और ग्यारह औरतें इस्लाम क़ुबूल कर चुकी थीं। बाज़ उलमा का ख़्याल है कि उन्तालीस मर्द और तैंतीस औरतें मुशर्रफ़ ब–इस्लाम हो चुकी थीं। आपका शुमार भी हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह साबिक़ीन अव्वलीन में होता है। आप अशरए मुबश्शरा में भी दाखिल हैं। (यानी वह दस खुशनसीब सहाबी जिनको दुनिया में जन्नत की खुशख़बरी दी गई) आपको रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खुसुर (ससुर) होने का शर्फ़ भी हासिल है। आप उलमा व ज़ुह्हाद सहाबा किराम में शुमार किये जाते हैं। आपसे पाँच सौ उन्तालीस हदीसें मर्वी हैं। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : १८२)

अस्करी कहते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु वह पहले शख़्स हैं जिनको अमीरुल–मोमिनीन से मौसूम किया गया। आप ही पहले वह शख़्स है जिन्होंने तारीख़ व साल हिजरी (सन् हिजरी) जारी किया; बैतुलमाल क़ायम किया; माहे रमज़ान में तरावीह की नमाज़ बा–जमाअत जारी फ़रमाई। लोगों के हालात मालूम करने के लिये रातों को आबादी का गश्त आप ही ने शुरू फ़रमाया। हिज्व व मुज़म्मत करने वालों पर हद्द जारी फ़रमाई। शराब पीने वालों पर अस्सी कोड़े लगवाएं। मतआ की हुर्मत को आम किया। दफ़ातिर क़ायम किये। वज़ारतें मुतअय्यन फ़रमाईं। घोड़ों पर ज़कात वसूल की। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने **अतालल्लाहु बक़ाउ क** और **ऐदीकल्लाह** कह कर दुआ दी। आप ही ने सबसे पहले दुर्रः ईजाद किया। शहरों में क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाये और आपका सबसे बड़ा कारनामा यह है कि आपने मस्जिदे नब्वी शरीफ़ को वसी कराया और उसमें टाट का फ़र्श बिछवाया। आप ही ने मक़ामे इबराहीम को उस जगह क़ायम किया जहां वह अब मौजूद है वरना पहले वह बैतुल्लाह से मिला हुआ था। जितनी फ़ुतूहात आपके दौरे खिलाफ़त में हुई उसकी मिसाल नहीं मिलती। ग़र्ज़ यह कि उस मर्दे मुजाहिद ने दस साल छः महीने और पाँच दिन बड़ी ही शान व शौकत के साथ ख़िलाफ़त व न्याबते रसूल का हक़ अदा किया। और २६ ज़िलहिज्ज : सन् २३ हिजरी बरोज़ बुध ६३ साल की उम्र पाकर मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में नमाज़े फ़ज्र के वक़्त अबू–लूलू के ज़हर–आलूद ख़ंजर से तीन कारी ज़र्ब लगी। बेहोश हुये। जब होश आया तो फ़रमाया : अलहम्दुलिल्लाह ! एक काफ़िर के हाथ से शहादत मिली। आपका विसाल हो गया। गुंबदे ख़ज़रा में पहलूए सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु में तदफ़ीन की गई और नमाज़े जनाज़ा हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २१५–२१६)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़िअल्लाहु अन्हु और क़ुरआने हकीम

इब्ने मर्दूया ने मुजाहिद से रिवायत की है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो कुछ राय (किसी अहम मसअले में) देते थे क़ुरआने हकीम का हुक्म उसी के मुताबिक़ नाज़िल होता था। इब्ने असाकिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल नक़ल करते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ में अकसर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रायें मौजूद हैं। इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि अगर बाज़ उमूर में लोगों की रायें कुछ और होतीं और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की कुछ और, तो क़ुरआन शरीफ़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : १६७)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : मेरे रब ने मेरी राय से इक्कीस जगह क़ुरआने करीम में मुवाफ़िक़त फ़रमाई है। हम उनमें से चन्द आयातों को क़ारिईन की ख़िदमत में पेश कर रहे हैं :

(१) बुख़ारी व मुस्लिम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मेरे रब ने मेरी राय से तीन मौक़ों पर इत्तिफ़ाक़ किया। अव्वल, उस वक़्त कि जब मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया: काश! हम मक़ामे इब्राहीम को अपनी नमाज़ की जगह बनाते। तो उसके बाद ही यह आयत नाज़िल हुई। **वत्तख़िज़ू मिम मक़ामे इब्राही म मुसल्ला** (सूरह बक़रा–प–१ रूकू १५)

यानी और इब्राहीम की खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ। दोम, मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आपकी ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और अज़्वाजे मुतह्हिरात भी होती हैं। बेहतर होगा कि आप उनको पर्दा करने का हुक्म फ़रमा दें। तो हज़रत उमर फ़ारूक़ फ़रमाते हैं कि इस गुज़ारिश के बाद उम्महातुल–मोमिनीन के लिये पर्दा की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह आयत नाज़िल हुई। **व इज़ा सअल तुमूहुन्न न मताअन फ़सअलू हुन्न न मिंव्वराइ हिजाबिन** (सूरह अहज़ाब–प–२२ रुकू–१४) यानी और जब तुम उनसे बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर (से) मांगो। सोम, जब तमाम अज़वाजे मुतहिहरात हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (नान व नफ़्क़ा की तंगी के सिलसिले में) गैरत दिलाने पर यक–ज़ुबान और मुत्तहिद हो गईं तो मैंने कहा मुम्किन है कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुमको तलाक़ दे दें तो उनका रब उन्हें तुमसे बेहतर बीवियां दे दे। तो अल्लाह तआला ने मेरे बिल्कुल उन्हीं अल्फ़ाज़ में यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई **असा रब्बहू इन तल्ल क़ कुन्न न ऐंयुबदिलहु अज़वाजन ख़ैरम्मिनकुन्न** (सूरह तहरीम–प:२८–रुकू.१६) यानी उनका रब, क़रीब है कि अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दे कि उन्हें तुमसे बेहतर बीवियां बदल दे इताअत वालियां। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६७)

(२) पहली शरीअतों में इफ़्तार के बाद खाना पीना, मुजाम्अित करना नमाज़े इशा तक हलाल था। बादे नमाज़ इशा यह सब चीज़ें रात में हराम हो जाती थीं। यह हुक्म ज़मानए अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक बाक़ी था कि अचानक रमज़ानुल मुबारक में बादे नमाज़े इशा रात में बाज़ सहाबए किराम और ख़ुसूसन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुबाशिरत वुकू में आई तो उसपर उन हज़रात को शर्मिन्दगी हुई और बहुत नादिम होकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुये और पूरा वाक़िया ब्यान फ़रमाया। तो अल्लाह तआला ने उनको माफ़ फ़रमा दिया। यह आयत नाज़िल हुई। **उहिलल लकुम लैलतस्सियामिर्रफ़सु इला निसाइकुम** (सूरह बक़रा–प:२–रुकू ७) यानी रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुआ। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : ११६)

(३) इब्ने हातिम ने बरिवायत अब्दुर्रहमान बिन अबू–याला ब्यान किया है कि एक यहूदी हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मिला और आपसे कहा कि जिब्रईल फ़रिशता जिसका ज़िक्र तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) करते हैं वह हमारा दुशमन है। यह सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया **मन का न अदुव्वल लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व जिबरी ल व मीका ल फ इन्नल्ला ह अदुव्वुलिलकाफ़िरीन।** (सूर: बक़र पारा १ रुकू १२) यानी जो कोई दुशमन हो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरईल और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मीकाईल का तो अल्लाह दुशमन है काफ़िरों का। तो उन्हीं अलफ़ाज़ में यह आयते करीमा नाज़िल हुई। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : १६६) अल्लामा सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं कि आयते करीमा के आख़री अलफ़ाज़ **फ़इन्नल्ला ह अदुव्वुलिलकाफ़िरी न।** मालूम हुआ कि अंबिया और मलाइका की अदावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का मूजिब है और महबूबाने हक़ से दुशमनी ख़ुदा से दुशमनी करना है।

(४) बशर नामी एक मुनाफ़िक़ का यहूदी से झगड़ा हो गया तो यहूदी ने कहा : चलो सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फ़ैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने ख़्याल किया हुज़ूर तो बे–रियायत महज़ हक़ फ़ैसला देंगे जिससे मतलब हासिल न होगा। इसलिये उसने बावजूदे मुद्दईए ईमान होने के यह कहा कि काब बिन अशरफ़ यहूदी को पंच बनाओ यहूदी जानता था कि काब रिशवतख़ोर है इसलिये उसने बावजूदे हम–मज़हब होने के इसको पंच तस्लीम न किया। नाचार मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आना पड़ा। हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया वह यहूदी के मवाफ़िक़ हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैसला सुनने के बाद फिर वह मुनाफ़िक़ यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया। यहूदी ने आपसे अर्ज़ किया कि मेरा और उसका मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तय फ़रमा चुके हैं लेकिन यह हुज़ूर के फ़ैसले से राज़ी न हुआ। अब आपसे फ़ैसला चाहता है। तो आपने फ़रमाया : ठहरो, हां मैं अभी आकर उसका फ़ैसला कर देता हूं। यह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गये और तलवार लाकर उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया। फ़रमाया : जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हुआ उसका मेरे पास यही फ़ैसला है। उसी दिन हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर 'फ़ारूक़' रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ारूक़ का लक़ब दिया। अल्लाह तबारक व तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई : **अलम त र इलल्लज़ी न यज़उमून अन्नहुम आमनू बिमा उन्ज़िल इलैक वमा उन्ज़िल इलैका वमा उन्ज़ि ल मिन क़बलि क युरीदू न ऐंतहाकमू इलत्ताग़ूति वक़द उमिरू ऐंयकफुरू बिह व युरीदुश्शैतानु ऐंयुज़िल्लहुम ज़लालम बईदा।** (सूरह निसा–प:५–रुकू–६) यानी क्या तुमने उन्हें न देखा कि जिनका दावा है कि वह ईमान लाये उस पर जो तुम्हारे ऊपर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उतरा और उस पर जो तुमसे पहले उतरा। फिर चाहते हैं कि शैतान को अपना पंच बनायें और उनको तो हुक्म यह था कि उसे असलन न मानें और इबलीस यह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे।

(तफ़सीर कबीर मिस्री अल जुज़उल–आशिर सफ़ा : १५३। तफ़सीरे हुसैनी जिल्द अव्वल सफ़ा : १७५। तारीखुल खुलफ़ा सफ़ा २००)

फिर दूसरा शख़्स भागा हुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उस वाक़िया की इत्तला हुज़ूर को पहुंचाई तो आपने फ़रमाया कि मुझे तो उमर से यह उम्मीद नहीं कि वह किसी मोमिन के क़त्ल पर इस तरह जुरअत करें। इस पर अल्लाह तआला ने मुन्दरजा ज़ैल आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई **फ़ला व रब्बि क ला यूमिनू न हत्ता युहक्किमू क फ़ीमा श ज र बैनहुम सुम्म म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम ह र जम्मिम्मा क़ज़ै त व युसल्लिमू तसलीमा।** (सूरह निसा–प:५–रुकू ६) तो ऐ महबूब! तुम्हारे रब की क़सम वह मुस्लमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें अपना हाकिम न बनायें फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उससे रुकावट न पायें और जी से मान लें। तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु उस मुनाफ़िक़ के खून से बरी हो गये। और उसका खून रायगां गया।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २००)

मुहतरम क़ारिईन! इन तमाम बातों से अल्लाह तआला के नज़दीक हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की इज़्ज़त व अज़मत का पता चलता है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ ने जो बातें कीं उसकी मुवाफ़िक़त में अकसर व बेशतर आयतें नाज़िल होती रहीं। इसके अलावा और बहुत–सी आयाते क़ुरआनिया हैं। शाइक़ीन हज़रात तारीखुल–खुलफ़ा, तफ़सीरे कबीर व सवाइक़े मुहर्रक़ा का मुताला करें।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़िअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

ख़लीफ़ए दोम हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में कसरत से हदीसें वारिद हुई है उनमें से चन्द क़ारिईन की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूं –

(१) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **बैना अ न नाइमुन शरिब्तु यानिल्लबन हत्ता अन्जु र इलरैये यजरी फी ज़ुफ़री औ फी अज़फ़ारी सुम्म म नावलतु उ म र फ़ कालू फ़ मा अव्वलतहु कालल इल्म।** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८८)

यानी मैं सो रहा था कि दौराने ख़्वाब में इतना दूध पिया जिसकी ताज़गी मेरे नाखुनों से भी ज़ाहिर होने लगी। फ़िर बचा हुआ (दूध) मैं ने उमर को दिया। लोग अर्ज़ गुज़ार हुये कि इस (दूध) से क्या मुराद है? फ़रमाया 'इल्म' मुराद है।

(२) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **लक़द का न फीमा क़बलकुम मिनल उ म मि मुहद्दिसू न फ़ईयकु फी उम्मती अ ह दुन फ़इन्नहु उमरु।** (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३६०)

यानी तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दिस हुआ करते थे अगर मेरी उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर है। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

(३) हज़रत अबू–सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है : मैं सो रहा था कि लोगों को मेरी ख़िदमत में पेश किया गया। वह क़मीज़ पहने हुये थे। पस किसी की क़मीज़ तो सीने तक आती थी और किसी की उससे भी ऊंची थी। लेकिन जब उमर को मेरे सामने पेश किया गया तो उनकी क़मीज़ ज़मीन पर लटक रही थी। लोग अर्ज़ गुज़ार हुये या रसूलल्लाह!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आप इससे क्या ताबीर लेते हैं ? फ़रमाया : 'दीन' (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३६१)

(४) हज़रत इब्ने–उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है कि रसूलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **इन्नल्ला ह ज अ लल हक़ क़ अला लिसानि उ म र व क़लबिही** (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ६६६)

यानी अल्लाह तआला ने उमर की ज़ुबान और दिल पर हक़ को जारी फ़रमा दिया।

(५) हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने **लौ का न बादी नबीयुन लका न उ म रबनिल ख़त्ताब**

(तिर्मिज़ी शरीफ़ **जिल्द** दोम सफ़ा:६६७)

यानी अगर मेरे बाद नबी होता तो जनाब उमर **इब्ने–**ख़त्ताब होते।

(६) तबरानी ने कबीर और इब्ने इद्दी ने **कामिल में हज़रत** इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया –

उ म रू म इ य व अ न म अ उमरिं वल हक़्क़ु बादी म अ उ म रिन हैसु का न। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा:३४३ अद्दुररुस्सुन्नीय : सफ़ा : २४)

यानी उमर मेरे साथ है और मैं उमर के साथ हूं। मेरे बाद हक़ वहां होगा जहां उमर होगा। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

(७) हज़रत सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अव्वलु मैंयुसाफ़िहुहुल हक़्क़ु उ म रु व अव्वलु मैंयुसल्लिमु अलैहि व अव्वलु मैंयाखुज़ु बियदिही फ़यदख़ुलुहुल जन्न :** (इब्ने माजा। ज़िल्द अव्वल सफ़ा : ६३)

यानी सबसे पहले अल्लाह तआला उमर से मुसाफ़हा करेगा और सबसे पहले उमर को सलाम करेगा। सबसे पहले उमर का हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा।

(८) हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **यत्तलिऊ अलैकुम रजुलुम मिन अहलिल जन्नति फ़त्तल अ अबू बकरिन सुम्म म क़ा ल यत्तलिऊ अलैकुम रजुलुम मिन अहलिलजन्नते फ़त्तलअ उ म रु।** (तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७०१) यानी एक शख़्स तुम में आ रहा है, वह जन्नती

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

है। तो हज़रत अबू–बक्र आये। फ़िर फ़रमाया : एक शख़्स तुममें आ रहा है। वह भी जन्नती है, तो हज़रत उमर फ़ारूक़ तशरीफ़ लाये। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

(६) तबरानी ने औसत में हज़रत अबू–सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस शख़्स ने उमर से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने उमर से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की। अल्लाह तआला ने अहले अर्फ़ा पर उमूमन और उमर पर खुसूसन फ़ख़ व मुबाहात की है। जितने अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम मबऊस हुए हैं हर एक की उम्मत में एक मुहद्दिस ज़रूर हुआ है। अगर मेरी उम्मत का कोई मुहद्दिस है तो वह उमर हैं। सहाबा किराम ने यह सुनकर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुहद्दिस कौन होता है? आपने फ़रमाया : जिसकी ज़ुबान से मलाइका गुफ़्तगू करें।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : १८४–ख़साइसुल कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २१३)

(१०) हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मर्वी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं जिन्न व इन्स और शयातीन को उमर से भागते हुये देखता हूं।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७५७)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत उमर फ़ारूक़

सहाब-ए-किराम व सुलहा-ए-उम्मत

रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सहाबए किराम की तादाद बहुत ज़्यादा थी। हम उन सब में हज़रत उमर के बारे में यह समझते थे कि सकीना उमर की ज़ुबान पर नातिक़ होता है। तारीक़ बिन शिहाब से मर्वी है कि हम लोग यह कहा करते हैं कि हज़रत उमर फ़रिशते की ज़ुबान से नातिक़ होते हैं। (ख़साइसुल–कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २१३)

हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तमाम रूए ज़मीन पर मुझे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा कोई अज़ीज़ नहीं है। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया तो लोगों के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया : मैंने तुम सबसे बेहतर शख़्स को ख़लीफ़ा बनाया है।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६४)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि (हज़रत) उमर रज़ियल्लाहु अन्हु निहायत ज़ूद फ़हम, तेज़ तबा और मामला फ़हम थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक रोज़ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ ले गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त एक कपड़ा ओढ़े हुए थे। हज़रत अली ने आपको देखकर फ़रमाया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल के बाद इस चादर ओढ़ने वाली हस्ती के अक़वाल ज़्यादा अज़ीज़ हैं।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा १६५)

हज़रत अबू–उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जो शख़्स हज़रत अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भलाई के साथ याद न करे तो मैं ऐसे शख़्स से बिल्कुल बेज़ार और अलग हूं।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६७)

हज़रत इब्ने–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ताबूत में रखा गया तो लोगों का जमघटा हो गया। आपका जनाज़ा उठने से पहले लोग दुआयें मांगते और नमाज़ें पढ़ते रहे और मैं भी उनमें था। अचानक एक शख़्स ने मेरा कंधा पकड़ लिया और वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे। फिर उन्होंने हज़रत उमर के लिये दुआये रहमत की और फ़रमाया : आपके बाद ऐसा कोई शख़्स नहीं जो मुझे आपके बराबर महबूब हो कि वह खुदा के बारगाह में आप जैसे अमल लेकर जायें। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३८६)

ख़िलाफ़त हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु

अमीरुल–मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर किसी दलील के क़ाइम करने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि यह बात हर साहिबे अक्ल व फ़हम जानता है कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त की हकीकत से हज़रत उमर की ख़िलाफ़त लाज़िम आती है। और हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त की हक़ीक़त इजमा और नुसूसे क़ुरआन व हदीस से साबित है। पस उससे हज़रत उमर की ख़िलाफ़त की हक़ीक़त पर नुसूसे क़ुरआन व हदीस और इजमा लाज़िम आता है। क्योंकि जो चीज़ असल के लिये साबित है वह फ़रा के लिये भी साबित होती है। जैसा कि हमने गुज़िश्ता औराक़ में हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़िमन में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर भी चन्द हदीसें पेश की हैं। इस वक़्त हम क़दरे तफ़सील के साथ आपकी ख़िलाफ़त को अल्लामा वाक़दी की रिवायत से ब्यान कर रहे हैं कि जब हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत ज़्यादा ख़राब हो गई तो आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। आप अशरए मुबश्शरा में से हैं। उनसे फ़रमाया कि तुम उमर फ़ारूक़ के बारे में क्या राय रखते हो? उन्होंने कहा कि आप मुझसे बेहतर जानते हैं। आपने फ़रमाया कि फिर भी तुम्हारी उनके बारे में क्या राय है ? उन्होंने कहा कि मेरे ख़्याल में तो वह उससे बढ़कर हैं जितना आप उनके बारे में ख़्याल फ़रमाते हैं। फिर आपने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला कर यही बात दर्याफ़्त फ़रमाई। उन्होंने भी यही कहा कि आप उनके बारे में मुझसे ज़्यादा जानते हैं। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इरशाद फ़रमाया : कुछ तो बतलाओ। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह जानता हम लोगों में उनका मिस्ल मौजूद नहीं। फ़िर आपने सईद बिन ज़ैद, उसैद बिन हुज़ैर और दूसरे अन्सार व मुहाजिरीन हज़रात से भी मशवरा लिया और उनकी राय मालूम की। हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : अल्लाह तआला खूब जानता है कि आपके बाद उमर ही वह शख़्स हैं जो अल्लाह की रज़ा को अपनी रज़ा समझते हैं और अल्लाह तआला जिससे नाखुश होता है वह भी उससे नाखुश होते हैं। उनका बातिन उनके ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे ख़िलाफ़त के लिये उनसे ज़्यादा क़वी और मुस्तइद शख़्स कोई दूसरा नज़र नहीं आता। उसके बाद और सहाबए किराम तशरीफ़ लाये। उनमें से एक ने हज़रत सिद्दीक़ से अर्ज़ किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़्त मिज़ाजी से आगाही के बावजूद अगर आपने उनको ख़लीफ़ा नामज़द कर दिया तो अल्लाह तआला के यहां क्या जवाब देंगे? आपने फ़रमाया : खुदा की क़सम! तुमने मुझको ख़ौफ़ज़दा कर दिया। लेकिन मैं बारगाहे इलाही में अर्ज़ करूंगा कि या इलाहल–आलमीन ! मैंने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया है और जो कुछ भी मैंने किया वह इससे भी बाला तर हैं। यह जो कुछ मैंने कहा है तुम दूसरों तक भी पहुंचा देना। उसके बाद आपने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया : आप लिखिये!

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम! यह वसीयत–नामा है जो हज़रत अबू–बक्र बिन क़हाफ़ा ने अपने आख़िरी अहद में दुनिया से जाते वक़्त और अह्दे आख़िरत के आग़ाज़ में आलमे बाला में दाख़िल होते वक़्त लिखाया है। यह वह वक़्त होता है जब एक काफ़िर भी ईमान ले आता है और एक काज़िब भी सच बोलता है और फ़ासिक़ व फ़ाजिर भी नूरे यक़ीन हासिल कर लेता है। लोगो! मैंने अपने बाद तुम्हारे ऊपर उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है। उनके अहकाम को सुनना और उनकी तामील करना। मैंने हत्तल–मक़दूर खुदा और उसके रसूल और दीने इस्लाम अपने नफ़्स की और तुम्हारी ख़िदमत की है और जहां तक मुम्किन था तुम्हारी भलाई और बेहतरी में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। मुझे यक़ीन है कि वह (यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) अद्ल व इन्साफ़ से काम लेंगे और अगर ऐसा हुआ तो मेरे ज़न्न व ख़्याल के मुताबिक़ होगा और अगर वह बदल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जायें तो हर शख़्स अपने किये का जवाबदेह होगा। अलबत्ता मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई का क़सद किया है। ज़ालिमों को अन्क़रीब मालूम हो जायेगा कि वह किस तरफ़ रुजू करने वाले हैं। वस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू।

फिर आपने वसीयत–नामा को सर बमुहर करके हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले कर दिया। हज़रत उसमान ग़नी उसको लेकर चले गये। लोगों ने ब–रज़ा व रग़बत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअत कर ली। उसके बाद आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लवत में बुला कर जो कुछ वसीयतें करना थीं वह कीं। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब चले गये तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु ने बारगाहे इलाही में दुआ के लिये हाथ उठाये और कहा: इलाही! यह जो कुछ मैं ने किया है उससे मेरा मक़सूद मुसलमानों की फ़लाह व बहबूद है। तू इस अम्र से वाक़िफ़ है कि मैं ने फ़ित्ना व फ़साद की इनसिदाद के लिये यह काम किया है। मैंने इस सिलसिले में अपनी राय के इजतिहाद से काम लिया है। मैंने उनमें जो सबसे बेहतर था उसको उनका वाली बनाया है। वह उनमें सबसे ज़्यादा क़वी और नेकी पर हरीस है। इलाही! मैं तेरे हुक्म से तेरे हुज़ूर में हाज़िर हो रहा हूं। इलाही! तू ही अपने बन्दों का मालिक व मुख़्तार है और उनकी बागडोर तेरे ही हाथ में है। इलाही! उन (हाकिमों) में सलाहियत व दुरुस्ती पैदा करना और उमर को खुलफ़ाए राशिदीन में शामिल करना। अवाम को सालेह ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाना। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १४८)

इब्ने असाकिर ने बरिवायत यसार बिन हमज़ा ब्यान किया है कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इशतिदादे अलालत में दरीचा (खिड़की) से सर बाहर निकाल कर लोगों से इस तरह ख़िताब फ़रमाया : ऐ लोगो! मैंने एक शख़्स को तुम पर (ख़लीफ़ा) मुक़र्रर किया है। क्या तुम इस इन्तिख़ाब पर राज़ी हो। लोगों ने बिल–इत्तिफ़ाक़ कहा या ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम बिल्कुल राज़ी हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर खड़े हो गये और कहा कि वह शख़्स अगर उमर नहीं है तो हम राज़ी नहीं हैं। आपने फ़रमाया बेशक वह उमर ही है। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १५०)

हज़रत सुफ़ियान सौरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह ख़्याल किया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू–बक्र व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादा ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ थे तो उसने सिर्फ़ हज़रत अबू–बक्र व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ही को नहीं बल्कि तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सहाबा को ख़ताकार ठहराया। हज़रत शुरैक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जिस शख़्स के दिल में एक ज़रा–सी भी नेकी है वह यह कभी नहीं कह सकता कि हज़रत अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुक़ाबले में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : १६६)

❖❖❖

गुस्ताख़ाने अबू-बक्र व उमर की सज़ायें

इमाम मुस्तग़फ़िरी दलाइलुन्नुबुव्वः में एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि कूफ़ा में एक शख़्स रहता था जो सैयदना हज़रत सिद्दीक़े अकबर व सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहता था। एक दिन वह हमारे साथ सफ़र में हो गया तो हमने उसे हर चन्द समझाया लेकिन उसने सुनी अनसुनी कर दी। आख़िर हमने उसे कह दिया कि हमसे दूर हो जा। वह हमसे जुदा हो गया। ज‌ब हम वापस आने लगे तो हमने उसके नौकर से कहा कि अपने आक़ा से कहो कि हमारे पास आ जाये। उसने कहा : मेरे आक़ा से एक अजीब व ग़रीब वाक़िआ पेश आ गया है। उसके दो हाथ सूअर के हाथों जैसे हो गये हैं। हम उसके पास गये तो अपने पास आने की दावत दी। लेकिन उसने कहा कि मेरे साथ एक अज़ीम हादसा वाक़ेय हो चुका है। उसने अपने हाथ अपनी आस्तीन से बाहर निकाले जो सूअर की तरह थे। वह हमारे साथ हो लिया। चलते–चलते हम ऐसी जगह पहुंचे जहां सूअरों का एक गल्ला था। वह घोड़े से उतरा और सूअर बन कर सूअरों से जा मिला। उसके बाद हम उसे पहचान न सके। (शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा : २६६)

अहले बसरा में से एक का ब्यान है कि मैं ने अपना माल व मता अहवाज़ के रईस के हाथों फ़रोख़्त कर दिया। लोगों ने मुझे बताया कि वह राफ़ज़ी है और हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ व सैयदना उमर फ़ारूक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरे अलफ़ाज़ से याद करता है। जब मेरा उसके यहां मुसलसल आना-जाना हुआ तो एक दिन मेरी मौजूदगी में उसने हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहना शुरू कर दिया। मैं उसके यहां से बहुत मग़मूम व महज़ून होकर उठा। इस अन्दोह व ग़म के बाइस मैंने उस रात इफ़्तार नहीं किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैंने ख़्वाब में देखा और अर्ज़ किया : या नबीयल्लाह (सल्लल्लाहु अलै क वसल्लम) देखिए! वह शख़्स हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान में क्या बकता है ? हुज़ूर हतमिय्युल मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या उसकी बातें तुझे अच्छी नहीं लगतीं? मैंने अर्ज़ किया : हाँ, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलम ने फ़रमाया : जाओ उसे मेरे पास ले आओ। मैं गया और उसे ले आया। फिर फ़रमाया : उसे सुला दो। मैंने उसे सुला दिया। फ़िर आपने मुझे एक छुरी दी और फ़रमाया उसे क़त्ल कर दो। मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं उसे मार दूं। मैंने तीन बार इसी तरह पूछा। क्योंकि किसी को क़त्ल करना मेरे लिये कारे अज़ीम था। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया : उसे मार दो। मैंने उसे क़त्ल कर दिया। सुबह हुई तो मुझे उस ख़बीस का हाल दर्याफ़्त करने का ख़्याल आया। जब मैं महल्ले में पहुंचा तो उसके घर से हाव-हू और शोर व फ़ुग़ां की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने पूछा : यहां क्या हुआ है? लोगों ने बताया कि कल रात किसी शख़्स ने उसे बिस्तर पर ही ख़त्म कर दिया है। मैंने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैंने उसे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के हुक्म से क़त्ल किया है। जब उसके बेटे को सूरते हाल का पता चला तो उसने कहा : तुम अपना माल व असबाब संभालो और इसे छोड़ दो। मैं इसे दफ़न कर दूं। मैं अपना माल व मता लेकर वहां से चल दिया।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : २७०)

एक बुर्जुग का ब्यान है कि मैं ने शाम के सफ़र में सुबह की नमाज़ एक मस्जिद में पढ़ी जब इमाम नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो उसने हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बद-दुआयें देना शुरू कर दीं। आइन्दा साल जब मैं दोबारा शाम गया तो इत्तिफ़ाक़ से फ़िर सुबह की नमाज़ उसी मस्जिद में अदा करनी पड़ी। जब इमाम नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ तो उसने हज़रात शैख़ैन के हक़ दुआये ख़ैर की। मैंने नमाज़ियों से पूछा : यह क्या बात है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि गुज़िश्ता साल तो यह हज़रत अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहता था और अब दुआयें देता है। उन्होंने कहा : क्या तुम साबिका इमाम को देखना चाहते हो? मैंने कहा : हां।

वह मुझे एक सराए में ले गये जहां एक कुत्ता बंधा हुआ था। और उसकी आंखें आसुओं से तर थीं।

मैंने उस कुत्ते से दर्याफ़्त किया। क्या तुम वही इमाम हो जो पिछले साल हज़रात शैख़ैन को गालियां देता था? उसने सर से इशारा किया। हां मैं वही हूं। (शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : २७२)

अल्लाह तआला उन राफ़ज़ीयों को अक्ले सलीम अता फ़रमाये जो हज़रात शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को गालियां देते हैं और तबर्राबाज़ी करते हैं। अल्लाह तआला हमें हज़रात शैख़ैन की मोहब्बत अता फ़रमाये। आमीन।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़लीफ़ा-ए-सोम

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

उसमान ज़ुन्नूरैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

ज़ाहिदे मज्दे अहमदी पर दुरूद दौलते जैशे उशरत पे लाखों सलाम
दुर्रे मंसूर कुरआं की सिल्के बही ज़ौजे दो नूरे इफ़्फ़त पे लाखों सलाम
यानी उसमान साहिबे क़मीसे हुदा हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

(आला हज़रत अलैहिर्रहमः)

❖❖❖

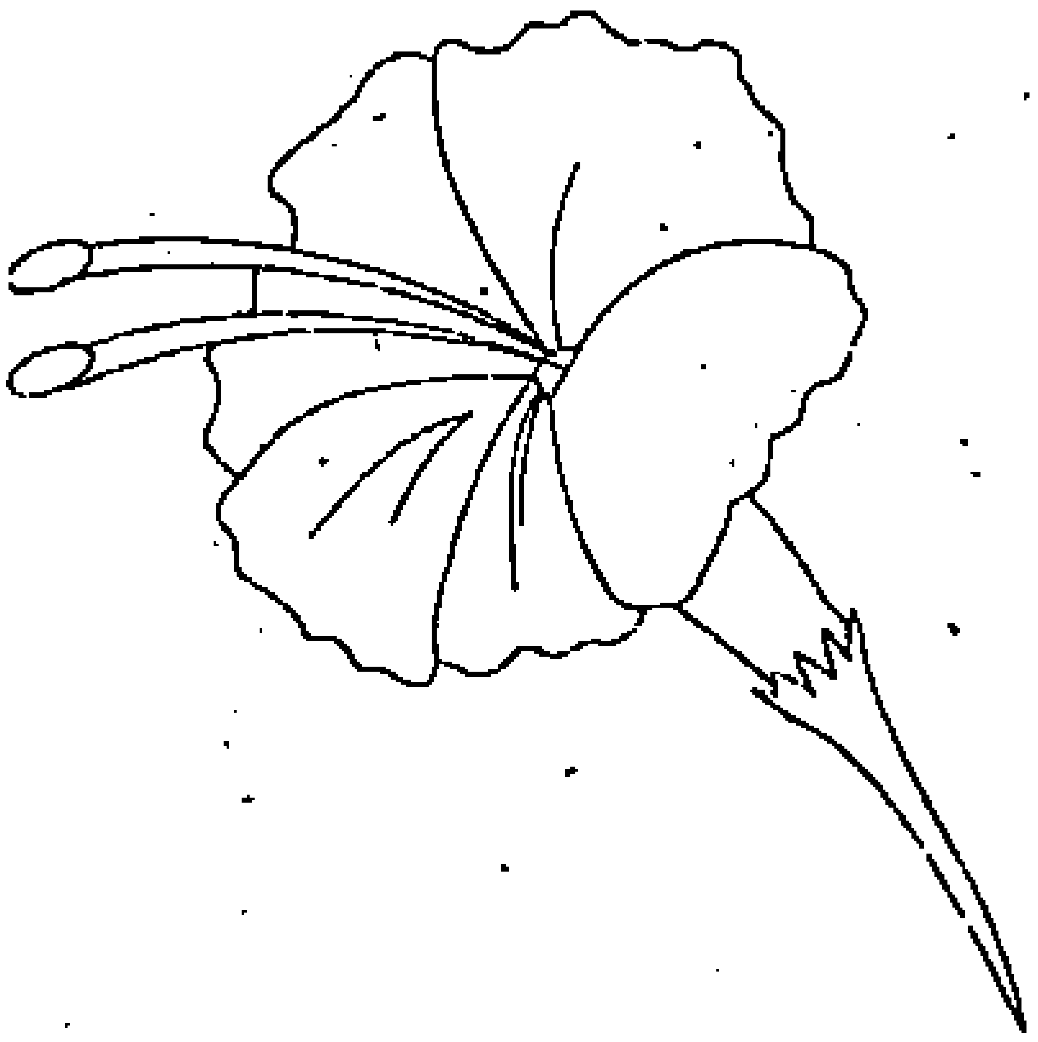

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का इसमे शरीफ़ उसमान, कुन्नीयत 'अबू–उमर' थी। बाज़ कहते हैं कि 'अबू–अब्दुल्लाह' और 'अबू–याला' आप की कुन्नीयत है। लक़ब 'जामिउल–क़ुरआन' व 'ज़ुन्नूरैन' है। आपके वालिद गिरामी का नाम अफ़्फ़ान और वालिदए मुहतरम का नाम उरवा बिन्ते कुरैज़ बिन रबीया बिन हबीब बिन अब्द–शम्स था। आपका नसबनामा इस तरह है : उसमान बिन अफ़्फ़ान बिन अबुल–आस बिन उमैया बिन अब्द–शम्स बिन अब्द–मनाफ़ बिन कुस्सा बिन किलाब बिन मुर्रः बिन काब बिन लुवैय बिन ग़ालिब कर्शी उमवी।

आपकी नानी का नाम उम्मे हकीमुल बैज़ा बिन्ते अब्दुल–मुत्तलिब बिन हाशिम था। आप की नानी और रसूले अकरम सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब एक ही पेट से पैदा हुए थे। इस रिशता से हज़रत उसमान की वालिदा माजिदा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफ़ी–ज़ाद बहन थीं।

आपकी पैदाइश आमुलफ़ील के छः बरस बाद हुई। आप इब्तिदाए इस्लाम ही में हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तबलीग़ से उन्हीं के हाथ पर इस्लाम लाये। आप क़दीमुल–इस्लाम हैं यानी इब्तिदाये इस्लाम ही में ईमान ले आये थे। इब्ने–इसहाक़ कहते हैं कि आपने हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़, हज़रत अली और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रिज़वानुल्लाह तआला अजमईन के बाद इस्लाम क़ुबूल किया। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३३)

क़ुबूले इस्लाम पर मसाइब : इब्ने–सअ़द ने मुहम्मद बिन इब्राहीम की ज़ुबानी लिखा है कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम क़ुबूल करने के बाद आपके चचा हकम बिन अबिल–आस ने आपको पकड़ कर एक कमरे में बन्द कर दिया और कहा : तुमने आबाई मज़हब तर्क करके एक नया मज़हब इख़्तियार कर लिया है। जब तक तुम उस नये मज़हब को नहीं छोड़ोगे मैं तुम्हें आज़ाद नहीं करूंगा। यह सुनकर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : चचा, ख़ुदा की क़सम ! मैं मज़हबे इस्लाम कभी नहीं छोडूंगा और उस दौलत से कभी दस्त–बरदार नहीं हूंगा। इस तरह हकम बिन अबिल–आस ने जब आपको इस्लाम पर मुस्तहकम और मुस्तक़िल पाया तो मजबूर होकर आपको क़ैद व बन्द से आज़ाद कर दिया। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३४)

आप साहिबे हिज़रतैन हैं, पहली हिजरत हबशा की तरफ़ और दूसरी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मदीना पाक की तरफ़ फ़रमाई। आपका लक़ब ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) है। क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो साहिब ज़ादियां हज़रत रुक़ैया और हज़रत कुलसूम आगे पीछे आपके निकाह में आईं। आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम तक हज़रत उसमान के सिवा किसी शख़्स के निकाह में किसी नबी की दो बेटियां नहीं आईं।

इसलिये आपको ज़ुन्नूरैन कहते हैं। इसलिये आला हज़रत फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहम : ने फ़रमाया है –

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुमको ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

इब्ने असाकिर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इरशाद सुना है कि आप हज़रत उसमान ग़नी से फ़रमा रहे थे कि अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो मैं यके बादीगरे उन सबका निकाह तुम से कर देता। यहां तक की कोई भी बाक़ी न रहती। एक रिवायत में सौ लड़कियों का ज़िक्र आया है। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २३६)

आपको जंगे बद्र और बैअ़ते रिज़वान के शुरका में भी शुमार किया जाता है। हालांकि उन दोनों में आप शरीक नहीं हुए थे। जंगे बदर में तो इसलिये शरीक नहीं हो सके कि हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा की तबीयत बहुत ज़्यादा नासाज़ और नाज़ुक हो गई थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें हज़रत रुक़ैया की देख–भाल के लिये मदीना तैयबा में ही रोक दिया। मगर शुरकाए बद्र में शुमार फ़रमाया और माले ग़नीमत में भी हिस्सा दिया। बैअ़ते रिज़वान में भी शरीक न हो सके। इसलिये कि उस वक़्त आप मक्का मुअज़्ज़मा में अपने नबी के क़ासिद की हैसियत से मक्का के कुरैश से सुलह की बातचीत करने गये थे। आने में ताख़ीर हुई और यह अफ़वाह फैल गई कि हज़रत उसमान शहीद कर दिये गये। इसी पर हुज़ूर ने बैअ़ते रिज़वान ली थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बायें हाथ के बारे में फ़रमाया कि यह उसमान का हाथ है और अपने दाहिने हाथ के बारे में फ़रमाया : यह मुहम्मद मुस्तफ़ा का हाथ है। (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)फ़िर हुज़ूर ने अपने एक हाथ को दूसरे हाथ पर रख कर फ़रमाया : यह बैअ़त उसमान की है। नीज़ आपका शुमार अशरए मुबश्शरह में भी होता है। आप ही ने क़ुरआने हकीम के जमाशुदा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुकम्मल किताबी शकल वाले क़ुरआन के चन्द नुस्ख़े तैयार कराके ममालिके इस्लामिया में रवाना फ़रमाये। आपसे एक सौ छियालिस हदीस मरवी हैं जिनमें ग्यारह इमाम बुख़ारी ने तख़रीज की हैं।

असकरी कहते हैं कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु वह पहले शख़्स हैं जिन्होंने लोगों के लिये जागीरें मुक़र्रर फ़रमाई। जानवरों के लिये चरागाहें क़ायम कीं। मस्जिदों में बुख़ूरात जलाने का रिवाज दिया जिसमें ज़ाफ़रान की आमेज़श होती थी। जुमा के दिन अज़ाने अव्वल देने का हुक्म सादिर फ़रमाया। मुअज़्ज़िनों की तंख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाई। आप ही ने सबसे पहले पुलिस और उसके उहदेदार मुक़र्रर फ़रमाये।

आप ही ने सबसे पहले मअ् अह्ल व अयाल राहे ख़ुदा में हिजरत फ़रमाई। आपका सबसे अहम दीनी व अमली कारनामा यह है कि आपने क़िरअतों के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म करने की ग़र्ज़ से अह्दे सिद्दीक़ी और अह्दे फ़ारूक़ी में मुदव्वन क़ुरआन मजीद को उम्मुल–मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से हासिल किया और ज़ैद बिन साबित, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर वग़ैरह से नुक़ूल बनाकर इस्लामी ममालिक में रवाना फ़रमाये। हुक्म दिया कि आइन्दा इसी के मुताबिक़ क़ुरआन लिखे और पढ़े जायें। अलग़र्ज़ इस मर्दे मुजाहिद ने यकुम मुहर्रमुल–हराम सन : २४ हिजरी को मसन्दे ख़िलाफ़त संभाला और बारह साल तक उमूरे ख़िलाफ़त को बहुस्ने ख़ूबी अन्जाम देते रहे। ब्यासी साल की उम्र पाकर असवद तजीबी मिस्री के हाथ से १८ ज़िलहिज्जा सन् ३५ हिजरी बरोज़ जुमा चालीस दिन के सख़्त मुहासरे के बाद, जो बाग़ियों ने आपके मकान पर किया था, शहीद हुए। सनीचर की शब माबैन मग़रिब व इशा आपको जन्नतुल–बक़ी (मदीना मनव्वरा) के मशरिक़ी किनारे हशे कौकब में मदफ़ून किया गया। रिवायतों में आता है कि आप जिस वक़्त शहीद हुए क़ुरआने हकीम की यह आयते करीमा **फ़सयकफ़ीकहुमुल्लाहु व हुवस्समीउल अलीम** की तिलावत फ़रमा रहे थे। उसी पर आप शहीद हो गये। आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई और आप ही ने उनको दफ़न किया क्योंकि आपने उनको उन बातों की वसीयत फ़रमाई थी।

इब्ने असाकिर हज़रत यज़ीद बिन हबीब से रिवायत करते हैं कि मुझे ख़बर पहुंची है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु पर जिन लोगों ने चढ़ाई की थी उनमें से अकसर दीवाने और मजनून हो गये थे।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अन्हु और कुरआन हकीम

ख़लीफ़ए सोम हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के मनाक़िब में भी क़ुरआने हकीम की बहुत–सी आयते करीमा का नुज़ूल हुआ है। उनमें से चन्द क़ारिईन की ख़िदमत में पेश की जा रही हैं :

(१) इरशादे बारी तआला है : **अल्लज़ी न युनफ़िक़ू न अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्म म ला युतबिऊ न मा अन्फ़क़ू मन्नौं वला अज़ल्लहुम अजरुहुम इन्न द रब्बिहिम वला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून**

(सूरह बक़रा–प:३–रुकू ४)

वह जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फ़िर दिये के पीछे न एहसान रखें न तकलीफ़ दें, उनका (अज्र व सवाब) उनके रब के पास है। और उन्हें न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म।

(कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ६५)

हज़रत सदरुल–अफ़ाज़िल अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान सफ़ा : ६६ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि यह आयते करीमा हज़रत उसमान ग़नी और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हक़ में नाज़िल हुई।

साहिबे मिशक़ात लिखते हैं ग़ज़वए तबूक जिसे ग़ज़वए उसरत भी कहते हैं, यह ग़ज़वा मुसलमानों की सख़्त तंगी, नादारी और बेसामानी के आलम में हुआ। गर्मी सख़्त थी और तबूक भी मदीना मुनव्वरह से ६६० मील की दूरी पर वाक़ेय था। यह ग़ज़वा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी ग़ज़वा था जो सन् ९ हिजरी में हुआ। उसके बाद हुज़ूर ने किसी ग़ज़वा में शिर्कत नहीं फ़रमाई। उस ग़ज़वा में चालीस हज़ार और सत्तर हज़ार के दरमियान सहाबा किराम थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को जिहाद के लिये चन्दा देने का हुक्म दिया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ७०३ में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। वह फ़रमाते हैं कि मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में उस वक़्त हाज़िर था जब आप शुरकाए जंग तबूक की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पुरजोश अलफ़ाज़ सुनकर खड़े हो गये और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मैं सौ ऊँट, उनके कम्बल और पालान के साथ खुदाए तआला की राह में पेश करता हूं। फ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए और तरग़ीब दिलाई तो आपने फिर खड़े होकर अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरे ज़िम्मे दो सौ (२००) ऊँट मअ़ साज़ व सामान के हैं। मैं उसे आपकी बारगाह में पेश कर दूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़िर रग़बत दिलाई तो हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह! मेरे ज़िम्मे तीन सौ (३००) ऊँट मअ़ साज़ व सामान के हैं। मैं पेश कर दूंगा। हदीस के रावी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम मिम्बर से उतरते जाते थे और फ़रमाते जाते थे **मा अला उसमान मा अमि ल बा द हाज़िही। मा अला उसमान मा अमि ल बा द हाज़िही।** यानी अब इसके बाद हज़रत उसमान पर कोई गुनाह नहीं, वह जो भी करें। उसके बाद उसमान पर कोई गुनाह नहीं, वह जो भी करें। मतलब इसका यह है कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु का यह अमल अल्लाह के रसूल की बारगाह में इतना मक़बूल है कि अब अगर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु उसके बाद दीगर कोई नेक काम न भी करें तो उनके मदारिजे आलिया में कुछ रुकावट नहीं आयेगी।

(मिशकात–शरीफ़ सफ़ा : ३६४)

हज़रत इमाम राज़ी तफ़सीरे कबीर मिस्री अल–जुज़उस्साबे सफ़ा : ४८ में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत उसमान ग़नी व हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शान में नाज़िल हुई। हज़रत उसमान ग़नी ने ग़ज़वए तबूक के लिये एक हज़ार ऊँट मअ़ साज़ व सामान और एक हज़ार दीनार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्ते शफ़क़त दराज़ फ़रमाया और बारगाहे इलाही में यूं दुआ फ़रमाई **या रब्बि उसमान रज़ीतु अन्हु फ़रज़ि अन्हु** ऐ अल्लाह! यह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसमान है। मैं इससे राज़ी हुआ तू भी इससे राज़ी हो जा।

(२) अल्लाह तआला अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इरशाद फ़रमा रहा है –

सयज़्ज़क्करु मैंयख़्शा व यतजन्नबुहल अशक़ल्लज़ी यसलन्नारल कुबरा (सूरह आला–प:३०)

यानी अन्क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उससे वह बड़ा बदबख़्त दूर रहेगा जो सबसे बड़ी आग में जायेगा।

(कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ८६२)

साहिबे तफ़सीरे कबीर अल–जुज़्उल हादी वस्सलासून सफ़ा : १४६ पर लिखा है कि **न ज़ लत हाज़िहिल आयतु फी उसमानिबनि अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अन्हु)** यानी यह आयते करीमा हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई है।

(३) इरशादे खुदावन्दी है **अम्मन हु व क़ानितुन आनाअल्लैलि साजिदौं व क़ाइमैं यहज़रुल आख़िर त व यरजू रह म त रब्बिही**

(सूरह जुमर–पारा २३ रुकू १५)

यानी क्या वह जिसे फ़रमांबर्दारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़्यामं में। आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाये। (कन्ज़ुल ईमान सफ़ा : ६६५)

साहिबे तफ़सीरे कबीर इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं **अम्मन हु व क़ानितुन आनाअल्लैलि उसमा न लिअन्नहु का न युहयिल्लै ल फी रकअतिंव वाहिदतिं व यक़्रउल क़ुरआ न फी रकअतिव्वाहिदतिन**

(तफ़सीरे कबीर अल–जुज़उस्सादिस वल–इशरून सफ़ा : २५१)

यानी इस आयत से हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं इसलिए कि आप पूरी रात एक ही रकअत में गुज़ार दिया करते थे और पूरा कुरआन हकीम एक ही रकअत में ख़त्म फ़रमाते थे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह आयत करीमा हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई।

(तफ़सीरे मवाहिबुर्रहमान–पारा २३ सफ़ा : २३६)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी भी लिखते हैं कि यह आयत हज़रते उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नाज़िल हुई।

(तफ़सीरे हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा ३४२)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाहु अन्हु और अहादीसे करीमा

अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में कसरत से अहादीसे करीमा आई हैं। उनमें से चन्द क़ारिईन की ख़िदमत में पेश की जा रही हैं :

(१) हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **लिकुल्लि नबीइन रफ़ीक़ुन व रफ़ीक़ी यानी फ़िल जन्नति उसमान**

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७०२)

यानी हर नबी का एक साथी होगा और मेरा साथी जन्नत में उसमान बिन अफ़्फ़ान है।

(२) हज़रत मुर्रह बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना जबकि आपने फ़ित्नों का ज़िक्र किया और उन्हें बहुत क़रीब बताया तो एक शख़्स चादरपोश गुज़रा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस दिन यह हिदायत पर होगा। मैं उस शख़्स की तरफ़ गया तो वह उसमान बिन अफ़्फ़ान थे। राविए हदीस फ़रमाते हैं कि मैं ने उनका चेहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने किया और कहा कि क्या यह? फ़रमाया : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, हां।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७०६)

(३) हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा के एक बाग़ में हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि एक साहब आये और दरवाज़ा खोलने को कहा। पस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **इफ़्तह लहू व**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बश्शिरहू बिल जन्नति यानी उनके लिये दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो हज़रत अबू–बक्र थे। पस मैंने उन्हें वह बशारत दे दी जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। पस उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर एक साहब आये उन्होंने दरवाज़ा खुलवाया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इफ़्तह लहू व बश्शिरहु बिल जन्नति अला बलवा** तुसीबुहू इनके लिये दरवाजा खोल दो और इन्हें भी जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो वह हज़रत उमर थे, पस मैंने उनको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान की ख़बर दी तो उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। फिर एक साहब ने दरवाज़ा खुलवाया तो नबी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: **इफ़्तह लहू व बश्शिरहु बिल जन्नतिः** उनके लिए दरवाज़ा खोल दो और इन्हें भी जन्नत की बशारत दो, और एक मुसीबत पर जो इन्हें पहुंचेगी। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा वह उसमान थे। मैंने उन्हें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान की ख़बर दी। उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और बोले अल्लाह मददगार है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ३६२)

(४) अबू–नईम ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान मेरी उम्मत का सब से हयादार और करीम आदमी है।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा :३७५)

(५) इब्ने–असाकिर ने हज़रत इब्ने–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान की शफ़ाअत से सत्तर हज़ार ऐसे आदमी बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे जो आग के मुस्तहिक़ हो चुके होंगे। (सवाइके मुहर्रका सफ़ा : ३७८)

(६) हाकिम ने हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु ने दो मर्तबा जन्नत ख़रीदी है। एक मर्तबा तो बिरे रूमा ख़रीद कर उसकी खुदाई कराके। (यह कुआं एक यहूदी का था। मुसलमानों की तकलीफ़ को मद्दे नज़र रखते हुए आपने ख़रीदा था ताकि मुसलमानों को ज़्यादा पानी मिल सके) और दूसरी मर्तबा जैशे उसरत को साज़ व सामान फ़राहम करके। उसका ज़िक्र पहले आ चुका है। अलफ़ाज़े हदीस यह हैं। **क़ालन्नबीयु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मैंयहफ़िरु बि अ र रूमत फ़ लहुल जन्न त फ़ हफ़रहा उसमानु वक़ा ल मन जह ह ज़ जैशुल उसरति फ़ लहुल जन्नतु फ़ जहहज़हु उसमान।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा :२३६- बुख़ारी जिल्द दोम सफ़ा :३६३)

(७) हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसमान मेरे पास ऐसे हाल में आए कि मेरे पास फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता था। उसने कहा उसमान शहीद होंगे। उन ही की क़ौम उन्हें शहीद करेगी और हम फ़रिश्ते उसमान से हया करते हैं।

(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा : २०२)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत उसमाने ग़नी

सहाब-ए-किराम व सुलहा-ए-उम्मत

रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

इब्ने-असाकिर ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि किसी शख़्स ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उसमाने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की हया के बारे में दर्याफ़्त किया तो आपने जवाब फ़रमाया कि (आपकी हया का क्या पूछते हो?) अगर आप कभी नहाने का क़सद करते तो घर में किवाड़ बन्द करके भी कपड़े उतारने में इस क़दर शर्म फ़रमाते थे कि अपनी पीठ सीधी नहीं करते थे।

(तारीख़ुल-खुलफ़ा सफ़ा २३७)

इब्ने-असाकर अबू खुल्दा हनफ़ी से ब्यान किया है कि मैं ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते ख़ुद सुना है कि बनू-उमैया का यह ख़्याल है कि मैंने उसमान को क़त्ल कराया। मैं अल्लाह की उलुहियत की क़सम खाकर कहता हूं कि मैंने न उन्हें क़त्ल किया है और न क़त्ल की साज़िश में तआवुन किया। बल्कि मैंने तो क़त्ल से हर तरह बाज़ रखने की कोशिश की लेकिन लोगों ने मेरा कहना न सुना।

(तारीख़ुल-खुलफ़ा सफ़ा : २४६)

हज़रत सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु मज़लूम शहीद किये गये और जिन्होंने आपका क़त्ल किया वह ज़ालिम थे और जिन्होंने आपका साथ छोड़ दिया, वह माज़ूर थे।

(तारीख़ुल-खुलफ़ा सफ़ा : २४७)

हज़रत समुरा का ब्यान है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करके लोगों ने इस्लाम के मज़बूत क़िले में ऐसा रख़ना डाल दिया जो क़यामत तक बन्द नहीं होगा। इसी तरह मुहम्मद बिन सीरीन फ़रमाते हैं कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद फ़रिश्तों ने इस्लामी जंगों में मुसलमानों की मदद करना तर्क कर दिया। मुसलमानों में रुवैयते हिलाल के सिलसिले में आपकी शहादत से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पहले कभी इख़्तिलाफ़ नहीं हुआ। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा :२४६)

हज़रत अब्दुल्लाह रूमी का ब्यान है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु रात को उठकर ख़ुद ही वुज़ू का सामान फ़राहम कर लेते थे। लोगों ने अर्ज़ किया कि आप किसी मुलाज़िम को बेदार कर लिया कीजिए ताकि वह इन्तज़ाम कर दिया करे। तो आपने फ़रमाया : मैं यह मुनासिब नहीं समझता क्योंकि रात को वह भी आराम कर रहे होते हैं।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५०)

❖❖❖

ख़िलाफ़त हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु

ख़लीफ़ए दोम हज़रत सैयदना उमर इब्नुल ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जब अबू–लूलू मजूसी के हाथ से ज़हर आलूद ख़न्जर से ज़ख़्मी हो गये और मर्ज़ बतदरीज बढ़ता ही चला गया तो लोगों ने अर्ज़ किया : या अमीरुल–मोमिनीन आप को जो वसीयतें करना है, कर दीजिये और किसी को ख़िलाफ़त के लिये भी मुन्तख़ब फ़रमा दीजिए। आपने इरशाद फ़रमाया: कि मैं इस काम के लिये सिवाये इन छः अशख़ास के जिनसे रसूलुल्लाह सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम राज़ी और खुश रह कर दुनिया से तशरीफ़ ले गये हैं, किसी और को हक़दार नहीं समझता हूं। फ़िर आपने उन छः हज़रात के नाम लिये। वह हज़रत अली, हज़रत उसमान, हज़रत जुबैर, हज़रत तलहा, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। मजलिसे शूरा के इन्तज़ाम में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हाथ बटायेंगे, लेकिन ख़िलाफ़त से उन्हें कोई सरोकार न होगा। अगर सअ्द बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिख़ाब हो जाता तो वह उसके हक़दार थे। वरना उन छः में से जिनको चाहें ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लें। और मैंने सअ्द को किसी ख़्यानत, किसी इज्ज़ की बिना पर इमारत से माज़ूल नहीं किया था। फ़िर आपने लोगों से फ़रमाया कि मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को वसीयत करता हूं कि वह ख़ुदा से डरता रहे और तमाम मुहाजिरीन व अन्सार और तमाम रिआया के साथ नेकी से काम ले। इसी क़िस्म की बहुत–सी वसीयतें फ़रमाईं और फ़िर जान जाने आफ़रीं के सुपर्द फ़रमा दीं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़िर जब तजहीज़ व तकफ़ीन से फ़ारिग़ हो गये तो तीन रोज़ बाद ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब करने लिये लोग जूक़–दर–जूक़ जमा हो गये तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा कि अव्वलन तीन आदमी मुन्तख़ब कर लेना चाहिए। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर ने अपनी तरफ़ से हज़रत अली को, हज़रत सअ्द बिन वक़्क़ास ने हज़रत अब्दुर्रहमान को, और हज़रत तलहा ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हुम को मुन्तख़ब किया। फ़िर यह तीनों हज़रात बाहम मशवरा करने के लिये एक तरफ़ चले गये। वहां पहुंचकर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने फ़रमाया : मैं अम्रे ख़िलाफ़त अपने लिये पसंद नहीं करता। तुम में से भी अगर कोई ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी से बरी होना चाहे तो मुझे बता दे। इसलिये कि ऐसा ही शख़्स ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब करेगा, और जो कोई ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हो तो उसके लिये ज़रूरी है कि उम्मते मुहम्मदी में सबसे अफ़ज़ल हो; और इस्लाहे उम्मत की ख़्वाहिश रखता हो। हज़रत अब्दुर्रहमान का यह फ़ैसला सुन कर हज़रत उसमान व हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़ामोश रहे। फ़िर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने खुद ही दर्याफ़्त किया। अच्छा इस इन्तिख़ाब का काम तुम मेरे सुपुर्द कर दो ताकि मैं सबसे अफ़ज़ल और बेहतर शख़्स का इन्तिख़ाब कर दूं। दोनों हज़रात ने कहा कि हमें मन्जूर है। तब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को एक तरफ़ ले गये और उनसे कहा : ऐ अली! (रज़ियल्लाहु अन्हु) आप पहले इस्लाम लाये हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीबी अज़ीज़ भी हैं इसलिये आप ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। पस अगर मैं आपको ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो आप कुबूल कर लें। अगर आप पर किसी दूसरे को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूं तो आप उसकी इताअत करें। हज़रत अली ने फ़रमाया : मुझे तस्लीम है फिर आप उसी तरह हज़रत उसमान को एक तरफ़ ले गये और उनसे भी उन्हीं दोनों बातों का इक़रार लिया। जब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन दोनों हज़रात से यह अहद व पैमान ले लिया तो आपने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअ़त कर ली।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २१४–२१३)

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैहि अपनी मशहूर व मारूफ़ किताब 'तारीखुल–खुलफ़ा' में इब्ने असाकिर के हवाले से लिखते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बजाये हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया तो उसकी वजह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ यह ब्यान करते हैं कि मुझसे जो भी साइबुर्राय शख़्स तख़लिया में मिलता तो वह यही मशवरा देता कि ख़िलाफ़त हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को मिलना चाहिए। इसलिये कि वही उसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं चुनांचे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ बैअ़त लेने के लिये बैठ गये।

एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम्द व सलात के बाद हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि ऐ अली! मैंने तमाम लोगों की राय मालूम कर ली है। सबकी राय उसमान के लिए है। यह कहकर आपने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं आपसे सुन्नतुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह और हर दो खुलफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की सुन्नत पर बैअ़त करता हूं। इस तरह सबसे पहले आपने बैअ़त की और फिर तमाम मुहाजरीन व अन्सार ने आपसे बैअ़त की।

(तारीख़ुल-खुलफ़ा सफ़ा : २३७)

मुसनद इमाम अहमद में हज़रत अबी वाइल रज़ियल्लाहु अन्हु से इस तरह रिवायत ब्यान की गई है कि मैंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से दर्याफ़्त किया कि तुमने हज़रत उसमान से बैअ़त क्यों की? और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को क्यों छोड़ दिया, उनसे बैअ़त क्यों नहीं की? तो आपने जवाब दिया कि उसमें मेरा कुछ क़ुसूर नहीं। मैं ने अव्वलन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि मैं आपसे किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुन्नते अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर बैअ़त करता हूं तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझमें इसकी इस्तेताअत नहीं है। फिर मैंने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से यही बातें कीं तो उन्होंने कुबूल फ़रमा लिया। (तारीख़ुल-खुलफ़ा सफ़ा : २३८)

तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा में इसी सफ़े पर एक रिवायत यह भी लिखी है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने तख़लिया में हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि अगर मैं आपसे बैअ़त न करूं तो आप मुझे किससे बैअ़त करने का मशवरा देंगे। आपने फ़रमाया: हज़रत अली से। फिर मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से इसी तरह तख़लिया में कहा कि अगर मैं आपसे बैअ़त न करूं तो आप मुझे किससे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बैअ़त करने का मशवरा देंगे तो उन्होंने कहा: उसमान से। मैंने इसी तरह हज़रत सअ़द रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा: मेरा और आपका इरादा तो ख़िलाफ़त करने का नहीं है। लेकिन आप मुझे किससे बैअ़त करने का मशवरा देते हैं तो उन्होंने कहा हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से। उसके बाद मैंने तमाम असहाब व आयान से मशवरा किया तो अकसरीयत की राय हज़रत उसमान ही की तरफ़ पाई।

खुलासए कलाम यह है कि इन तमाम रिवायतों की रौशनी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु समझ गये थे कि ख़िलाफ़त के लिये अकसरीयत हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में है। इसलिये आपने इस्लाम की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ और बाहमी इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की ख़ातिर खुद भी हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअ़त फ़रमा ली। इसके अलावा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्म में हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह हदीसे पाक भी थी जिसमें आपने फ़रमाया था कि ऐ उसमान! मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुमको एक क़मीज़ पहनायेगा (ख़िलाफ़त अता फ़रमायेगा) तो अगर लोग तुमसे इसको उतार देना चाहें तो तुम उनकी वजह से उसे मत उतारना। (मिशकातुल-मसाबीह जिल्द हशतुम सफ़ा : ४०२)

एक और हदीस पाक जो उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमान को बुलवाया। वह आये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम मक़तूल व शहीद होगे तो सब्र करना और जो लिबास अल्लाह तुम्हें पहनायेगा (ख़िलाफ़त) वह बारह साल और छः माह रहेगी। मगर तुम खुद न उतारना। जब हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु वापस पल्टे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ दी कि अल्लाह तआला उसमान को सब्र दे कि अन्क़रीब वह रोज़े की हालत में शहीद होंगे। मेरे साथ इफ़तार करेंगे। चुनांचे फ़रमाने नब्वी के मुताबिक़ ऐसा ही हुआ कि बाग़ियों ने आपसे यह मुतालबा किया कि आप ख़िलाफ़त से अलग हो जायें। लेकिन आपने जामे शहादत नोश फ़रमा लिया मगर ख़िलाफ़त से अलाहदगी क़ुबूल न की कि फ़रमाने नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यही था।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़लीफ़ा-ए-चहारुम

अमीरुल-मोमिनीन सैय्यदना हज़रत

अली मुर्तज़ा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

मुर्तज़ा शेरे हक़ अशजउल अशजई
साक़िए शीर व शर्बत पे लाखों सलाम
अस्ले नस्ले सफ़ा वजहे वस्ले खुदा
बाबे फ़ज़्ले विलायत पे लाखों सलाम
अव्वलीं दाफ़ए अहले रिफ़्ज़ व खुरूज
चार मी रुक्ने मिल्लत पे लाखों सलाम
शेरे शमशीरे ज़न, शाहे ख़ैबरे शिकन
परतौए दस्ते कुदरत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहम :)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़लीफ़ए चहारुम हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाह वजहहुल करीम बारह इमामों में से पहले इमाम हैं। आपका इस्मे शरीफ़ 'अली' और 'हैदर' है, 'कर्रार' आपका लक़ब और कुन्नीयत 'अबुल हसन' और 'अबू–तुराब' है। आपको 'अबू–तुराब' से ज़्यादा कोई नाम पसंदीदा न था। जब आपको कोई 'अबू–तुराब' कह कर पुकारता था तो आप बहुत मसरूर और शादमां होते थे क्योंकि यह नाम आपको हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त अता फ़रमाया था जब आप मस्जिद शरीफ़ की दीवार के पास लेटे हुए थे और पुश्ते मुबारक में मिट्टी लग गई थी। उसी वक़्त हुज़ुर तशरीफ़ लाये तो आपको इस आलम में देखकर फ़रमाया : **इजलिस या अबा-तुराब** यानी उठिए ऐ अबू तुराब।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०२)

आपका नाम हैदर है। इसके माना हैं 'शेर'। यह नाम आपकी वालिदा फ़ातिमा बिन्ते असद ने अपने वालिद के नाम पर रखा था। और 'कर्रार' के माना 'पलट–पलटकर हमला करने वाला'। आपके वालिदे गिरामी का नाम अबू–तालिब है। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा–ज़ाद भाई हैं। हज़रत अबू–तालिब ने आपका नाम अली रखा। और हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'असदुल्लाह' का ख़िताब अता फ़रमाया : यानी 'अल्लाह का शेर'। आपका नसबनामा इस तरह है : अली इब्ने अबी–तालिब अल मारूफ़ बिही अब्द मनाफ़ बिन अब्दुल मुत्तलिब मारूफ़ बिही शैबा बिन हाशिम बिन अब्दे–मनाफ़ अलमारूफ़ बिही मुग़ीरा बिन कुसै अलमारूफ़ बिही ज़ैद बिन किलाब बिन मुर्रह बिन काब बिन लुवइ बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन कनाना। आपकी विलादते मुबारका ऐन जौफ़ ख़ानए काबा में जुमा के दिन १३ रज्जबुल–मुरज्जब सन् ३० आमुल–फ़ील में हुई। आप वह वाहिद शख़्स हैं जिनको यह शर्फ़ हासिल हुआ है। आपकी वालिदा मुहतरमा ने आपकी विलादत के बाद फ़ौरन आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में दे दिया जब तक हज़रत अली की आंख बन्द थी। जैसे ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में तशरीफ़ लाये फ़ौरन आँख खोल दी। दुनिया में आने के बाद सब से बड़ा शर्फ़ आपको यह हासिल हुआ कि आपने सबसे पहले हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुक़द्दस चेहरा देखा। गुस्ले विलादत हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया। अपना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लुआबे दहन हज़रत अली के मुंह में डाल दिया। आपकी परवरिश और तालीम व तरबीयत की पूरी ज़िम्मेदारी हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपने ज़िम्मए करम में ले ली थी। इसलिये आपने कभी बुतपरस्ती नहीं की। इसी वजह से आपको 'कर्रमल्लाह वजहहू' कहते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत दी तो आपने फ़ौरन इस्लाम कुबूल कर लिया। 'तारीखुल-ख़ुलफ़ा' में है जिस वक़्त आप ईमान लाये उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ दस साल थी। बाज़ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ नौ साल और बाज़ आठ साल और कुछ उस से भी कम बताते हैं। आपको भी यह शर्फ़ हासिल है के आप दामादे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह्य-ए-इलाही के मुताबिक़ अपनी चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह आपके साथ किया। आप ही से हुज़ूर सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की नस्ले पाक चली। जैसा कि हदीसे पाक में आपका इरशादे गिरामी है कि अल्लाह तआला ने हर नबी की ज़ुर्रीयत को उसकी सुल्ब में रखा है और मेरी ज़ुर्रीयत को अली इब्ने अबी -तालिब की सुल्ब में रखा है। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४२४)

आप इमामैने करीमैन हज़रत सैयदना इमाम हसन व हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के वालिदे गिरामी हैं। विलायत की मर्कज़ी शख़्सीयत हैं कि आपकी ज़ात से हर वली को फ़ैज़े विलायत मिलता है और शरीअत के दरियाये नापैदा किनार हैं। आपका शुमार पंजतन पाक, अशरए मुबश्शरा और खुलफ़ाए राशिदीन में होता है। आप ही के घर हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवरिश हुई।

• जिस रोज़ हुज़ुर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का से मदीना मनव्वरह की तरफ़ हिजरत फ़रमाई तो आप ही को अपने बिस्तरे मुबारक पर लिटा कर अहलियाने मक्का की अमानतें सुपुर्द फ़रमाई थीं। आप तमाम ग़ज़वात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ-साथ रहे। सिवाये ग़ज़वए तबूक के कि उस ग़ज़वा के वक़्त रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको अपना नाइब बना कर मदीना मनव्वरा में छोड़ दिया था और इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूं जिस तरह मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब कोहे तूर पर मुनाजात के लिये तशरीफ़ ले

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

गये तो अपनी जगह अपने भाई हारून अलैहिस्सलाम को छोड़ गये थे। बस फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि हारून अलैहिस्सलाम ख़ुद भी नबी थे और एक नबी के ख़लीफ़ा। तुम मेरे नाइब हो, नबी नहीं।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०३)

आपकी शुजाअत और बहादुरी का डंका पूरे अरब में मशहूर था कि आपका सिर्फ़ नाम सुनते थे तो दुशमनाने इस्लाम थर्रा उठते थे। क़िलए ख़ैबर को आप ही ने फ़तह फ़रमाया। जंगे उहुद में इन्तिहाई नाजुक वक़्त में भी साथ–साथ रहे और इस ग़ज़्वा में सोलह ज़ख़्म खाये। मगर क़दम में लग़ज़िश न हुई। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद बइत्तिफ़ाक़ तमाम अह्ले हल्ल व् अक़्द ने ३५ हिजरी बरोज़ जुमा १८ ज़िलहिज्जा को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया। तीन माह कुछ दिन कम पांच साल तक मसनदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ रहे और १८ या २१ रमज़ानुल–मुबारक सन् ४ हिजरी में नमाज़े फ़ज्र के लिये जाते हुए मस्जिदे कूफ़ा में अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम ने सरे अक़दस पर ज़हर आलूद तलवार इस ज़ोर से मारी कि दिमाग़ तक पहुंच गई और आपका विसाल हो गया।

हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन और अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र तय्यार ने ग़ुस्ल दिया। इमाम हसन ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। बरिवायत सही कूफ़ा में बमक़ामे नजफ़ मदफ़ून हुए। उस वक़्त उम्र शरीफ़ ६३ साल थी। आपकी नौ बीवियां थीं जिनसे कुल इक्कीस औलाद हुई।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाहु अन्हु और क़ुरआने हकीम

ख़लीफ़ए चहारुम अमीरुल-मोमिनीन हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाह वजहहू की फ़ज़ाइल व मनाक़िब में भी क़ुरआन पाक की बहुत–सी आयतों का नुज़ूल हुआ है। हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः 'ज म उल-जवामे' में एक हदीस पाक नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अलक़ुरआनु मअल अलीई व अलीय्यु म अ ल क़ुरआन**। यानी क़ुरआन अली के साथ है और अली क़ुरआन के साथ। तबरानी ने हज़रत उम्मे सलमा से यह हदीस नक़ल की है। इसी तरह एक और हदीसे पाक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैं कि अली और क़ुरआन हौज़े कौसर तक एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे बल्कि साथ साथ रहेंगे। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४२१)

हकीमुल–उम्मत मुफ़्तीए आज़म पाकिस्तान हज़रत मौलाना अहमद यार ख़ान साहब नईमी अलैहिर्रहमः ने इसी की मन्ज़रकशी फ़रमाई है :

यह है ख़ामोश क़ुरआन वह क़ुरआने नातिक़ है
ना हो जिस दिल में यह उसमें नहीं क़ुरआन का रिश्ता

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : **इन्नल क़ुरआ न उनज़ि ल अला सबअति अहरुफ़िम मा फ़ीहा हरफ़ुन इल्ला व लहु ज़हरुं व ब त नुन व इन्न न अलीयन इन्दहू मिनज़्ज़ाहिरि वल बातिन**। यानी बेशक क़ुरआन सात हर्फ़ों (सात क़िरअतों) में नाज़िल हुआ है और कोई हर्फ़ ऐसा नहीं है जिसका ज़ाहिर व बातिन एक न हो और हर हर्फ़ के ज़ाहिर व बातिन का इल्म हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास है।

(सफ़ीनए नूह जिल्द अव्वल सफ़ा : ८४)

अब हम उन आयाते करीमा का ज़िक्र कर रहे हैं जो हज़रत मौला अली

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुशकिल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के हक़ में नाज़िल हुई हैं।

(१) हज़रत मकहूल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आयते करीमा व **तइयहा उज़नुंव्वाइयः** (प–२६ सूरह हाक्क़ः) और उसे महफ़ूज़ रखे वह कान कि सुनकर महफ़ूज़ रखता हो (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ८२४) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मैंने अपने रब से अली कर्रमुल्लाह वजहहू के लिये सवाल किया कि या अल्लाह अली को न भूलने वाली याददाश्त अता फ़रमा। चुनांचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस दुआ के बाद मैंने जो कुछ भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना वह मुझे याद हो गया और हमेशा याद रहा और फ़िर कभी ना भूला।

(तफ़सीरे कबीर मिस्री अल–जुज़्उस्सलासून सफ़ा : १०७–तफ़सीरे हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा : ५६६)

(२) हज़रत इब्ने–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चार दिरहम थे और कुछ ना था। आपने उन चार दिरहमों को इस तरह ख़ैरात किया कि एक दिरहम रात को, एक दिन को, एक पोशीदा, और एक एलानिया तौर पर तो आपके इस फ़ेल पर अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई : **अल्लज़ी न युनफ़िक़ू न अम्वालहुम बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रौं व अलानियतन फ़लहुम अजरुहुम इन द रब्बिहिम वला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यहज़नून** (सूरह बक़रा–प–३ रुकू ६) यानी वह जो अपने माल की ख़ैरात करते हैं, रात में और दिन में, छुपे और ज़ाहिर, उनके लिये उनका अज्र उनके रब के पास है। उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म। (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ६८)

(तफ़सीरे कबीर मिस्री अल–जुज़उस्साबे सफ़ा : ८६ 'सवाइक़े मुहर्रक़ा' सफ़ा : ४४५)

साहिबे तफ़सीरे हुसैनी हज़रत मुल्ला हुसैन वाइज़ काशफ़ी अपनी मशहूर व मारूफ़ तफ़सीर हुसैनी जिल्द दोम सफ़ा : ८७ में लिखते हैं कि इस आयते करीमा के नाज़िल होने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि ऐ अली! किस बात ने तुम्हें इस तरह सदक़ा देने पर आमादा किया। तो आपने जवाब दिया कि या रसूलुल्लाह! सदक़ा व ख़ैरात देने का तरीक़ा उन चार सूरतों के सिवा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मैंने कोई और न देखा। इसलिये मैंने उन चारों सूरतों को लाज़िम पकड़ लिया कि उनमें से एक तो कुबूल होकर महल्ले रज़ा पर पहुंच जायेगी।

(३) हज़रत सैयदना इब्ने–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब यह आयते करीमा नाज़िल हुई **इन्नमा अन त मुन्ज़िरुं व लिकुल्लि क़ौमिन हादिन** (सूरह रअ्द–प : १३ रुकू ७)

तुम तो डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी।

(कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा : ३६१)

उसके बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सीनए मुबारक पर दस्ते अक़दस रखकर फ़रमाया **अनल मुन्ज़िरु सुम्म म औ मा इला मन्कबे अलीइन रज़ियल्लाहु अन्हु व क़ा ल अन्तल हादिल मुहतदू न मिम बादी।**

मैं डर सुनाने वाला हूं। फ़िर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के कन्धे पर हाथ रखकर फ़रमाया : ऐ अली! तू हादी है और मेरे बाद राह पाने वाले तुझसे राह पायेंगे। विलायत के सिलसिले तुझसे जारी होंगे और उम्मत के औलिया उलमा और अग़वास व अक़ताब तुझसे फ़ैज़ पायेंगे। (तफ़सीरे कबीर मिस्री अल–जुज़उत्तासे अशर सफ़ा : १४)

(४) तफ़सीरे कश्शाफ़ में है कि एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमानों की एक जमाअत में तशरीफ़ ले जा रहे थे। मुनाफ़िक़ीन ने उन्हें देखकर आँखों से इशारे किये और हंसी और मस्ख़रापन किया। उनकी शान में नाज़ेबा कलिमात कहे तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे नब्वी में न पहुंचे होंगे कि अल्लाह तआला की जानिब से यह आयत नाज़िल हो गई। **व इज़ा मर्रू बिहिम यतग़ामज़ून।**

(सूरह अलमुतफ़्फ़िफ़ीन प–३० रुकू ८)

यानी और जब वह उन पर गुज़रते तो यह आपस में उनपर आँखों से इशारे करते हैं। (कन्ज़ुल–ईमान सफ़ा ८५८)

(तफ़सीरे हुसैनी क़ादरी जिल्द दोम सफ़ा : ६१८)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़िअल्लाहु अन्हु

और अहादीसे करीमा

ख़लीफ़ए चहारुम हज़रत सैयदना मौला अली मुशकिल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ज़ाइल में भी कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। बल्कि इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि जितनी अहादीस हज़रत अली रज़ियल्लाहु की फ़ज़ीलत में वारिद हुई हैं किसी और सहाबी की फ़ज़ीलत में वारिद नहीं हुई हैं। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५५)

(१) हज़रत सहल बिन सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंगे–ख़ैबर के रोज़ फ़रमाया: कल मैं यह झण्डा ज़रूर उस शख़्स को दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआला फ़तह मर्हमत फ़रमायेगा। लोग तमाम रात उसी हसरत में रहे कि देखिये सुबह किस खुशनसीब को झण्डा अता फ़रमाया जायेगा। जब सुबह हुई तो हर एक यह तमन्ना लिये हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुआ कि झण्डा उसे मर्हमत हो। (इतने में) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ न **अलीयुब्नु अबी तालिबिन**। अली बिन अबी–तालिब कहां हैं ?

लोगों ने जवाब दिया: या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उनकी आँखें दुखती हैं। फ़रमाया उन्हें बुला लाओ। पस उन्हें आपकी ख़िदमत में पेश किया गया। तो आपने उनकी आँखों में अपना लुआबे दहन लगा दिया। और उनके लिये दुआ फ़रमाई। पस वह इस तरह शिफ़ायाब हो गये जैसे उन्हें तकलीफ़ ही नहीं हुई थी। फ़िर आपने उन्हें झण्डा अता फ़रमाया। (अल्लाह तआला ने आपके हाथों फ़तह अता की)।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०१)

(२) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ला युहिब्बु अलीयन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुनाफ़िकुन वला युबग़िज़ुहु मोमिनुन यानी अली से मुनाफ़िक़ मुहब्बत नहीं करता और उनसे मोमिन बुग़्ज़ नहीं रखता। आप ही से एक और हदीस मरवी है। फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **मन सब ब अलीयन फ़क़द सब्बनी** यानी जिस ने अली को बुरा कहा उसने मुझे बुरा कहा।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७१२ 'मिर्अतुल–मनाजीह' जिल्द हशतुम सफ़ा : ४२३)

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है वह कहते हैं कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा के दरम्यिान भाईचारा कराया तो हज़रत अली आये। उनकी आँखों से आंसू जारी था। अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपने अपने सहाबा में भाईचारा करा दिया लेकिन मुझे किसी का भाई न बनाया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **अन त अख़ी फ़िद्दुनिया वल आख़िरः।** यानी ऐ अली! तुम दीन व दुनिया में मेरे भाई हो।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७१३)

नोटः- ख़्याल रहे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रिश्ता में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई हैं। जब मदीना में अनसार व मुहाजिरीन में मवाख़ात (भाईचारा) कराया तो उस वक़्त भी उनको अपना भाई फ़रमाया। लेकिन कभी भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर अनवर को अपना भाई या बड़ा भाई कह कर नहीं पुकारा बल्कि जब भी पुकारा तो या रसूलुल्लाह, या नबीयल्लाह, या हबीबल्लाह! कह कर ही पुकारा। फिर किसी ऐरे–ग़ैरे को क्या हक़ पहुंचता है कि वह रसूलुल्लाह सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना भाई कह कर पुकारे। अल क़ादरी।

(४) तबरानी और अल बज़्ज़ाज़ हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से और हाकिम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **अ ना मदीनतुल-इल्मे व अलीयुन बाबुहा।** मैं इल्म का शहर हूं और अली उसका दरवाज़ा है। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं। यह हदीस हसन है और जिन्होंने उसे मौजू कहा है उन्होंने ग़लती की है।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५७)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

एक रिवायत इस तरह भी आई है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अ न दारुल हिकमते व अलीयुन बाबुहा** मैं हिकमत का घर हूं और अली उसका दरवाज़ा हैं।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ७७५)

(५) अहमद ने अबुत्तुफ़ैल से रिवायत की है कि एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक वसी मक़ाम पर लोगों को जमा करके फ़रमाया कि मैं तुमसे क़सम देकर पूछता हूं कि बताओ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यौमे ग़दीर ख़ुम के मौक़ा पर मेरी निसबत क्या फ़रमाया था? उस मजमा से तीस आदमी खड़े हुए और उन्होंने कहा कि हम गवाही देते हैं कि हमारे सामने हज़रत रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया था **अल्लाहुम म मन कुन्तु मौलाहु फ़अलीयुन मौलाहु अल्लाहुम्म म वाले मन वालाहु व आदु मन आदाह।** ऐ अल्लाह! मैं जिसका दोस्त हूं अली भी उसके दोस्त हैं। इलाही! अली से जो मुहब्बत रखे उससे तू भी मुहब्बत फ़रमा। जो अली से बुग्ज़ रखे तू भी उससे दुशमनी रख।

(तारीखुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५६)

(६) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत ब्यान की कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि **अ न व अलीयुन नूरम बै न यदयल्लाहि तआला क़ब ल ऐंयख़लु क आ द म बिअरबअते अ श र अल फ़ आमिन फ़लम्मा ख़ ल क़ल्लाहु आ द म क़स स म ज़ालिकन्नू र जुज़ऐनि फ़ जुज़्उन अ न व जुज़्उ अलीइन** मैं और अली तख़लीक़े आदम से चौदह हज़ार साल पहले एक नूर की सूरत में अल्लाह तआला के हुजूर में मौजूद थे। फिर जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो उस नूर को दो अज़्ज़ा में तक़सीम फ़रमाया चुनांचे एक जुज़ मैं और एक जुज़ अली हैं।

(मुशकिल–कुशा सफ़ा : १३५ बहवाला 'रियाज़ुन्नज़रा' जिल्द दोम सफ़ा : २१७)

(७) हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इन्न अलीयम मिन्नी व अ न मिन्हु व हु व वलीय्युन कुल्लि मूमिनिन** बेशक अली मुझसे हैं और मैं अली से हूं और अली हर मोमिन के वली (मददगार) हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा : ७७१ मिरआत शरह मिश्कात जिल्द हशतुम सफ़ा : ४१६)

(८) हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **मन अताअनी फ़क़द अताअल्लाह व मन असानी फ़क़द असल्लाह व मन अताअ अलीयन फ़क़द अताअनी व मन असा अलीयन फ़क़द असानी** जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह तआला की इताअत की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की। और जिसने अली की इताअत की उसने मेरी इताअत की और जिसने अली की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की। (सफ़ीनए नूह जिल्द अव्वल सफ़ा ५७ बहवाला 'अर्रियाज़ुन्नज़रा' सफ़ा : २२०)

(९) इब्ने अदी और इब्ने असाकिर अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मुझे मेराज हुई तो मैंने अर्श के पाये पर **ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** लिखा देखा और साथ में (हज़रत) अली का नाम भी था। ('ख़साइसुल–कुब्रा' जिल्द अव्वल सफ़ा : २५)

(१०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अली क़सीमे दौज़ख़ हैं। अपने दोस्तों को बहिश्त में अपने दुशमनों को दौज़ख़ में दाख़िल फ़रमायेंगे।

(अल–अम्न वल–उला सफ़ा : ५६ सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४२६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अली मुर्तज़ा

सहाब-ए-किराम व सुल्हा-ए-उम्मत

रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन

अबू—याला हज़रत अबू—हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तीन फ़ज़ीलतें ऐसी मिली हैं कि अगर मुझे उनमें से एक भी मिल जाती तो वह मेरे नज़दीक तमाम दुनिया से ज़्यादा महबूब होती। लोगों ने दर्याफ़्त किया वह फ़ज़ाइल क्या हैं? तो आपने फ़रमाया : अव्वल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे अपनी साहिबज़ादी (हज़रत) फ़ातिमा का निकाह किया।

दूसरा, आपने उन दोनों को मस्जिद में रखा और जो कुछ उनको वहां हलाल है, मुझे हलाल नहीं। तीसरा जंगे ख़ैबर में अलम उनको अता फ़रमाया। (तारीख़ुल—ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५६)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं अली से ज़्यादा इल्मे सुन्नत का जानने वाला कोई नहीं। हज़रत सईद बिन मुसयइब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जब कोई मुशकिल सवाल आता और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मौजूद न होते तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तअव्वुज़ पढ़ा करते कि कहीं उस सवाल का जवाब ग़लत न हो जाये। हज़रत सईद बिन मुसयइब का यह भी क़ौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाबे किराम में से सिवाये हज़रत अली के और कोई यह कहने वाला न था कि जो कुछ पूछना है मुझसे पूछ लो। (तारीख़ुल—ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५८)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह भी क़ौल है कि हज़रत अली ही सबसे ज़्यादा बेहतर फ़ैसला करने वाले (क़ाज़ी) हैं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा आपस में कहा करते थे कि अली रज़ियल्लाहु हम अहले मदीना में सबसे ज़्यादा मामला फ़हम हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५७)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मदीना मनव्वरह में फ़स्ले क़ज़ाया (मुक़द्दमात के फ़ैसल करने) और इल्मे फ़राइज़ में अली इब्ने अबी तालिब से ज़्यादा इल्म रखने वाला और कोई नहीं था।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५८)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अयाश बिन अबी रबीआ फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु में इल्म की क़ुव्वत, इरादे की पुख़्तगी, मज़बूती और इस्तिक़लाल मौजूद था। खानदान भर में आपकी बहादुरी मशहूर थी। आप अहकामे फ़िक़्ह व सुन्नत में माहिर थे।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २५८)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरआने करीम में जिस जगह **या ऐयुहल्लज़ी न आमनू** है वहां समझना चाहिए कि हज़रत अली उनके अमीर व शरीफ़ हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जहां भी हज़रते अली का ज़िक्र फ़रमाया ख़ैर के साथ फ़रमाया है।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा :२५८)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

खुलफ़ा-ए-सलासा की ख़िलाफ़त और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन

ख़लीफ़ए चहारुम हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी-तालिब कर्रमल्लाहु वजहहू ने अपने पेशरू खुलफ़ाए सलासा हज़रत सैयदना अबू-बक्र सिद्दीक़, हज़रत सैयदना उमरे फ़ारूक़ और हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन में हर एक की ख़िलाफ़त को बख़ुशी मंज़ूर फ़रमाया था। आपने कभी भी उनमें से किसी की ख़िलाफ़त का इन्कार नहीं फ़रमाया। जैसा कि इब्ने असाकिर ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु के हवाले से लिखा है कि जिस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा तशरीफ़ लाये तो इब्नुल कवा और हज़रत क़ैस बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने खड़े होकर आपसे यह दर्याफ़्त किया कि हमें यह बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपसे वादा फ़रमाया था कि मेरे बाद तुम ख़लीफ़ा होगे। यह बात कहां तक सच है? क्योंकि आपसे ज़्यादा इस मामले में सही बात और कौन कह सकता है? आपने फ़रमाया कि यह ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे कोई वादा फ़रमाया था। जब मैंने आपकी नुबुव्वत की सबसे पहले तसदीक़ की तो अब आप पर झूठ क्यों तराशूं। अगर हुज़ूर सल्लुल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे इस क़िस्म का कोई वादा किया होता तो मैं हज़रत अबू-बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिम्बर पर क्यों खड़ा होने देता? मैं उन दोनों को क़त्ल कर डालता ख़्वाह मेरा साथ देने वाला कोई न होता। यह तो सबको मालूम है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफ़अतन न किसी ने क़त्ल किया और न आपने यकायक इन्तिक़ाल फ़रमाया। बल्कि आप चन्द रोज़ मर्ज़ुलमौत में मुबतला रहे। जब आपकी बीमारी ने शिद्दत इख़्तियार की और मुअज़्ज़िन ने आपको नमाज़ पढ़ाने के लिये बुलाया। आपने हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और आप अपने मक़ाम से मुशाहिदा फ़रमाते रहे। हालांकि उस अरसा में एक बार उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की इमामत के लिये आपको इस इरादे से बाज़ रखना चाहा तो आपको गुस्सा आया और आपने फ़रमाया कि तुम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने की औरत हो। जाओ, अबू–बक्र ही को कहो कि वह नमाज़ पढ़ायें। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ तो हमने अपने मामलात में (यानी ख़िलाफ़त में) ग़ौर किया। फ़िर उसी शख़्स को अपनी दुनिया के वास्ते भी इख़तियार कर लिया जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे दीन (इमामत) के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था। क्योंकि नमाज़ दीन की असल है। हुज़ूर दीन और दुनिया दोनों के क़ाइम रखने वाले थे।

लिहाज़ा हम सबने हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअ़त कर ली। सच्ची बात भी यही है कि आप ही उसके अहल भी थे। इसी वास्ते आपकी ख़िलाफ़त में किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़सान पहुंचाने का इरादा किया और न किसी ने आपकी ख़िलाफ़त से सरगरदानी की। मैंने भी उसी बिना पर आपका हक़ अदा किया और आपकी इताअत की। मैंने आपके लशकर में शरीक होकर काफ़िरों से जंग की। माले ग़नीमत और बैतुल–माल से जो आपने दे दिया वह बख़ुशी क़ुबूल कर लिया। जहां आपने मुझे जंग के लिये भेजा और दिल खोल कर लड़ा। यहां तक कि आपके हुक्म से शरई सज़ायें भी दीं (यानी हद्द जारी की)। फिर जब हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के विसाल का वक़्त क़रीब आ गया, तो आपने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना ख़लीफ़ा बना गये। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़े अकबर के बेहतरीन जांनशीन और सुन्नते नब्वी पर अमल करने वाले थे। तो हमने उनके हाथ पर भी बैअ़त कर ली। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भी ख़लीफ़ा बनाने पर किसी शख़्स ने मुतलक़ इख़तिलाफ़ नहीं किया और न कोई किसी के नुक़सान रसानी के दरपै हुआ। यक़ीनी तौर पर कोई भी फ़र्द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त से बेज़ार नहीं हुआ। पहले की तरह हज़रत उमर के भी मैंने हुक़ूक़ अदा किये। उनकी मुकम्मल तौर पर इताअत की जो कुछ उन्होंने दिया मैंने ले लिया। उन्होंने मुझे जंगों में भेजा जहां मैंने दुशमनों से मुक़ाबले किये और आपके अहद में भी अपने कोड़ों से मुजरिमों को सज़ा दी। जब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु का भी वक़्ते विसाल आया तो उस वक़्त मैंने अपने दिल में ग़ौर किया और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपनी कराबत, इस्लाम लाने में अपनी सबक़त, अपने आमाल और अपनी बाज़ दीगर फ़ज़ीलतों की जानिब ग़ौर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrililibrary.com

किया तो मुझे ख़्याल ज़रूर पैदा हुआ कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अब मेरी ख़िलाफ़त में एतराज़ नहीं करेंगे। लेकिन शायद हज़रत उमर को यह ख़ौफ़ दामनगीर हुआ कि वह कहीं ऐसा ख़लीफ़ा नामज़द न करें जिसके आमाल का ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ब्र में जवाब देना पड़े। इस ख़्याल के पेशे नज़र उन्होंने अपनी औलाद को भी नज़र अन्दाज़ कर दिया। ख़िलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फ़रमाया। बल्कि ख़लीफ़ा के इंतिख़ाब का मसला छः क़ुरैशियों के सुपुर्द कर दिया जिनमें एक मैं भी था। जब उन छः अरकान ने ख़लीफ़ा के इंतिख़ाब के लिये मजलिस तलब की तो मुझे ख़्याल आया कि अब ख़िलाफ़त का बार मेरे कन्धों पर रख दिया जायेगा और यह मजलिस मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसियत नहीं देगी। मुझे ही ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करेगी। उसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम सबसे वादा लिया कि अल्लाह तआला हममें से जिसको ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दे हम सब उसकी इताअत करेंगे और उसके अहकाम को ब़रज़ा व रग़बत बजा लायेंगे। उसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर ख़ुद बैअ़त की। उस वक़्त मैंने सोचा कि मेरी इताअत मेरी बैअ़त पर ग़ालिब आ गई और मुझसे जो वादा लिया गया था वह (असल में) दूसरे की बैअ़त के लिये था। बहरहाल मैंने हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर भी बैअ़त कर ली। ख़ुलफ़ाए साबक़ीन की तरह उनकी इताअत व फ़रमांबरदारी की और हज़रत उसमान ग़नी के हुक़ूक़ अदा किये। उनकी क़यादत में जंगें लड़ीं, उनकी अतियात को क़ुबूल किया और शरई सज़ायें भी दीं। फिर हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद मुझे ख़्याल हुआ कि वह दोनों ख़लीफ़ा जिनसे मैं ने लफ़्ज़े **बिस्सलात** के साथ बैअ़त की थी, इंतिक़ाल फ़रमा चुके। जिनके लिये मुझसे वादा लिया गया था वह भी अब रुख़्सत हो गये। पस यह सोच कर मैंने बैअ़त लेनी शुरू कर दी। चुनांचे मुझसे अहले हरमैन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) के बाशिन्दों ने बैअ़त कर ली। अब ख़िलाफ़त के लिये मेरे मुक़ाबले में वह शख़्स खड़ा हुआ है (यानी हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु) जो क़राबत, इल्म और सब्क़ते इस्लाम में मेरे बराबर हो ही नहीं सकता। और मैं हर तरह उस शख़्स के मुक़ाबला में ख़िलाफ़त का ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २६४)

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से दर्याफ़्त किया कि मैंने ख़ुत्बा में आपको फ़रमाते सुना है कि ऐ अल्लाह ! हमको वैसी ही सलाहियत अता

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमा जैसे तूने हिदायतयाब खुलफ़ाए राशिदीन को अता फ़रमाई थी। अज़राहे करम मुझे इन हिदायतयाब खुलफ़ाए राशिदीन के नाम बता दें। यह सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आबदीदा हो गये और फ़रमाया वह मेरे दोस्त अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा थे। इनमें से हर एक इमामे हुदा और शैखुल–इस्लाम था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद वह दोनों कुरैश के मुक़्तदा थे। जिस शख़्स ने उनकी पैरवी की वह अल्लाह तआला की जमाअत में दाखिल हो गया।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २६६)

मुहतरम क़ारिईन! अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना अली कर्रमल्लाह वजहहू के इन फ़ैसलाकुन इरशादात के बाद किसी तरद्दुद की गुन्ज़ाइश बाक़ी नहीं रहती। हर वह शख़्स जो हुब्बे अली का दावेदार है। उसे फ़रमाने अली को दिल व जान से तसलीम कर लेना चाहिये। और दिल से इस बात को क़तई तौर से निकाल देना चाहिये कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ही ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ थे। मगर हज़रत अबू–बक्र व उमर व उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हुम ने उनका हक़ छीन लिया।

मआज़ल्लाह! अल्लाह हम को सहाबए किराम व खुलफ़ाए राशिदीन की मुहब्बत अता फ़रमाये–आमीन।

ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद दूसरे रोज़ तमाम सहाबाए किराम, जो मक्का और मदीना मनव्वरा में थे (सिवाये हज़रत तलहा व हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के), हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअ़त की और आप तमाम मुसलमानों के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हो गये। उसके बाद हज़रत तलहा और ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का चले गये। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को साथ लेकर खूने उसमान का मुतालबा करते हुए बसरा पहुंचे। जिस वक़्त हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़बर मिली तो आप भी इराक़ तशरीफ़ ले गये। और बसरा में हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर और हज़रत आइशा से मिले, आमना–सामना हुआ। फिर जंग शुरू हो गई। यह लड़ाई जंगे जुमल के नाम से जमादिल–आख़िर सन् ३६ हिजरी में हुई। इस जंग में हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अंन्हुमा शहीद हो गये। और तरफ़ैन के तेरह हज़ार (१३०००) मुसलमान भी शहीद हो गये।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बसरा में आप पन्द्रह रोज़ रुके, फ़िर कूफ़ा तशरीफ़ ले गये। आपके कूफ़ा पहुंचने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने खुरूज किया। उनके साथ शामी लशकर था। आप आगे बढ़े और सिफ़्फ़ीन के मक़ाम पर माहे सफ़र सन् ३७ हिजरी में खूब मारका आराई हुई। कई रोज़ तक यह सिलसिला चलता रहा। आख़िर एक मुआहिदा पर यह जंग ख़त्म हुई। उसे जंगे सिफ़्फ़ीन कहते हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल

सैयदतुन्निसा जिगर गोशए रसूल
सैयदतुना हज़रत

फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा

रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
इरशाद फ़रमाते हैं :
फ़ातिमतु बिज़अतुम मिन्नी फ़मन अग़्ज़बहा अग़ज़बनी
(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०६)

फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उनको नाराज़ किया
उसने मुझे नाराज़ किया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सैयदतुन्निसा हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा

खूने ख़ैर्रुसुल से है जिनका ख़मीर | उनकी बेलौस तीनत पे लाखों सलाम
उस बतूले जिगर पारए मुस्तफ़ा | हुजला आराये इफ़्फ़त पे लाखों सलाम
जिसका आंचल न देखा मह व महर ने | उस रिदाये नज़ाहत पे लाखों सलाम
सैयदा ज़ाहेरा तैयबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः)

नाम, लक़ब और पैदाइश : आपका नामे नामी इसमे गिरामी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और लक़ब सैयदतुन्निसा, ज़ोहरा, बतूल है। हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चहेती बेटी मख़दूमए काइनात रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम फ़ातिमा रखा तो उसके मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : **इन्नमा सम्मैतु इबनती फ़ातिम त लिअन्नल्लाह फ़ त म हा व मुहीब्बीहा अनिन्नार** यानी मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातिमा इसलिये रखा है कि अल्लाह तआला ने उसको और उसके चांहने वालों को दौज़ख़ से आज़ाद किया है।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ५४०, शरह फ़िक़्ह अकबर सफ़ा : १३३)

तबरानी ने अपने सिक़ा आदमियों से ब्यान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **इन्नमा सम्मैतु फ़ातिम त लिअन्नल्ला ह तआला क़द फ़ त म हा व ज़ुर्रिय त हा अनिन्नारि यौमल क़्याम:।**

मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातिमा इसलिये रखा है कि अल्लाह तआला ने उसको और उसकी औलाद को क़्यामत के दिन कोई अज़ाब नहीं देगा। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ५४०) (शरह फ़िक़्ह अकबर सफ़ा : १३३) लक़ब ज़ोहरा यानी 'कली' आप जन्नत की कली थीं आपके जिस्म से जन्नत की ख़ुशबू आती थी जिसे हुज़ूर सूंघा करते थे। आप अपने ज़माने की तमाम औरतों से फ़ज़ीलते दीन और हुस्न व जमाल में यक्ताये रोज़गार थीं। चुनांचे हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपने वालिदा से हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुतअल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया सैयदा चौदहवीं रात के चाँद की तरह हसीन व जमील थीं। (सफ़ीनए नूह जिल्द अव्वल सफ़ा : १४) आपके लक़ब 'बतूल' के माना हैं 'मुन्क़ता होना'। चूंकि आप दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से अलग और बे-तअल्लुक़ थीं। आपकी तवज्जह इस फ़ानी दुनिया की ऐश व इशरत की तरफ़ बिल्कुल नहीं थी बल्कि हर वक़्त आप यादे इलाही में मसरूफ़ रहती थीं। इसलिये आपको 'बतूल' कहा जाता है। (शरह फ़िक़्ह अकबर सफ़ा : १३३)

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान साहब नईमी अलैहिर्रहमः ने क्या ख़ूब फ़रमाया है –

बतूल व फ़ातिमा ज़ोहरा लक़ब इस वास्ते पाया
कि दुनिया में रहें और दें पता जन्नत की निकहत का

आप के वालिदे गिरामी हुज़ूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सैयदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और वालिदा माजिदा हज़रत ख़दीजतुल-कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। हज़रत ख़दीजा को यह शर्फ़ हासिल है कि आप हुज़ूर सैयदुल-अंबिया वल-मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली ज़ौजए मुतह्हरा हैं। जब तक आप ज़िन्दा रहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी और से निकाह नहीं फ़रमाया। आप ही ने सबसे पहले ईमान क़ुबूल फ़रमाया। आपके बत्ने मुबारक से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार साहिबज़ादियां हज़रत रुक़ैया, हज़रत ज़ैनब, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अल्लाहु अन्हुन्न हैं और तीन साहिबज़ादे। एक और रिवायत में दो साहिबज़ादों के बारे में लिखा है। हज़रत क़ासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मारिया क़िबतीया के बत्न से हैं।

हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा की पैदाइश के सन् में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। कोई कहता है कि आपकी विलादत एलाने नुबुव्वत से एक साल पहले हुई। बाज़ कहते हैं कि विलादत इक्तालीसवें साल में हुई। इब्ने जौज़ी का कहना है कि आपकी पैदाइश इज़्हारे नुबुव्वत से पांच साल पहले हुई है। मशहूर तर रिवायत यही है। (मदारिजुन्नुबुव्वत : जिल्द दोम सफ़ा : ७८७)

हज़रत सैयदा का बचपन शरीफ़ और ज़िन्दगी का हर लम्हा निहायत पाकीज़ा था। ऐसा क्यों न होता कि एक तरफ़ हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरी तरफ़ हज़रत सैयदा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़दीजतुल- कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा की आग़ोशे रहमत आपकी तरबीयत-गाह थी। आप रात दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत ख़दीजतुल- कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़ुबाने पाक से पाकीज़ा अक़वाल और ख़ुदा- शनासी के तज़करे सुनतीं और उनके मुक़द्दस आमाल व अफ़आल का मुशाहिदा फ़रमाती थीं। इसीलिये हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा से ज़्यादा किसी को भी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीरत व किरदार, राह व रविश और क़्याम व कुऊद में मुशाबह नहीं देखा। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह आदते करीमा थी कि जब हज़रत सैयदा फ़ातिमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लातीं तो हुज़ूर उनके लिये खड़े हो जाते। उनका हाथ चूमते। उनकी पेशानी को बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ ले जाते तो यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये खड़ी हो जातीं और आगे बढ़कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दस्ते मुबारक थाम लेतीं और अपनी जगह पर बिठातीं।

हज़रत सैयदा की उम्र शरीफ़ जब नौ बरस की थी कि आपकी वालिदा मुहतरमा हज़रत ख़दीजतुल-कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी बेहतरीन तरबीयत फ़रमा कर इंतिक़ाल फ़रमा गईं। जब आपकी उम्र बइख़्तिलाफ़े रिवायत २३ साल की हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया जिसके बाइस आप हमेशा बीमार रहतीं और उसी ग़म में आपका इंतिक़ाल हो गया। आपकी सीरत पर मुख़्तसरन रौशनी के लिये आपने मुन्दरजा बाला रिवायतों को पढ़ा। अब कुछ और मालूमात के लिये आइन्दा औराक़ का मुताला कीजिए।

हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा का निकाह रज़ियल्लाहु अन्हा

मख़दूमए काइनात जिगर पारए मुस्तफ़ा सैयदतना ख़ातूने जन्नत रज़ियल्लाहु अन्हा आलमे तुफ़ूलियत से जब आलमे बुलूग़ियत में पहुंचीं तो हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते आली में बहुत से पैग़ाम आये। लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर पैग़ाम को यह कह कर रद्द फ़रमा दिया कि मुझे इस मामले में अल्लाह तआला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के हुक्म का इंतज़ार है। हम ज़रा क़दरे तफ़सील के साथ हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा के निकाह के मुतअल्लिक़ मोतबर व मुस्तनद किताबों के हवालजात की रौशनी में कुछ अहम और ज़रूरी बातें तहरीर कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सही तरीन रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के दूसरे साल रमज़ानुल मुबारक में हज़रत ख़ातूने जन्नत की शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमा दी। बाज़ ने रज्जब में निकाह होने का ज़िक्र किया है और बाज़ माहे सफ़र भी कहते हैं। वक़्ते निकाह हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा की उम्र शरीफ़ १५ साल साढ़े पाँच माह थी। बाज़ कहते हैं सोलह साल और बाज़ अट्ठारह साल भी कहते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र मुबारक इक्कीस साल पांच माह थी। हज़रत अली ने हज़रत फ़ातिमा की ज़िन्दगी में कोई दूसरी शादी नहीं की। हां, अलबत्ता एक दफ़ा इरादा किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली! इससे फ़ातिमा को तकलीफ़ पहुंचेगी और फ़ातिमा की तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ का बाइस बनती है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। अहमद ने भी एक ऐसी ही रिवायत ब्यान की है वह कहते हैं कि हज़रत अबू–बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत फ़ातिमा के निकाह के पैग़ाम के लिये हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुए तो आपने इंकार फ़रमा दिया। इरशाद फ़रमाया कि फ़ातिमा के निकाह के लिये मुझे वह्य–ए–इलाही का इंतज़ार है। दूसरे हज़रत उमर को फ़रमाया कि फ़ातिमा खुर्द साल हैं। फ़िर उम्मे–ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तरग़ीब दी।

सवाइक़े मुहर्रक़ा में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पैग़ाम को रद्द फ़रमा दिया तो उन दोनों हज़रात ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को इस मामले में तरग़ीब दी और फ़रमाया : ऐ अली! आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहल और ख़्वास में से हैं। आप जाकर हज़रत फ़ातिमा के लिये निकाह का पैग़ाम दे दीजिए। चुनांचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन दोनों के कहने के मुताबिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वसल्लम की बारगाहे आलिया में पहुंचे और सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर ने सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया : ऐ अबू–तालिब के फ़र्ज़न्द! क्या बात है, कैसे आना हुआ? हज़रते अली अर्ज़ करते हैं कि मैं आपकी बारगाह में इसलिये हाज़िर हुआ हूं कि मैं फ़ातिमा का पैग़ाम अपने लिये पेश करूं। उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरहबा व अहलन फ़रमाया और उससे ज़्यादा कुछ न फ़रमाया।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में मौजूद था कि उस वक़्त हुज़ूर पर वह कैफ़ियत तारी हुई जिसका नुज़ूले वह्य के वक़्त ज़ुहूर होता था। फ़िर जब आपकी हालत मामूल पर आई तो आपने मुझसे फ़रमाया : ऐ अनस! रब्बुल–अर्श के पास से मेरे हुज़ूर जिब्रईल अलैहिस्सलाम आये और कहा कि हक़ तआला इरशाद फ़रमाता है कि फ़ातिमा का निकाह अली मुर्तज़ा के साथ कर दो। तो ऐ अनस ! जाओ और अबू–बक्र व उमर व तलहा व ज़ुबैर, और जमाअते अन्सार को बुला लाओ। जब यह सब हाज़िर हो गये तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बलीग़ खुतबा दिया जिसमें अल्लाह तआला की हम्द व सना और निकाह की तरग़ीब फ़रमाई। उसके बाद हज़रते अली से पूछा कि अदाये महर के वास्ते तुम्हारे पास क्या है? हज़रते अली ने जवाब दिया कि एक घोड़ा और एक ज़िरह है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुम मुजाहिद हो और घोड़ा जिहाद के लिये ज़रूरी है। ज़िरह को फ़रोख़्त कर डालो। चुनांचे वह ज़िरह हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने ४८० दिरहम में ख़रीद ली (जो बाद में हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बतौरे हदिया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को वापस कर दिया।) हज़रत अली ने पूरी–पूरी रक़म लाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश कर दी। हुज़ूर ने उसमें से कुछ हज़रत बिलाल को दिया कि ख़ुशबू ख़रीद लायें और कुछ रक़म जहेज़ वग़ैरह के लिये उम्मे–सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा के हवाले कर दिया। उन्होंने उस रक़म से दो चादरें, दो कतान वाली चादरें ओढ़ने के लिये, चार बालिशत कपड़ा, दो चांदी के बाज़ूबन्द, गद्दा, तकिया, एक प्याला, एक चक्की, एक मश्कीज़ा और कुछ मशरूबात वग़ैरह ख़रीदे और उनको तरतीब के साथ रख दिया। एक और रिवायत में हज़रत फ़ातिमा के जहेज़ के मुतअल्लिक़ लिखा है कि इसमें बान की एक चारपाई, एक लिहाफ़, एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

चमड़े का तकिया (बिस्तर) जिसमें दरख़्ते खुजूर की छाल भरी हुई थी। दो चक्कियां, एक मशकीज़ा और दो घड़े शामिल थे। (सीरते रसूल (अरबी) सफ़ा : ६१६–रौज़तुश्शोहदा जिल्द अव्वल सफ़ा : २६२) इसके बाद हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा का निकाह हज़रत अली के साथ चार सौ मिसक़ाल चांदी पर महर बांधा और फ़रमाया : ऐ अली! तुम क़ुबूल करते हो और इस पर राज़ी हो? हज़रत अली ने अर्ज़ किया : मैंने क़ुबूल किया और मैं राज़ी हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह पढ़ा दिया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तबाक़ खजूरों का लिया और जमाअते सहाबा पर बिखेर कर लुटाया। इसी बिना पर फ़ुक़हा की एक जमाअत कहती है कि खजूर व बादाम वग़ैरह का निकाह की मजलिस में बिखेर कर लुटाना मुस्तहब है। (मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफ़ा : १२७)

साहिबे रौज़तुश्शोहदा हज़रत अल्लामा मुईन काशफ़ी ने अबुल–मुऐयद ख्वार्ज़मी की किताब 'मनाक़िबे ख्वार्ज़मी' से यह रिवायत नक़ल फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के दौलत–कदा पर जलवा अफ़रोज़ थे कि एक फ़रिश्ता ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुआ जिसके बीस (२०) सर थे और हर सर में एक हज़ार (१०००) ज़ुबान थी। हर ज़ुबान से अल्लाह तआला की तस्बीह व तहलील करता था। इसकी हथेली सातों आसमान और सातों ज़मीन से ज़्यादा कुशादा थी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिफ़सार पर उस फ़रिश्ते ने कहा : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं सरसाईल फ़रिश्ता हूं। हक़ तआला ने मुझे आपकी ख़िदमत में नूर की नूर के साथ शादी के लिये भेजा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ सरसाईल! किसका किसके साथ अक़्द करूं? तो फ़रिश्ता सरसाईल ने अर्ज़ किया हज़रत फ़ातिमा का निकाह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के साथ फ़रमा दीजिए। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जिबरील व हज़रत मीकाईल को गवाह बनाकर उस फ़रिश्ते की मौजूदगी में अपनी बेटी फ़ातिमा का निकाह हज़रत अली के साथ कर दिया। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द अव्वल सफ़ा २८६)

ख़तीब बग़दादी ने हज़रत सैयदना इब्ने–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सैयदतना फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दिया तो सैयदा फ़ातिमा रोने लगीं। (साहबे रौज़तुश्शुहदा ने लिखा है कि यह रोना हज़रत फ़ातिमा का अपने बाप के घर से जुदाई की वजह से था। उन लोगों का यह ख़्याल ग़लत है जो कहते हैं कि हज़रत फ़ातिमा इसलिये रोई थीं कि हज़रत अली के घर में दुनियावी माल व मता नहीं थी। इसलिये कि सैयदा फ़ातिमा ने पहले ही अपने वालिदे गिरामी की तालीम व तरबीयत से अपने आप को दुनिया से अलग-थलग कर लिया था। फ़क्र व फ़ाक़ा तो उनकी इम्तियाज़ी शान थी।) इस पर हुज़ूर ने उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया : मेरी लख़्ते जिगर किस बात से तुम रोने लगीं? उन्होंने कहा : या रसूलुल्लाह! आपने ऐसे शख़्स के साथ निकाह कर दिया है जिसके पास न माल है और न कोई चीज़। इस पर हुज़ूरे अकरम ने इरशाद फ़रमाया : **अमा तरज़ी न या फ़ातिम त इन्नल्ला ह इख़्ता र मिन अहल्लि-अर्ज़े रिजलैने ज अ ल अ ह दु हुमा अबा क वल आ ख़ रु बि अ लिक** यानी ऐ फ़ातिमा! क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि हक़ तआला ने ज़मीन से दो शख़्सों को बरगुज़ीदा बनाया है जिनमें से एक तुम्हारा वालिद है और दूसरा तुम्हारा शौहर है। हाकिम ने हज़रत अबू-हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अमा तरज़ी न इन्नी ज़ौ ज त क अक़दमु उम्मती सलमौं व अकसरुहुम इल्मौं व आज़मु हिल्मन।** ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इससे राज़ी नहीं कि मैंने तुम्हारी शादी उससे की है जो अज़रुये इस्लाम सबसे पहले मुसलमानों में से है और इल्म व हिल्म के एतेबार से उन सबसे दानातरीन है। साहिबे मदारिजुन्नुबुव्वः लिख़ते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी का अक़्द हज़रत अली के साथ फ़रमा दिया तो उनके काशाना पर तशरीफ़ ले गये। हज़रत सैयदा फ़ातिमा से फ़रमाया : थोड़ा पानी लाओ। फ़िर सैयदा फ़ातिमा ने लकड़ी का प्याला लिया और उसमें पानी भरा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश कर दिया। हुज़ूर ने पानी लेकर अपना लुआबे दहन मुबारक उसमें डाला और सैयदा फ़ातिमा से फ़रमाया : क़रीब आओ। वह क़रीब आई तो हुज़ूर ने उस पानी को उनके सीना के दरमियान और सर पर छिड़का और फ़रमाया : **अल्लाहुम्म म इन्नी उईज़ुहा बि क व ज़ुर्रियतहा मिनश्शैतानिर्रजीम।** ऐ अल्लाह ! मैं इनको और इनकी औलाद को तेरी पनाह में देता हूं शैताने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रजीम से। फ़िर फ़रमाया : पानी और लाओ। हज़रत अली फ़रमाते हैं कि मैं समझ गया कि अब हुजूर क्या करेंगे ? तो मैं खड़ा हुआ और पानी भर कर लाया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पानी को लिया। उसमें लुआब दहने मुबारक डाला और मुझसे फ़रमाया : मेरे सामने आओ। मैं हुजूर के सामने खड़ा हो गया। हुजूर ने पानी के छींटे मेरे सर पर और मेरे चेहरे पर दिये और फ़रमाया : **अल्लाहुम्म म इन्नी उईज़ु बि क व जुर्रियतहू मिनश्शैतानिर्रजीम।** ऐ अल्लाह! मैं इनको और इनकी औलाद को तेरी पनाह में देता हूं शैताने रजीम से। उसके बाद फ़रमाया : **बिस्मिल्लाहि वल बरकते** कह कर अपनी ज़ौजा के पास जाओ।

(मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफ़ १२६)

दूसरे दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीमा किया और सहाबए किराम में अनसार व मुहाजिरीन मिला कर सात सौ आदमियों ने उसमें शिर्कत फ़रमाई। वलीमा के खाने में बइख़्तलाफ़े रिवायत खुर्मा, रौग़न, पनीर चन्द सा खजूरें और जौ का खाना था।

आसमान पर हज़रत फ़ातिमा व हज़रत अली का निकाह

साहिबे रौज़तुश्शुहदा हज़रत अल्लामा हुसैन अहमद काशफ़ी 'मनाक़िबे ख़्वार्ज़मी' के हवाले से लिखते हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और आसमान पर हज़रत फ़ातिमा व हज़रत अली के निकाह की तफ़सील ब्यान फ़रमाते हुए अर्ज़ किया : कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला ने इनका अक़्दे निकाह आसमान पर इस तरह मुनअक़िद किया कि सबसे पहले बहिश्ते बरीं को हुक्म फ़रमाया कि वह खुद को ज़ैब व ज़ीनत से अच्छी तरह आरास्ता व पैरास्ता कर लें। फिर हूराने बहिश्ती को हुक्म फ़रमाया कि वह अपने आपको ज़ेवर हाये जन्नत से अच्छी तरह मुज़य्यन कर लें। फ़िर शजे तूबा को हुक्म दिया कि वह खुद को ज़र्री बर्ग व बार से बारआवर करे। उसके बाद आसमान के तमाम फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि सबके सब चौथे आसमान पर बैतुल-मामूर के नज़दीक जमा हो जायें। तो जब यह सब कुछ हो गया तो नूर का वह मिम्बर जो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बैतुल–मामूर के सामने रखा हुआ है उसपर बैठकर हज़रत आदम नबीयना अलैहिस्सलाम वस्सलात ने ख़ुत्बा पढ़ा। बादहु अल्लाह तआला ने राहील फ़रिशता को हुक्म दिया कि वह मिम्बर पर आये और हम्द व सना बयान करे क्योंकि वह तमाम फ़रिशतों में सबसे ज़्यादा शीरीं कलाम वाले थे। पस राहील फ़रिशते ने ख़ुत्बा पढ़ा तो आसमान के सारे फ़रिशते इस ख़ुशअल्हानी पर झूमने लगे। बादे अज़ां अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया कि ए जिबरईल ! मैंने अपनी कनीज़ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद के साथ अपने बन्दा अली बिन अबी–तालिब का निकाह कर दिया है। तू भी इस निकाहे मुबारका को मलाइकए किराम में मुनअक़िद कर। मैंने अल्लाह तबारक व तआला के हुक्म के मुताबिक़ उन दोनों का अक़्दे निकाह करके तमाम मलाइका को गवाह किया और यह तमाम वाक़िया दस्तावेज़ की सूरत में उस रेशमी कपड़े पर तहरीर कर दिया गया है। मुझे हुक्मे खुदावंदी हुआ है कि उसे आपकी ख़िदमत में पेश कर दूं।

(रौज़तुश्शुहदा जिल्द अव्वल सफ़ा : २८८, मुश्किल–कुशा जिल्द अव्वल सफ़ा३७६)

हज़रत फ़ातिमा और उमूरे ख़ानादारी रज़ियल्लाहु अन्हा

शहंशाहे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाडली और चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर का पूरा काम काज खुद अन्जाम दिया करती थीं। झाड़ू अपने हाथ से देती थी, चक्की अपने हाथ से पीसती थीं जिससे हाथ में घट्टे पड़ गये थे। मशकीज़ा में पानी भर कर लाती थीं जिससे कन्धे छिल गये थे। आग के पास बैठ कर गर्मी की शिद्दत के बावजूद खाना खुद पकाती थीं। उन तमाम उमूर को अंजाम देने के बावजूद अपने शौहर हज़रत अली की ख़िदमत में कभी भी कमी वाक़ेय न होने दी। न ही कभी एक वक़्त की नमाज़ क़ज़ा हुई।

एक बार हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में माले ग़नीमत में कुछ बांदी और गुलाम आये। आप अपने शौहर के बेहद इसरार पर डरते–डरते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाहे आलिया में, एक बांदी घरेलू काम–काज के लिये तलब करने गयीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा! क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूं जो उससे बेहतर है जिसका तुमने मुझसे सवाल किया है? फ़रमाया रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि जब तुम सोने का इरादा करो तो ३३ बार सुब्हानल्लाह ३३ बार अलहम्दुलिल्लाह और ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। यह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है।

(बुख़ारी शरीफ़ सफ़ा ४०३)

हज़रत फ़ातिमा और अहादीसे करीमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नूरे नज़र, लख़्ते जिगर, अह्ले–बैते अतहार में सबसे ज़्यादा चहेती और प्यारी बेटी फ़ातेहे ख़ैबर हज़रत सैयदना अली इब्ने अबी–तालिब कर्रमल्लाह वजहहू की अहलिया मुहतरमा। हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की वालिदए माजिदा और तमाम जहां की औरतों की सरदार ख़ातूने जन्नत हज़रत सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा, जिनसे परवरदिगारे आलम ने अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद का सिलसिला जारी फ़रमाया। उनके फ़ज़ाइल व मनाक़िब में भी कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम यहां मुख़्तसरन चन्द अहादीसे करीमा तहरीर करने की सआदत हासिल कर रहे हैं –

(१) हज़रत मिसवर बिन मख़ज़िमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **फ़ातिमतु बिज़अतुम मिन्नी फ़मन अग़ ज़ ब हा अग़ ज़ ब नी** फ़ातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उन्हें नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया।

(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा : ४०६)

(२) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **फ़ातिमतु सैयदतुन निसाइ अहल्लिजन्न** : फ़ातिमा जन्नती औरतों की सरदार है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ४०५)

(३) हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अला तरज़ी न अन तकूनी सैइदतु निसाइल आलमीन व सैयदतु निसाइल मूमिनी न व सैइदतु निसाइ हाज़िहिल उम्मः** ऐ फ़ातिमा! क्या तू इसपर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

राज़ी नहीं है कि तू सारे जहान की औरतों की सरदार हो, तमाम मोमिन औरतों की सरदार हो और इस उम्मत की औरतों की भी सरदार हो।

(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा ४६५)

(४) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! हममें से कौन आपका ज़्यादा महबूब है? मैं या फ़ातिमा? हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **फ़ातिमतु अहब्बु इलैया मिन क व अन त अअज़्ज़ु अलैया मिन्हा।** यानी फ़ातिमा मुझे तुमसे ज़्यादा महबूब है और मेरे नज़दीक तुम उनसे ज़्यादा इज़्ज़त वाले हो। (सवाइके़ मुहर्रक़ा सफ़ा ६३५)

(५) हज़रत अबू–अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : **का न यौमल क़ियामति ना दा मुनादिम मिंव्वराइल हिजाबि या अहलल जमइ गुज़्ज़ू अबसारकुम हत्ता तमुर्र फ़ातिम त बिन्ते मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ त मुर्रु म अ हा सबऊ न अल फ़ जारि यतिन मिन हूरिल ऐनि कल-बरक़िल्लामिअ्।** क़्यामत के दिन एक निदा करने वाला परदे में से निदा करेगा। कि हश्र के मैदान में जमा होने वालो! अपनी निगाहें झुका लो, यहां तक कि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (पुल–सिरात) से गुज़र जायें। चुनांचे आप सत्तर हज़ार बांदियों के साथ जो हूरें होंगी बिजली की तरह। (पुल–सिरात) से गुज़र जायेंगी।

(सवाइके़ मुहर्रक़ा सफ़ ६३३ 'ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा ४१३)

(६) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया **इन्नल्ला ह यग़ज़िबु बि ग़ ज़ बि फ़ातिम त व यरज़ा बिरज़ाइहा।** बेशक अल्लाह तआला फ़ातिमा के ग़ज़बनाक होने से ग़ज़बनाक होता है और उसके राज़ी होने से राज़ी होता है। ('ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा ४६५)

(७) हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इबनती फ़ातिम त हौराउ आ द मीयतु लम तहिज़ वलम ततमुस।** मेरी साहिबज़ादी फ़ातिमा इंसानी हूर है कि नजासतों के आरज़े (हैज़ व निफ़ास) से पाक व मुनज़्ज़ह है। (अल–अम्न वल–उला सफ़ा २०२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत फ़ातिमा और इबादते खुदावन्दी रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी वालिदा माजिदा हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा को हमेशा देखा है कि वह घर के मेहराब में रात–रात भर नमाज़ में मशगूल रहती थीं यहां तक कि सुबह तुलू हो जाती। मैंने उन्हें अल्लाह तबारक व तआला के हुज़ूर गिरया व ज़ारी और निहायत आजिज़ी से इल्तिजा व दुआ करते हुए देखा है। मगर मैंने कभी यह नहीं देखा कि दुआ में अपने वास्ते कोई दरख़्वास्त की हो बल्कि आपकी तमाम दुआयें नाना जान हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत की बख़्शिश और भलाई के लिये होतीं।

(मदारिजुन्नुबुव्व : जिल्द दोम सफ़ा ७६०)

वह शब बेदार व सिर्फ़ रुकू व सज्दए पैहम
वह जिनकी ज़ात पर नाज़ां हुज़ूरे रहमते आलम
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत उम्मे–ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रमज़ान शरीफ़ का महीना दोपहर का वक़्त था और निहायत शिद्दत की गर्मी पड़ रही थी। मैं हज़रत फ़ातिमा के मकान पर हाज़िर हुई दरवाज़ा बन्द था, चक्की चलने की आवाज़ आ रही थी। मैंने रोज़न दर से झांक कर देखा कि सैयदा तो चक्की के पास ज़मीन पर सो रही हैं और चक्की ख़ुद–बख़ुद चल रही थी। पास ही हसनैन करीमैन का गहवारा भी ख़ुद–बख़ुद हिल रहा था। मैं यह देखकर निहायत हैरान व मुतअज्जिब हुई और उसी वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह माजरा ब्यान किया। आपने फ़रमाया : इस शिद्दत की गर्मी में फ़ातिमा रोज़े से है। परवरदिगारे आलम ने फ़ातिमा पर नींद ग़ालिब कर दी ताकि उसको गर्मी की शिद्दत और तिशनगी महसूस न हो और फ़रिशतों को हुक्म दे दिया कि वह फ़ातिमा के काम सर अन्जाम दें।

वह ख़ातूने जनां, मासूम हूरें बांदियां जिनकी
मलक जन्नत से आकर पीसते थे चक्कियां जिनकी

(सफ़ीनए नूह जिल्द दोम सफ़ा ३५)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

विसाल हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले मुबारका का हज़रत फ़ातिमा को इतना सख़्त सदमा था कि उसके बाद आप कभी हंसी नहीं और हमेशा अपने वालिद माजिद की जुदाई में रोती रहीं। यहां तक कि विसाले सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छः महीने बाद ३ रमज़ानुल मुबारक सन् ११ हिजरी मंगल की रात को हिज्र व फ़िराक़ और दर्द व ग़म की कठिन मन्ज़िलों से गुज़र कर अपने वालिद माजिद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जा मिलीं। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ २२ साल थी। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

इंतिक़ाल के रोज़ आपने मुबालिग़ा के साथ गुस्ल फ़रमाया और पाकीज़ा कपड़े पहनकर नमाज़ अदा फ़रमाई और उम्मते मुहम्मदिया के लिये मग़फ़िरत की दुआयें कीं। बादे अज़ां अपना दाहिना हाथ रुख़सार के नीचे रख कर क़िबला–रू लेट गईं और फ़रमाया कि मैं अपनी जान खुदावन्दे कुद्दूस के सुपुर्द करती हूं। आपकी वफ़ात से हज़रत अली, हज़रत हसनैन करीमैन, और हज़रत ज़ैनब व कुलसूम रिज़वानुल्लाह अलैहिम को बेहद सदमा हुआ।

तजहीज़ व तकफ़ीन : हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा में शर्म व हया बहुत ज़्यादा थीं। इसलिये वफ़ात से कुछ रोज़ पहले हज़रत असमा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा (ज़ौजए हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया : ऐ असमा! आजकल जिस तरह औरतों का जनाज़ा लेकर जाते हैं मुझे यह अच्छा मालूम नहीं होता कि उससे औरतों की बेपर्दगी होती है। हज़रत असमा ने फ़रमाया : ऐ जिगर गोशए रसूल! मैंने हबशा में एक तरीक़ा देखा है जिससे औरतों के जनाज़ा का पूरा–पूरा पर्दा हो जाता है। अगर आप फ़रमायें तो मैं उसे आपके सामने करके दिखा दूं। फिर असमा ने खुजूर की ताज़ा शाख़ें मंगवाई और उनको चारपाई पर कमान की तरह लगाकर ऊपर कपड़ा डाल दिया हज़रत फ़ातिमा ने यह देखकर फ़रमाया : यह तो बहुत–ही हसीन व जमील तरीक़ा है। इससे मर्द व औरत के जनाज़े की पहचान भी हो जाती है। तो जब मैं वफ़ात पाऊँ तो मेरा जनाज़ा भी इसी तरह बनाना। तुम और मेरे शौहर दोनों मिलकर मुझे गुस्ल देना। और किसी को शामिल न करना। पस जब हज़रत सैयदा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई तो हज़रत असमा व हज़रत अली ने उनको गुस्ल दिया। उसी तरह आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपके जनाज़ा पर दो रुइया ताज़ा खजूर की शाखें लगाकर ऊपर कपड़ा डाल दिया गया। बइख़्तिलाफ़ रिवायात हज़रत अली या हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और हज़रत अली व अब्बास व फ़ज़ल ने आपको क़ब्र में उतारा। सही व मुख़्तार क़ौल के मुताबिक़ जन्नतुल–बक़ी में आपको मदफ़ून किया गया।

(सीरते रसूले अरबी–व–रौज़तुश्शुहदा वग़ैरह)

सैयदुल–मुहक़्क़िक़ीन हज़रत अल्लामा शैख़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः मदारिजुन्नुबुव्वः जिल्द दोम सफ़ा : ७५६ पर तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली की इजाज़त से हज़रत सैयदा की नमाज़ पढ़ाई और चार तकबीरें कहीं।

औलाद अमजाद : ख़ातूने जन्नत हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को छः औलाद हुई। तीन साहिबज़ादे और तीन साहिबज़ादियां :

तीन साहिबज़ादे (१) हज़रत इमाम हसन (२) हज़रत इमाम हुसैन (३) हज़रत मुहसिन–रज़ियल्लाहु अन्हुम

और तीन साहिबज़ादियां : (१) हज़रत उम्मे कुल्सूम (२) हज़रत ज़ैनब (३) हज़रत रुक़ैया–रज़ियल्लाहु अन्हुन्न

हज़रत मुहसिन और हज़रत रुक़ैया बचपन ही में इंतिक़ाल फ़रमा गये थे।

हज़रत उम्मे–कुल्सूम जिनकी शादी हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुई।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुआ।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़हर देकर और हज़रत इमाम हुसैन का मैदान में बुलाकर तीन दिन भूखा प्यासा रखकर शहीद किया गया। (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए औलाद क़यामत तक उन्हीं साहिबज़ादों से जारी हुआ है।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल

नवासा-ए-रसूल सैयदना हज़रत

इमाम हसन

रज़ियल्लाहु अन्हु

इरशादे रसूले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कन्धे पर सवार थे। आप फ़रमाते हैं :

अल्लाहुम्म म इन्नी उहिब्बुहू फ़अहिब्बहु
(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ४१४)

या अल्लाह ! मैं इससे मुहब्बत करता हूं तू भी इससे मुहब्बत कर।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अमीरुल-मोमिनीनहज़रत सैयदना

इमाम हसन

रज़ियल्लाहु अन्हु

हसने मुजतबा, सैयदुल-असख़िया | राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम
औजे महरे हुदा बह्रे मौजे नुदा | रूहे रौहे सख़ावत पे लाखों सलाम
शहद-ख़्वारे लुआबे ज़ुबाने नबी
चाशनी-गीर इस्मत पे लाखों सलाम

(सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहम :)

नाम व नसब व पैदाइश : सैयदुस्सादात, साहिबे करामात, इमामे शरीअत व तरीक़त, अक्से जमाले मुस्तफ़ा, नूरे चश्मे शेरे खुदा व ख़ातूने जन्नत, ख़ातिमे ख़िलाफ़ते राशिदा, जन्नत के जवानों के सरदार और हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लख़्ते जिगर, आपका नामे नामी इस्मे गिरामी हसन है। अइम्मा–ए–इसना अशरीया (बारह इमामों) में दूसरे इमाम हैं। आपकी कुन्नीयत अबू–मुहम्मद और अलक़ाब तक़ी व सैयद व रैहानतुन्नबी है। नसबनामा इस तरह है : अबू–मुहम्मद हसन बिन अली बिन अबी–तालिब बिन अब्दुल–मुत्तलिब कुरैशी मुत्तलबी है। आपकी वालिदा माजिदा का नाम सैयदा बतूल फ़ातिमा जिगर गोशए रसूल है। आपके वालिद माजिद का नाम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु है। आपके नाना जान हुज़ूर सैयदुल–अंबिया वल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इस लिहाज़ से आपकी फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा हो जाती है।

आपकी विलादते बा–सआदत १५ रमज़ानुल मुबारक सन् ३ हिजरी शब मंगल ब–मक़ाम मदीना मनव्वरह हुई। हज़रत असमा फ़रमाती हैं कि मैं हसन के पैदा होने के वक़्त हज़रत फ़ातिमा के पास थी। जिस तरह कि औरतों को पैदाइशे बच्चा के बाद लहू आता है हज़रत फ़ातिमा को न आया। मैंने यह तअज्जुब आमेज़ और हैरत अंगेज़ बात रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की तो आपने फ़रमाया : मेरी बेटी फ़ातिमा इस नजासत की आलूदगी से पाक है। वह हैज़ व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

निफ़ास से बिल्कुल मुनज़्ज़ह है। (सआदतुल–कौनैन सफ़ा : २०) एक रिवायत में आया है कि हज़रत इमाम हसन और हज़रत ईसा इब्ने मरयम और हज़रत यह्या बिन ज़करिया अलैहिमस्सलाम छः महीने में पैदा हुए। इसी वजह से शरीअत ने हमल की कम–से–कम मुद्दत छः महीने क़रार दी है।

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे नब्वी शरीफ़ के सहन में तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रत असमा बिन्ते उमैस ने आपको (हज़रत इमाम हसन की) विलादते बा–सआदत की खुशख़बरी पहुंचाई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इंतिहाई खुशी के आलम में हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ लाये और हज़रत असमा से फ़रमाया : असमा ! मेरे फ़र्ज़न्द को लाओ। हज़रत असमा ने शहज़ादए बतूल को ज़र्द रंग के कपड़े में लपेटा और आपकी आग़ोशे रहमत में दे दिया। हुज़ूर रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि ने शहज़ादे के जिस्म पर ज़र्द रंग का कपड़ा देखा तो फ़ौरन उस कपड़े को अलाहेदा कर दिया और हज़रत असमा से फ़रमाया : मेरे शहज़ादे को ज़र्द कपड़े में न लपेटा करो। चुनांचे हज़रत असमा फ़ौरन सफ़ेद कपड़ा ले आयीं और शहज़ादे को उस सफ़ेद कपड़े में लपेट कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहज़ादे के दायें कान में अज़ान और बायें कान में इक़ामत कही। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से दरियाफ़्त फ़रमाया : ऐ अली! तुमने इसका नाम क्या रखा है? उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह मेरी क्या मजाल कि मैं आपसे पहले इस फ़र्ज़न्द अर्जमन्द का नाम रखं लूं। ताहम अगर आप इजाज़त फ़रमायें तो मेरे दिल में एक ख़्याल आता है कि इसका नाम 'हरब' रखूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हम इस फ़र्ज़न्द का नाम तजवीज़ करने में अल्लाह तआला के हुक्म पर सबक़त नहीं कर सकते। यकायक हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला सलाम के बाद इस फ़र्ज़न्द की विलादत पर आपको मुबारकबाद पेश करता है और फ़रमाता है कि (हज़रत) अली मुर्तज़ा को आपकी बारगाह में वह कुर्ब हासिल है जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बारगाह में था। लिहाज़ा इस फ़र्ज़न्द का नाम हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के फ़र्ज़न्द शब्बर के नाम पर रखो जिसके मायने हसन के होते हैं। चुनांचे हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुक्मे खुदावन्दी अपने फ़र्ज़न्द

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अर्जमन्द का नाम 'हसन' रखा। पैदाइश के सातवें दिन स्याह धब्बों वाले सफ़ेद रंग के दो मेढे ज़बह किये और हज़रत इमाम हसन का अक़ीक़ा फ़रमाया। बाद शहज़ादे के सर के बाल उतरवाकर उनकी हम–वज़न चाँदी ख़ैरात कर दी।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २७७, रौज़तुश्शुहदा जिल्द अव्वल सफ़ा : ३६७ सआदतुल–कौनैन सफ़ा : २१)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबहत

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबह थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। **अल हसनु अशबहु बिरसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल म मा बैनस्सदरे इलर्रासे वल हुसैनु अशबहु बिरसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल म मा कां न असफ़लि मिन ज़ालि का** हज़रत हसन सर से लेकर सीना तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबह थे हज़रत हुसैन सीना शरीफ़ से नीचे तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत ज़्यादा मुशाबह थे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा ७३३)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : **लम यकुन अ ह दुन अश ब ह बिन्नबीइ मिनल हसनिब्ने अलीइन**। कोई शख़्स हज़रत इमाम हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बढ़कर हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह न था। (बुख़ारी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ४१५)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं :

एक सीना तक मुशाबह एक वहां से पांव तक
हुस्ने सिबतैन उनके जामों में है नीमा नूर का
साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयां
ख़त्ते तवाम में लिखा है यह दो वरक़ा नूर का

(हदाइक़े बख़्शिश, जिल्द दोम, सफ़ा १२२)

दूसरी जगह इरशादे आला हज़रत है :

मादूम न था सायए शाहे सक़लैन
वह साया था जलवए गर बज़ाते हसनैन
तमसील ने उस साया के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हसन और अहदे नब्वी

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बहुत ज़्यादा मोहब्बत और प्यार से पेश आते थे। यह सआदत बहुत कम खुश क़िस्मतों के हिस्से में आई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़े नाज़ व निअम से उनकी परवरिश फ़रमाई। कभी आग़ोशे रहमत में लेते तो कभी कांधे पर सवार फ़रमाते। उनकी अदना–अदना तकलीफ़ पर बेक़रार हो जाते। रोज़ाना हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ लाते थे। हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन भी आप से बेहद मानूस थे। कभी नमाज़ की हालत में पुश्ते मुबारक पर चढ़कर बैठ जाते तो आप उस वक़्त तक सज्दे से सर न उठाते जब तक खुद इमाम हसन पीठ पर से उतर न जाते। ग़र्ज़ ये कि नाना जान ने इंतिहाई प्यार व मुहब्बत और शफ़क़त से उनकी परवरिश फ़रमाई। कभी तादीबन भी आपने उनको नहीं झिड़का बल्कि हमेशा उनकी बचपन की शोख़ियों को देखकर हंस दिया करते थे। अभी इमाम हसन की उम्र ब–इख़्तिलाफ़े रिवायात ६ साल या तक़रीबन ७ साल की थी कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मर्ज़े वफ़ात का दौर शुरू हुआ। उन आख़री लम्हात में हज़रात हसनैन करीमैन के मासूम दिलों पर ग़म व अलम का जो तूफ़ान बरपा हुआ था उसका ब्यान हमारे क़लम की ताक़त से बाहर है। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अपने उन अय्याम में अपने महबूब फ़र्ज़न्दों का हद दर्जा ख़्याल फ़रमाया है। चुनांचे रिवायतों में आया है कि हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मर्ज़े वफ़ात में अपने दोनों शाहज़ादों हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को लेकर हाज़िर हुईं। अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! **हाज़ाने अबना य फ़व रिसहुमा शैअन** या रसूलल्लाह! यह मेरे दोनों बेटे हैं। उन्हें अपनी मीरासे करीम से कुछ अता फ़रमाइये। इरशाद हुआ **अम्मा ह स नुन फ़लहु हैबती व सरवरी व अम्मा हुसैनुन फ़लहु जुर्अती व जूदी** हसन के लिये तो मेरी हैबत और मेरी सरदारी है और हुसैन के लिये मेरी जुर्अत और मेरा करम। एक दूसरी रिवायत में फ़रमाया कि हसन के लिये अपना हिल्म व हैबत अता फ़रमाया और हुसैन के लिये मुहब्बत व रज़ा की नेमत दी। (अल–अम्न वल–उला सफ़ा ८६)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इमाम हसन अहदे सिद्दीक़ी में

हज़रत सैयदना अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अपने अहल व अयाल से ज़्यादा हज़रात हसनैन करीमैन का ख़्याल फ़रमाया करते थे। उनकी मुहब्बत से अपने दिल को मनव्वर व मुजल्ला फ़रमाये हुए थे। एक रोज़ हज़रत सिद्दीके अकबर नमाज़े अस्र अदा फ़रमाने के बाद बाहर निकले। हज़रत अली भी आपके साथ थे। देखा कि हज़रत हसन बच्चों के साथ खेल रहे हैं। फ़ौरन उनको अपने कांधे पर सवार कर लिया और उसी आलम में इरशाद फ़रमाया : **बिअबी शबीहुन बिन्नबीइ लै स शबीहुन बिअलीइन व अलीयुन यज़हकु**। मेरे बाप की क़सम! तुम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह हो, अली के मुशाबह नहीं हो। हज़रत अली हंस पड़े। (बुख़ारी जिल्द दोम सफ़ा : ४९५)

इमाम हसन अहदे फ़ारूक़ी में

हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में हज़रात हसनैन करीमैन के साथ ऐसा ही मोहब्बत आमेज़ बरताव रखा। चुनांचे एक मर्तबा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यमन के हुल्ले आये। (कपड़े क़ीमती हों तो उसे 'हुल्ला' कहते हैं। यह क़दीम अरबों में वही दरजा रखता था जो आज के दौर में 'सूट' का है।) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में तक़सीम कर दिए। इतने में हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा तशरीफ़ लाये। उनके जिस्म पर कोई हुल्ला न था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें देख कर अफ़सुरदा और मग़मूम हो गये। लोगों ने पूछा : क्या बात है? आपने फ़रमाया : मैं इन बच्चों की वजह से मग़मूम हूं कि इनके बदन के मुताबिक़ कोई हुल्ला नहीं है। फिर आपने यमन अपने आमिल को लिखा कि हसन व हुसैन के लिये दो हुल्ले भेजो और जल्दी रवाना करो। उन्होंने दोनों को हुल्ले भेजे। आपने उन दोनों को पहनाया तब इतमिनान हुआ। (दीने/इस्लाम और दो मुतज़ाद तस्वीरें सफ़ा : ४०)

हज़रत इमाम हसन अहदे उस्मानी में

हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी ऐसा ही शफ़क़त आमेज़ तर्ज़े अमल हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रखा। सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी अहद में तो यह दोनों साहिबज़ादे अपनी कमसिनी के बाअस किसी काम में हिस्सा न ले सके थे। लेकिन हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में यह पूरे जवान हो चुके थे। चुनांचे सबसे पहले सन् ३० हिजरी में तबरिस्तान की फ़ौजकुशी में मुजाहिदाना शिर्कत फ़रमाई।

जब हज़रत सैयदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का बलवाइयों ने मुहासरा कर लिया और आपके ख़िलाफ़ फ़ित्ना व शोरिश हद से ज़्यादा बढ़ गई तो हज़रत मौला अली मुश्किल–कुशा ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से फ़रमाया कि अपनी–अपनी तलवारें लेकर उसमान के दरवाज़े पर खड़े हो जाओ और किसी को उन तक पहुंचने न दो। चुनांचे आप दोनों ने इंतिहाई शुजाअत व बहादुरी के साथ हमला–आवरों की मुदाफ़अत की और बाग़ियों को अन्दर घुसने से रोके रखा। इस मुदाफ़अत में आप ज़ख़्मी भी हुए लेकिन किसी बाग़ी को मकान के अन्दर दाख़िल होने नहीं दिया। बिल–आख़िर जब बलवाइयों की तमाम तदबीरें नाकाम हो गई तो दूसरी तरफ़ जाकर दीवार फांदी और अन्दर जाकर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया। अगर हज़रात हसनैन करीमैन की तरह बनी–उमैया के नौजवान भी मकान के हर तरफ़ खड़े हो कर हिफ़ाज़त करते तो यक़ीनन बलवाई नाकाम हो जाते।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा २२४ 'सियरुस्सहाबा' सफ़ा: २)

हज़रत इमाम हसन और अहदे मुर्तज़वी

मारकए जुमल व सिफ़्फ़ीन जो हज़रत मौला अली मुश्किल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हुए। उन दोनों मारकों में भी हज़रात हसनैन करीमैन ने शिर्कत फ़रमाई और आख़िर तक अपने वालिदे गिरामी के साथ रहे। जब भी कोई अहम काम हुआ यह दोनों शहज़ादे बराबर अंजाम देते रहे। हज़रत मौला अली मुश्किल–कुशा के बाद ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी आपको ही सौंपी गई। तफ़सील आइन्दा सफ़हात में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हसन और अहादीसे करीमा

हज़रत सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु के फ़ज़ाइल में कसरत से अहादीसे करीमा वारिद हुई हैं। हम उनमें से चन्द को ज़िक्र करने की सआदत हासिल कर रहे हैं –

(१) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक गोद में थे और वह अपनी उंगलियां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ीए मुबारक में डाल रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़ुबान पाक उनके मुंह में डालते और फ़रमाते **अल्लाहुम्मम इन्नी उहिब्बुहू फ़अहिब्बहु** ऐ अल्लाह ! मैं इसको महबूब रखता हूं ! तू भी इसको महबूब रख। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४६७)

(२) हज़रत अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिम्बर पर देखा। इमाम हसन आपके पहलू में तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर कभी लोगों की तरफ़ देखते और कभी हज़रत हसन की तरफ़ और फ़रमाते कि **इन्नबनी हा ज़ा सैयिदुंय युसलिहुल्लाहु अला यदैहि बै न फ़िअतैन।** मेरा यह फ़र्ज़न्द सरदार है अल्लाह तआला इस के हाथ से दो बड़े गरोहों में सुलह करायेगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ, जिल्द दोम सफ़ा ७३२)

(३) हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत हसन इब्ने अली को अपने कन्धे पर उठाये हुए थे कि एक शख़्स ने कहा कि शहज़ादे तुम बहुत अच्छी सवारी पर सवार हो। तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **व नेमर्राकिबु हु व** और सवार भी कितना अच्छा है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ७३५)

(४) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लहु अन्हुमा से मरवी है कि मैंने ब–चश्मे ख़ुद देखा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में होते थे और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी गर्दन या पीठ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पर आकर बैठ जाते थे और जब तक वह खुद नहीं उतरते थे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको नहीं उतारते थे। मैंने यह भी मुशाहिदा किया है कि सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हालते रुकू में होते और हज़रत हसन तशरीफ़ लाते। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाहाए मुबारक के अन्दर से होकर दूसरी तरफ़ निकल जाते।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २७८)

(५) अबू–दाऊद तयालिसी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो मुझे दोस्त रखना चाहे वह पहले हसन को दोस्त रखे।

(सआदतुल–कौनैन सफ़ा २७)

(६) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक बार हुजूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत बतूल ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान पर तशरीफ़ ले गये और सैयदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। हज़रत ज़ोहरा बतूल ने भेजने में कुछ देर की तो मैंने समझा कि उन्हें हार पहनाती होंगी या नहला रही होंगी। इतने में इमाम हसन दौड़ते हुए हाज़िर हुए। गले में हार था। सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्ते अक़दस बढ़ाए। हुजूर को देखकर इमाम हसन ने भी हाथ फ़ैलाये यहां तक कि दोनों लिपट गये। हुजूर ने गले लगाकर दुआ की। इलाही! मैं इसे दोस्त रखता हूं, तू भी इसे दोस्त रख। और जो इसे दोस्त रखे उसे भी दोस्त रख। अपना दस्ते अक़दस हज़रत हसन के सीने पर रखा।

(फ़तावा रज़वीया, जिल्द दहम निस्फ़ अव्वल, सफ़ा : २६ बहवाला इब्ने माजा जिल्द अव्वल, सफ़ा : ७२)

हज़रत इमाम हसन के दीगर मनाक़िब रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के मनाक़िब बेहद व बेशुमार हैं। आप बड़े बुर्दबार, हलीमुत्तबा, इज़्ज़त व शान वाले, पुर–वक़ार, साहिबे जाह व हश्म थे। आप फ़ित्ना व फ़साद और ख़ूंरेज़ी को नापसन्द फ़रमाते थे। आप सख़ावत में बे–बदल थे। बसा औक़ात एक–एक शख़्स को एक–एक लाख दिर्हम अता फ़रमा देते थे। इब्ने–सअ्द अली बिन ज़ैद बिन जदआन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

से रिवायत करते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो मर्तबा अपना तमाम माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया और तीन बार निस्फ़–निस्फ़ माल राहे इलाही में दे दिया। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८०)

एक मर्तबा एक बुढ़िया ने हज़रात हसनैन की दावत की तो आपने उसे एक हज़ार दीनार और एक हज़ार बकरियां दे दीं। हज़रत हुसैन ने भी इसी क़द्र दिया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४६६)

हाकिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमर से रिवायत की है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने बग़ैर सवारी के पचीस हज पैदल अदा फ़रमाए। हालांकि आला क़िस्म के ऊँट आपके पास होते थे। लेकिन आप उन पर सवार नहीं होते और पा–प्यादा रास्ता तय फ़रमाते थे। जब लोगों ने आपसे इसके मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया : मुझे अपने रब से इस हाल में मिलते हुए शर्म महसूस होती है कि मैं उसके घर की तरफ़ पैदल न जाऊँ।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २७६–सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा : ४६८)

आप बहुत शीरीं कलाम थे। आपकी शीरीं कलामी का यह आलम था कि जब आप किसी से तकल्लुम (बातचीत) फ़रमाते तो सुनने वाले का जी चाहता कि बस आप इसी तरह सिलसिलए कलाम जारी रखें और ख़ामोश न हों। इसी तरह आप बड़े बुर्दबार और हलीमुत्तबा थे। आपकी बुर्दबारी और सब्र व तहम्मुल के बारे में इब्ने सअ्द उमर बिन इसहाक़ से रिवायत करते हैं कि मरवान जब हाकिम था तो वह मिम्बर पर अलल–एलान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा भला कहता था। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु (कमाले तहम्मुल के साथ) उसकी उनकी गुस्ताख़ियों को सुना करते थे और ख़ामोश रहा करते थे। एक मर्तबा मरवान ने आपके सामने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को गालियां देनी शुरू कर दीं। हज़रत हसन ख़ामोश रहे। इसी असना में मरवान ने अपने सीधे हाथ से नाक साफ़ की तो हज़रत हसन ने उससे फ़रमाया : अफ़सोस! तुझे इतना भी नहीं मालूम कि सीधा हाथ धोने के लिये और बायां हाथ बौल व बराज़ के लिये है। यह सुनकर मरवान ख़ामोश हो गया। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा, सफ़ा : २७६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इमाम हसन की ख़िलाफ़त से दस्तबर्दारी

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिदे गिरामी हज़रत सैयदना मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद छः माह तक ख़िलाफ़त के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। चालीस हज़ार अहालियाने कूफ़ा ने आपके दस्ते हक़–परस्त पर बैअ़त की। उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पास आये और अल्लाह तआला को हकम और फ़ैसला दहिन्दा तस्लीम करके मुन्दरजा ज़ैल शर्तों के साथ ख़िलाफ़त अमीर मुआविया के सुपुर्द फ़रमाने का अहद किया। (१) फ़िलवक़्त अमीर मुआविया ख़लीफ़ा बनाये जाते हैं लेकिन उनके इंतिक़ाल के बाद इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़तुल–मुसलिमीन होंगे। (२) मदीना, इराक़ और हिजाज़ के बाशिन्दों से कोई टैक्स नहीं लिया जायेगा। बल्कि सिर्फ़ वही टैक्स वसूल किया जायेगा जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने से लिया जा रहा है। (३) हज़रत इमाम हसन के ज़िम्मे जो क़र्ज़ है उसकी तमाम तर अदायगी हज़रत अमीर मुआविया करेंगे।

इन तमाम शर्तों को हज़रत अमीर मुआविया व हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कुबूल कर लिया। आपस में सुलह हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मोजिज़ा ज़ाहिर हो गया जो आपने फ़रमाया था कि "मेरा यह बेटा मुसलमानों की दो अज़ीम जमाअतों में सुलह करायेगा।"

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस सुलह के बाद तख़्ते ख़िलाफ़त हज़रत अमीरे मुआविया के सुपुर्द फ़रमा दिया। यह सुपुर्दगी माहे रबीउल–अव्वल सन् ४१ हिजरी मुताबिक़ ६२२ ई० में और बक़ौले बाज़ माहे रबीउस्सानी सन् ४१ हिजरी में हुई। (तारीखुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा २८१)

हज़रत इमाम हसन का ख़िलाफ़त से दस्तबर्दार होना आपके बाज़ अहबाब को सख़्त नागवार हुआ तो उन्होंने तरह–तरह की गुस्ताख़ियां आपके साथ कीं। यहां तक कि बाज़ ने आपको आरुल–मुसलिमीन कह कर पुकारा तो आपने उनसे फ़रमाया कि **अल-आरु ख़ैरुम्मिनन्नार** आर नार से बेहतर है। एक शख़्स ने आपको यह कह कर पुकारा : ऐ मुसलमानों को ज़लील करने वाले, अस्सलामु अलैकुम! उसपर आपने फ़रमाया : कि मैं मुसलमानों को ज़लील कराने वाला नहीं हूं। अलबत्ता मैंने यह पसंद नहीं किया कि मैं मुल्क के लिये जिदाल व क़िताल कराऊँ।

(तारीखुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़िलाफ़त से दस्तबर्दार होने के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा से मदीना तशरीफ़ ले गये। फिर वहीं क़याम–पज़ीर हो गये। हाकिम ने हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर की ज़ुबानी लिखा है कि मैंने इमाम हसन से एक रोज़ अर्ज़ किया कि लोग कहते हैं कि आप फिर ख़िलाफ़त के ख़्वास्तगार हैं। यह सुनकर आपने इरशाद फ़रमाया : जिस वक़्त अरबों के सर मेरे हाथ में थे (यानी उन लोगों ने मेरे हाथ पर मरने जीने की बैअ़त की थी) उस ज़माने में जिससे चाहता मैं उनको लड़ा देता और जिससे चाहता सुलह करा देता। लेकिन मैं ने सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के हुसूल के लिये ख़िलाफ़त से दस्तबर्दारी दे दी और उम्मते मुहम्मदी के ख़ून को मुफ़्त बहने नहीं दिया। पस जिस ख़िलाफ़त से महज़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के हुसूल के लिये दस्तबर्दार हो गया हूं अब मैं उसको बाशिन्दगाने हिजाज़ की ख़ुशनूदी के लिये दोबारा हासिल नहीं कर सकता।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८२)

इमाम हसन का ज़रिया-ए-मआ़श

ख़िलाफ़त से दस्तबर्दार होने के बाद हज़रत इमाम हसन कूफ़ा से मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ ले आये और अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवारे अक़दस में आख़िर तक मुक़ीम रहे। आप शुरू ही से बहुत सख़ी थे। ख़िलाफ़त से दस्तबर्दारी के बाद भी आपकी सख़ावत में किसी क़िस्म की कोई कमी नहीं हुई। आप हर साल एक लाख रुपया ख़ैरात करते थे। हज़रत अमीर मुआविया की जानिब से जो कुछ वज़ाइफ़ आपको मिलते थे उनमें से भी अकसर आप ख़ैरात व बख़्शिश फ़रमा दिया करते थे। बैहक़ी और इब्ने असाकिर ने हिशाम के वालिद के हवाले से ब्यान किया है कि एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत तंगदस्त हो गये। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हर साल उनको एक लाख दिरहम बतौरे वज़ीफ़ा दिया करते थे। वह उन्होंने रोक दिया तो आपको बहुत तंगी पेश आई। आपने हज़रत अमीर मुआविया की याद–दहानी के लिये अपनी हालत पर मबनी एक रुक़आ लिखना चाहा। क़लम दवात तलब किया। लेकिन फिर कुछ सोचकर अपने आपको रोक लिया। उसी रोज़ आपने अपने नाना जान हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ फ़र्ज़न्द!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

क्या हाल है? आपने अर्ज़ किया : नानाजान ख़ैरियत है लेकिन तंग दस्ती आ गई है। आपने इरशाद फ़रमाया : क्या तुमने क़लम दवात इसी गर्ज़ से मंगाई थी कि अपनी तंगदस्ती के लिये एक मख़लूक़ के पास कुछ लिखो। आपने अर्ज़ किया : हां, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यह दुआ पढ़ा करो।

अल्लाहुम्मक़्ज़िफ़ फ़ी क़लबी रजाअ क वक़्तअ् रिजाई अम्मन सिवाक हत्ता ला अरजू अ ह दन ग़ैरुक अल्लाहुम्म म वमा ज़उफ़त अन्हु क़ुव्वती व क़सु र अन्हु अ म ली वलम तन्त हि इलैहि र ग़ बती वलम तबलुग़हु मसअलती वलम यज़रि अला लिसानी मिम्मा आतै त अ ह दन मिनल अव्वलीन वल-आख़िरीन मिनल यक़ीनि फ़ख़ुस्सनी बिही या रब्बल-आलमीन। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे यह दुआ पढ़े एक हफ़्ता भी न गुज़रने पाया कि मुआविया ने मुझे पांच लाख दिरहम भेज दिये जिसपर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए कहा कि तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला ही के लिये हैं जो अपने याद करने वालों को कभी फ़रामोश नहीं फ़रमाता और अपने मांगने वालों को महरूम व ना–उम्मीद नहीं फ़रमाता। उसके बाद हज़रत इमाम हसन ने फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत फ़रमाई। इमाम हसन फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ने दरयाफ़्त फ़रमाया : हसन कैसे हो? मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं अच्छा हूं और पूरा वाक़िया ब्यान कर दिया तो आपने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटे! अल्लाह से उम्मीदवार होने और मख़लूक़ से इल्तिजा न करने का नतीजा यही होता है। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा : २८३)

नोटः- उम्मीद है कि जो परेशान हाल इस दुआ को पढ़ता रहेगा इन्शाअल्लाह उसकी परेशानी बहुत जल्द दूर होगी।

करामाते हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की बहुत–सी करामात हैं जिन में से चन्द ज़िक्र की जाती हैं –

हज़रत इमाम हसन एक मर्तबा पैदल हज करने तशरीफ़ ले गये तो आपके पांव में वर्म आ गया। आपके किसी गुलाम ने अर्ज़ की : काश! आप सवारी पर सवार हो जायें ताकि वर्म कम हो जाये। आपने उसकी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

दरख़्वास्त कुबूल न फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : जब तुम घर पहुंचोगे तो तुम्हें एक हब्शी मिलेगा जिसके पास कुछ तेल होगा। तुम उससे तेल ख़रीद लेना और झगड़ा मत करना। गुलाम ने कहा : मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान! हमने किसी जगह भी कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसके पास तेल हो। जब वह अपनी मन्ज़िल पर पहुंचे तो वह हब्शी दिखाई दिया। हज़रत इमाम हसन ने अपने गुलाम से फ़रमाया : यह है वह हब्शी जिसके मुतअल्लिक़ मैंने बताया था। जाओ उससे तेल ख़रीद लाओ और क़ीमत अदा कर आओ। जूं ही गुलाम उस हब्शी के पास गया और तेल तलब किया तो उसने कहा, तेल किसके लिये ख़रीद रहे हो? गुलाम ने कहा : हज़रत इमाम हसन के लिये। उसने कहा : मुझे उनके पास ले चलो, मैं उनका गुलाम हूं। जब वह हब्शी आपके पास पहुंचा तो कहा : मैं आपका गुलाम हूं तेल की क़ीमत नहीं लूंगा। आप बस मेरी बीवी के लिये, जो दर्दे ज़ेह में मुबतला है, दुआ फ़रमायें कि अल्लाह तआला उसे एक सहीहुल आज़ा बच्चा अता फ़रमाये। आपने फ़रमाया : अपने घर लौट जाओ। अल्लाह तआला तुम्हें ऐसा ही बेटा अता फ़रमाएगा जैसा तुम चाहते हो। वह हमारा पैरोकार होगा। हब्शी घर गया तो देखा कि आपके फ़रमान के मुताबिक़ बच्चा पैदा हो गया।

(शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : ३०२, मतबूआ मकतबा नब्वीया, लाहौर)

दूसरी बड़ी करामत आपकी यह है कि एक दिन आप हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के किसी बच्चे के साथ कहीं सफ़र पर थे कि एक ऐसे नख़लिस्तान में क़याम–पज़ीर हुए जो बिल्कुल ख़ुश्क था। और खजूरों के दरख़्त भी ख़ुश्क पड़े हुए थे। हज़रत हसन नख़लिस्तान के एक कोने में और इब्ने ज़ुबैर दूसरे कोने में आराम फ़रमा रहे थे कि इब्ने ज़ुबैर ने अर्ज़ किया : ऐ काश! इस नख़लिस्तान में ताज़ा खजूरें होतीं जिन्हें हम खाते। हज़रत इमाम हसन ने फ़रमाया : क्या ताज़ा खजूरें चाहते हो? इब्ने ज़ुबैर ने कहा : हां। आपने दुआ के लिये हाथ उठाया और ज़ेरे लब कुछ पढ़ा जो किसी को मालूम न हुआ। फ़ौरन खजूर का एक दरख़्त तर व ताज़ा और बार–आवर हो गया। इसमें ताज़ा खजूरें लग गईं। उनका साथी शुत्रबान बोला। ब–खुदा यह तो जादू है, हज़रत हसन ने फ़रमाया : यह जादू नहीं, बल्कि फ़र्ज़न्दे रसूल की दुआए मुस्तजाब का असर है। इसके बाद लोगों ने ख़ूब शिकम सैर होकर खाया। (शवाहिदुन्नुबुव्व : सफ़ा : ३०२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तीसरी करामत यह है कि किसी शख़्स ने आपकी क़ब्र शरीफ़ पर पाख़ाना कर दिया तो वह फ़ौरन दीवाना हो गया। कुत्ते की तरह भौंकता रहा। उसी हाल में बुरी तरह से मर गया। फिर उसकी क़ब्र से भी भौंकने की आवाज़ सुनाई देती थी। (सआदतुल–कौनैन सफ़ा : ३४)

हज़रत इमाम हसन और कसरते इज़दवाज

इब्ने–सअ़द ने हज़रत अली बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु औरतों को बहुत तलाक़ दिया करते थे। जो औरत आपके निकाह में आ जाती वह आपसे जुदाई हरगिज़ नहीं चाहती थी। आप पर फ़रेफ़्ता हो जाती थी। इस तरह आपने नव्वे (९०) शादियां कीं। जाफ़र बिन मुहम्मद के हवाले से लिखा है कि इमाम हसन निकाह करते और तलाक़ दे देते। आपकी इस रविश से हमें ख़ौफ़ पैदा हो गया कि अब क़बाइल में दुश्मनी हमेशा–हमेशा क़ाइम रहेगी। इब्ने–सअ़द ने जाफ़र बिन मुहम्मद के हवाले से और उन्होंने अपने वालिद की ज़ुबानी ब्यान किया है कि वह कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एलान फ़रमा दिया कि ऐ कूफ़ा वालो! हसन के साथ अपनी बेटी की शादी मत करो। वह तलाक़ देने के आदी हैं। यह सुनकर एक हमदानी ने कहा : खुदा की क़सम! हम उनसे अपनी बेटियां ज़रूर ब्याहेंगे जिसको वह पसंद फ़रमायें रखें और जो नापसंद हो उसको तलाक़ दे दें। लोगों की इस मुहब्बत और हज़रत इमाम हसन से अपनी बेटी की शादी करने की सबसे बड़ी वजह यह थी कि आप नवासए रसूल थे। इसीलिये लोग उसकी परवाह न करते थे, और अपनी बेटियां आपकी निकाह में दे दिया करते थे। (तारीखुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८०)

हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः इस सिलसिले में फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन औरतों से निकाह फ़रमाते और फिर उनको तलाक़ दे देते थे। फिर दूसरी औरतों के साथ निकाह करते थे, ऐसा बनीयते सवाब करते थे। जब हज़रत इमाम हसन से कसरते तज़व्वुज का सबब पूछा गया तो आपने फ़रमाया : मैं चाहता हूं कि बहुत–से लोगों को मेरी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिश्ता हो जाये। जो क़यामत के दिन उन्हें काम आये। (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा : २३७)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बीवियों से अच्छा सुलूक

जब तक जो भी औरत आपके हबालए अक़्द में रहती थी आप उससे बड़ी मुहब्बत और उसकी बड़ी क़द्र फ़रमाते थे। तलाक़ देने के बाद भी उनको उतना सब कुछ अता फ़रमाते थे कि वह बक़िया ज़िन्दगी इंतिहाई सुकून व इतमीनान से गुज़ारती थी। चुनांचे रिवायतों में आता है कि आप़ने एक मर्तबा फ़ुज़ारी और एक असदी औरत को रजई तलाक़ दी तो उनकी दिलदेही के लिये दस–दस हज़ार दिरहम और एक–एक मशकीज़ा शहद बतौरे मता दी।

जब फ़ुज़ारी औरत को यह रक़म मिली तो उसने शुक्रिया के साथ क़ुबूल कर ली। लेकिन जब असदी औरत को मिली तो यह तोहफ़ा देखकर बे–इख़्तियार हसरत भरा शे'र फ़रमाया : **मत़ा़ुन क़लीलुम मिन हबीबिम मुफ़ारिकुन** जुदा होने वाले दोस्त के मुक़ाबिले में यह मताएहक़ीर है।

(सआादतुल–कौनैन सफ़ा : ३६)

हज़रत इमाम हसन की शहादत और ज़हर-ख़ोरानी

इब्ने–सअ़द ने हज़रत इमरान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से ब्यान फ़रमाया है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़्वाब देखा कि उनकी दोनों आंखों के दरमियान **कुल हुअल्लाहु अहद** लिखा हुआ है। जिस वक़्त आपने यह ख़्वाब ब्यान किया तो अह्ल–बैत बहुत ख़ुश हुए। लेकिन जब हज़रत सईद बिन मुसैइब ने यह ख़्वाब सुना तो उन्होंने फ़रमाया कि अगर आपका यह ख़्वाब सच्चा है तो आपकी हयात के चन्द रोज़ बाक़ी रह गये हैं। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि उस ख़्वाब के देखने के बाद आप सिर्फ़ चन्द रोज़ बक़ैदे हयात रहे। फिर ज़हर देकर आप शहीद कर दिये गये।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८२)

ज़हर–ख़ोरानी की तफ़सील इस तरह ब्यान की जाती है कि सबसे पहले आपको शहद में ज़हर मिलाकर दिया गया। आप दर्दमन्दों के दारुशशिफ़ा अपने नानाजान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अक़दस पर हाज़िर हुए और अपने जिस्म अनवर को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वसल्लम की चौखट पाक के साथ मला तो आपको शिफ़ाए कुल्ली हासिल हो गई और आप सेहतयाब होकर अपने मकान पर तशरीफ़ ले आये।

(औराक़े ग़म सफ़ा २४४, रौज़तुशशुहदा सफ़ा : ४१७)

दूसरी बार आपको ज़हर–आलूद खुजूरें खिलाई गईं। अभी आपने सात खजूरें ही खाई थीं कि आपको सख़्त घबराहट पैदा होने लगी। आपने फ़ौरन खजूरों से हाथ खींच लिया और अपने भाई इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान पर तशरीफ़ ले गये। शिद्दते तकलीफ़ से रात भर तड़पते, कराहते रहे। सुबह हुई तो फिर अपने नानाजान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुए और दुआ फ़रमाई तो इस बार भी खुदाए तआला के फ़ज़्ल व करम और अपने नाना जान के तुफ़ैल ज़हर का असर ख़त्म हो गया। (रौज़तुश्शुहदा, जिल्द अव्वल सफ़ा : ४१७)

तीसरी बार, रात के अंधेरे में हीरे की कनी के साथ ज़हर मिलाकर आपकी सुराही में डाल दी गई। उस वक़्त आप आराम फ़रमा रहे थे कि अचानक उठे और अपनी हमशीरा हज़रत ज़ैनब को बुलाया और फ़रमाया : बहन! अभी जद्दे अमजद सरकारे मदीना को ख़्वाब में देखा है। उनकी ख़िदमत में अब्बाजान, अम्मी जान भी हाज़िर थे। लिहाज़ा पानी लाओ ताकि वुज़ू करूं। हज़रत ज़ैनब पानी लेने गयीं और आपने उस सुराही में से पानी नोश फ़रमा लिया। बस पानी पीते ही एक सर्द आह भरी और फ़रमाया : यह कैसा पानी है कि मेरे हलक़ से नाफ़ तक टुकड़े–टुकड़े हो गये हैं। फिर बहन से फ़रमाया कि जल्दी जाओ और भाई हुसैन को बुला लाओ। आपने फ़ौरन भाई को बुलवाया। आप भाई को देखकर आंबदीदा हो गये। बग़ल–गीर होकर खूब मिले। फ़रमाया : भाई जान! आप पर अल्लाह तआला की रहमत हो, अब क़यामत के दिन ही मुलाक़ात होगी।

(रौज़तुशशुहदा, जिल्द अव्वल सफ़ा : ४२३)

हज़रत इमाम हसन को ज़हर किसने दिया?

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को आपकी बीवी जादा बिन्ते अशअस ने ज़हर दिया था। किसी ने यज़ीद और किसी ने अमीर मुआविया के बारे में लिखा है। लेकिन यह महज़ क़्यास है जिसको सही मानने का कोई क़तई सबूत नहीं। अल्लाह व रसूल ही बेहतर जानते हैं कि यह नापाक हरकत किसने की है। लेकिन इस मामले में साहबे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़हर जिनको ज़हर दिया गया वह खुद फ़रमाते हैं कि मुझे जिसने ज़हर दिया है उसका मामला मुन्इमे हक़ीक़ी के सुपुर्द करता हूं। हज़रत इमाम हुसैन ने बा–इसरार पूछा कि भाईजान बताइए आपको ज़हर किसने दिया? मगर उस सब्र व तहम्मुल के ताजदार ने नाम नहीं बताया। फ़रमाया कि मैं जिसको इस फ़ेल का मुर्तकिब समझता हूं अगर वाक़ई वही इसका मुर्तक़िब है तो अल्लाह बेहतर बदला लेने वाला है और अगर वह मुर्तकिब नहीं तो मैं नहीं चाहता कि कोई बेक़सूर मारा जाये। इस सिलसिले में हम क़दरे तफ़सील के साथ एक मुहक़्क़िक़ाना मज़मून जो हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल अल्लामा मौलाना सैयद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलैहिर्रहमः का है, तहरीर कर रहे हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये :

आप लिखते हैं कि मुअर्रिख़ीन ने ज़हर–खोरानी की निसबत जादा बिन्ते अशअस बिन क़ैस की तरफ़ की है और उसको हज़रत इमाम की ज़ौजा बताया है। यह भी कहा है कि यह ज़हर–खोरानी ब–ईमाये यज़ीद हुई है। यज़ीद ने उससे निकाह का वादा किया था। इस तमा में आकर उसने हज़रत इमाम को ज़हर दिया। लेकिन इस रिवायत की कोई सही सनद दस्तियाब नहीं हुई। बग़ैर सनदे सही के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम किस तरह ज़ाइज़ हो सकता है? क़तये नज़र इस बात के, कि रिवायत के लिये कोई सनद नहीं है मुअर्रिख़ीन ने बग़ैर किसी मोतबर ज़रिया या मोतमिद हवाला के लिख दिया है।

यह ख़बर वाक़िआत के लिहाज़ से भी नाक़ाबिले इतमिनान मालूम होती है। वाक़िआत की तहक़ीक खुद वाक़िआत के ज़माने में जैसी हो सकती है, मुश्किल है कि बाद को वैसी तहक़ीक़ हो। ख़ास कर वाक़िआ जबकि इतना अहम हो – मगर हैरत है कि अह्ले–बैते अतहार के इस इमाम जलील का क़त्ल (और आपके) क़ातिल की ख़बर ग़ैर को तो क्या होती खुद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को पता नहीं है। यही तारीख़ें बताती हैं कि वह अपने बिरादरे मुअज़्ज़म से ज़हर–देहिन्दा का नाम दर्याफ़्त फ़रमाते हैं। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़हर देने वाले का इल्म न था। अब रही यह बात कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु किसी का नाम लेते। उन्होंने ऐसा नहीं किया तो अब जादा को क़ातिल होने के लिये मुअय्यन करने वाला कौन है? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को, या इमामैन के साहबज़ादों में से किसी साहब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

को अपनी आख़िर हयात तक जादा की ज़हर–खोरानी का कोई सबूत न पहुंचा और न उनमें से किसी ने उन पर शरई मवाख़ज़ा किया।

एक और पहलू इस वाक़िआ का ख़ास तौर पर क़ाबिले लिहाज़ है। वह यह कि हज़रत इमाम की बीवी को ग़ैर के साथ साज़–बाज़ करने की शनीअ् तोहमत के साथ मुत्तहिम किया जाता है। यह एक बदतरीन तबर्रा है। अजब नहीं कि इस हिकायत की बुनियाद ख़ारजियों के इफ़तराआत हों। जबकि सही और मोतबर ज़राए से यह मालूम है कि इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु कसीरुत्तज़ौवुज थे और आपने सौ के क़रीब निकाह किये और तलाकें दीं। लेकिन कभी किसी के साथ ज़्यादती नहीं की। तलाक़ के बाद भी वह अपनी बक़िया ज़िन्दगी हज़रत इमाम की मोहब्बत में गुज़ार देती थीं। ऐसी हालत में यह बात बहुत बईद है कि इमाम की बीवी हज़रत इमाम के फ़ैज़ की क़द्र न करे और यज़ीद पलीद की तरफ़ एक तमए फ़ासिद से इमामे जलील के क़त्ल जैसे सख़्त जुर्म का इर्तिकाब करे। **वल्लाहु आलम बिहक़ीक़तिल हाल।** (सवानेह करबला सफ़ा : ६६)

साहिबे तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा तहरीर फ़रमाते हैं – हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को यूं तो कई बार ज़हर दिया गया। लेकिन सन् ४९ हिजरी में ऐसा ज़हरे हालाहल दिया गया कि कलेजे के टुकड़े कट–कट कर गिरने लगे और यही आपके इंतिक़ाल का सबब बना। उस वक़्त आपके बिरादरे सग़ीर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पास थे। हज़रत इमाम हसन की घबराहट और बेक़रारी में ज़्यादा इज़ाफ़ा हो गया तो आपने फ़रमाया : ऐ बिरादरे मुअज़्ज़म! यह घबराहट कैसी? आप तो नानाजान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अपने बाबाजान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जा रहे हैं। अपनी जद्दह करीमा हज़रत ख़दीजतुल–कुब्रा और वालिदए मुहतरमह हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना से मुलाक़ात करेंगे। अपने चचा हज़रत हमज़ा और हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिलेंगे। अपने मामू हज़रत क़ासिम व हज़रत ताहिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से भी मुलाक़ात करेंगे। यह सुनकर हज़रत इमाम हसन ने फ़रमाया : ऐ बिरादरे अज़ीज़ ! मैं ऐसी जगह जा रहा हूं जहां अब से पहले कभी नहीं गया था। मैं ऐसी मख़लूक़ को देख रहा हूं जिसे मैं ने पहले कभी नहीं देखा था। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८४)

इसके साथ ही आपने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पेश आने वाले वाकिआत और कूफ़ियों की बद–सुलूकी व ईज़ा रसानी का भी तज़किरा फ़रमाया। इरशाद फ़रमाया कि मैंने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि वह मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहलू में दफ़न की इजाज़त दे दें। चुनांचे उन्होंने मुझे इजाज़त दे दी है। लेकिन मेरी वफ़ात के बाद तुम फ़िर दोबारा वहां दफ़न करने की इजाज़त हासिल कर लेना। मैं गुमान करता हूं कि बनू–उमैया ऐसा करने न देंगें। अगर वह लोग मज़ाहिम हुए तो तुम ज़्यादा इसरार मत करना। चुनांचे जब हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का सन् ४६ हिजरी पांचवी रबीउल–अव्वल को ४५ साल छः माह चन्द रोज़ की उम्र में मदीना मनव्वरा में इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इमाम हसन की वसीयत के मुताबिक़ हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से इजाज़त चाही। तो आपने फ़रमाया : इजाज़त है। मगर मरवान (हाकिमे मदीना) माने हुआ। जिसपर हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों ने हथियार संभाल लिए। मगर हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इमाम हुसैन को अपने भाई की वसीयत याद दिलाकर वापस किया। यह फ़र्ज़न्द अर्जमन्द जिगर गोशए बतूल अपनी वालिदए मुहतरमा ख़ातूने जन्नत हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहलू में जन्नतुल–बक़ी में दफ़न किये गये।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा : २८४)

आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई।

❖❖❖
❖❖
❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल

सहाबिए रसूल व कातिबे वहय

हज़रत

अमीर मुआविया

रज़ियल्लाहु अन्हु

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन अल्फ़ाज़ में आपके लिये दुआ फ़रमाई है :

अल्लाहुम्मजअलहु हादियम महदीयों वहदे बिही

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जिल्द दोम, सफ़ा : ८१३)

ऐ अल्लाह ! (मुआविया को) हिदायत देने वाला, हिदायत याफ़्ता बना और उसके ज़रिए से हिदायत दे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

नाम व नसब : हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे और बहुत ही मशहूर व मारूफ़ सहाबी हैं। अव्वल मुलूक यानी बादशाह हैं। उनकी विलादत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ुहूरे नुबुव्वत से आठ साल पहले मक्का में हुई। आपको भी यह शर्फ़ हासिल है कि आपके वालिदैन भी दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गये थे।

आपका नाम मुआविया और कुन्नीयत अबू–अब्दुर्रहमान है। आपके वालिद का नाम अबू–सुफ़ियान और वालिदा का नाम हिन्दा है। बाप की तरफ़ से आपका सिलसिलए नसब यह है। मुआविया बिन अबू–सुफ़ियान सख़र बिन हर्ब बिन उमैया बिन अब्द–शम्स बिन मनाफ़ बिन कुसय अल–उमवी। माँ की तरफ से नसब यूं है : मुआविया बिन हिन्दा बिन्ते उतबा बिन रबीआ बिन अब्द–शम्स बिन अब्दे मनाफ़। अब्दे–मनाफ़ हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चौथे दादा हैं। क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए नसब यह है – मुहम्मद रसूलुल्लाह इब्ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल–मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे–मनाफ़। खुलासा यह हुआ कि अमीर मुआविया वालिद की तरफ़ से पांचवे पुश्त में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब में शामिल हो जाते हैं। इस लिहाज़ से आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीबी रिश्तादार में से हुए। दूसरे रिश्ता में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी साले भी होते हैं क्योंकि उम्मुल–मोमिनीन हज़रत उम्मे–हबीबा बिन्त अबू–सुफ़ियान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजए मुतहहरा हैं। वह हज़रत अमीर मुआविया की हक़ीक़ी बहन हैं। इसीलिए मौलाना रूम ने आपको मसनवी शरीफ़ में तमाम मोमिनों का मामूं तहरीर किया है। वह इसी लिहाज़ से है।

('हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा : ३४, तारीखुल- खुलफ़ा सफ़ा : २८७)

हज़रत अमीर मुआविया का क़ुबूले इस्लाम

हज़रत अमीर मुआविया ने कब इस्लाम कुबूल किया इसके बारे में मुफ़्तीए आज़म हिन्द व पाक अल्लामा अहमद यार खां साहब नईमी अलैहिर्रहमः तहरीर फ़रमाते हैं कि सही यह है कि अमीर मुआविया ख़ास

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सुलह हुदैबिया के दिन सन् ७ हिजरी में इस्लाम लाये। मगर मक्का वालों के ख़ौफ़ से अपना इस्लाम छुपाए रखा। फिर फ़त्हे मक्का के दिन अपना इस्लाम ज़ाहिर फ़रमाया। जिन लोगों ने कहा कि वह फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाये वह ज़ुहूरे ईमान के लिहाज़ से है।

('हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा : ३१)

ईमान लाने के बाद ग़ज़वए हुनैन में हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमराह शरीक हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको सौ ऊँट और चालीस औक़िया सोना मर्हमत फ़रमाया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कातिबीन में भी आपका शुमार होता है। बाज़ हज़रात इसके भी क़ायल हैं कि आप कातिबे वह्य इलाही भी थे।

एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वुज़ू कराया तो आपने फ़रमाया : ऐ मुआविया! अगर तुम हुकूमत को पाओ तो अल्लाह से डरना और इन्साफ़ करना। हज़रत मुआविया कहते हैं कि इससे मुझे यक़ीनं कामिल हो गया कि मुझे हुकूमत मिलेगी।

आपके कारनामों का आग़ाज़ अह्दे सिद्दीक़ी से ही शुरू हो चुका था। सन् १६ हिजरी में हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनके भाई यज़ीद बिन उसमान के विसाल के बाद शाम का हाकिम बनाया। हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ज़माने में उनको पूरे शाम का हाकिम बना दिया। उस उहदे पर बीस साल तक फ़ाइज़ रहे। फिर अहदे मुर्तज़वी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ूने उसमान के बदले का मुतालबा किया और नौबत जंग तक पहुंच गई। फ़िर हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मसालिहत हो गई। इमाम हसन ने छः माह ख़िलाफ़ते राशिदा फ़रमाकर ख़िलाफ़त अमीर मुआविया के सुपुर्द फ़रमा दी। इसके बाद आप तमाम ममलिकते इस्लामिया के अमीर हो गये और चालीस साल तक हुकूमत फ़रमाई। पूरी मुद्दते हाकिमीयत में आपने नुमायां कारनामा अन्जाम दिया है। आपके दौर में शाम के तमाम सरहदी इलाक़े फ़तह हो गये थे। आप ही ने सबसे पहले हज़रत उसमान ग़नी की इजाज़त से बहरी बेड़ा क़ाइम किया। रोमियों के हमले का मुंह तोड़ जवाब दिया। अस्करी अवाइल में कहते हैं कि इस्लाम में क़ासिद व पयाम्बर सब से पहले आप ही ने मुक़र्रर फ़रमाये। अपनी ख़िदमत के लिये ख़्वाजासरा रखने वाले सबसे अव्वल आप ही हैं। सबसे अव्वल रिआया आप ही से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नाराज़ हुई। (इससे क़बल किसी ख़लीफ़ा से रिआया नाराज़ नहीं हुई) अशजई कहते हैं कि अव्वल आप ही वह शख़्स हैं जिसने ख़ुत्बा बैठ कर दिया। ईद में अज़ान देना भी आप ही की ईजाद है। सबसे पहले आप ही को इस तरह सलाम किया गया **अस्सलामु अलै क या अमीरुल-मोमिनीन व रहमतुल्लाहि व ब र कातुहुस्सलातु यरहमुकल्लाह।** दफ़्तरी कामकाज के लिये आप ही ने सबसे अव्वल मुहर ईजाद की। मुहर–बर्दारी के लिये अब्दुल्लाह बिन औस ग़स्सानी को मामूर किया। उस मुहर पर **लिकुल्लि अ म लिन सवाबुन** कुन्दा था। जामे मस्जिद में सबसे पहले आप ही ने छोटा–सा हुज्रा बनवाया। आप ही ने अव्वलन ग़िलाफ़े काबा उतार कर दूसरा ग़िलाफ़ चढ़ाने का हुक्म दिया। वरना इससे क़बल एक ग़िलाफ़ पर दूसरा ग़िलाफ़ (तह–बतह) चढ़ा दिए जाते थे। बैअ़त से पहले क़सम लेने का तरीक़ा भी हज़रत अमीर मुआविया ही ने जारी फ़रमाया।

(तारीख़ुल– ख़ुलफ़ा, सफ़ा : ६५)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु दराज़ क़द, ख़ूबरू और वजीह शख़्स थे। अमीरुल–मोमिनीन हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आपको देख कर फ़रमाया करते थे कि यह अरब के किसरा हैं। हज़रत सैयदना मौला अली मुश्किल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि आपने फ़रमाया कि मुआविया को बुरा न कहो। जब यह तुम्हारे अन्दर से उठ जायेंगे (यानी उनकी वफ़ात हो जायेगी) तो तुम देखोगे बहुत से सर तन से जुदा किये जायेंगे। (यानी जिदाल व क़िताल होगा)। मक़बरी कहते हैं कि लोगों पर हैरत है कि वह किसरा (शाहे फ़ारस) और हिरक़ल (शाहे रोम) का तो ज़िक्र करते हैं मगर हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को भूल जाते हैं।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा, सफ़ा : २८८)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु निहायत नेक दिल, सख़ी, बहुत हलीम व करीम थे। उनकी सख़ावत हर एक पर बिला इम्तियाज़ मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब पर यकसां होती थी। बिल–ख़ुसूस अह्ले–बैते अतहार को हमेशा ख़ुश रखना चाहते थे। क्योंकि वह जानते थे कि ख़िलाफ़त उन्हीं का हक़ है और उन्हीं के ख़ानदान के बाइस मुझे यह इज़्ज़त व इकराम हासिल हुआ है। चुनांचे एक बार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लिए तशरीफ़ लाये तो हज़रत अमीर मुआविया ने उन्हें अपनी जगह बिठाया। ख़ुद सामने हाथ बांधकर खड़े हो गये। किसी ने पूछा कि ऐ अमीरुल–मोमिनीन! आप ऐसा क्यों करते हैं? तो आपने फ़रमाया: इमाम हसन हम–शक्ले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इस मुशाबहत का एहतराम करता हूं। इसके बाद इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: आज मैं आपको ऐसा नज़राना देता हूं कि इससे पहले किसी ने ऐसा नज़राना नहीं दिया और न आइन्दा आपके बाद किसी दूसरे को ऐसा नज़राना दूंगा। चुनांचे आप ने चार लाख दिरहम हज़रत इमाम हसन की बारगाह में पेश किया जिन्हें आपने कुबूल फ़रमाया।

(**'हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र'** सफ़ा ४८)

हज़रत अमीर मुआविया भी ख़ुलफ़ाए राशिदीन की तरह उम्महातुल मोमिनीन की ख़िदमत अपने लिये बाइसे सआदत और इफ़्तिख़ार समझते थे। चुनांचे एक दफ़ा आपने उम्मुल–मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक लाख अशरफ़ी की क़ीमत का ज़ेवर नज़र फ़रमाया। हज़रात हसनैन करीमैन के लिये चालीस हज़ार अशरफ़ियां पेश कीं।

(**'तारीखुल-इस्लाम'**, शौक़ अमतसरी जिल्द सोम सफ़ा: ५२७)

अल्लामा मुहम्मद बिन महमूद आमली अपनी किताब 'नफ़ाइसुल–फुनून' में किताबुन्नाहिया के हवाले से लिखते हैं कि एक बार हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाज़िरीने मजलिस से फ़रमाया कि जो कोई हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शान में क़सीदा पढ़े तो मैं उसे फ़ी शेर एक हज़ार दीनार दूंगा। चुनांचे हाज़िरीन शोअ़रा ने हज़रत अली के शान में अशआर पढ़े और ख़ूब इनाम लिए। हज़रत अमीर मुआविया हर शे'र पर फ़रमाते थे कि अली इससे भी अफ़ज़ल हैं। यहां तक कि एक शाइर उमरू बिन आस का एक शे'र आपको इस क़दर पसंद आया कि उसी शे'र पर उसको सात हज़ार दीनार दे दिया।

('हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा: ४६)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से एक सौ तिरसठ अहादीस मरवी हैं। आप बड़े आबिद व ज़ाहिद थे। आपकी इबादत के मुतअल्लिक मशहूर है कि एक बार आप रात के वक़्त अपने महल में सो रहे थे कि अचानक एक आदमी ने आपको जगाया। आपने उससे पूछा तू कौन है और इस महल में कैसे पहुंच गया? वह बोला कि मैं इबलीस हूं। आप ने फ़रमाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि तेरा काम नमाज़ के लिए जगाना नहीं है। जब उसे डराया धमकाया तो उसने कहा कि इससे पहले एक दफ़ा मैंने आपको नमाज़े फ़ज्र के वक़्त सुला दिया था जिससे आपकी नमाज़ क़ज़ा हो गई थी। आप उसके ग़म में इतना रोये थे कि मैंने फ़रिशतों को आपस में कलाम करते सुना कि अमीर मुआविया को इस रंज व ग़म की वजह से पांच सौ नमाज़ों का सवाब दिया गया। मैंने ख़्याल कि अगर आज फिर आप नमाज़े फ़ज्र न पढ़ सके तो आज आप फिर रोयेंगे और ऐसा न हो कि एक हज़ार नमाज़ों का सवाब हासिल करलें। इसलिए आपको जगा दिया कि एक ही नमाज़ का सवाब हासिल करें।

इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि अमीर मुआविया बहुत आबिद व ज़ाहिद और मक़बूले बारगाहे इलाही थे। इबलीस जैसा ख़ब्बीस जो किसी के क़ब्ज़े में न आए वह आपके क़ब्ज़ा व गिरफ़्त से न छूट सका। यह सब निगाहे जमाले मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की देन है कि जो निगाह सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख ले उनकी नज़रों से कौन–सी चीज़ छुप सकती है।

('हज़रत मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा : ५३)

फ़ज़ाइल हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु जलीलुल–क़द्र सहाबी और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीबी रिशतेदार भी हैं। लिहाज़ा सहाबए किराम से मुतअल्लिक़ जिस क़दर फ़ज़ाइल व मरातिब अल्लाह तआला ने अपने मुक़द्दस क़लाम पाक में ब्यान फ़रमाए हैं उन सब में हज़रत अमीर मुआविया भी दाख़िल हैं। इसलिये उनसे बुग़्ज़, कीना व हसद रखना सख़्त क़िस्म की महरूमी और ईमान की कमी का बाइस है।

आपके फ़ज़ाइल व मनाक़िब तो कसरत से हैं लेकिन हम उनमें से चन्द यहां ज़िक्र कर रहे हैं :

(१) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू–उमैरा (सहाबिए रसूल) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अमीर मुआविया के लिए फ़रमाया : **अल्लाहुम्मजअलहु हादियम्महदीयौं वहदे बिही।** ऐ अल्लाह! मुआविया को हिदायत देने वाला हिदायत–याफ़्ता बना और उनसे हिदायत दे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७५५)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(२) हज़रत इरबाज़ इब्ने सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **अल्लाहुम्म म अल्लिमिल मुआवियतलकिता ब वल-हिसा ब वक़िहिल अज़ाब** ऐ अल्लाह ! मुआविया को किताब (कुरआन) और हिसाब का इल्म अता फ़रमा और उन्हें अज़ाब से बचा।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र सफ़ा/४१/नुज़हतुल कारी शरह सहीहुल–बुख़ारी जिल्द १ सफ़ा/३६७)

(३) हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी नसीमुर्रियाज़ शरह शिफ़ाए क़ाज़ी अयाज़ में फ़रमाते हैं : **व मैंयकूनु युतइनु फ़ी मुआविय त फ़ज़ा क मिन किलाबिल हादियः।** जो शख़्स हज़रत अमीर मुआविया पर तान करे वह जहन्नमी कुत्तें में से एक कुत्ता है।

(**'अहकामे शरीअत'** जिल्द अव्वल सफ़ा/५५)

(४) हाफ़िज़ हारिस इब्ने उसामा ने बहुत तवील हदीस रिवायत फ़रमाई है। उसमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन और दीगर सहाबा के फ़ज़ाइल हैं। उसमें यह भी है कि **व मुआवियतबनि अबी सुफ़ियान अहलमु उम्मती व अजवदुहा** मुआविया मेरी उम्मत के बड़े हिल्म और सख़ावत वाले हैं।

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र सफ़ा/४१ बहवालए तत्हीरुल जनान)

(५) बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से किसी शख़्स ने कहा कि आप हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या फ़रमाते हैं ? तो आपने फ़रमाया कि वह फ़क़ीह हैं। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/४१८)

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की अलालत और आख़िरी ख़ुतबा

सन् ६० हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मर्जुल–मौत में मुब्तला हुए। अरसा से आपके क़ुवा मुज़महिल हो चुके थे और ताक़ते जिसमानी भी जवाब दे चुकी थी। अपनी मौत से कुछ दिनों पहले उन्होंने हस्बे ज़ैल ख़ुतबा दिया जिसके चन्द जुमले हस्बे ज़ैल थे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लोगो! मैं उस खेती की तरह हूं जो कटने के लिये तैयार हो। मैंने तुम लोगों पर तवील मुद्दत तक हुकूमत की कि मैं भी उससे थक गया और ग़ालिबन तुम लोग भी थक गये होगे। अब मुझे तुमसे जुदा होने की तमन्ना है और ग़ालिबन तुमको भी यही आरज़ू होगी। मेरे बाद आने वाला मुझसे बेहतर न होगा। किसी का मकूला है कि जो शख़्स ख़ुदा से मिलने की तमन्ना करता है ख़ुदा भी उससे मिलने का मुतमन्नी रहता है। इसलिये ख़ुदाया ! अब मुझको तुझसे मिलने की आरज़ू है। इसलिये तू भी मुझे अपनी हाज़िरी का शर्फ़ अता फ़रमा और उस मुलाक़ात में बर्कत अता फ़रमा। इस ख़ुतबा को अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था कि आप सख़्त बीमार हुए और मर्ज़ में रोज़–बरोज़ ज़्यादती पैदा होने लगी। वक़्ते आख़िर आ चुका था। इसलिये इलाज व मुआलजा से भी कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता था तो अपने घर वालों से फ़रमाया : कि मेरे आंखों में सुरमा लगा दो। सर में तेल डाल दो। लोगों से कह दो कि आएं और खड़े–खड़े सलाम करके चले जाएं। चुनांचे लोगों ने ऐसा ही किया और आप तकिये से टेक लगाकर आराम से बैठे रहे।

(तारीख़ इब्ने–ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा : ६४ तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा : १५३)

हज़रत अमीर मुआविया की यज़ीद को वसीयत

हज़रत अल्लामा अबू–इस्हाक़ अपनी किताब **'नूरुलऐन फ़ी मशहदिल हुसैन'** में तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो यज़ीद ने पूछा कि अब्बाजान! आपके बाद ख़लीफ़ा कौन होगा? तो आपने फ़रमाया : ख़लीफ़ा तो तू ही बनेगा मगर जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुन। कोई काम हज़रत इमाम हुसैन के मशवरे के बग़ैर मत करना। उन्हें खिलाये बग़ैर न खाना। उन्हें पिलाये बग़ैर न पीना। सबसे पहले उन पर ख़र्च करना फ़िर किसी और पर। पहले उन्हें पहनाना फ़िर ख़ुद पहनना। मैं तुझे इमाम हुसैन, उनके घर वाले और उनके कुम्बे और बल्कि सारे बनी हाशिम के लिये अच्छे सुलूक की वसीयत करता हूं। ऐ बेटे ! ख़िलाफ़त में हमारा हक़ नहीं है। वह इमाम हुसैन, उनके वालिद (हज़रत अली) और उनके अह्ले–बैत का हक़ है। तू चन्द रोज़ ख़लीफ़ा रहना। फ़िर जब हज़रत इमाम हुसैन पूरे कमाल को पहुंच जायें तो फ़िर वही ख़लीफ़ा होंगे या जिसे वह चाहें। ताकि ख़िलाफ़त

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपनी जगह पहुंच जाये। हम सब इमाम हुसैन और उनके नानाजान के गुलाम हैं। उन्हें नाराज़ न करना। वरना तुझ पर अल्लाह व रसूल नाराज़ होंगे तो फिर तेरी शफ़ाअत कौन करेगा ?

('हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा/६८)

तारीखे तबरी व तारीखे इब्ने–ख़लदून में है कि हज़रत अमीर मुआविया ने अपने बेटे को इन अलफ़ाज़ में वसीयत फ़रमाई कि जाने पिदर! मैंने तुम्हारे रास्ते में तमाम कांटे हटाकर तुम्हारे लिये रास्ता साफ़ कर दिया है और दुशमनों को ज़ेर करके सारे अरब की गर्दनें झुका दी हैं और तुम्हारे लिये इतना माल जमा कर दिया है कि इससे पहले किसी ने जमा न किया होगा। मुझे अब इस बात का अन्देशा नहीं कि अम्रे ख़िलाफ़त में कोई तुमसे निज़ा करेगा। हां ! अलबत्ता कुरैश में से चार शख़्स ऐसे हैं जो तुम्हारी मुख़ालिफ़त कर सकते हैं। उनमें हज़रत हुसैन इब्ने अली, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर और अब्दुर्रहमान बिन अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। लेकिन अब्दुल्लाह इब्ने–उमर से कोई ख़तरा नहीं। उन्हें इबादत व रियाज़त के अलावा और किसी चीज़ से वास्ता नहीं है। जब सब बैअ़त कर लेंगे तो वह भी बैअ़त कर लेंगे। हुसैन इब्ने अली को इराक़ के लोग जब तक ख़ुरूज पर आमादा न कर लेंगे हरगिज़ न छोड़ेंगे। अगर यह तुम पर ख़ुरूज करें और तुमको उन पर क़ामयाबी हासिल हो तो दरगुज़र करना। उनका बहुत बड़ा हक़ है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यह नवासे हैं और सीधी सादी तबीयत के मालिक हैं। इब्ने अबी–बक्र की अपनी कोई ज़ाती राय नहीं होती, उनके दोस्त व अहबाब जैसा करेंगे वह भी वैसा ही करेंगे। हां, जो शख़्स तुम पर शेर की तरह हमला करेगा और मिस्ल लोमड़ी मक्र व फ़रेब के साथ पेश आयेगा वह अब्दुल्लाह इब्ने–ज़ुबैर हैं। पस अगर वह ऐसा करें और तुमको उन पर ग़ल्बा हासिल हो जाये तो उनके टुकड़े–टुकड़े कर डालना।

(तारीखे तबरी जिल्द दोम सफ़ा/१५१ तारीख़ इब्ने-ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ६५)

वफ़ात हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बइख़्तिलाफ़े रिवायात ४ या १५ रज्जबुल मुरज्जब सन् ६० हिजरी में लक़वा की बीमारी से वफ़ात पायी। दमिश्क़ में बाबे जाबिया और बाबे सग़ीर के दरमियान आपको दफ़न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

किया गया। सही रिवायत के मुताबिक उस वक़्त आपकी उम्र ७८ साल थी।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मर्ज़े वफ़ात में बार–बार फ़रमाते थे कि काश! मैं कुरैश का मामूली इंसान होता जो ज़ी–तवा गांव में रहता और उन झगड़ों में न पड़ता जिनमें पड़ गया। बवक़्ते वफ़ात आपने यह भी वसीयत फ़रमाई थी कि मेरे पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लुंगी शरीफ़, हुज़ूर की चादरे मुबारक, कुर्ता मुबारक और आपके कुछ बाल शरीफ़ और नाख़ूने मुबारक हैं। मुझे हुज़ूर की कमीज़ में कफ़न देना। हुज़ूर की चादर में लपेटना, हुज़ूर का तहबन्द (लुंगी) मुझे बांध देना और हुज़ूर के मूए मुबारक और नाख़ून शरीफ़ मेरे आंखों और मुंह के अन्दर रख देना। फिर मुझे अरहमुर्राहिमीन के सुपुर्द कर देना। आपकी नमाज़े जनाज़ा ज़हहाक बिन कैस ने पढ़ाई।

('हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा ३७),
सियरुस्सहाबा सफ़ा/५४ मौलाना मुईनुद्दीन नदवी)
(तारीखे तबरी जिल्द पन्जुम सफ़ा/१५३)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल

हज़रत सैयदना

इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु अन्हु

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे आली है :

हुसैनु मिन्नी व अना मिन हुसैनिन अहब्बल्लाहु मन अहब्ब ब हुसैनन. हुसैनुन सबतुम मिनल असबाते

('सुनने तिर्मिज़ी' जिल्द दोम। सफ़ा/७३३')

हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूं।
अल्लाह उससे मुहब्बत करे जो हुसैन से मुहब्बत करे।
हुसैन नवासा है नवासों में से।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrililibrary.com

मनक़बत
दर शाने इमाम हुसैन
रज़ियल्लाहु अन्हु

टूटे हुए दिलों का सहारा हुसैन है
डूबे न जो फ़लक पे वह तारा हुसैन है

अह्ले ख़िरद समझ न सके क्या हुसैन है
नाना के जिस्मे पाक का साया हुसैन है

ईमान और कुफ़्र में निस्बत कोई नहीं
दुनिया है रात और सवेरा हुसैन है

यह भी तुम्हें ख़्याल न आया यज़ीदियो
सरकारे दो जहां का नवासा हुसैन है

होकर शहीद, ज़िन्दगीए जाविदां मिली
ज़िन्दा था और आज भी ज़िन्दा हुसैन है

बैअ्त न की क़ुबूल, मगर सर कटा दिया
ऐसा जहां में कौन है जैसा हुसैन है

जन्नत का फूल सैयदे कौनैन के लिए
और फ़ातिमा की आंख का तारा हुसैन है

बज़्मे रसूले पाक में देखा है राज़ ने
सरकार हैं चिराग़, उजाला हुसैन हैं

राज़ इलाहाबादी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सैयदुश्शुहदा

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

जुबां पर बारे इलाहा यह किस का नाम आया
कि मेरी नुत्क़ ने बोसे मेरी ज़ुबां के लिए

नाम व नसब : आपका इस्मे गिरामी हुसैन और कुन्नीयत अबु–अब्दुल्लाह है। सैयद शबाबे अहलिल जन्नः और रैहानतुन्नबी लक़ब है। वालिदे गिरामी दामादे रसूल हज़रत सैयदना मौला अली मुशकिल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु और वालिदा मुहतरमा जिगर गोशए रसूल, ख़ातूने जन्नत हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। नाना जान सैयदुल–अम्बिया वल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और नानी जान हज़रत सैयदतना ख़दीजतुल–कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। आपका शजरए नसब यह है : हुसैन बिन अली बिन अबी–तालिब बिन हाशिम बिन अब्द–मनाफ़ क़रशी हाशिमी व मुत्तलबी।

विलादत बा-सआदत : सैयदुश्शुहदा हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरे इमाम और अबुल–अइम्मा हैं। आपकी विलादत के मुतअल्लिक़ मिशकात शरीफ़ में तहरीर है कि हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चची जान हज़रत उम्मुल–फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आज रात मैंने एक ख़तरनाक ख़्वाब देखा है। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या है? बोलीं। हुज़ूर, बहुत ख़तरनाक है। हुज़ूर ने फ़रमाया : वह क्या है? बोलीं : मैंने देखा है कि आपके जिस्म पाक का एक टुकड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तुमने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा है। इन्शाअल्लाह फ़ातिमा को एक लड़का पैदा होगा और वह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा। हज़रत उम्मुल–फ़ज़्ल कहती हैं कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत फ़ातिमा के यहां हुसैन पैदा हुए तो मेरी गोद में दिए गए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था।

(मिशकात शरीफ़, सफ़ा : ४८६)

हज़रत उम्मुल–फ़ज़ल के ख़्वाब की ताबीर ५ शाबानुल मुअज़्ज़म सन् ४ हिजरी में बमक़ाम मदीना मनव्वरह ज़ाहिर हुई। इसी तारीख़ को हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की विलादत बा–सआदत हुई, जो आलमे ग़ैब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म अतहर के एक टुकड़े हैं।

हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन की विलादत बा–सआदत की ख़बर सुनी तो फ़ौरन काशानए ख़ातूने जन्नत पर तशरीफ़ लाए। फ़रमाया : मेरे लख़्ते जिगर को दिखाओ। अस्मा बिन्ते उमैस ने नन्हें इमाम हुसैन को एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर हुज़ूर की आग़ोशे रहमत में पेश कर दिया। आपने प्यारे हुसैन के दायें कान में अज़ान दी और बायें कान में इक़ामत पढ़कर इमाम हुसैन के मुंह में अपना लुआबे दहन डाला और दुआएँ फ़रमाई। फ़िर बहुक्मे इलाही आपका नाम हुसैन रखा। सातवें दिन अक़ीक़ा करके बच्चा के बालों के हमवज़न चांदी ख़ैरात करने का हुक्म दिया। आपके अक़ीक़ा में दो मेंढे ज़बह किए गए। एक रिवायत में एक ही मेंढे के बारे में तहरीर है।

('बहारे शरीअत' हिस्सा पांज़दहम सफ़ा १५२)

शक्ल व शबाहत : आप निहायत हसीन व ख़ूबसूरत थे। आपकी शक्ल व सूरत के मुतअल्लिक़ हज़रत सैयदतना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा व हज़रत सैयदना अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायतों से पता चलता है कि आप सीने से क़दम तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थे। शवाहिदुन्नुबुव्वः में आपके हुस्न व जमाल का तज़किरा इन अल्फ़ाज़ में किया गया है कि जब आप अंधेरे में बैठते तो आपकी पेशानी मुबारक और रुख़्सारों से रौशनी निकल कर कुर्ब व जवार को मनव्वर कर देती थी।

(शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा : ३०३)

इबादत व रियाज़त : आप बड़े आबिद व **ज़ाहिद व तहज्जुद–गुज़ार** थे। पूरा–पूरा दिन और सारी–सारी रात नमाज़ें **पढ़ने और तिलावते** क़ुरआने हकीम में गुज़ार दिया करते थे। ज़िक्रे ख़ुदावन्दी का **यह शौक़** करबला की तप्ती हुई ज़मीन पर तीन दिन के भूखे–प्यासे रह कर भी न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

छूटा। शहादत की हालत में भी दो रकअत नमाज़ अदा करके बारगाहे खुदावन्दी में अपना आख़िरी नज़राना पेश फ़रमा दिया।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अहदे नब्वी में : हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हसन की तरह हज़रत इमाम हुसैन से भी बहुत ज़्यादा प्यार व मोहब्बत फ़रमाते थे। उनकी मामूली से मामूली तकलीफ़ से भी आप बेक़रार हो जाया करते थे। उनको देखे बग़ैर आपको सुकून न आता था। रोज़ाना आप उनको देखने के लिये हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले जाते थे। एक रोज़ का वाक़िआ है कि हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफ़र में थे। एक मक़ाम पर हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के रोने की आवाज़ आई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से वजह दरयाफ़्त फ़रमाया। सैयदतना ने अर्ज़ किया कि प्यास से रो रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निदा फ़रमाई कि किसी के पास पानी है? मगर किसी के पास एक क़तरा पानी न था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि एक साहबज़ादे को मुझे दे दो। उन्होंने परदे के नीचे से दे दिया। आपने उनको लेकर सीने से लगाया। वह उस वक़्त बहुत रो रहे थे और किसी तरह ख़ामोश न होते थे। आपने अपनी ज़ुबाने मुबारक उनके मुंह में डाल दी। वह चूसने लगे यहां तक कि उनको तस्कीन हो गई। उसके बाद वह नहीं रोये। लेकिन दूसरे साहबज़ादे बदस्तूर रो रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उसको भी मुझे दे दो। उन्होंने दे दिया। तो आपने उनके भी मुंह में अपनी ज़ुबाने मुबारक डाल दी। वह चूसने लगे और तस्कीन पाकर ख़ामोश हो गये। उसके बाद उन दोनों के रोने की आवाज़ नहीं सुनी गई।

('ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा ७१ 'ज़िक्रे जमील' सफ़ा १८१)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत इमाम हुसैन से बे–इन्तिहा मुहब्बत फ़रमाया करते थे। चुनांचे एक दिन हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से अपने दायें बाज़ू और अपने बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को बायें बाज़ू पर बिठाये हुए थे कि हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अल्लाह तआला इन दोनों को आपके यहां यकजा न रहने देगा। उनमें से एक को वापस बुला लेगा। अब इनमें से आप जिसे चाहें पसंद फ़रमा लें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अगर हुसैन वफ़ात पा जाएं तो उनके ग़म में (हज़रत) फ़ातिमा, अली और मुझे तकलीफ़ होगी। अगर इब्राहीम वफ़ात पा जाएं तो ज़्यादा अलम मेरी ही जान पर टूटेगा। इसलिये मुझे अपना ही ग़म पसंद है। इस वाक़िआ के तीन दिन बाद हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन्तिक़ाल किया। बादे अज़ां जब भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लहु अन्हु हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में आते तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम उनकी पेशानी पर बोसा देते और ख़ुश आमदीद कहते हुए फ़रमाते। मरहबा ऐ हुसैन! मैंने तुम पर अपने बेटे को क़ुर्बान कर दिया है। (शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा ३०४)

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाले मुबारक के वक़्त हज़रत इमाम हुसैन की उम्र शरीफ़ बइख़्तिलाफ़े रिवायात ७ साल की थी। जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिहलत और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त शुरू हुई तो आप सवा दस बरस के थे। अहदे उस्मानी में पूरे जवान हो चुके थे। सन् ३० हिजरी में तबरिस्तान के जिहाद में शिर्कत फ़रमाई। अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली के अहद में भी जंगे जुमल व जंगे सिफ़्फ़ीन में शिर्कत फ़रमाई।

इल्म व फ़ज़्ल : तमाम अहले तारीख़ का मुत्तफ़क़ा फ़ैसला है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु इल्म व फ़ज़्ल में बड़ा मर्तबा रखते थे। आपके हम–अस्र आपसे फ़तवा दर्याफ़्त करते थे। आपकी तक़रीर व तहरीर की कोई नज़ीर नहीं मिलती। आज भी आपकी तक़रीरें व ख़ुतबात तारीख़ के सफ़हात की ज़ीनत बने हुए हैं। जिन्हें पढ़कर आपके ज़ोरे ब्यान और फ़साहत व बलाग़त का अन्दाज़ा होता है। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने बड़े भाई इमाम हसन के साथ पचीस हज फ़रमाए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइल हज़रात हसनैन करीमैन
अहादीसे करीमा की रौशनी में

हज़रत सैयदना इमाम हसन व हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बाज़ इन्फ़िरादी फ़ज़ाइल के इलावा अकसर फ़ज़ाइल मुशतरक हैं। इसीलिए हम उन दोनों कुदसियों के फ़ज़ाइल को एक साथ लिख रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

(१) हज़रत अबू–सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अल हसनु वल हुसैनु सैय्यदा शबाबि अहलिल जन्नः।** हसन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३०)

(२) हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान फ़रमाते हैं कि एक रात में किसी काम से हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह बाहर तशरीफ़ लाये कि आप किसी चीज़ को उठाए हुए थे जिसे मैं न जान सका। जब मैं अर्ज़े हाजत से फ़ारिग़ हुआ तो दर्याफ़्त किया, हुज़ूर यह क्या उठाए हुए हैं। आपने चादर उठाई तो मैंने देखा कि आपके दोनों पहलुओं में हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। आपने फ़रमाया : **हाज़ानि बनाय व अबना इबनती अल्लाहुम्म इन्नी उहिब्बुहुमा फ़ अहिब्ब व अहिब्ब मैं युहिब्बु हुमा।** यह दोनों मेरे बेटे **और मेरे** नवासे हैं। ऐ अल्लाह! मैं उन दोनों से मुहब्बत करता हूं तू भी उनसे **मुहब्बत कर,** और जो इनसे मुहब्बत करे उससे भी मुहब्बत कर।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३०)

(३) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले **करीम** सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **इन्नल हसन वल हुसैन हुमा रैहानतै य मिनदुनया** हसन और हुसैन यह दोनों दुनिया में मेरे दो फूल हैं। **(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३१)**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(४) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप फ़रमाते हैं: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अह्ले–बैत में आपको सबसे ज़्यादा कौन प्यारा है? तो आपने फ़रमाया **अल हसनु वल हुसैन** हसन और हुसैन। और हुज़ूर हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाते थे कि **उदई यली इबनै य फ़यशम्मुहुमा व यज़ुम्मुहुमा इलैह** मेरे पास मेरे बच्चों को बुलाओ। फ़िर उन्हें सूंघते थे और अपने कलेजे से लगाते थे।

(तिर्मिज़ी जिल्द दोम सफ़ा/७३१)

(५) हज़रत बुरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमको ख़ुतबा दे रहे थे कि अचानक इमाम हसन व इमाम हुसैन तशरीफ़ लाये। उन्होंने सुर्ख़ रंग की क़मीज़ ज़ेबे तन फ़रमा रखी थीं और वह चलते–चलते गिर पड़ते थे। उनको गिरते देखा तो इमामुल अम्बिया सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुतबा छोड़ दिया और मिम्बर से नीचे उतर आये और उन दोनों को गोद में उठाया और अपने सामने बिठाकर इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तबारक व तआला ने सच फ़रमाया है कि – तुम्हारी औलाद और तुम्हारे माल आज़माइश हैं। मैंने इन दोनों बच्चों को गिरते देखा तो सब्र न कर सका हत्ता कि मैं ने अपनी बात बन्द कर दी और इन दोनों को उठा लिया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द दोम सफ़ा/७३२–मिशकात शरीफ़ बाब मनाक़िबे अह्ले–बैत सफ़ा/४७८)

(६) एक दिन हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन कुशती लड़ने लगे। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हज़रत हसन से फ़रमाया: ऐ हसन! हुसैन को पकड़ लो। हज़रत सैयदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहने लगीं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम!आप बड़े को कहते हैं कि छोटे को पकड़ लो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिबरील तो हुसैन से कह रहे हैं कि हसन को पकड़ लो।

(शवाहिदुन्नुबुव्व: सफ़ा/३०४ ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा ४६६)

(७) अबुल–हसन बिन ज़हहाक हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि **यमतस्सु लुआबल हुसैनि कमा यमतस्सुर्रजुलु**... म र: आप हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का लुआब इस तरह चूस रहे थे जैसे कोई **शख़्स** खजूर को चूसता है। (सआदतुल कौनैन सफ़ा/६४ नूरुल अबसार सफ़ा १३६)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(८) हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन के बारे में फ़रमाया कि **मन अहब्बहुमा फ़क़द अहब्बनी व मन अबग़ज़हुमा फ़क़द अब ग़ ज़ नी** जिसने उन दोनों से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने उन दोनों से दुशमनी की उसने मुझसे दुशमनी की।

(मदारिजुन्नुबुव्वः जिल्द अव्वल सफ़ा/५३०)

(९) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया हसन व हुसैन मेरे बेटे हैं। **मन अहब्बहुमा अहब्बनी व मन अहब्बनी अहब्बहुल्लाहु व मन अहब्बहुल्लाहु अ द ख़लहुल जन्नः व मन अबग़ज़हुमा अ ब ग़ ज़ नी व मन अब ग़ ज़ नी अबग़ज़हुल्लाहु व मन अबग़ज़हुल्लाहु अदख़लहुन्नार** जिसने इन दोनों को महबूब रखा उसने मुझको महबूब रखा और जिसने मुझको महबूब रखा उसने अल्लाह को महबूब रखा। और जिसने अल्लाह को महबूब रखा अल्लाह ने उसको जन्नत में दाख़िल किया। जिसने इन दोनों से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा। जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा। जिसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा अल्लाह ने उसको जहन्नम में दाख़िल किया।

(सफ़ीनए नूह जिल्द अव्वल सफ़ा १६ बहवाला अल–मुस्तदरक जिल्द सोम सफ़ा/१६६)

(१०) 'कन्ज़ुल–ग़राइब' में है कि एक बदवी ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर हिरनी का एक बच्चा नज़र किया। इतने में हज़रत इमाम हसन आए। आपने हिरनी का बच्चा उनको दे दिया। जब इमाम हुसैन ने देखा तो पूछा– बिरादरे मुअज़्ज़म! यह कहां से लाए हो? कहा : नानाजान ने दिया है। इमाम हुसैन भी हिरनी का बच्चा लेने के लिए ख़िदमते नब्वी में हाज़िर हुए और ज़िद करने लगे। आपने बहुत बहलाया मगर न माने। क़रीब था कि इमाम की आंखों में आंसू आ जायें कि नागाह हिरनी अपने साथ एक बच्चा लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया : सरकार! मेरा एक बच्चा बदवी ने हाज़िरे ख़िदमत कर दिया है। यह दूसरा बच्चा बहुक्मे खुदावन्दी हुसैन के लिए हाज़िर है कि हुसैन बच्चा तलब फ़रमा रहे थे। अगर चश्मे हुसैन से एक आंसू भी टपक पड़ता तो कर्र व ब्याने अर्श के दिल दहल जाते। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द दोम सफ़ा २६)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(११) एक दफ़ा दोनों शहज़ादों ने तख़्तियां लिखीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर कहने लगे नाना जान! बताइये किसका ख़त अच्छा है। आपने इस ख़्याल से कि किसी को रंज न हो, खुद फ़ैसला न फ़रमाया : बल्कि हज़रत अली के पास भेज दिया। उन्होंने भी यही ख़्याल करके हज़रते सैयदा के पास भेज दिया। सैयदा फ़ातिमा ने फ़रमाया : बेटा! मैं ख़त की भलाई व बुराई क्या बताऊं ? मगर यह सात मोती हैं। इनको ज़मीन पर डालती हूं जो ज़्यादा मोती चुन ले उसका ख़त अच्छा है। आपने मोती डाले। शहज़ादों ने तीन–तीन मोती चुन लिए। क़रीब था कि एक भाई चौथा मोती उठा ले कि जिबरील अलैहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही एक मोती उठा लिया और उसके दो टुकड़े कर दिये और आधा–आधा मोती दोनों भाईयों के हिस्से में आ गया। हुज़ूर को जब इस वाक़िआ की इत्तिला हुई तो फ़रमाया :

अल्लाहु अकबर! आज अल्लाह तआला को इनकी इतनी रंजीदगी भी नामन्ज़ूर है। एक दिन वह होगा जब यह भूखे–प्यासे ग़रीबुल–वतन ज़ख़्मों से चूर होकर मैदाने करबला में शहीद होंगे।

(औराक़े ग़म मुअल्लिफ़ सैयद मुहम्मद अहमद साहब क़ादरी सफ़ा/२५७)

(१२) रिवायतों में आता है कि चाँद रात को हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी वालिदए मुहतरमा के पास तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया। अम्मी जान! सुबह ईद का दिन है। मदीना के लोगों के बच्चे नए–नए लिबास पहनेंगे। क्या इमामुल–अंबिया और ख़ातूने जन्नत के शहज़ादे नये कपड़े न पहनेंगे? बच्चों के सवाल से माँ की मामता तड़प उठी। बच्चों को तसल्ली दी कि मेरे बेटो! कोई फ़िक्र की बात नहीं तुम्हें भी नए जोड़े मिल जाऐंगे। सैयदतुन्निसाउल–आलमीन ख़ातूने जन्नत ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर बारगाहे रब्बुल–इज़्ज़त में अर्ज़ किया : मौला! तेरे महबूब नबी के नवासों ने मुझसे नए कपड़े मांगे हैं। ऐ मौला! मैंने उनसे वादा कर लिया है। ऐ मौला! मेरे उठे हुए हाथों की लाज रख ले। दुआ से फ़ारिग़ हुई तो किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा, कौन? आने वाले ने जवाब दिया। अहले–बैत का दरज़ी शहज़ादों के लिये नये कपड़े लेकर आया है। सैयदा ने वह कपड़े ले लिए। सुबह दोनों शहज़ादों को पहना दिये। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : बेटी! क्या तुम्हें मालूम है कि यह कपड़े कहां से और कौन लेकर आया था? अर्ज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

किया : अब्बा जान! आप ही बता दें। तो आप ने फ़रमाया : वह जिबरीले अमीन थे जो ख़ुदाए तआला की तरफ़ से जन्नत से कपड़े लेकर हाज़िर हुए थे। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द दोम सफ़ा/१३८)

मुहतरम क़ारिईन! अल्लाह तआला के यहां हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का यह मक़ाम है कि उनके लिए जन्नत से जोड़े भेजे गए और उन शहज़ादों की दिलशिकनी नहीं की गई। तो जो लोग उनकी शान में गुस्ताख़ियां करते हैं वह किस क़दर ज़ालिम और अज़ाबे ख़ुदावंदी के मुस्तहिक़ होंगे !

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की शोहरत

मुख़बिरे सादिक़ गैब–दां नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने नवासे हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की पैदाइश के साथ ही आपकी शहादते उज़्मा के बारे में भी ख़बर दे दी थी। हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और ख़ुद हज़रत इमाम हुसैन भी जानते थे कि एक दिन करबला के मक़ाम पर शहीद किया जाऊंगा। लेकिन किसी ने भी और ख़ुद इमाम हुसैन ने भी कभी किसी क़िस्म का शिकवा ज़ुबान पर नहीं लाया। बल्कि निहायत ख़न्दा–पेशानी के साथ अपनी शहादत की ख़बर सुनते रहे। उसके लिये अपने आपको तैयार किया। हम ज़ैल में चन्द अहादीसे करीमा पेश कर रहे हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आप की शहादत की ख़बर दी है।

(१) हज़रत उम्मुल–फ़ज़्ल बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा ज़ौजए हज़रत सैयदना अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाती हैं कि मैंने एक रोज़ हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को आपकी गोद में दिया। फिर मैं क्या देखती हूं कि हुज़ूर की चशमाने मुबारक से लगातार आंसू बह रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान। यह क्या है? फ़रमाया : मेरे पास जिबरील आए और मुझे ख़बर दी कि मेरी उम्मत मेरे इस फ़र्ज़न्द को शहीद करेगी? मैंने अर्ज़ किया : या

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रसूलुल्लाह! क्या इस फ़र्ज़न्द को शहीद करेगी? हुज़ूर ने फ़रमाया—हां, और जिबरील मेरे पास उसकी शहादतगाह की सुर्ख़ मिट्टी भी लाए।

('मिर्अतुल मनाजीह' शरह मिशकातुल–मसाबीह सफ़ा ४६०)

(२) इब्ने सअ्द व तबरानी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे जिबरील ने ख़बर दी कि मेरे बाद मेरा फ़र्ज़न्द हुसैन तफ़ में शहीद किया जाएगा। जिबरील मेरे पास यह मिट्टी लाए और मुझसे बताया कि यह हुसैन के ख़्वाबगाह (मक़तल) की ख़ाक है। तफ़ क़रीबे कूफ़ा उस मक़ाम का नाम है जिसको करबला कहते हैं।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा/६३६ मासबत–बिस्सुन्नः सफ़ा/२६)

(३) बग़वी ने अपनी मोंजम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बारिश के फ़रिश्ते ने मेरी मुलाक़ात के लिए अल्लाह तआला से इजाज़त तलब की तो अल्लाह ने इजाज़त अता फ़रमा दी। वह फ़रिश्ता मेरी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मेरी गोद में थे और मैं उनको प्यार कर रहा था। फ़रिश्ते ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! क्या आप हुसैन से प्यार करते हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया : हां। उस फ़रिश्ते ने कहा आपकी उम्मत हुसैन को शहीद कर देगी। अगर आप चाहें तो मैं आपको वह जगह दिखा दूं जहां यह शहीद होंगे। चुनांचे उसने आपको वह जगह दिखाई और सुर्ख़ मिट्टी भी लेकर आया जिसे उम्मुल–मोमिनीन हज़रत उम्मे–सल्मा ने अपने कपड़े में ले लिया। 'ज़्यारतुल मुस्नद' में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ उम्मे सलमा! जब यह मिट्टी ख़ून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा हुसैन शहीद कर दिया गया। हज़रत उम्मे–सल्मा फ़रमाती हैं कि मैंने उस सुर्ख़ मिट्टी को एक शीशी में रख दिया जो हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शहादत के दिन ख़ून बन गई। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६३६–६४०)

(४) इब्ने सअ्द हज़रत शाबी से रिवायत करते हैं कि हज़रत सैयदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़ा पर करबला से गुज़र रहे थे कि फ़ुरात के किनारे ठहर गये और उस ज़मीन का नाम दर्याफ़्त फ़रमाया। लोगों ने कहा इस ज़मीन का नाम करबला है। करबला का नाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सुनते ही आप इस क़दर रोये कि ज़मीन आंसुओं से तर हो गई। फिर फ़रमाया : मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक रोज़ हाज़िर हुआ तो देखा कि आप रो रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाया : अभी जिबरील आये थे। उन्होंने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा दरियाए फ़ुरात के किनारे उस जगह पर शहीद किया जायेगा जिसको करबला कहते हैं। वहां की मिट्टी भी मुझे सुंघाई।

(सवाइके मुहर्रका सफ़ा ६४१)

(५) अबू–नईम ने असबग़ बिन नबाता से रिवायत की कि हम लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र की जगह पर आए तो हज़रत अली ने फ़रमाया : यहां उन शोहदा के ऊंट बधेंगे। यहां उनके कजावे रखे जायेंगे। यहां उनके ख़ून बहेंगे। और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक गिरोह इस मैदान में शहीद होगा और उन पर ज़मीन व आसमान रोयेंगे।

(ख़साइसे कुबरा जिल्द दोम सफ़ा २०८)

(६) हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हम अह्ले–बैत बिल–इत्तिफ़ाक़ जानते थे कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु करबला में शहीद होंगे।

मज़कूरा बाला अहादीसे करीमा से यह वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का इज़्हार व एलान फ़रमा दिया था। सहाबए किराम और अह्ले–बैत की अक्सरियत को यह मालूम था कि हुसैन शहीद होंगे। उनकी शहादतगाह करबला है। लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और न ही हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा व दीगर अह्ले–बैत व अज़वाजे मुतह्हरात ने अल्लाह तआला की बारगाह में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को इस हादसे से महफ़ूज़ रखने की दुआ की और न ही अल्लाह के महबूब की बारगाह में दुआ की दरख़्वास्त की। करते भी क्यों? इसलिये कि सब जानते थे कि यह इमाम हुसैन की आज़माइश और इम्तिहान है। इम्तिहान में किसी को कुछ बताया नहीं जाता बल्कि यह दुआ की जाती है कि अल्लाह तआला उसको इम्तिहान में कामयाबी अता फ़रमाए और उसके दरजात बुलन्द से बुलन्द–तर फ़रमाये।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अब अगर कोई नादान, कम अक्ल, जाहिल यह एतराज़ करे कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं बचा सके तो किसी और को क्या बचा सकते हैं? तो ऐसे जाहिल का जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम हुसैन को कब बचाने की कोशिश की थी बल्कि उनको तो ख़ुद शहादत के लिये तैयार किया था। फिर जब इमाम हुसैन मुकम्मल हो गए तो फिर इम्तिहानगाह में शहीद होने के लिए भेजा। करबला हज़रत इमाम की इम्तिहानगाह थी। यहां आपको अपनी शहादत देकर इस्लाम की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ करना था। जो आप की शहादत ही से होना था।

यह शहादत गहे उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग आसां समझते हैं मुसलमां होना!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यज़ीद पलीद
का मुख़्तसर तज़किरा

यज़ीद पलीद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का बेटा है। उसकी कुन्नीयत अबू–ख़ालिद थी। उमैया ख़ानदान का यह वह बदनसीब इन्सान है जिसकी पेशानी पर नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल का सियाह दाग़ है। जिस पर हर ज़माने में दुनियाए इस्लाम मलामत करती रही है और क़यामत तक उस पर मलामत होती रहेगी। यह बद–बातिन, सियाह दिल, नंगे ख़ानदान सन् २५ हिजरी में अमीर मुआविया के घर मैसून बिन्त बख़दल कलबी के पेट से पैदा हुआ। यज़ीद बहुत मोटा, बदनुमां, कसीरुश्शार, बद–खुल्क़, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बेअदब गुस्ताख़ था। उसकी शरारतें और बेहूदगियां ऐसी हैं जिनसे बदमाशों को भी शर्म आए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला (ग़सीलुल–मलाइका) रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वल्लाह! यज़ीद पर हमला की तैयारी हमने उस वक़्त की जब हमको यक़ीन हो गया कि अब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। क्योंकि उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर का यह आलम था कि लोग अपनी माँ, बहनों बेटियों से निकाह कर रहे थे। शराबें पी जा रही थीं। यज़ीद ख़ुद उन औरतों से शादियां कर रहा था जिनको इस्लाम ने मुहर्रमात में शुमार किया है। लोगों ने नमाज़ें छोड़ दी थीं। दीगर बहुत सारी ख़ुराफ़ात व मन्हीयात का एलानिया रिवाज हो गया था।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०१ व ३०६ सवानेह करबला)

यज़ीद पलीद ने मदीना तैयबा और मक्का मुकर्रमा की बेहुरमती कराई। इन दोनों मुक़द्दस मक़ामात पर हमला किया। हज़ारों सहाबा–ए–किराम व सहाबिया शहीद हुए। हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में घोड़े बांधे गए। यहां घोड़ों ने लीद और पेशाब किया। तीन दिन तक मस्जिदे नब्वी में नमाज़ नहीं हुई। इसी तरह मक्का मुअज़्ज़मा में ख़ानए काबा पर पत्थर बरसाए। ग़िलाफ़े काबा को जलाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

गया। और सैय्यदानियों की इसमतदरी की गई। हज़ारों सहाबए किराम को यहां भी शहीद किया गया। ऐसे शख़्स की हुकूमत गुर्ग की चौपानी से ज़्यादा ख़तरनाक थी। अरबाबे फ़िरासत और असहाबे असरार उस वक़्त से डरते थे जबकि अनाने सलतनत उस शक़ी के हाथ में आई। चुनांचे रिवायतों में आता है कि सन् ५६ ई० में हज़रत सैय्यदना अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, जो साहिबे असरार व फ़िरासत बुज़ुर्ग सहाबी थे, उन्होंने दुआ की **अल्लाहुम्म म इन्नी अऊज़ुबि क मिर्रास्सित्तीनि व अमारतिस्सिब्यान।** ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं सन् ६० हिजरी के आग़ाज़ और लड़कों की हुकूमत से। ख़साइसे कुबरा की रिवायत में यह भी ज़्यादा है कि उस वक़्त दुनिया अहमक़ और बद–सरिशत के लिए होगी।

('ख़साइसे कुबरा' जिल्द दोम सफ़ा २२६)

हज़रत अबू–हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की इस दुआ से मालूम होता है कि आपको मालूम था कि सन् ६० हिजरी में लड़कों की हुकूमत और फ़ित्नों का वक़्त है। उनकी दुआ क़ुबूल हुई और उन्हों ने सन् ५६ हिजरी में बमक़ाम मदीना तैय्यबा रिहलत फ़रमाई। (सवानेह करबला सफ़ा ७६)

यज़ीद

अहादीसे करीमा और अक़वाले अ[illegible]म्मा की रौशनी में

(१) रूयानी ने अपनी मुसनद में सहाबिए रसूल हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लहु अन्हु से एक हदीस रिवायत की है। वह फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से सुना कि हुज़ूर ने फ़रमाया **अव्वलु मैय युबद्दिलु सुन्नती रजुलुम्मि बनी उमै य त युक़ालु लहू यज़ीदुन।** मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला बनी–उमैया का एक शख़्स होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५)

(२) अबू याला ने अपनी मुसनद में हज़रत अबू–उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया **ला यज़ालु अमरुं उम्मती क़ाइमम बिलक़िस्ति हत्ता यकू न अव्वलु मैंयुसलिमुहू रजुलुम मिम बनी उमैय त युक़ालु लहू यज़ीद।** मेरी उम्मत हमेशा अद्ल व इन्साफ़ पर क़ाइम रहेगी। यहां तक कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बनी–उमैया में यज़ीद नामी एक शख़्स होगा जो उस अद्ल में रख़ना अन्दाज़ी करेगा। (तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा ३०५ 'सवाइके मुहर्रक़ा' सफ़ा ७३०)

(३) नौफ़ल बिन अबुल–फ़ुरात कहते हैं कि एक रोज़ हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ (उमवी ख़लीफ़ा) के पास एक शख़्स बैठा हुआ था कि यज़ीद का कुछ ज़िक्र आ गया। उस शख़्स ने यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया कहा। हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ ने उस शख़्स से फ़रमाया: **तक़ूलु अमीरुल-मोमिनीन? फ़ अ म र बिही फ़ज़ुरि ब इशरी न सौतन।** ऐ शख़्स! तू (यज़ीद को) अमीरुल–मोमिनीन कहता है? फिर आपने हुक्म दिया कि यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कहने वाले शख़्स को (२०) बीस कोड़े लगाए जाएँ।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५–सवाइक़े मुहर्रक़ा ७३२)

(४) आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अह्ले सुन्नत सैयदना इमाम अहमद रज़ा ख़ां फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान अपने फ़तावे में फ़रमाते हैं कि **यज़ीद पलीद अलैहि मा यस्तहिक़्क़ुहू मिनल अज़ीज़िल मजीदे क़तअन यक़ीनन बि-इजमा** अह्ले सुन्नत फ़ासिक़ व फ़ाजिर व जरी अलल–कबाइर था। इस पर अइम्मए अह्ले–सुन्नत का इत्तिबाक़ व इत्तिफ़ाक़ है। सिर्फ़ उसकी तकफ़ीर व लअ्न में इख़्तिलाफ़ फ़रमाया। इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके इत्तिबा व मुवाफ़िक़ीन उसे काफ़िर कहते हैं और बतख़्सीसे नाम उस पर लान करते हैं। इस आयते करीमा से उस पर सनद लाते हैं:

फ़हल असैतुम इन तवल्लैतुम अन तुफ़सिदू फ़िलअर्ज़े व तुक़त्तिऊ अरहामकुम। उलाइकल्लज़ी न लअनहुमुल्लाहु फ़असम्महुम व आमा अबसारहुम (सूरः मुहम्मद प/२६ रुकू/७)

"क्या क़रीब है कि अगर वालिए मुल्क हो तो ज़मीन में फ़साद करो और अपने नसबी रिश्ते काट दो। यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह तआला ने लानत फ़रमाई तो उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखें फोड़ दीं।"

शक नहीं कि यज़ीद ने वालिए मुल्क होकर ज़मीन में फ़साद फैलाया। हरमैन तैय्यबैन और ख़ुद काबा मुअज़्ज़मा और रौज़ा तैय्यबा की सख़्त बेहुर्मतियां कीं। मस्जिदे करीम में घोड़े बांधे, उनकी लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े। तीन दिन तक मस्जिदे नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम बे–अज़ान व नमाज़ रही।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मक्का व मदीना व हिजाज़ के हज़ारों सहाबा व ताबिईन बेगुनाह शहीद किए। काबा मुअज़्ज़मा पर पत्थर फेंके। गिलाफ़े काबा शरीफ़ फाड़ा और जलाया। मदीना तैयबा की पाक दामन पारसाएं तीन शबाना रोज़ अपने ख़बीस लशकर पर हलाल कर दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर पारे को तीन दिन बे–आब व दाना रखकर अपने हमराहियों के तेगे ज़ुल्म से प्यासा ज़बह किया। मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाले हुए तने नाज़नीन पर बादे शहादत घोड़े दौड़ाए गए कि तमाम उस्तुख़्वाने मुबारका चूर हो गए। सरे अनवर, कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बोसागाह था, काट कर नेज़ा पर चढ़ाया और मन्ज़िलों फिराया। हरमे मुहतरम मुहज़्ज़रात मशकूए रिसालत कैद किए गए, और बेहुरमती के साथ उस ख़बीस के दरबार में लाए गए। इससे बढ़कर क़तए रहम और ज़मीन में फ़साद क्या होगा? मलऊन है जो इन हरकाते मलऊना को फ़िस्क़ व फ़ुजूर न जाने। क़ुरआने अज़ीम में सराहतन इस पर *लानहुमुल्लाह* फ़रमाया। लिहाज़ा इमाम अहमद बिन हम्बल और उनके मवाफ़िक़ीन इस पर लानत फ़रमाते हैं। हमारे इमाम आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने लान व तकफ़ीर से इहतियातन सुकूत किया कि इससे फ़िस्क़ व फ़ुजूर मुतवातिर हैं, कुफ़्र मुतवातिर नहीं। बहाले इहतिमाल निस्बते कबीरा भी जाइज़ नहीं, न कि तकफ़ीर। अमसाल वईदात मशरूत बिही अदमे तौबा हैं। लिक़ौलिही तआला **फ़सौ फ़ यलक़ौ न ग़ैयन इल्ला मन ता ब** (प/१६ रुकू/७) तौबा तादमे ग़रग़रा मक़बूल है और उसका अदम पर जज़्म नहीं। यही अहवत व असलम है। मगर उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर से इन्कार करना और इमामे मज़लूम पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियाते मज़हबे अह्ले–सुन्नत के ख़िलाफ़ है। ज़लाल व बद–मज़हबी साफ़ है। बल्कि इन्साफ़न यह उस क़ल्ब से मुतसव्वर नहीं जिसमें मुहब्बत सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शम्मा हों। **व स यालमुल्लज़ी न ज़ ल मू ऐय य मुन्क़लबिं यनक़लिबून।** ('फ़तावा रज़वीया' जिल्द शशुम सफ़ा १०७–१०८)

और दूसरी जगह फ़रमाते हैं: यज़ीद बेशक पलीद था उसे पलीद कहना और लिखना जाइज़ है और उसे रहमतुल्लाह अलैहि न कहेगा मगर नासिबी कि अह्ले–बैते रिसालत का दुशमन है।

('फ़तावा रज़वीया' जिल्द शशुम सफ़ा ११४)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तीसरी जगह यज़ीद पलीद की बख़्शिश के बारे में एक सवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाया यज़ीद के पलीद के बारे में अइम्मा–ए–अह्ले–सुन्नत के तीन अक़्वाल हैं। इमाम अहमद वग़ैरह अकाबिर काफ़िर जानते हैं। हरगिज़ बख़्शिश न होगी। इमाम ग़ज़ाली वग़ैरह मुसलमान। उसपर कितना ही अज़ाब हो बिलआख़िर बख़्शिश ज़रूर होगी। हमारे इमाम (अबू–हनीफ़ा) सुकूत फ़रमाते हैं कि न हम मुसलमान कहें, न हम काफ़िर।

('फ़तावा रज़वीया' जिल्द शशुम सफ़ा १५४)

मुहतरम क़ारिईन! आप जलीलुल–क़द्र उलमाए मुहक़्क़िक़ीन के ब्यानात से ख़ूब अच्छी तरह वाक़िफ़ हो गए कि यज़ीद कैसा था और उसने कैसे–कैसे मज़ालिम ढाए। यह भी आपने पढ़ लिया कि यज़ीद को क्या कहना चाहिए, और क्या न कहना चाहिए? इस सिलसिले में हमने अपने इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा रज़ियल्लहु अन्हु का फ़तवा भी नक़ल कर दिया है। इसलिए जो लोग इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा के मानने वाले हैं उनको चाहिए कि इमाम के फ़त्वे पर अमल करते हुए यज़ीद के लान व तकफ़ीर यानी उसपर लानत करने और उसको काफ़िर कहने से ख़ामोशी एख़्तियार करें। लेकिन उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर को ज़रूर मानें। जो लोग उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर का इन्कार करें और उसको रहमतुल्लाह अलैह और अमीरुल–मोमिनीन कहें या लिखें। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को मआज़ल्लाह! बाग़ी या ख़ताकार कहें या लिखें, ऐसे लोगों को गुमराह, बद्दीन, अह्ले–बैत का दुशमन और ख़ारजी समझें। न उनका ब्यान सुनें, न उनकी किताबें पढ़ें और न ही उनके साथ नशिस्त करें।

ऐसे ही ग़द्दार और ख़ारजी बोली बोलने वालों के बारे में हज़रत मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो यह कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बग़ावत की तो यह अह्ले–सुन्नत व जमाअत के नज़दीक बातिल है। इस तरह की बोली ख़ारजियों के हिज़यानात में से है जो अह्ले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हैं।

(शरह फ़िक़्ह अकबर सफ़ा ८७ मतबूआ अशरफ़ी बुक डिपो)

हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अपने फ़तावे में, यज़ीद पर लानत करना चाहिए या नहीं – उसके मुतअल्लिक़ तहरीर फ़रमाते हैं कि तवक़्क़ुफ़ इस वजह से है कि रिवायाते मुतख़ालिफ़ा व मुतआरिज़ा यज़ीद पलीद के बारे में मामलाए शहादते हुसैन अलैहिस्सलाम में वारिद हुई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हैं। चुनांचे बाज़ रिवायात से मफ़्हूम होता है कि हज़रत इमाम की शहादत पर यज़ीद राज़ी हुआ और आपकी शहादत से ख़ुश हुआ। उसने अह्ले–बैत और ख़ानदाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इहानत की। तो जिन उलमा के नज़दीक यह साबित हुआ कि यह रिवायात मुरज्जह हैं तो उन उलमा ने यज़ीद पलीद पर लान किया। चुनांचे इमाम अहमद बिन हम्बल और कियामरासी जो फ़ुक़्हाए शाफ़ईया से हुए हैं और दीगर उलमाए कसीर ने यज़ीद पलीद पर तान किया है। और बाज़ रिवायात से मफ़्हूम होता है कि यज़ीद को शहादते इमाम अलैहिस्सलाम से रंज व ग़म था और शहादत की वजह से यज़ीद ने इब्ने–ज़्याद और उसके आवान पर इताब किया। यज़ीद को उस काम से नदामत हुई कि उसके नाइब के हाथ से यह वाक़िआ वक़ू में आया। तो जिन उलमा के नज़दीक यह साबित हुआ कि यह रिवायात मुरज्जह हैं तो उन उलमा ने यज़ीद के लान से मना किया। चुनांचे हुज्जतुल–इस्लाम इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रहमः और दीगर उलमाए शाफ़ईया और अकसर उलमाए हनफ़ीया यज़ीद के लान से मना किया है। और बाज़ उलमा के नज़दीक साबित हुआ कि दोनों तरह के रिवायात में तआरुज़ है और कोई वजह ऐसी साबित न हुई कि उसके एतबार से एक जानिब की रिवायात को तरजीह हो सके। तो उन उलमा ने इहतियातन इस मसअला में तवक़्क़ुफ़ किया। इमामे आज़म अबू–हनीफ़ा का यही क़ौल है। अलबत्ता शिमर व इब्ने–ज़्याद शहादते इमाम हुसैन से राज़ी थे और यह दोनों ख़ुश थे। इसलिए शिमर व इब्ने–ज़्याद पर लान करने में उलमा से किसी ने तवक़्क़ुफ़ नहीं किया। बिलइत्तिफ़ाक़ सब उलमा के नज़दीक क़तई तौर पर साबित है कि शिमर व इब्ने–ज़्याद बद–निहाद पर लान करना जायज़ है। (**'फ़तावा अज़ीज़ी'** सफ़ा ३५२/२५३)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अहदे हज़रत अमीर मुआविया
और
बैअ़ते यज़ीद
नीज़
यज़ीद पलीद
की
तख़्त-नशीनी
और
हज़रत इमाम हुसैन
रज़ियल्लाहु अन्हु
व
दीगर सहाबा से बैअ़ते यज़ीद का मुतालबा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अहदे अमीर मुआविया और यज़ीद की बैअ़त

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने सन् ५० हिजरी में शामियों को बुलाया कि उनके बाद उनके बेटे यज़ीद की जांनशीनी के लिए अह्ले शाम बैअ़त करें। इस एतबार से आप इस्लाम में पहले शख़्स हैं जिन्होंने अपनी हयात ही में अपने बेटे के लिए मुसलमानों से बैअ़त ली। और अपने बेटे यज़ीद को अपना वली–ए–अहद बना दिया। जब शामियों ने बैअ़त कर ली तो आपने गवर्नरे मदीना मरवान बिन हकम को एक फ़रमान लिखा कि वह अह्ले मदीना से भी यज़ीद की बैअ़त लें। चुनांचे मरवान बिन हकम ने मदीना मनव्वरा में ख़ुत्बा देते हुए कहा कि मुझे अमीरुल–मोमिनीन हज़रत अमीर मुआविया की तरफ़ से हुक्म मिला है कि उनके बेटे यज़ीद के लिए आप लोगों से हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा की सुन्नत पर बैअ़त लूं। जैसे कि उनके अहद में नामज़दगी का तरीक़ा रायज था। यह सुनकर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़ौरन खड़े हो गए, और फ़रमाया कि नहीं–नहीं! यह सुन्नते हज़रत अबू–बक्र व उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा नहीं है। बल्कि यह कहो कि क़ैसर व किसरा की सुन्नत (तरीक़ा) पर बैअ़त लूं। इसलिए कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ और हज़रत फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कभी अपने औलाद या अपने किसी अह्ले ख़ानदान व अह्ले–बैत के लिए बैअ़त नहीं ली।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा/२८६ मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा ३५–तारीख़े इब्न–ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ५५)

हज़रत अमीर मुआविया का हज और यज़ीद की बैअ़त

सन् ५१ हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज अदा किया। और अपने बेटे यज़ीद के लिए तमाम लोगों से बैअ़त लेने के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्द हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया। उनसे कहा ऐ इब्ने उमर! तुम तो यह कहते थे कि जिस दिन मुझ पर कोई अमीर नहीं होगा उस रोज़ मुझे चैन नहीं होगा और अब तुम मामला–ए–ख़िलाफ़त में रख़ना–अन्दाज़ी कर रहे हो। यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़ौरन खड़े हो गए और एक बलीग़ ख़ुत्बा दिया जिसमें हम्द व नात के बाद फ़रमाया कि ऐ अमीर!

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आपसे पहले भी ख़ुलफ़ा गुज़रे हैं और उनके भी फ़र्ज़न्द थे। उनके फ़र्ज़न्दों से आपका फ़र्ज़न्द (यज़ीद) बेहतर नहीं है। मगर उन्होंने कभी भी अपनी औलाद में से किसी बेटे को वली–ए–अहद मुक़र्रर नहीं किया। बल्कि उन्होंने तो इस इन्तिख़ाबे आम को मुसलमानों पर छोड़ दिया। पस आज भी वह किसी शख़्स की ख़िलाफ़त पर इजमा कर लें तो मैं भी उसको क़ुबूल कर लूंगा। आप मुझे इस बात से डराते हैं कि मैं मुसलमानों में रख़ना–अन्दाज़ी करने वाला हूं। बख़ुदा! मैं मुसलमानों में इन्तिशार करने वाला नहीं हूं। यह तक़रीर करके आप वहां से उठकर चले आए।

फिर हज़रत अमीर मुआविया ने फ़र्ज़न्दे सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। जब वह तशरीफ़ लाए तो उनसे भी वही सब कुछ कहा जो हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनकी बात बीच में काट कर कहा कि क्या आपने यह समझ रखा है कि इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के मामले में हमने आपको अपना वकील बना लिया है? ख़ुदा की क़सम! हमने आपको अपना वकील नहीं बनाया। ख़ुदा की क़सम! हम चाहते हैं कि इस मामिला में तमाम मुसलमान जमा हों और बाहम मशवरत करें और फिर इन्तिख़ाब करें। वरना मैं बताए देता हूं कि तफ़र्क़ा अन्दाज़ी का बार आपके कन्धों पर रहेगा। इतना कह कर आप उठ कर खड़े हो गए। उस वक़्त हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ की कि इलाही! जो कुछ मैं चाहता हूं इसमें तू मेरी मदद फ़रमा। इलाही! मैं अगर यज़ीद को उसकी लियाक़त और होशमन्दी के बाइस वली–ए–अहद बना रहा हूं तो इस काम में मेरी मदद फ़रमा। महज़ शफ़क़ते पिदरी के बाइस ऐसा कर रहा हूं और वह ख़िलाफ़त के क़ाबिल नहीं है तो उसके तख़्तनशीन होने से पहले उसको मौत दे दे। फिर हज़रत इब्ने अबू–बक्र सिद्दीक़ से फ़रमाया कि तुम सख़्ती और दुरुश्ती से काम मत लो। ज़रा नरमी का रवैया इख़तियार करो। कहीं तुम अहले शाम तक इस बात को न पहुंचा देना। क्योंकि मैं डरता हूं कि कहीं अहले शाम सबक़त करके आपसे बैअ़त न कर लें। आप कुछ सब्र करें ताकि मैं रात उनको इत्तिला दे दूं कि तुम ने यज़ीद की बैअ़त कर ली है। उसके बाद तुम से जो कुछ बन पड़े वह कर गुज़रना।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया और उनसे कहा: ऐ इब्न–ज़ुबैर! तुम एक शातिर लोमड़ी की तरह हो जो एक बिल से निकल कर झट दूसरी बिल में जा घुसती है। तुमने ही इब्न–उमर और इब्ने अबू–बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा के कानों में कुछ फूंक दिया है और उन्हें भड़का दिया है और किसी दूसरे शख़्स की बैअ़त पर तैयार कर रखा है। हज़रत इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनकर कहा कि अगर आपका दिल ख़िलाफ़त से भर गया है या आप अपनी ख़िलाफ़त से बेज़ार हैं तो फिर इस तख़्ते ख़िलाफ़त को तर्क क्यों नहीं कर देते ताकि हम आपके बेटे से ही बैअ़त कर लें। ज़रा आप ही सोचिए कि अगर उसकी भी बैअ़त कर लें तो फिर हम किसकी सुनें और किसकी बात मानें। क्योंकि आने वाहिद में या एक वक़्त में दो बादशाहों की तो बैअ़त हो ही नहीं सकती। यह कह कर आप भी वापस आ गए। इन हज़रात के चले जाने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और हम्द व नात के बाद कहा कि मैं ने कज–रू लोगों की बातों को सुना है। उनकी बातों से ज़ाहिर है कि वह (यानी इब्न–उमर, इब्ने अबू–बक्र, और इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम) यज़ीद की बैअ़त कभी नहीं करेंगे। हालांकि वह तीनों यज़ीद की बैअ़त कर चुके हैं। उसकी इताअत क़ुबूल कर ली है। यह सुनकर अह्ले शाम ने कहा: ख़ुदा की क़सम! वह लोग जब तक़ हमारे सामने यज़ीद की बैअ़त नहीं करेंगे हम इस बात को नहीं मानेंगे। अगर उन्होंने हमारे सामने ऐसा नहीं किया तो फिर हम उन तीनों के सर उड़ा देंगे। यह सुनकर अमीर मुआविया ने कहा कि वाह! वाह! क़ुरैश की शान में ऐसी गुस्ताख़ाना बातें? आज के बाद से मैं आइन्दा तुम्हारी ज़ुबान से ऐसी बातें न सुनूं। यह कहकर आप मिम्बर से उतर आए। इस वाक़िआ के बाद लोगों में यह मशहूर हो गया कि इब्न–उमर इब्न–अबू–बक्र और इब्न–ज़ुबैर ने यज़ीद से बैअ़त कर ली है। हालांकि यह तीनों हज़रात बराबर इस बात से इन्कार करते रहे। हज से फ़राग़त के बाद हज़रत अमीर मुआविया शाम वापस चले गए।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा २८६ ता २६१, मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा ३६ तारीख़ इब्न–ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ५६)

उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु अक्सर बीमार रहे और माहे रज्जब सन् ६० हिजरी में आपका इन्तिक़ाल हो गया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

नोट : बाज़ लोग हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु पर यह एतराज़ करते हैं कि आपने अपनी हयात में अपने बेटे यज़ीद को अपना वली–ए–अहद मुक़र्रर फ़रमा दिया। यह आपकी सबसे बड़ी भूल थी। इसका जवाब हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ां साहब नईमी अलैहिर्रहमः तहरीर फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा का अपनी ज़िन्दगी में दूसरे को ख़लीफ़ा बनाना जायज़ है। इसलिए कि हज़रत अबू–बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ज़िन्दगी में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था। रहा बेटे को अपना जांनशीन बनाना, तो यह क़ुरआन व हदीस से मना नहीं। जिन लोगों को उस पर एतराज़ है वह दलील पेश करें। रहा यह सवाल कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से किसी ने अपने बेटे को जांनशीन मुक़र्रर नहीं किया इसलिए यह नाजाइज़ है, तो यह दलील ग़लत है। क्योंकि ख़ुलफ़ाए अरबआ़ के न करने के सबब अगर ना जायज़ हो जाए तो उन्होंने बहुत–सा काम नहीं किया है। जैसे : क़ुरआन हकीम पर आराब लगाना, हदीस व फ़िक़्ह को किताबी शक्ल में जमा करना वग़ैरह। यह सब काम नाजायज़ हो जाएंगे।

रहा यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर तो यह कहीं साबित नहीं कि हज़रत अमीर मुआविया की ज़िन्दगी में यज़ीद फ़ासिक़ व फ़ाजिर था। न यह साबित है कि उन्होंने यज़ीद को फ़ासिक़ व फ़ाजिर मानते हुए अपना जांनशीन बनाया। यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर दरअसल हज़रत अमीर मुआविया की वफ़ात के बाद ज़ाहिर हुआ। फ़िस्क़ ज़ाहिर होने के बाद फ़ासिक़ क़रार दिया जाता है न कि पहले। देखिए इबलीस लईन पहले फ़रिशतों का उस्ताद था। फिर जब उससे कुफ़्र ज़ाहिर हुआ तब उसे काफ़िर क़रार दिया गया। तो फ़िस्क़ व फ़ुजूर ज़ाहिर होने से पहले यज़ीद को फ़ासिक़ कैसे ठहराया जा सकता है? हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु कैसे मौरिदे इल्ज़ाम हो सकते हैं ?

(हज़रत अमीर मुआविया पर एक नज़र' सफ़ा ६५)

यज़ीद की तख़्त-नशीनी और तलबे बैअ़त

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के वफ़ात के बाद यज़ीद तख़्त–नशीन हुआ तो उसको सबसे पहले यह फ़िक्र लाहिक़ हुई कि जिन लोगों ने उसकी बैअ़त नहीं की उन्हें अपनी बैअ़त पर मजबूर करे। चुनांचे उसने अपनी बैअ़त लेने के लिए अतराफ़ के तमाम ममालिक में ख़ुतूत व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुक्म–नामे रवाना किए। चुनांचे उसने आमिले मदीना वलीद बिन उतबा को ख़त लिखा कि हर ख़ास व आम से मेरी बैअ़त लो। हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से पहले बैअ़त लो। जब तक उनसे बैअ़त न ले लो उन्हें अपने पास से जाने की इजाज़त न दो। और तशद्दुद एख़्तियार करो, मोहलत न दो।

(तारीखे़ तबरी जिल्द पन्जुम सफ़ा १६३)

जब यज़ीद का ख़त वलीद के पास पहुंचा तो वह बहुत घबराया। फ़ौरन उसने एक शख़्स को भेजकर मरवान बिन हकम को, जो वलीद से पहले मदीना का गर्वनर था,बुलाया और यज़ीद का ख़त दिखा कर उससे मश्वरा तलब किया।

यहां पर एक बात बता देना ज़रूरी है कि मरवान बिन हकम यह वह शख़्स है कि जब उसकी पैदाइश हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में तहनीक (कोई चीज़ नरम करके खिलाने) के लिए बुलाया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया **हुवल वज़्ग़ुबनुल वज़्ग़ो**। यह गिरगिट का बेटा गिरगिट है। सवाइक़े मुहर्रक़ा में यह भी है कि मलऊन बिन मलऊन है।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६०५)

बुख़ारी,नसाई और इब्ने अबी हातिम अपने तफ़सीर में रिवायत करते हैं कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरवान के बाप पर लानत फ़रमाई जबकि मरवान सुल्बे पिदर में था। तो वह भी अल्लाह की लानत से हिस्सा पाने वाला हुआ। (तारीखुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा २९८ सवाइक़े मुहर्रक़ा' सफ़ा ६०६)

हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः अपने फ़तावा में मरवान की हक़ीक़त ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं कि अह्ले–बैत की मुहब्बत फ़राइज़े ईमानी से है। यह लवाज़िमे सुन्नत और मुहब्बते अह्ले–बैत से है कि मरवान अलैहिल्लानः को बुरा कहना चाहिए। उससे दिल बेज़ार रहना चाहिए। अलल–ख़ुसूस उसने निहायत बदसुलूकी हज़रत इमाम हुसैन और अह्ले–बैत के साथ की। कामिल अदावत उन हज़रात से रखता था। इस ख़्याल से इस शैतान से निहायत ही बेज़ार रहना चाहिए।

(फ़तावा अज़ीज़ी मुतर्जम सफ़ा ४४३)

मुहतरम क़ारिईन! अहादीसे करीमा और फ़तावा की रौशनी में आपने मरवान बिन हकम की दुशमनी मुलाहज़ा फ़रमाई कि यह शख़्स इतना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मबग़ूज़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे और उसके बाप को गिरगिट फ़रमा रहे हैं और उन पर लानत भेज रहे हैं। हज़रत शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी उसे शैतान क़रार दे रहे हैं। तो ऐसे शख़्स से क्या ख़ैर की उम्मीद की जा सकती है ?

चुनांचे जब मदीना मनव्वरा के गवर्नर वलीद ने मरवान से मशवरा लिया तो उसने कहा कि उन तीनों को फ़ौरन इसी वक़्त बुलाओ और उनसे बैअ़त के लिए कहो। अगर वह बैअ़त कर लें तो बेहतर, वरना तीनों को क़त्ल कर दो।

इस मशवरे के बाद गवर्नरे मदीना वलीद ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन उस्मान नामी एक नौ–उम्र लड़के के ज़रिया उन तीनों हज़रात को बुला भेजा। यह हज़रात उस वक़्त मस्जिद में थें। इस ग़ैर मामूली वक़्त के बुलावे से फ़ौरन मामले की तह को पहुंच गए। उन्होंने आपस में कहा: मालूम होता है कि हज़रत अमीर मुआविया का इन्तिक़ाल हो गया हैं और हमें बैअ़त के लिए बुलाया जा रहा है। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथ चन्द जवानों को लेकर पहुंचे। उन्हें हिदायत की कि तुम दरवाज़े पर बैठे रहो। अगर मैं तुम्हें बुलाऊं या तुम सुनो की मेरी आवाज़ बुलन्द हो गई है तो सब के सब मकान के अन्दर चले आना। लेकिन अगर ऐसा न हो तो दरवाज़े से न हटना यहां तक कि मैं बाहर आ जाऊं। फिर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए। वलीद ने आपको हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात की ख़बर सुनाई और यज़ीद की बैअ़त के लिए कहा। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** पढ़ा और फ़रमाया : मेरे जैसा आदमी छुप कर बैअ़त नहीं कर सकता और न मेरे लिए इस तरह बैअ़त करना मुनासिब है। आप बाहर निकल कर सब लोगों से बैअ़त तलब करें और उनके साथ मुझसे भी बैअ़त के लिए कहें। वलीद अमन व सुलह पसंद आदमी था। उसने कहा: अच्छा आप तशरीफ़ ले जाएं। जब आप तशरीफ़ ले जाने लगे तो मरवान ने बहुत बरहम होकर वलीद से कहा : अगर तुमने इस वक़्त इनको जाने दिया और बैअ़त न ली तो फिर इन पर क़ाबू न पा सकोगे। अगर यह बैअ़त कर लें तो ख़ैर, वरना क़त्ल कर दो। इमाम हुसैन यह सुनकर खड़े हो गए और फ़रमाया : ओ इब्नुज़्ज़रक़ा! क्या तू मुझे क़त्ल करेगा या यह करेंगे? ख़ुदा की क़सम! तू झूठा है और कमीना है। यह कहकर आप तशरीफ़ ले आए। मरवान ने वलीद से कहा : तुम ने मेरी बात न मानी। ख़ुदा की क़सम! अब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तुम उन पर क़ाबू न पा सकोगे। यह बेहतरीन मौक़ा था कि तुम उनको क़त्ल कर देते। वलीद ने कहा : तुम पर अफ़सोस! तुम मुझे ऐसा मशवरा दे रहे हो जिसमें मेरे दीन की तबाही है। क्या मैं नवासए रसूल को सिर्फ़ इस वजह से क़त्ल कर देता कि उन्होंने यज़ीद की बैअ़त नहीं की। क़सम है रब्बे ज़ुल–जलाल की! अगर मुझे सारी दुनिया का माल व मता मिल जाए तो भी मैं उनके ख़ून से अपने हाथों को आलूदा हरगिज़ नहीं कर सकता। वल्लाह! मैं तो समझता हूं कि क़यामत के दिन जिस शख़्स से ख़ूने हुसैन के बारे में बाज़–पुर्स की जाएगी वह ख़ुदा के सामने ख़फ़ीफ़ुल– मीज़ान ठहरेगा। मरवान ने कहा : अगर तुम्हारी यही राय है तो ठीक है। यह उसने सिर्फ़ ज़ाहिर में कहा। वरना दिल से वह वलीद का दुश्मन बन गया।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६४ तारीख़ इब्न–ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ७६ शामे करबला सफ़ा २३)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जानते थे कि यज़ीद की बैअ़त से इन्कार उसके लिए इशतिआल का बाइस होगा। नाबकार जान का दुश्मन और ख़ून का प्यासा हो जाएगा। लेकिन इमाम की दियानत व तक़वा ने इजाज़त न दी कि अपनी जान की ख़ातिर ना–अहल के हाथ पर बैअ़त कर लें और मुसलमानों को तबाही और शरअ़ व अहकामे शरअ़ की बेहुरमती और दीन की मज़र्रत की परवाहन करें। यह इमाम जैसे जलीलुश्शान फ़र्ज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी तरह मुम्किन न था।

अगर इमाम हुसैन उस वक़्त यज़ीद की बैअ़त कर लेते तो वह आपकी बहुत क़द्र व मन्ज़िलत करता और आपकी आफ़ियत व राहत में कोई फ़र्क़ न आने देता। बल्कि दुनिया की बहुत सारी दौलत आपके क़दमों पर जमा कर देता। लेकिन इस्लाम का निज़ाम दरहम–बरहम हो जाता। यज़ीद की हर बदकारी के जवाज़ के लिए इमाम की बैअ़त सनद हो जाती। शरीअते इस्लामिया और मिल्लते हनफ़ीया का नक़्शा मिट जाता। शीओं को आंख खोल कर देख लेना चाहिए कि इमाम ने जान को ख़तरा में डाल दिया लेकिन तक़िय्या का तसव्वुर भी ख़ातिरे मुबारक पर न गुज़रा। अगर तक़िया जाइज़ होता तो इसके लिए उससे ज़्यादा ज़रूरत का और कौन–सा वक़्त हो सकता था?

बहरहाल, आप यज़ीद की बैअ़त से बराबर किनाराकशी एख़्तियार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमाते रहे। उसके लिए कभी तैयार नहीं हुए। शाम के वक़्त वलीद ने फिर इमाम के पास आदमी भेजा। आपने फ़रमाया कि इस वक़्त तो मैं नहीं आ सकता। सुबह होने दीजिए फिर देखेंगे क्या होता है ? वलीद ने इमाम की बात मान ली। आप उसी रात यानी २८ रज्जब सन् ६० हिजरी मुताबिक़ ४ मई सन् ६८१ ई० को अपने अहल व अयाल, बहनों, भांजों और अज़ीज़ व अक़ारिब के साथ मदीना मनव्वरा से मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो गए। अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर एक रात पहले मदीना मनव्वरा से मक्का मुकर्रमा रवाना हो चुके थे। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६६)

हज़रत इमाम हुसैन की मदीना तैयबा से रिहलत

हज़रत इमाम आली मक़ाम सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना मनव्वरह को छोड़ते वक़्त अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अनवर पर हाज़िर हुए होंगे और सलात व सलाम अर्ज़ करके रुख़सत की इजाज़त तलब की होगी। उस वक़्त आपकी क्या कैफ़ियत हुई होगी ? बिला शुब्हः दीदए ख़ूंबाज़ ने अश्के ग़म की बारिश की होगी। क़ल्बे हज़ीं सदमए जुदाई व फ़िराक़ से घायल हो रहा होगा। लबों पर यह अल्फ़ाज़ होंगे : कन्धों पर चढ़ाकर खिलाने वाले नाना जान! आग़ोशे रहमत व मुहब्बत में लेकर लोरियां देने वाले नानाजान! माथे, रुख़सार और लबों को चूमने वाले नाना! आज मेरा हाल देखो। मैं ग़मगीन व परेशान हूं, अश्कबार हूं, इसलिए कि आपका यह मुक़द्दस शहर छोड़ रहा हूं। वह शहर जो मुझे सबसे ज़्यादा अज़ीज़ और महबूब है। लेकिन मैं क्या करूं? मेरा यहां रहना दुशवार हो गया है। मैं जा रहा हूं मुझे इजाज़त दीजिए। इधर रौज़ए अनवर में नाज़ व निअम से पालने वाले नाना जान, जिन्होंने अपने नवासे हुसैन के लिए अपने लख़्ते जिगर फ़र्ज़न्द इब्राहीम को क़ुर्बान कर दिया था, उनकी क्या हालत हुई होगी? यह तसव्वुर दिलों को पाश–पाश कर देता है। यह दिन कैसा दिन था? सख़्त रंज व अलम का दिन था कि नवासए रसूल जिगर गोशए बतूल अपने नाना जान से जुदा हो रहे हैं। जुदा भी कैसे? हमेशा–हमेशा के लिए जुदा हो रहे हैं।

'साहिबे रौज़तुश्शुहदा' लिखते हैं कि इसके बाद हज़रत इमाम आलीए मक़ाम अपनी वालिदा माजिदा हज़रत ख़ातूने जन्नत सैय्यदतना फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा और अपने बिरादरे मुअज़्ज़म सैयदना इमाम हसन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़्यारत के लिए जन्नतुल–बकी में हाज़िरी दी। फिर अपने नाना जान से आख़िरी सलाम पेश करने के लिए रौज़ए मुक़दसा पर हाज़िरी दी। सलात व सलाम अर्ज़ करने के बाद आप पर नींद का ग़ल्बा तारी हुआ तो क्या देखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाज़िर हैं और मेरे सर को अपनी आग़ोशे रहमत में ले लिया। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलै क वसल्लम! मैं उम्मत की जफ़ाओं से तंग आकर और यज़ीद पलीद की बैअ़त न करने की वजह से आपका मुक़द्दस शहर मदीना छोड़ रहा हूं। मैं यह देख रहा हू कि दोबारा आपकी ज़्यारत नहीं कर सकूंगा। हुज़ूर रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ हुसैन! अन्क़रीब तू मेरे पास आ जाएगा और मैं देख रहा हू कि तू भूखा–प्यासा करबला की ज़मीन पर शहीद हो रहा है। ऐ मेरे हुसैन! सब्र करना और अपना काम पूरा करना। ज़्यादा देर नहीं गुज़रेगी कि तू भी अपने बाप, अपनी माँ और मेरे पास पहुंच कर हमारे साथ ख़्वाने बहिश्त पर बैठ कर ख़ालिक़ुल–इबाद की रहमतों से मालामाल होगा। इसके साथ ही इमाम हुसैन बेदार हो गए। आपको अपनी शहादत का यक़ीन हो गया। बाद अज़ां इसी शौक़े शहादत में आपने मक्क़ा मुअज़्ज़मा जाने का अ़ज़्म मुसम्मम कर लिया। अपने नानाजान को आख़री सलाम और अलविदा फ़रमाते हुए ४ शाबानुल–मुअज़्ज़म सन् ६० हिंजरी मुताबिक़ १० मई सन् ६८१ ई० बरोज़ जुमरात मअ़ अहल व अयाल इस आयते करीमा **फ़ ख़ र ज मिन्हा ख़ाइफ़ैं यतरक़्क़बु क़ा ल रब्बि नज्जिनी मिनल क़ौमिज़्ज़ालिमीन** पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवाना हो गए। रास्ते में एक मक़ाम पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात हुई। उन्होंने आपको मअ़ अहल व अयाल मदीना मुनव्वरा से जाते हुए देख कर पूछा : मैं आप पर फ़िदा हूं! आप–कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं? आपने फ़रमाया : फ़िलहाल तो मक्का जा रहा हूं। अब्दुल्लाह ने कहा : अल्लाह आपको ख़ैर व आफ़ियत से रखे और हमें आप पर फ़िदा करें। जब आप मक्का पहुंच जाएं तो कूफ़ा का इरादा हरगिज़ न फ़रमाएं। क्योंकि वह एक मन्हूस शहर है। वहीं आपके वालिद माजिद शहीद हुए और वहीं आपके बिरादरे मुअज़्ज़म हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को बे–यार व मददगार छोड़ दिया गया। उनपर नेज़े का वार किया गया। जान जाते–जाते बची। आप हरमे मुहतरम मक्का शरीफ़ ही में रहिए। आप अरब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के सरदार हैं। अहले हिजाज़ आपके बराबर किसी को नहीं समझते। हर तरफ़ से लोग आपके पास आएंगे। मेरे चचा और मामूं आप पर निसार हों। आप हरमे काबा को हरगिज़–हरगिज़ न छोड़िएगा। ख़ुदा की क़सम! वर्ना दुश्मनों! आप पर कोई आंच आई तो हम सब ग़ुलाम बना डाले जाएंगे। जब आप मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो यह आयत पढ़ी व लम्मा तवज्जह तिल्क़ाअ मद य न क़ा ल अ़सा रब्बी ऐंयहदियनी सवाअस्सबील।

(शामे क़रबला सफ़ा २७ 'तारीख़े तबरी' जिल्द पंजुम सफ़ा १६८ता १७७)

आपके मक्का मुकर्रमा पहुंचने की ख़बर सुनकर लोग जूक़–दर–जूक़ आपके पास आने लगे और ज़्यारत का शर्फ़ हासिल करने लगे। अब्दुल्लाह इब्न–जुबैर भी मक्का ही में थे। वह भी आपके पास आते जाते। अहले मक्का को आपके आने की ख़ुशी हुई थी। वह आपके दीदारे पुरअनवार से अपने दीदा व दिल को रौशन और मनव्वर करते हुए कह रहे थे –

मरहबा सरवरे आलम के पिसर आए हैं
सैय्यदा फ़ातिमा के लख़्ते जिगर आए हैं
नख़्ले बुस्ताने नुबुव्वत के समर आए हैं
जिनसे रौशन है जहां, वह क़मर आए हैं
वाह क़िस्मत! कि चिराग़े हरमैन आए हैं
ऐ मुसलमानों ! मुबारक ! कि हुसैन आए हैं

अहले कूफ़ा के ख़ुतूत और वफ़ूद की आमद

कूफ़ा हज़रत सैय्यदना अली कर्रमल्लाह वजहहू के वफ़ादार और मुहिब्बों का मरकज़ और गढ़ था। इसलिए आपने अपने अहदे ख़िलाफ़त में दारुल–ख़िलाफ़ा कूफ़ा को ही क़रार दिया था। लिहाज़ा आपके तमाम मुहिब्ब वहीं जाकर आबाद हो गए थे। यह लोग हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे–ख़िलाफ़त ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में तशरीफ़ आवरीए कूफ़ा की दरख़्वास्तें भेज चुके थे। मगर आपने साफ़ इन्कार कर दिया था। अब जबकि अहले कूफ़ा को हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल करना और इमामे आली मक़ाम का बैअ़ते यज़ीद से इन्कार करना मालूम हुआ तो कूफ़ा के तमाम शीआ़ सुलैमान बिन सर्दअल ख़ुज़ाई के मकान पर जमा हुए और हज़रत अमीर मुआविया के मरने का ज़िक्र करके सबने अल्लाह तआला का

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शुक्र अदा किया। फिर सुलैमान ने कहा : मुआविया का इन्तिकाल हो गया है और हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की बैअ़त से इन्कार कर दिया है और मक्का चले गए हैं। तुम लोग उनके और उनके बाप के शीआ हो। पस तुम ख़ूब जान लो कि अगर तुम उनके मददगार बन सकते हो और उनके दुश्मनों से जिहाद कर सकते हो तो उनको लिखो। और अगर तुम्हें अपनी कमज़ोरी और बुज़दिली का अन्देशा हो तो उनको धोखा न दो। सबने कहा : हम उनको धोखा न देंगे, बल्कि हम उनके दुश्मनों से जंग करेंगे। उनपर अपनी जानें निसार करेंगे। सुलैमान ने कहा : फिर लिखो। तो उन्होंने आप की तरफ़ ख़त लिखा।

(तारीख़े तबरी–जिल्द पंजुम सफ़ा १७७ शामे करबला सफ़ा २६)

ख़त का मज़मून यह था :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

हुसैन बिन अली को सुलैमान बिन सर्द खुज़ाई, सुहैब बिन लजबा, रिफ़ाआ बिन शद्दाद, हबीब बिन मज़ाहिर और कूफ़ा के तमाम शीआ मोमिनीन की तरफ़ से सलाम अलैक। बाद हम्द व सलात। अल्लाह आप पर सलामती नाज़िल फ़रमाए। बाद, इसका शुक्र है कि अल्लाह तआला ने आपके सरकश व गुमराह दुशमन को ख़ाक में मिला दिया। जिसने उम्मत का निज़ाम दरहम–बरहम कर दिया। लोगों की मरज़ी के ख़िलाफ़ उन पर हुकूमत की। और उम्मत के नेक लोगों को शही किया और शर–पसंदों को रहने दिया। हम लोगों पर कोई इमाम नहीं है। आप तशरीफ़ लाइए कि ख़ुदा तआला आपकी बरकत से हमें हक़ की हिमायत नसीब फ़रमाए। दमिश्क़ का गर्वनर नोमान बिन बशीर सरकारी महल में है मगर हम उसके साथ जुमा की नमाज़ में शरीक नहीं होते और न उसके साथ ईदगाह जाते हैं। जब हमें मालूम हो जाएगा कि आप तशरीफ़ ला रहे हैं तो हम उसको यहां से निकाल कर मुल्के शाम की हुदूद में ढकेल देंगे। वस्सलाम व रहमतुल्लाह अलैक। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १७८)

यह अहले कूफ़ा की जानिब से पहला ख़त था। जो अब्दुल्लाह बिन सबा हमदानी और अब्दुल्लाह बिन वाल के हाथों रवाना किया गया। यह दोनों बहुत तेज़ी-से सफ़र करते हुए १० रमज़ानुल मुबारक को मक्का पहुंचे और ख़त हज़रत इमाम हुसैन के हवाले कर दिया।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १७८)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले कूफ़ा ज़्यादा सब्र न कर सके। उस ख़त के भेजने के दो रोज़ बाद ५३ अर्ज़ियां और तैयार हो गई जो एक, दो, तीन, और चार आदमियों के दस्तख़त से थीं। जो हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में इरसाल की गई। उसके बाद फिर कुछ मख़सूस लोगों की अर्ज़ियां आपकी ख़िदमत में रवाना की गईं। एक रिवायत के मुताबिक़ तक़रीबन डेढ़ सौ (१५०) ख़ुतूत इमाम आली मक़ाम की बारगाह में इरसाल किए गए। सब से आख़िरी ख़त जो हानी बिन हानी सबीई और सईद बिन अब्दुल्लाह हन्फ़ी की तरफ़ से पहुंचा था। उसके बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा वालों को उन तमाम ख़ुतूत का जवाब दिया कि तुम लोगों के बहुत–से ख़ुतूत हम तक पहुंचे जिनके मज़ामीन से हम मुत्तला हुए। तुम लोगों के जज़्बात और मुहब्बत का लिहाज़ करते हुए नाचार हमने अपने भाई, चचा के बेटे हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अक़ील को तहक़ीक़े हाल के लिए कूफ़ा भेजने का फ़ैसला किया है। अगर उन्होंने कूफ़ा के हालात के बारे में लिखा कि यहां के हालात साज़गार हैं तो इन्शाअल्लाह मैं भी तुम लोगों के पास जल्द चला आऊंगा। ('तारीख़े तबरी' जिल्द पंजुम सफ़ा १७६)

हज़रत सदरुल–अफ़ाज़िल मौलाना सैयद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी अलैहिर्रहमः तहरीर फ़रमाते हैं कि अगरचे इमाम की शहादत की ख़बर मशहूर थी। कूफ़ियों की बेवफ़ाई का पहले भी तजरबा हो चुका था। मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उसकी हुकूमत व सलतनत दीन के लिए ख़तरा थी। उसकी वजह से उसकी बैअ़त ना रवा थी। और वह तरह–तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उसकी बैअ़त करें। इन हालात में कूफ़ियों का बपासे मिल्लत यज़ीद की बैअ़त से दस्तकशी करना और हज़रत इमाम से तालिबे बैअ़त होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उनकी दरख़्वास्त कुबूल फ़रमाएं। जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक़ की बैअ़त पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तिहक़ाक़े अहल से दरख़्वास्ते बैअ़त करे तो, अगर उनकी इसतिद्आ क़ुबूल न करे तो उसके यह माना होते हैं कि वह उस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है। इमाम अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़ुबूल न फ़रमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के उस मुतालबा का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपै हुए मगर इमाम बैअ़त के लिए राज़ी न हुए। बईं वजह हमें यज़ीद के ज़ुल्म व तशद्दुद से मजबूर होकर उसकी बैअ़त करनी पड़ी।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उन पर जानें फ़िदा करने के लिए हाज़िर थे। यह मसअला ऐसा दरपेश आया जिसका हल बजुज़ इसके और कुछ न था कि हज़रत इमाम उनकी दावत पर लब्बैक फ़रमाएं। अगरचे अकाबिर सहाबा–ए–किराम हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू–सईद, हज़रत अबू वाक़िद लैशी वग़ैरहुम हज़रते इमाम की उस राय से मुत्तफ़िक़ न थे और उन्हें कूफ़ियों के अहद व मीसाक़ का एतबार नहीं था।

इमाम की मुहब्बत और शहादते इमाम की शोहरत उन सबके दिलों में इख़्तिलाज पैदा कर रही थी। गोया कि यह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का वक़्त यही है और इसी सफ़र में यह मरहला दरपेश होगा। लेकिन अन्देशा माने था। हज़रत इमाम के सामने मसअला की यह सूरत दरपेश थी कि इसतिदआ को रोक1 के लिए उज़्रे शरई क्या है? इध र ऐसे जलीलुल–क़द्र सहाबा के शदीद इसरार का लिहाज़।

उधर अह्ले कूफ़ा की इसतिदआ रद्द फ़रमाने के लिए कोई उज़्रे शरई न होना – हज़रत इमाम के लिए निहायत पेचीदा मसअला था जिसका हल बजुज़ इसके कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए। अगर कूफ़ियों ने बद–अहदी व बे–वफ़ाई की तो उज़्रे शरई मिल जाएगा। और अगर वह अपने अहद पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी। (सवानहे करबला सफ़ा ८१)

❖❖❖

हज़रत इमाम मुस्लिम की कूफ़ा रवानगी

शाह ने अपनी नियाबत के लिए उनको चुना
अह्ले कूफ़ा को यह खुद शाह ने नामा लिखा
आप लोगों की तलब पर उन्हें हमने भेजा
उनकी सब लोग इआनत व हिमायत करना
चल दिए मक्का से उस नामे को लेकर मुस्लिम
आख़िरश पहुंच गए कूफ़ा के अन्दर मुस्लिम

इमाम मुस्लिम बहुक्मे इमामे आली मक़ाम कूफ़ा रवाना हुए तो अपने दो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कमसिन कम उम्र साहबज़ादों–मुहम्मद और इब्राहीम को भी साथ लेकर कूफ़ा पहुंचे। और मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर क़याम फ़रमाया। आपकी तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुनकर शीआने अली जूक़–दर–जूक़ आपकी ज़्यारत के लिए आए और बारह (१२) हज़ार तक, और एक रिवायत के मुताबिक़ चालीस (४०) हज़ार लोगों ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअ़त की।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अहले कूफ़ा के जज़्बात,अक़ीदत व मुहब्बत को देखा तो इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में एक अरीज़ा लिखा जिसमें यहां के हालात की इत्तिला दी और इलतिमास की कि ज़रूरत है कि आप जल्द तशरीफ़ लाएं ताकि बन्दगाने ख़ुदा नापाक के शर्र व फ़साद से महफ़ूज़ रहें और दीने हक़ की ताईद हो।

अह्ले कूफ़ा का यह जोश और अक़ीदत व मुहब्बत देख कर हज़रत नोमान बिन बशीर सहाबीए रसूल ने जो उस वक़्त कूफ़ा के गर्वनर थे, अह्ले कूफ़ा को मुत्तला किया कि यह बैअ़त यज़ीद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ है और वह इस बैअ़त पर भड़केगा। लेकिन इतनी इत्तिला देकर ज़ाबता की कारवाई पूरी करके हज़रत नोमान बिन बशीर ख़ामोश हो बैठे और इस मामला में किसी क़िस्म की दस्त–अन्दाज़ी न की।

यज़ीद को इत्तिला : हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु के मुहिब्बों से नोमान बिन बशीर का ख़िताब पूरा हुआ तो अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी, जो बनी–उमैया के हवाख़्वाहों में से था, उठ खड़ा हुआ और कहा : यह जो आप देख रहे हैं सख़्तगीरी के बग़ैर इस्लाह नहीं हो सकती। अपने और अपने दुशमन के दर्मियान आपने जो राय क़ाइम की है यह कमज़ोरों की राय है। हज़रत नोमान बिन बशीर ने फ़रमाया : ख़ुदाए तआला की इताअत व फ़रमांबरदारी के साथ मेरा शुमार कमज़ोरों में हो यह इस बात से बेहतर है कि उसकी नाफ़रमानी के साथ मेरा शुमार इज़्ज़त वालों में हो। यह फ़रमाकर आपने अपना ख़िताब पूरा फ़रमा दिया। अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी ने वहां से उठकर यज़ीद को ख़त लिख दिया कि मुस्लिम बिन अक़ील कूफ़ा आ गए हैं। शीओं ने हुसैन बिन अली के नाम पर उनसे बैअ़त कर ली है। अगर तुम्हें कूफ़ा चाहिए तो किसी ज़बर्दस्त आदमी को हाकिमे कूफ़ा बना कर भेजो जो तुम्हारे हुक्म को यहां जारी करे। नोमान बिन बशीर या तो कमज़ोर हैं या कमज़ोरी दिखा रहे हैं।

('तारीख़े तबरी' जिल्द पंजुम सफ़ा १८२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इस ख़त के पहुंचते ही यज़ीद सख़्त ग़ज़बनाक हुआ और उसने अपने ख़ास मुशीरों से मुशवरा किया। उन्होंने कहा कि फ़ौरन किसी सख़्त तरीन आदमी को कूफ़ा का गवर्नर बनाया जाए जो किसी लिहाज़ की परवाह न करे और वह शख़्स उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद है। चुनांचे यज़ीद ने हज़रत नौमान बिन बशीर (गवर्नरे कूफ़ा) को माज़ूल कर दिया। उनकी जगह उबैदुल्लाह बिन–ज़्याद जो उन दिनों बसरा का गवर्नर था, उसे कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। और हुक्म दिया कि वह फ़ौरन कूफ़ा पहुंच जाए। मुस्लिम बिन अक़ील को गिरफ़्तार करके मुल्के बदर कर दे। अगर वह इसमें मज़ाहमत करें तो क़त्ल कर दे। बैअ़त करने वालों को डराए और धमकाए कि वह बाज़ आ जाए वरना उनको भी ख़तम कर दे और हुसैन आएं तो उनसे भी मेरी बैअ़त तलब करे अगर वह बैअ़त कर लें तो बेहतर वरना उनको भी क़त्ल कर दे।

इब्न ज़्याद का कूफ़ा आना

यज़ीद का हुक्म मिलते ही उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद ने अपने भाई उस्मान बिन–ज़्याद को अपना जानशीन मुक़र्रर किया। दूसरे दिन मुस्लिम बिन उमरू बाहिली व शरीक बिन आवर हारसी और तमाम ख़ुद्दाम और अहल व अयाल को साथ लेकर बसरा से कूफ़ा रवाना हुआ। क़ादसीया पहुंच कर उसने अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ा और बराहे फ़रेब हिजाज़ी लिबास पहनकर ऊंट पर सवार हुआ और बीस आदमियों को अपने हमराह लेकर हिजाज़ी रास्ते से मग़रिब व इशा के दर्मियानी वक़्त कूफ़ा में दाख़िल हुआ। इस मक्र व फ़रेब से उसका मतलब यह था कि इस वक़्त कूफ़ियों में बहुत जोश है। यज़ीद के ख़िलाफ़ एक लहर दौड़ी है। इसलिए ऐसे तौर से दाख़िल होना चाहिए कि लोग पहचान न पाएं कि वह इब्न–ज़्याद है। बल्कि यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए ताकि वह बे ख़तर व अन्देशा अमन व आफ़ियत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ। अहले कूफ़ा जिनको हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का शिद्दत से इन्तिज़ार था उन्होंने शब की तारीकी में हिजाज़ी लिबास और हिजाज़ी राह से आते देख कर धोखा खा गए और समझे कि इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आए।

सब ने नारा–हाए मुसर्रत बुलन्द किया और **मरहबा बिक या इब्न**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रसूलिल्लाह और क़दिम त खै र मक़दमिन कहते हुए उसके आगे पीछे चले। शोर सुनकर और लोग भी घरों से बाहर आ गए और एक अच्छे ख़ासे जुलूस की शक्ल बन गई। इब्न–ज़्याद बद–निहाद दिल में जलता और कुढ़ता हुआ चुपचाप चलता रहा। उसने अच्छी तरह समझ लिया कि यह लोग इमाम के सख़्त मुन्तज़िर हैं और उनके दिल किस क़दर उनकी तरफ़ माइल हैं। जब मज्मा ज़्यादा हो गया और नौबत यहां तक पहुंची कि रास्ता चलने में रुकावट पैदा होने लगी तो मुस्लिम बिन उमरू बाहली जो इब्न–ज़्याद के साथ आया था उसने पुकार कर कहा रास्ता छोड़ दो। यह मेरा अमीर उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद है। इन अल्फ़ाज़ को सुनकर लोगों को बेइन्तिहा रंज व क़ल्क़ हुआ और लोग अफ़सोस करते हुए अपने घरों को वापस हो गए। इब्न–ज़्याद सिर्फ़ दस या बीस आदमियों के साथ गवर्नर हाउस में दाख़िल हुआ। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १८४)

इब्न-ज़्याद का ख़िताब

उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद ने रात गुज़ार कर सुबह लोगों को जमा किया और लोगों के सामने यह तक़रीर की। अमीरुल–मोमिनीन यज़ीद ने मुझे कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर किया है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं मज़लूम के साथ इन्साफ़ करूं और मुती व फ़रमांबरदार के साथ एहसान करूं और नाफ़रमानों के साथ सख़्ती करूं। मैं इस हुक्म की सख़्ती से पाबन्दी करूंगा जो शख़्स मुती व फ़रमांबरदार है उसके साथ शफ़क़त से पेश आऊंगा और जो शख़्स नाफ़रमान है उसके लिए मेरा चाबुक और मेरी तलवार है। तुम्हें चाहिए कि तुम अपनी ख़ैर मनाओ और अपने ऊपर रहम करो।

इस तक़रीर के बाद उसने मशाहीरे कूफ़ा को गिरफ़्तार किया और उन सबसे कहा कि तहरीरी ज़मानत दो कि तुम और तुम्हारे क़बीले के लोग किसी मुख़ालिफ़ को अपने यहां पनाह नहीं देंगे, और न किसी क़िस्म की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियों में हिस्सा लेंगे। किसी ने अगर मुख़ालिफ़ को पनाह दे रखी है तो वह उसको पेश करेगा। जो लिख कर देगा उस पर पाबन्दी करेगा, वह बरी हो जाएगा। और जो ऐसा न करेगा, उसका माल व जान दोनों हम पर हलाल होंगे। हम उसको क़त्ल करके उसी के दरवाज़े पर लटका देंगे। उसके तमाम मुतअल्लिक़ीन को भी न छोड़ेंगे। इब्न–ज़्याद की इस कार्रवाई से अहले कूफ़ा घबरा गए और ख़ौफ़ज़दा हो गए और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनके ख़्यालात में तब्दीली आने लगी। हालात के पेशे नज़र हज़रत इमाम मुस्लिम ने मुख़्तार बिन उबैद के यहां रहना मुनासिब न समझा और रात की तारीकी में मुहिब्बे अहले–बैत हानी बिन उरवा के मकान पर मुन्तक़िल हो गए। जो क़बीलए बनी मुज़हिज के सरदार थे। हानी ने एक महफ़ूज़ कमरे में आपको छुपा के रखा। सिवाए चन्द मख़सूस और मोतमद लोगों के दूसरों को इस राज़ से मुत्तला न किया।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १८४)

हज़रत इमाम मुस्लिम की तलाश और इब्न-ज़्याद का जासूस

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हानी के मकान पर क़याम फ़रमाया तो आपके मोतक़िदीन वहां पर भी ख़ुफ़िया तौर पर आते जाते थे। और बैअ़त का सिलसिला भी बराबर जारी था। बाज़ रिवायतों मे आता है कि चालीस हज़ार या बीस हज़ार अफ़राद ने बैअ़त कर ली थी। इधर इब्न–ज़्याद को इस बात का इल्म हो चुका था कि इमाम मुस्लिम बिन अक़ील कूफ़ा ही में हैं। उसने उनकी क़यामगाह का पता लगाने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। बिल–आख़िर उसने अपने शामी ग़ुलाम माक़ल को इस काम पर मामूर किया और उसको तीन हज़ार दिरहम देकर सुराग़ लगाने के तरीक़े समझा दिए। कहा कि किसी भी तरह से मुस्लिम बिन अक़ील का सुराग़ लगाओ।

ग़ुलाम सीधा जामा मस्जिद पहुंचा। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त एक मुहिब्बे अह्ले–बैत मुस्लिम बिन औसजा असदी मस्जिद के गोशा में नमाज़ पढ़ रहे थे। माक़ल देर तक उनको देखता रहा। जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो माक़ल उनके पास गया और कहा : मैं एक शामी ग़ुलाम हूं और मुहिब्बे अह्ले–बैत हूं। मेरे पास तीन हज़ार दिरहम हैं। मैंने सुना है कि ख़ानदाने रिसालत के एक बुज़ुर्ग कूफ़ा तशरीफ़ लाए हैं और लोगों से फ़र्ज़न्दे रसूल इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअ़त लेते हैं। मैं उनकी ख़िदमत में यह रक़म बतौरे नज़रानए अक़ीदत पेश करना चाहता हूं ताकि वह इस कारे ख़ैर में सर्फ़ करें। लेकिन मुझे मालूम नहीं है कि वह बुज़ुर्ग कहां ठहरे हुए हैं। मुस्लिम बिन औसजा ने कहा मस्जिद में और लोग भी थे। तुमने उन लोगों से क्यों नहीं पूछा, मुझसे क्यों कह रहे हो? ग़ुलाम ने कहा : आपके चेहरे पर ख़ैर व बरकत के आसार बता रहे हैं कि आप ज़रूर अह्ले–बैते

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रसूल के दोस्तों में से हैं। इसलिए मैं ने आपसे पूछा है। ख़ुदारा! आप मुझे इस सआदत से महरूम न करें और उनका पता ज़रूर बता दें। मुस्लिम बिन औसजा असदी उसके फ़रेब में आ गए। कहा : तुमने सही पहचाना। मैं भी अहले—बैत का मुहिब्ब हूं और मेरा नाम मुस्लिम बिन औसजा है। फिर उससे अहद व पैमान लेकर हज़रत इमाम मुस्लिम बिन अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु के पास ले गए और उसकी अक़ीदतमन्दी की ख़ुद भी तौसीक़ कर दी। उसने हज़रत इमाम मुस्लिम के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की और तीन हज़ार दिरहम आपकी ख़िदमत में पेश कर दिया। आपने यह रक़म अबू सुमामा साइदी को दे दी। बैअ़त के बाद वह ग़ुलाम रोज़ाना आपकी ख़िदमत में सबसे अव्वल आता और सब के बाद जाता। जो कुछ देखता सुनता रात तक उसकी पूरी रिपोर्ट इब्न—ज़्याद तक पहुंचा देता।

हानी बिन उरवा कूफ़ा में एक मुक़्तदिर शख़्सीयत थे। इब्न—ज़्याद के साथ उनके पहले से तअल्लुक़ात अच्छे थे। हज़रत इमाम मुस्लि' के आने से पहले वह रोज़ाना इब्न—ज़्याद के पास जाया करते थे। लेकिन जिस दिन हज़रत मुस्लिम उनके यहां आए थे उस दिन हानी बिन उरवा ने बीमारी का बहाना करके इब्न—ज़्याद के पास आना जाना बन्द कर दिया। उधर इब्न—ज़्याद को तमाम हालात मालूम हो चुके थे। अपने ग़ुलाम माक़ल की बात पर मुकम्मल यक़ीन हो गया तो एक दिन उसने मुहम्मद बिन अशअस और असमा बिन ख़ारिजा और उमरू बिन हज्जाज ज़ुबैदी को हुक्म दिया कि वह इसी वक़्त जाकर हानी बिन उरवा को मेरे पास ले आए। चुनांचे वह गए और हानी बिन उरवा को इब्न—ज़्याद के हुक्म की इत्तिला दी। हानी मकान के अन्दर गए और हज़रत मुस्लिम से बात—चीत की और तैयार होकर आ गए और उनके साथ चले गए। दारुल—इमारत के अन्दर पहुंचकर इब्न—ज़्याद को सलाम किया तो उसने जवाब नहीं दिया। कुछ देर खड़े रहे। उसके बाद इब्न—ज़्याद ने बड़े ग़ुस्से में कहा : हानी तुम अमीरुल मोमिनीन यज़ीद के ख़िलाफ़ अपने घर को साज़िशों को अड्डा बनाए हुए हो। मुस्लिम बिन अक़ील को अपने घर में छुपा कर उनकी हिफ़ाज़त के लिए हथियार ख़रीदते हो। लोगों से जंग करने पर बैअ़त लेते हो और यह समझते हो कि यह सारी बातें मुझसे पोशीदा रहेंगी। हानी ने कहा कि यह बिल्कुल ग़लत है। इब्ने ज़्याद ने उसी वक़्त उस जासूस माक़ल को तलब किया। वह आ गया तो कहा : इसको पहचानते हो?

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

माक़ल को देखकर हानी के होश व हवास उड़ गए। अब वह समझे कि यह ज़ालिम अक़ीदत व मुहब्बत के परदे में दुशमनी और जासूसी कर रहा था। उस ऐनी शाहिद के होते हुए इन्कार की गुन्ज़ाइश न थी। इसलिए उन्होंने इक़रार करके साफ़ ब्यान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम! मैंने मुस्लिम को बुलाया नहीं और न उन्होंने मुझे इत्तिला दी थी कि मैं तुम्हारे घर आ रहा हूं। अचानक जब वह मेरे दरवाज़े पर आ गए तो मैं इन्कार नहीं कर सका। इस तरह मैंने उन्हें मेहमान बना लिया। और ख़ानदाने रिसालत का एक फ़र्द होने के नाते उनको अपने घर में पनाह दे दी। अब मैं आपसे पक्का वादा करता हूं कि मैं उन्हें अंपने घर से निकाल दूंगा। आप मुझे इतनी मोहलत दीजिए कि मैं जाकर उनसे कह आऊं कि आप मेरे घर से निकल कर जहां चाहें चले जाएं। ताकि मैं पनाह देने की ज़िम्मेदारी से बरी हो जाऊं। इब्न–ज़्याद ने कहा: ख़ुदा की क़सम! जब तक तुम उन्हें मेरे हवाले करने का अहद व पैमान नहीं करते मैं तुम्हें इस जगह से जाने की इजाज़त नहीं दे सकता। हानी ने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैं अपने मेहमान को क़त्ल करने के लिए तुम्हारे हवाले कर दूं, ऐसा हरगिज़–हरगिज़ नहीं हो सकता। इब्ने ज़्याद ने कहा : तुम्हें हवाले करना होगा। हानी ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं मुस्लिम को तुम्हारे हवाले हरगिज़ नहीं करूंगा। यहां तक कि बात और बढ़ती। तो इब्न–ज़्याद ने कहा : तुम उन्हें सुपुर्द नहीं करोगे तो हम तुम्हारा सर क़लम कर देंगे। हानी ने कहा : अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे इर्द गिर्द तलवारें चमकेंगी। यह सुनकर इब्न–ज़्याद आग बगोला हो गया और कहा : अच्छा! तुम मुझे धमकी देते हो। फिर इब्न–ज़्याद ने हानी के सर और मुंह पर डण्डे मारना शुरू किया। यहां तक कि उनकी नाक फट गई। अबरू की हड्डी टूट गई। पूरा कपड़ा ख़ून में लत–पत हो गया। हानी ने अपने क़रीब खड़े हुए एक सिपाही की तलवार के कुब्ज़े पर हाथ डाला मगर उसने ज़ोर से छुड़ा लिया। इब्न–ज़्याद ने कहा : अब तो तूने अपने ख़ून को भी हमारे लिए मबाह कर दिया। फिर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे खींचकर ले जाओ और एक कमरे में बन्द कर के पहरा बिठा दो। असमा बिन ख़ारिजा उठे और इब्न–ज़्याद से कहा : ओ दग़ाबाज़! इनको छोड़ दे। तूंने हमें हुक्म दिया था कि हम उन्हें तेरे पास लाएं। जब हम ले आए तो तूने उनका मुंह तोड़ दिया और उनका ख़ून बहाया। उनके क़त्ल की धमकी दे रहा है। इब्न–ज़्याद ने कहा : इसको भी पकड़ो और मारो। चुनांचे सिपाहियों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ने उसको भी बहुत मारा पीटा और क़ैद कर दिया। मुहम्मद बिन अशअस ने कहा : हम तो अमीर की राय पर राज़ी हैं। अमीर जो कुछ भी करे हम उस पर राज़ी और खुश हैं। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६१)

शहर में यह अफ़वाह फैल गई कि हानी क़त्ल कर दिए गए हैं। इस **अफ़वाह** को सुनकर उमरू बिन हज्जाज कई हज़ार सिपाहियों को लेकर **इन्तिक़ाम** का नारा लगाते हुए आए और गवर्नर हाऊस को घेर लिया। **पुकार कर** कहा : मैं उमरू बिन हज्जाज हूं और मेरे साथ क़बीलए मुज्हिज के **हज़ारों** शहसवार हैं। हमने कभी इताअत से इन्हराफ़ नहीं किया और न **जमाअत** से अलाहदगी एख़्तियार की। फिर भी हमारे सरदार को क़त्ल कर **दिया** गया है। हम उसका इन्तिक़ाम लिए बग़ैर नहीं रहेंगे। फिर सारे मजमा ने इन्तिक़ाम–इन्तिक़ाम! का फ़लक शिगाफ़ नारा लगाया।

इब्ने ज़्याद इस नाज़ुक सूरते हाल को देखकर बहुत घबराया। उसने क़ाज़ी शुरैह से कहा : आप पहले हानी को अपने आंखों से देख लीजिए। फिर उस क़बीला वालों से कहिए कि हानी ज़िन्दा हैं, उनके क़त्ल की अफ़वाह ग़लत है।

क़ाज़ी शुरैह हानी को देखने गए। हानी अपने क़बीला के लोगों का शोर व हंगामा सुन रहे थें। उन्होंने क़ाज़ी साहब को देखकर कहा : यह आवाज़ मेरे क़बीला के लोगों की है। आप उनसे मेरा हाल बताकर सिर्फ़ इतना कह दें कि अगर दस (१०) आदमी भी इस वक़्त अन्दर आ जाएं तो मैं यक़ीनन छूट जाऊंगा। जब क़ाज़ी साहब बाहर निकले तो इब्न–ज़्याद ने अपने एक मुशीर और जासूस हमीद बिन बक्र अहमरी को उनके साथ कर दिया। इसलिए मजबूरन क़ाज़ी साहब ने हानी का पूरा हाल उनके क़बीला वालों को नहीं बताया बल्कि सिर्फ़ इतना कह दिया कि वह ज़िन्दा हैं और उनके क़त्ल की जो ख़बर तुम्हें पहुंची है, वह ग़लत है। क़ाज़ी साहब की शहादत सुनकर उन लोगों ने कहा : अगर वह क़त्ल नहीं किए गए तो ख़ुदा का शुक्र है। और सब मुन्तशिर हो गए। (तारीख़े तबरी–जिल्द पंजुम सफ़ा १६२)

गवर्नर हाऊस का घेराव

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु हानी बिन उरवा की गिरफ़तारी और उन पर हमला की ख़बर सुनकर बरआमद हुए और अपने मुतवस्सिलीन को निदा की। जूक़–दर–जूक़ आदमी आने शुरू हुए और चालीस हज़ार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

की जमईयत ने आपके साथ क़स्रे शाही का इहाता कर लिया। सूरत बन आई थी। हमला करने की देर थी। अगर हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु हमला करने का हुक्म देते तो उसी वक़्त क़िला फ़तह हो जाता। इब्न-ज़्याद और उसके हमराही हज़रत मुस्लिम के हाथ गिरफ़्तार होते। फिर यही लशकर सैलाब की तरह उमड़कर शामियों को तख़्त व ताराज कर डालता और यज़ीद को जान बचाने के लिए कोई राह न मिलती। नक़्शा तो यही जमा था। मगर कारे बदस्त कारकुनाने क़दरस्त। बन्दों का सोचा क्या होता है ? हज़रत मुस्लिम ने क़िला का इहाता तो कर लिया और बावजूदे कि कूफ़ियों की बद-अहदी और इब्न-ज़्याद की फ़रेबकारी और यज़ीद की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आपने अपने लशकर को हमला करने का हुक्म न दिया। एक बादशाहे दाद-गुस्तर के नाइब की हैसियत से आपने इन्तिज़ार फ़रमाया कि पहले गुफ़्तगू से क़तए हुज्जत कर लिया जाए। सुलह की सूरत पैदा हो सके तो मुसलमानों में ख़ूंरेज़ी न होने दी जाए। आप अपने इस पाक इरादा से इन्तिज़ार में रहे और अपनी इहतियात को हाथ से न जाने दिया। दुशमन ने उस वक़्फ़ा का फ़ायदा उठाया और कूफ़ा के रुउसा व अमाइदीन जिनको इब्न-ज़्याद ने पहले से क़िला में बन्द कर रखा था उन्हें मजबूर किया कि वह अपने रिश्तादारों और ज़ेरे असर लोगों को मजबूर कर के हज़रत मुस्लिम की जमाअत से अलाहदा कर दें। यह लोग इब्न-ज़्याद के हाथ में क़ैद थे और जानते थे कि अगर इब्न-ज़्याद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फ़तह होने तक उनका ख़ातमा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वह घबरा उठे और उन्होंने दीवारे क़िला पर चढ़कर अपने मुतअल्लिक़ीन और मुतवस्सिलीन से गुफ़्तगू की और उन्हें हज़रत मुस्लिम की रिफ़ाक़त छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जा का ज़ोर दिया। बताया कि अलावा इस बात के कि हुकूमत तुम्हारी दुशमन हो जाएगी। यज़ीद नापाक तीनत तुम्हारे बच्चा-बच्चा को क़त्ल कर डालेगा। तुम्हारे माल लुटवा देगा। तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाएंगे। यह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़्याद के हाथ में क़िला में क़ैद हैं, क़िला के अन्दर मारे जाएंगे। अपने अन्जाम पर नज़र डालो। हमारे हाल पर रहम करो और अपने घर चले जाओ।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यह हीला कामयाब हुआ और इमाम मुस्लिम का लशकर मुन्तशिर होने लगा। यहां तक कि ता–बवक़्ते शाम हज़रत मुस्लिम ने मस्जिदे कूफ़ा में जिस वक़्त मग़रिब की नमाज़ शुरू की तो आपके साथ पांच सौ आदमी थे। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपके साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़हार और इल्तिजाओं के तूमार से जिस अज़ीज़ मेहमान को बुलाया था इसके साथ यह वफ़ा है कि वह तन्हा हैं और उनकी रिफ़ाक़त के लिए कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफ़ा वालों ने हज़रत मुस्लिम को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमैयत से क़ता–तअल्लुक़ किया और उन्हें ज़रा परवा न हुई कि क़यामत तक तमाम आलम में उनकी बेहिम्मती का शुहरा रहेगा। इस बुज़दिलाना बे–मुरव्वती और नामर्दी से वह रुस्वाए आलम होंगे। हज़रत मुस्लिम इस ग़ुरबत व मुसाफ़िरत में तन्हा रह गए। किधर जाएं, कहां क़याम करें? हैरत है कूफ़ा के तमाम मेहमानख़ानों के दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल थे जहां ऐसे मुहतरम मेहमान को मदऊ करने के लिए रस्ल व रसाइल का तांता बांध दिया गया था। मासूम बच्चे साथ हैं। कहां उन्हें लिटाएं, कहां सुलाएं। कूफ़ा के वसी ख़ित्ता में दो–चार गज़ ज़मीन हज़रत मुस्लिम के शब गुज़ारने के लिए नज़र नहीं आती थी। उस वक़्त हज़रत मुस्लिम को इमाम हुसैन की याद आती है और दिल तड़पा देती है। वह सोचते हैं कि मैं ने इमाम की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ़ आवरी की इल्तिजा की है और इस बद–अहद क़ौम के इख़लास व अक़ीदत का एक दिलकश नक़्शा इमाम आली मक़ाम के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवरी पर ज़ोर दिया है। यक़ीनन हज़रत इमाम मेरी इल्तिजा रद्द न फ़रमाएंगें और यहां के हालात से मुतमइन होकर मअ्अहल व अयाल चल पड़े होंगे। यहां उन्हें क्या मसाइब पहुंचेंगे और चमने ज़ुहरा के जन्नती फूलों को इस बेमुहरी की तपिश कैसी गज़न्द पहुंचाएगी।

यह ग़म अलग दिल को घायल कर रहा था। अपनी तहरीर पर शर्मिन्दगी व इन्फ़आल और हज़रत इमाम के लिए ख़तरात अलाहदा परेशान कर रहे थे। मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी।

(सवानेह करबला सफ़ा ८५)

हज़रत मुस्लिम इन तसव्वुरात में घिरे हुए इन्तिहाई परेशानी के आलम में इधर–उधर फिरने लगे। उनकी समझ में न आता था कि अब कहां जाएं। फिरते–फिरते वह क़बीलए किन्दा की औरत तौआ के मकान पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पहुंचे। वह अशअस बिन कैस की लौंडी थी जिसे अशअस ने आज़ाद कर दिया था। आज़ादी के बाद एक शख़्स उसैद हज़रमी ने उस से निकाह कर लिया जिससे एक लड़का बिलाल पैदा हुआ। उस वक़्त बिलाल कहीं बाहर गया हुआ था। तौआ उसका इन्तिज़ार कर रही थी। हज़रत इमाम मुस्लिम ने आगे बढ़कर उसे सलाम किया और पानी मांगा। उसने पानी लाकर दिया। आपने पानी पिया। वह बरतन रख कर फिर बाहर आई तो देखा आप वहीं बैठे हुए हैं। उसने कहा : आप तो पानी पी चुके हैं। अब अपने घर जाइए। आपने कोई जवाब न दिया और अपनी जगह बैठे रहे। उसने तीन बार यही कहा। फिर भी आप ख़ामोश रहे तो उसने कहा : आपका रात के वक़्त मेरे दरवाज़े पर बैठना मुनासिब नहीं है। मैं कहती हूं आप अपने घर जाइए। तो फिर आपने फ़रमाया : ऐ नेकबख़्त! मेरा इस शहर में कोई घर नहीं। मैं एक मुसाफ़िर हूं और सख़्त मुसीबत में मुब्तला हूं। ऐसे में क्या तुम मेरे साथ कोई नेकी कर सकती हो? शायद मैं किसी वक़्त उसका बदला दे सकूं। वरना अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें उसका अज्र देंगे। औरत ने हैरान होकर पूछा : आप कौन हैं? किस क़िस्म की नेकी चाहते हैं? फ़रमाया : मैं मुस्लिम बिन अक़ील हूं। कूफ़ा वालों ने मेरे साथ ग़द्दारी की है, मुझे धोखा दिया है। मुझसे मदद का वादा किया था और सबने मेरा साथ छोड़ दिया है। उसने कहा : मुस्लिम आप ही हैं। फ़रमाया : हाँ! मैं ही मुस्लिम बिन अक़ील हूं। इतना सुनना था कि उस ख़ुदा–तर्स औरत ने फ़ौरन आपको मकान के अन्दर ले लिया और अपने ख़ास कमरे में आपके लिए फ़र्श बिछा दिया। आप उस पर बैठ गए। उसने खाना पेश किया मगर आपने खाया नहीं, और उसको दुआएं दीं। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आया। जब उसने माँ को बार–बार उस कमरए ख़ास में आते–जाते देखा तो सबब दर्याफ़्त किया। तौआ ने तो पहले छुपाने की कोशिश की लेकिन जब बेटे ने बहुत इसरार किया तो राज़दारी का अहद व पैमान लेकर बता दिया। यह सुनकर वह बिल्कुल ख़ामोश हो गया और रात गुज़रने का शिद्दत से इन्तिज़ार करने लगा। साहिबे तारीख़ तबरी इस के बारे में लिखते हैं कि यह लड़का शराबी और आवारा क़िस्म का था। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६६)

उधर इब्ने–ज़्याद को मालूम हो गया कि तमाम अहले कूफ़ा मुस्लिम का साथ छोड़ चुके हैं और अब कोई भी उनके साथ नहीं है तो उसने एलाने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आम कर दिया कि जिसने मुस्लिम को अपने घर में पनाह दी उसके लिए अमान नहीं है। जो उनको गिरफ़्तार करके लाएगा या गिरफ़्तार कराए उसे इनाम व इकराम से नवाज़ा जाएगा। इस एलान के बाद उसने रईसुश्शुर्त: (आई जी पुलिस) हुसैन बिन नुमैर को हुक्म दिया कि शहर की नाकाबन्दी करके गली कूचों में आदमी मुक़र्रर कर दो और घर–घर की तलाशी लो। ख़बरदार यह शख़्स (मुस्लिम) किसी रास्ते और किसी तरीक़े से भी जाने न पाए। अगर यह शख़्स निकल गया और तुम उसको गिरफ़्तार करके मेरे पास न लाए तो तुम्हारी ख़ैर नहीं। इब्ने–ज़्याद का यह एलान जब तौआ के लड़के बिलाल बिन उसैद ने सुना तो उसको ख़्याल आया कि अगर उसकी घर की तलाशी ली गई तो फिर उसकी भी ख़ैर नहीं। उसने यह राज़ अफ़्शां करने का फ़ैसला कर लिया। सुबह होते ही वह घर से निकला और अब्दुर्रहमान बिन अशअस के पास गया और उसे बताया कि मुस्लिम बिन अक़ील मेरे मकान में छुपे हुए हैं। अब्दुर्रहमान का बाप मुहम्मद बिन अशअस उस वक़्त इब्ने–ज़्याद के पास गया हुआ था। वह फ़ौरन उसके पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया। इब्ने–ज़्याद ने मुहम्मद बिन अशअस की सरकरदगी में फ़ौज का एक दस्ता इमाम मुस्लिम की गिरफ़्तारी के लिए रवाना कर दिया। हज़रत मुस्लिम ने जब घोड़ों की टाप और लोगों की आवाज़ें सुनीं तो समझ गए कि इब्ने–ज़्याद की फ़ौज मेरी गिरफ़्तारी के लिए आ गई। आपने तलवार संभाली और फ़ौरन कमरे से बाहर निकल पड़े। इतने में फ़ौज अन्दर घुस गई। आपने निहायत शुजाअत व बहादुरी के साथ उन सबका मुक़ाबला किया और उन सबको घर से बाहर निकाल दिया। सिपाहियों ने दोबारा फिर घुसकर आप पर हमला कर दिया। आपने बड़ी बहादुरी के साथ उनका मुक़ाबला किया। इतने में बुकैर बिन हमरान अहमरी ने आपके चेहरए मुबारक पर ऐसा वार किया कि आप के ऊपर और नीचे का होंट कट गया। और सामने के दो दांत भी शहीद हो गए। हज़रत मुस्लिम ने उसके सर पर तलवार मारी जिससे उसका सर फट गया। और दूसरा वार उसके कन्धे पर ऐसा किया कि आपकी तलवार उसके सीना तक उतर गई। जब उन लोगों ने आप की शुजाअत व बहादुरी का ऐसा आलम देखा तो आप की ख़ूंख़्वार और ज़र्बे हैदरी से बचने के लिए बाहर भाग गए और मकान की छत पर चढ़ गए और वहां से आप पर संगबारी करने लगे। बांस की जलती हुई लकड़ियां मकान की छत पर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फेंकने लगे। हज़रत मुस्लिम ने जब यह बुज़दिलाना तरीक़ए जंग देखा तो तलवार खींचते हुए घर से बाहर निकल आए और उन लोगों से मर्दानावार लड़ने लगे। मुहम्मद बिन अशअस ने जब आपकी शुजाअत और अपने साथियों की बुज़दिली और कमज़ोरी देखी तो पुरफ़रेब चाल चली। आगे बढ़कर कहने लगा : आप क्यों अपनी जान गंवाते हैं? मैं आपको अमान देता हूं अपने आपको मेरे हवाले कर दें। मगर आप बराबर अपनी शमशीर चलाते रहे और रिज्ज़ पढ़ते रहे जिसका आख़िरी मिसरा यह था **अख़ाफ़ु अन अ क ज़ ब औ अग़र्रा** मुझे इस बात का अन्देशा है कि मुझसे झूठ बोलेंगे या मुझे धोखा देंगे। मुहम्मद बिन अशअस ने कहा : नहीं, आप से झूठ नहीं बोला जा रहा है न आपको धोखा दिया जाएगा।

हज़रत इमाम मुस्लिम ज़ख़्मों से चूर हो चुके थे इसलिए उसी मकान की एक दीवार से टेक लगाकर खड़े हो गए। इब्ने अशअस आपके पास आकर कहने लगा कि आपके लिए अमान है। आपने फ़रमाया : मेरे लिए अमान है? कहा : हाँ, अमान है। सब लोगों ने भी पुकार कर कहा : आपके लिए अमान है। सिर्फ़ उमरू बिन उबैदुल्लाह सुलमा अलग हो गया और बोला : मुझे इस मामले में कोई दख़ल नहीं।

हज़रत मुस्लिम ने कहा : अगर तुम लोग मुझे अमान नहीं देते तो मैं कभी अपने आपको तुम्हारे हवाले नहीं करता। इतने में एक ख़च्चर लाया गया। आपको इस पर सवार कराया गया। जब आप ख़च्चर पर सवार हो गए तो सिपाहियों ने चारों तरफ़ से योरिश करके आपकी तलवार आपके हाथ से छीन ली। यह देखकर आपको यक़ीन हो गया कि मुझसे धोखा किया गया है और आपने अपनी ज़िन्दगी से मायूस होते हुए फ़रमाया : यह पहली ग़द्दारी है। इब्ने अशअस ने कहा : मुझे उम्मीद है कि आपको कोई नुक़्सान न पहुंचेगा। आपने फ़रमाया : बस उम्मीद ही है और अमान जो तुमने दी थी वह क्या हुई? फिर **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** कहा और रोने लगे। उमरू बिन उबैदुल्लाह सुलमा जिसने अमान से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया था, वह बोला जिस काम के लिए तुम्हें मुक़र्रर किया गया था अगर किसी दूसरे को इस काम पर मुक़र्रर किया जाता, और उस पर भी वही मुसीबत पड़ती जो तुम पर पड़ रही है तो वह कभी न रोता। आपने फ़रमाया : मैं अपनी जान के लिए नहीं रो रहा हूं बल्कि मैं नवासए **रसूल** हज़रत इमाम हुसैन और उनकी औलाद के लिए रो रहा हूं। उसके **बाद**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आपने मुहम्मद बिन अशअस से कहा : मैं देखता हूं कि थोड़ी देर बाद तुम अपनी दी हुई अमान को पूरा करने में आजिज़ हो जाओगे। बहरहाल हमारे साथ इतना सुलूक करो कि किसी तरह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मेरे यह हालात और पैग़ाम भेज दो कि अहले कूफ़ा ने मेरे साथ ग़द्दारी व धोखा किया है। यह वही अहले कूफ़ा हैं जिनसे छुटकारा हासिल करने के लिए आपके वालिद माजिद हमेशा कोशिश करते रहे। कह देना कि अहले कूफ़ा आपकी मुख़ालिफ़त पर कमर-बस्ता हैं। इसलिए अपने अहल व अयाल को लेकर वतन लौट जाएं। इब्ने अशअस ने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैं ज़रूर ऐसा करूंगा। चुनांचे उसने अपने वादे के मुताबिक़ अयास बिन असल ताई को जो एक शाइर था और उसके पास अकसर आया जाया करता था, बुला भेजा और एक ख़त में वह तमाम बातें लिखकर जो हज़रत मुस्लिम ने कही थीं, हवाले करते हुए कहा कि यह ख़त हज़रत इमाम हुसैन को जिस क़दर जल्दी मुमकिन हो पहुंचा दो।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा १६८ ता २००)

उसके बाद इब्ने अशअस हज़रत मुस्लिम को लिए हुए क़स्रे इमारत (गवर्नर हाऊस) के पास पहुंचा। आपको दरवाज़े के पास छोड़कर ख़ुद अन्दर गया और इब्न-ज़्याद से सारा हाल ब्यान किया और कहा कि मैंने उनको अमान दी है। इब्न-ज़्याद ने कहा तुम कौन होते हो अमान देने वाले? मैंने तुम्हें सिर्फ़ गिरफ़्तार करने के लिए भेजा था, अमान देने के लिए नहीं भेजा था। इब्ने अशअस यह सुनकर ख़ामोश हो गया।

हज़रत मुस्लिम जब गवर्नर हाऊस के दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां बहुत से लोग अन्दर जाने की इजाज़त के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे। एक घड़ा ठण्डे पानी से भरा हुआ दरवाज़े के क़रीब रखा हुआ था। हज़रत मुस्लिम बहुत प्यासे थे। फ़रमाया : मुझे थोड़ा पानी पिला दो। मुस्लिम बिन उमरू बाहली ख़बीस ने कहा। देखते ही रहो यह कैसा ठण्डा पानी है। ख़ुदा की क़सम! तुम्हें इसमें से एक बूंद भी नहीं मिलेगा। अब तो तुम्हारी क़िस्मत में जहन्नम का खौलता पानी ही है। (मआज़ल्लाह!) आपने फ़रमाया : तू कौन है? उसने कहा मैं वह हूं जिसने हक़ को पहचाना जबकि तुमने उसे तर्क कर दिया। मैं मुस्लिम बिन उमरू बाहली हूं। आपने फ़रमाया : ख़ुदा करे तेरी माँ तुझे रोए, तू कैसा ज़ालिम और संगदिल है। ऐ बाहिला के बच्चे! तू ज़्यादा नारे जहीम और माए हमीम का मुस्तहिक़ है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अम्मारह बिन उक़बा को आपकी हालत पर तरस आया। उसने अपने गुलाम क़ैस को भेजा। वह ठण्डे पानी की एक मटकी और कटोरा लाया। कटोरा भर कर आपको दिया। जूं ही आपने उसको मुंह लगाया उसमें आपके मुंह से ख़ून गिरा और वह ख़ून पानी में गिर कर पानी भी ख़ून बन गया। गुलाम ने दूसरी बार कटोरा भर दिया। वह भी ख़ून से भर गया। तीसरी मर्तबा फिर दिया तो सामने के दो दांते मुबारक टूट–टूट कर कटोरे में गिर गए। आपने फ़रमाया : अल्हमदुलिल्लाह! अब मेरी क़िस्मत में दुनिया का पानी नहीं है। उसके बाद आपको उसी हालत में जबकि आपके मुंह और कपड़े लतपत थे इब्न–ज़्याद के पास ले गए। आपने दस्तूर के मुताबिक़ इब्न–ज़्याद को सलाम नहीं किया। एक सिपाही ने कहा : तुम अमीर को सलाम नहीं करते? अगर अमीर मुझको क़त्ल करना चाहता है तो उसको मेरा सलाम नहीं। अगर क़त्ल का इरादा नहीं तो फिर उस पर बहुत से सलाम हों। इब्न–ज़्याद ने कहा : बेशक मैं तुम्हें क़त्ल ज़रूर करूंगा। आपने फ़रमाया : वाक़ई? उसने कहा : हां। फ़रमाया : अच्छा मुझे इतना मौक़ा दो कि मैं अपने क़ौम के किसी शख़्स को कुछ वसीयत कर लूं। कहा : हां कर लो हज़रत मुस्लिम ने दरबारियों की तरफ़ नज़र दौड़ाई तो उनमें इब्ने साद नज़र आया। आपने उससे फ़रमाया : तुम कुरैश ख़ानदान के हो और तुममें मुझमें क़राबतदारी भी है। इसलिए मैं तुमसे कुछ राज़ की बात कहना चाहता हूं इसे तन्हाई में सुन लो। हुकूमत का चापलूस इब्न–साद हज़रत मुस्लिम की बात सुनने को तैयार न हुआ। तो इब्न–ज़्याद ने कहा : सुनने में क्या हर्ज हैं। जाओ और उसकी बात सुनो। चुनांचे वह उठा और हज़रत इमाम मुस्लिम उसे लेकर महल के एक गोशे में चले गए जहां से इब्न–ज़्याद उन्हें देख सकता था। वहां पहुंचकर हज़रत मुस्लिम ने इब्न–साद से फ़रमाया : पहली बात तो यह है कि मैं ने कूफ़ा में फ़लां शख़्स से सात सौ दिरहम क़र्ज़ लिया है तुम मेरी तलवार और ज़िरह बेचकर यह क़र्ज़ अदा कर देना। दूसरी बात यह है कि क़त्ल के बाद मेरी लाश को दफ़न कर देना। तीसरी बात यह है कि हज़रत इमाम हुसैन के पास किसी को भेज कर मेरे पूरे हालात की इत्तिला कर देना। ताकि वह वापस चले जाएं।

हज़रत इमाम मुस्लिम ने यह बातें इब्न–साद से राज़दाराना तौर पर फ़रमाई थीं। लेकिन उस बदबख़्त ने यह सारी बातें इब्न–ज़्याद से कह दीं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फिर उन वसीयतों के बारे में इब्ने-ज़्याद से पूछा। इब्ने-ज़्याद ने कहा : जो वसीयत क़र्ज़ के बारे में है उसमें तुम्हें एख़तियार है, जैसा चाहो करो। हुसैन के मुतअल्लिक़ यह है कि अगर वह यहां नहीं आएंगे तो हम भी उनका पीछा नहीं करेंगे। अगर वह यहां आए तो फिर हम उन्हें भी नहीं छोड़ेंगे। लाश के बारे में हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे कि जिस शख़्स ने हमारी इस क़दर मुख़ालिफ़त की हो उसकी लाश किसी रिआयत की मुस्तहिक़ नहीं।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०१, शामे करबला सफ़ा ५० अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा ८६)

हज़रत इमाम मुस्लिम और इब्न-ज़्याद बद-निहाद

इब्न-साद को वसीयत के मुतअल्लिक़ जवाब देने के बाद इब्न-ज़्याद ने हज़रत मुस्लिम से कहा : ऐ इब्ने अक़ील! लोग आपस में मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ थे। तुमने आकर लोगों में तफ़र्क़ा और इख़्तिलाफ़ पैदा कर दिया। उनको हमारी मुख़ालिफ़त पर बरअंगेख़्ता किया। आपने फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं है। मैं इसलिए नहीं आया था। बल्कि कूफ़ा के लोगों ने हमें ख़ुतूत लिखे और हमें बताया कि तुम्हारे बाप ने उनके बुज़ुर्गों और नेक लोगों का क़त्ल किया और ख़ूंरेज़ी की। इस्लाम का तरीक़ा छोड़कर क़ैसर व किसरा की तरह हुकूमत की। इसलिए उन लोगों ने हमें बुलाया। हम यहां आए कि लोगों में अद्ल व इन्साफ़ क़ाइम करें और लोगों को किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल करने की दावत दें। इब्न-ज़्याद यह सुनकर ग़ज़बनाक हो गया। उसने कहा : ओ बदकार! तू और तेरा यह दावा! जब तू मदीना में शराब पिया करता था उस वक़्त तुझे अद्ल व इन्साफ़ और तालीमाते क़ुरआन व सुन्नत का ख़्याल न आया। आपने फ़रमाया : मैं शराब पीता था? वल्लाह! ख़ुदा ख़ूब जानता है कि तू झूठा है और तू ख़ुद भी जानता है कि तू झूठ बोल रहा है और नापाक इत्तिहाम लगा रहा है। मैं हरगिज़ ऐसा नहीं हूं। शराब तो वह पियेगा जो बेगुनाह मुसलमानों का ख़ून पिया करता है। ख़ुदाए तआला ने जिसका क़त्ल हराम किया है, उसे क़त्ल करता है, जिसने कोई ख़ून नहीं किया उसका ख़ून बहाता है। बुग़्ज़ व हसद और बद-गुमानी की वजह से ख़ूंरेज़ी करता है, फिर इस तरह भूल जाता है जैसे कुछ किया ही नहीं।

इब्न-ज़्याद ने कहा : ख़ुदा मुझे मारे अगर मैं तुझे इस तरह क़त्ल न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

करूं कि आज तक इस्लाम में इस तरह कोई क़त्ल न हुआ हो। आपने फ़रमाया : बेशक इस्लाम में जो ज़ुल्म आज तक नहीं हुआ उसका ईजाद करने का तू ही सज़ावार है। बुरी तरह क़त्ल करना और बुरी तरह मुस्ला करना तेरा ही हिस्सा है और दुनिया भर में तुझसे बढ़कर इसका कोई मुस्तहिक़ नहीं।

इन बातों को सुनकर ज़ालिम इब्ने ज़्याद झल्ला उठा और बेक़ाबू होकर हज़रत मुस्लिम के वालिद हज़रत अक़ील और हज़रत अली और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को गालियां देने लगा तो आप बिल्कुल ख़ामोश हो गए। (तारीखे तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०३)

हज़रत मुस्लिम की शहादत

उसके बाद ज़ालिम इब्न–ज़्याद ने जल्लादों को हुक्म दिया कि उनको महल की छत पर ले जाओ और बुरी तरह क़त्ल करने के बाद सर को धड़ के साथ नीचे गिरा दो ताकि हड्डियां चकनाचूर हो जाएं। आपने इब्ने अशअस की तरफ़ देखकर फ़रमाया कि तूने मुझे अमान न दी होती तो वल्लाह! मैं इस तरह अपने आपको हवाले न करता। अब मुझको बचाने के लिए तलवार लेकर उठ और बरीउज़्ज़िम्मा हो। मगर वह ख़ामोश रहा। फिर इब्न–ज़्याद ने बुकैर बिन हमरान असदी को बुलाया। जब वह आया तो इब्न–ज़्याद ने उसे हुक्म दिया कि कोठे पर ले जाकर इस का सर क़लम कर दो।

जब हज़रत मुस्लिम को कोठे पर ले कर चले तो आप इंतिहाई सब्र व सुकून के साथ तक्बीर व इस्तिग़फ़ार और दुरूद शरीफ़ पढ़ रहे थे और साथ में यह भी पढ़ रहे थे कि खुदावंद हमारे और इस क़ौम के दर्मियान तू खुद ही फ़ैसला फ़रमा। जिसने हमें धोखा दिया और जिसने हमें झुठलाया और हमें ज़लील किया। इसके बाद जल्लादों ने आपको महल की छत पर शहीद कर दिया। सरे मुबारक को जिस्म के साथ नीचे फेंक दिया। आपकी शहादत ३ ज़िलहिज्ज सन् ६० हिजरी को हुई। नामवर फ़ाज़िल उमर अबुन्नसर ने अपने अरबी किताब अल हुसैन के सफ़ा ८६ पर हज़रत मुस्लिम की शहादत की तारीख़ ६ ज़िलहिज्जा सन् ६० हिजरी मुताबिक़ १० सितम्बर सन् ६८० ई० बरोज़ बुध तहरीर की है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हानी की शहादत

हज़रत मुस्लिम की शहादत के बाद इब्न–अशअस को हानी बिन उरवा की फ़िक्र लगी जिसे इब्न–ज़्याद ने अपने महल में कैद कर रखा था। उसने इब्न–ज़्याद से कहा : आपको मालूम है कि हानी किस रुतबा का इन्सान है और कूफ़ा में उसका और उसके ख़ानदान का कितना असर है। लोगों को मालूम है कि मैं ही उसे आपके पास लाया था इसलिए मैं आपसे इल्तिजा करता हूं कि आप हानी को कोई ज़रर न पहुचाएं वरना मेरी ख़ैर नहीं होगी।

इब्न–ज़्याद ने इब्ने अशअस को यक़ीन दिलाया कि किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ हानी को नहीं दी जाएगी। लेकिन वह बदकार अपने वादे पर क़ाइम न रहा। बाद में हुक्म दे दिया कि हानी को बाज़ार में ले जाकर क़त्ल करो। जब सिपाही हानी की मश्कें बांध कर बाज़ार की तरफ़ चले तो हानी पुकार–पुकार कर कहते थे। कहां हैं मेरे क़बीला बनी मुज़्हिज के लोग! कहां हैं मेरे घर वाले? लेकिन एक आदमी भी नज़र नहीं आया जो हानी की मदद करता। जब उन्हें हर तरफ़ से मायूसी हो गई तो अपने क़ुव्वते बाज़ू का सहारा लेते हुए अपना हाथ रस्सी से खींच लिया और कहा : अरे कोई लाठी नहीं! कोई पत्थर नहीं। अरे क्या ऊंट की कोई हड्डी भी नहीं कि मैं उसी को लेकर अपनी जान बचा सकूं।

सिपाहियों ने फिर हानी को रस्सी से बांध दिया। रशीद नामी एक तुर्की गुलाम ने आपको शहीद कर दिया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०५)

इब्न–ज़्याद ने मुस्लिम व हानी के सरों को हानी बिन हय्या अलविदाई और ज़ुबैर बिन अल–अरवाह तमीमी के हाथ वाक़िआ की मुख़्तसर रिपोर्ट के साथ यज़ीद के पास रवाना कर दिया। उन दोनों ने ज़ुबानी तमाम हालात से यज़ीद को मुत्तला किया।

यज़ीद ने जवाबन उस कारनामा पर बड़ी शाबाशी दी। एक ख़त लिखा कि तुमने वही किया जिसकी हमें तुम से उम्मीद थी। अब ख़ुद हुसैन इब्ने अली के बारे में तुम्हारी कारगुज़ारी देखना है।

(तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़र्ज़न्दाने हज़रत मुस्लिम की शहादत

आज ख़ानवादए नुबुव्वत के चश्म व चिराग़ हज़रत मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु के मुक़द्दस ख़ून से कूफ़े की ज़मीन सुर्ख़ हो गई थी। नवीज़ादे के ख़ैर मक़दम के लिए आंखों का फ़र्श बिछाने वाले उसकी तड़पती हुई लाश के सामने खड़े मुस्कुरा रहे हैं। अचानक रात के सन्नाटे में इब्न–ज़्याद का एक मुनादी एलान करता है कि मुस्लिम के दोनों बच्चे जो उनके हमराह आए थे, कूफ़ा ही में कहीं रूपोश हो गए हैं। हुकूमत की तरफ़ से हर ख़ास व आम को मुतनब्बह किया जाता है कि जो भी उन्हें अपने घर में पनाह देगा उसे इबरतनाक सज़ा दी जाएगी और जो इन्हें गिरफ़्तार करके लाएगा उसे इनाम व इकराम से नवाज़ा जायेगा।

हज़रत मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु के दोनों यतीम बच्चे जिनमें से एक का नाम मुहम्मद था और उनकी उम्र आठ (८) साल की थी और दूसरे का नाम इब्राहीम था उनकी उमर छः साल थी। कूफ़ा के आशिक़े रसूल क़ाज़ी शुरैह के घर में पनाहगुज़ीं थे। इब्न–ज़्याद की जानिब से यह एलान सुनकर क़ाज़ी साहब का कलेजा हिल गया। हज़रत मुस्लिम के जिगर गोशों का दर्दनाक अन्जाम निगाहों के सामने नाचने लगा। देर तक उसी फ़िक्र में रहे कि किस तरह उन्हें ज़ालिमों के ख़ूनी हाथों से बचाया जाए। काफ़ी ग़ौर व ख़ोज़ के बाद यह सूरत समझ में आई कि रातों–रात बच्चों को कूफ़ा के बाहर मुन्तक़िल कर दिया जाए। इज़्तिराब की हालत में अपने बेटे असद को आवाज़ दी और बेटे से फ़रमाया : निहायत इहतियात के साथ किसी महफ़ूज़ रास्ते से बच्चों को शहर–पनाह के बाहर पहुंचा दो। आज रात बाबुल–इराक़ीईन से मदीना की तरफ़ एक क़ाफ़िला जाने वाला है उन्हें किसी तरह उनके साथ लगा दो और ताकीद कर दो कि बच्चों को बहिफ़ाज़त मदीना मनव्वरा पहुंचा दे।

ज़ादे राह मुकम्मल हो जाने के बाद रुख़्सत करने के लिए दोनों बच्चों को पास बुलाया। जूं ही उन पर नज़र पड़ी फ़र्ते ग़म से आंखें भीग गई, ज़ब्त का पैमाना छलक उठा, मुंह से एक चीख़ निकली और बेताब होकर दोनों बच्चों को सीने से लगा लिया। पेशानी चूमी, सर पर हाथ रखा और सकते की हालत में देर तक दम–बख़ुद रहे।

बाप की शहादत की ख़बर से बच्चे अब तक बे–ख़बर रखे गए थे। न

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उन्हें यही बताया गया था कि अब ख़ुद उनकी नन्ही गर्दनें भी ख़ून आशाम तलवारों की ज़द पे हैं। क़ाज़ी शुरैह की इस कैफ़ियत पर बच्चे हैरत से एक दूसरे का मुंह तकने लगे। बड़े भाई ने हैरानी के आलम में दर्याफ़्त किया। हमें देखकर यह गिरयए बेएख़्तियार की वजह समझ में नहीं आ रही है। अचानक इतनी रात को पास बुलाकर हमारे सरों पर शफ़क़त का हाथ रखना बे–सबब नहीं है। इस तरह तो फूट पड़ने वाली हमदर्दी हमारे ख़ानदान में यतीमों से की जाती है। तीर व नशतर की तरह आर–पार हो जाने वाला यह जुमला अभी ख़त्म भी न होने पाया था कि फ़िज़ा में एक चीख़ बुलन्द हुई। क़ाज़ी शुरैह ने बरस्ती हुई आंखों के साथ गलुगीर आवाज़ में बच्चों को जवाब दिया : गुलशने रसूल के महकते गुन्चो! कलेजा मुंह को आ रहा है; ज़ुबान में ताबे गोयाई नहीं है; किस तरह ख़बर दूं कि तुम्हारे नाज़ का चमन उजड़ गया और तुम्हारी उम्मीदों का आशियाना दिन दहाड़े ज़ालिमों ने लूट लिया। हाय! तुम परदेस में यतीम हो गए। तुम्हारे बाप को कूफ़ियों ने शहीद कर डाला। और अब तुम्हारी जान भी ख़तरे में है। आज शाम ही से ख़ून के प्यासे तुम्हारी तलाश में हैं। यह ख़बर सुनकर दोने बच्चे हैबत व ख़ौफ़ से कांपने लगे। नन्हा–सा कलेजा सहम गया। मुंह से एक चीख़ निकली और ग़श खाकर ज़मीन पर गिर पड़े। होश आया तो क़ाज़ी शुरैह ने बच्चों से फ़रमाया कि रात का सन्नाटा है तुम दोनों इसी वक़्त हमारे बेटे के हमराह कूफ़े से बाहर निकल जाओ और जो क़ाफ़िला मदीने की तरफ़ जा रहा है उसमें शामिल हो जाओ। जब मदीना पहुंचना तो अपने नाना जान की बारगाह में हमारी तरफ़ से दुरूद व सलाम का नज़राना पेश कर देना। अच्छा जाओ, ख़ुदा तुम्हें अपने हिफ़्ज़ व अमान में रखे।

क़ाज़ी शुरैह का बेटा असद जब उन बच्चों को लेकर बाबुल–इराक़ीईन पहुंचा तो मालूम हुआ क़ाफ़िला थोड़ी देर पहले चला गया। वह बच्चों को लेकर उस राह पर तेज़ी से चला। कुछ दूर चला और क़ाफ़िला की गर्द नज़र आई तो बच्चों को गर्द दिखाकर कहा : देखो, वह क़ाफ़िला की गर्द नज़र आ रही है, तुम लोग जल्दी से जाकर उस में मिल जाओ। मैं वापस जाता हूं।

असद वापस आ गया। बच्चे तेज़ी के साथ चलने लगे। मगर थोड़ी देर बाद गर्द ग़ायब हो गई और उन्हें क़ाफ़िला न मिला। नन्हें बच्चे तन्हाई में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इन्तिहाई परेशानी का शिकार होकर आपस में गले मिल कर रोने लगे और नाज़ों से पालने वाले माँ बाप का नाम लेकर जान खोने लगे।

इब्न–ज़्याद का एलान सुनकर माल व ज़र की हवस रखने वाले सिपाही बच्चों की तलाश में निकले हुए थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने बच्चों को पा लिया और पकड़ कर इब्न–ज़्याद के पास पहुंचा दिया। उसने हुक्म दिया कि उन बच्चों को उस वक़्त तक जेल में रखा जाए जब तक इनके मुतअल्लिक़ यज़ीद से पूछ न लूं कि इनके साथ क्या सुलूक किया जाए।

जेल का दारोगा मशकूर नामी एक मुहिब्बे अह्ले–बैत था। उसे बच्चों की बेकसी पर बहुत तरस आया। उसने फ़ैसला कर लिया कि बच्चों की जान किसी भी क़ीमत पर बचानी है चाहे फिर अपनी ही जान क्यों न चली जाए। चुनांचे उसने रात के अन्धेरे में बच्चों को जेल से निकाला। अपने घर लाकर खाना खिलाया। शहर के बाहर क़ादसीया की राह पर लाकर अपनी अंगूठी बतौरे निशानी दी और कहा : यह सीधा रास्ता क़ादसीया को जाता है, इस राह पर चले जाओ। जब क़ादसीया पहुंच जाना तो कोतवाल से मिलना, हमारी अंगूठी दिखलाना और सारे हालात बताना। वह हमारा भाई है, तुम लोगों को बहिफ़ाज़त मदीना पहुंचा देगा।

मुसीबत के मारे दोनों भाई चल पड़े। लेकिन क़ज़ा व क़दर के अहकाम नाफ़िज़ हो चुके थे। और उन्हें भी इस नन्हीं–सी उम्र में शहादत से सरफ़राज़ होना था। इसलिए वह रास्ता भूल गए। रात भर चलते रहे और सुबह हुई तो घूम फिर कर उसी जगह पहुंचे कि जहां से कूफ़ा के बाहर क़ादसीया के रास्ते पर चले थे। नन्हा–सा कलेजा दहल गया कि कहीं फिर न कोई पकड़ कर इब्न–ज़्याद के पास पहुंचा दे। क़रीब ही एक खोखला दरख़्त नज़र आया। वहीं एक चश्मा भी बहता हुआ नज़र आया। दोनों बच्चे दरख़्त की आड़ में बैठ गए। थोड़ी देर बाद एक लौंडी पानी भरने आई। जब उन बच्चों को इस तरह छुपे बैठे देखा तो क़रीब आई। उनका हुस्न व जमाल और शाने शहज़ादगी देखकर कहा : शहज़ादो! तुम लोग कौन हो और यहां कैसे छुपे बैठे हो ? उन्होंने कहा : हम यतीम व बेकस और सितम रसीदा व राह भटके हुए मुसाफ़िर हैं। लौंडी ने कहा : मैं गुमान करती हूं कि तुम दोनों हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के फ़र्ज़न्द हो। बाप का नाम सुनते ही वह दोनों फूट–फूट कर रोने लगे। लौंडी ने कहा :

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

साहबज़ादो! ग़म न करो। मैं उस ख़ातून की कनीज़ हूं जो अहले-बैत नुबुव्वत के साथ सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत रखती है। आओ, मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें उसके पास ले चलूं। दोनों साहबज़ादे उसके पास हो लिए। लौंडी ने उनको अपनी मालिका के सामने पेश किया और सारा वाक़िआ ब्यान किया। उस ख़ातून का साहबज़ादों की तशरीफ़ आवरी पर बेइन्तिहा मुसर्रत हुई। इसी ख़ुशी में उसने अपनी लौंडी को आज़ाद कर दिया। साहबज़ादों के साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आई। उन्हें हर तरह की तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी कि फ़िक्र न करो। लौंडी से कहा कि इन साहबज़ादों की तशरीफ़ आवरी का राज़ पोशीदा रखना और मेरे शौहर हारिस को न बताना।

इधर इब्न—ज़्याद को जब मालूम हुआ कि दारोग़ए जेल मशकूर ने दोनों बच्चों को रिहा कर दिया है तो उसने मशकूर को बुलाकर पूछा कि तूने मुस्लिम के बच्चों का क्या किया? मशकूर ने कहा : कि मैं अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए उनको रिहा कर दिया है। इब्ने ज़्याद ने कहाः तू मुझसे न डरा। मशकूर ने कहा : जो अल्लाह तआला से डरने वाला है वह किसी और से नहीं डरता। इब्न—ज़्याद ने कहा : तुझे उन बच्चों को रिहा करने से क्या मिला? मशकूर ने कहा : ओ सितमगार नाबकार! उन बच्चों के पिदरे बुज़ुर्गवार को शहीद करने में तुझे तो कुछ न मिलेगा मगर मुझे उन बच्चों को जो अपने जिगर पर यतीमी का दाग़ लिए हुए क़ैद व बन्द की सऊबतें उठा रहे थे रिहा करने में उम्मीदे क़वी है कि मैदाने हश्र में हुज़ूर सैयदे कौनैन मालिके जन्नत सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम मेरी शफ़ाअत फ़रमाएंगे। तू हज़रत मुस्लिम के शहीद करने के इवज़ उस नेमत से महरूम रहेगा। इब्न—ज़्याद उस जवाब पर बहुत ग़ज़बनाक हुआ और कहा : मैं अभी तुझे इसकी सज़ा देता हूं। मशकूर ने कहा : मेरी हज़ारों जानें उन पर फ़िदा हैं। इब्न—ज़्याद ने जल्लाद से कहा : उसे लकड़ी के सुतूनों पर खींच कर पहले पांच सौ कोड़े लगाओ और फिर इसका सर तन से जुदा कर दो। जल्लाद ने जब कोड़े मारने शुरू किए तो पहले कोड़े पर मशकूर ने कहा : बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। दूसरे कोड़े पर कहाः इलाही! मुझे सब्र अता फ़रमा। तीसरे कोड़े पर कहा : ख़ुदाया! मुझे माफ़ फ़रमा। चौथे कोड़े पर कहा : इलाहीं मैं रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटों की मुहब्बत में अपनी जान कुर्बान कर रहा हूं। पांचवें कोड़े पर कहा : इलाही मुझे हुज़ूरे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अहले–बैत के पास पहुंचा दे। फिर ख़ामोश हो गए और जल्लाद ने अपना काम तमाम कर दिया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

(रौज़ातुश्शुहदा जिल्द दोम सफ़ा ११४)

इधर वह नेक ख़ातून दिन भर दिल व जान से बच्चों की ख़िदमत और दिलजोई में लगी रही। फिर रात में खाना खिला कर उनको एक अलग कमरे में सुलाकर वापस आई थी कि उसका शौहर हारिस हांपता–कांपता और थका–मांदा आया। ख़ातून ने पूछा : आज दिन भर आप कहां रहे? हारिस ने कहा : दारोग़ए जेल मशकूर ने मुस्लिम बिन अक़ील के बच्चों को रिहा कर दिया है और अमीर उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद ने एलान किया है कि जो शख़्स उनको पकड़ लाएगा या उनकी ख़बर देगा उसको बहुत–सा माल और इनाम व इकराम दिया जाएगा। मैं उन ही बच्चों की तलाश में दिन भर परेशान रहा और इतनी ज़्यादा भाग दौड़ की कि मेरा घोड़ा मर गया और मुझे पैदल उनकी तलाश में चलना पड़ा। इसलिए थकावट से चूर–चूर हो गया। औरत ने कहा : ऐ बन्दा–ए–ख़ुदा! अल्लाह से डरो और अहले–बैत अतहार के बारे में इस तरह का ख़्याल दिल से निकाल दो। इब्न–ज़्याद आले रसूल का ख़ून नाहक़ बहा कर अपनी आक़िबत बरबाद कर रहा है और लोगों को भी लालच दे कर उस काम पर मामूर कर दिया है। दुनिया की आसाइश चन्द रोज़ा है। इनाम की लालच में जहन्नम का हौलनाक अज़ाब मत ख़रीदिए। ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर सोचिए कि कल मैदाने हश्र में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या मुंह दिखाएंगे ? हारिस का दिल पूरी तरह सियाह हो चुका था। बीवी के बातों का कोई असर उसके दिल पर नहीं हुआ। झुंझलाते हुए जवाब दिया : नसीहत करने की ज़रूरत नहीं है। आक़िबत का नफ़ा व नुक़सान मैं ख़ुद समझता हूं। मेरा इरादा अटल है और अपनी जगह से कोई भी मुझे हटा नहीं सकता। संगदिल शौहर की नीयते बद मालूम होने के बाद मिनट–मिनट पर दिल धड़क रहा था कि मुबादा ज़ालिम को कहीं बच्चों की भनक न लग जाए। इसलिए जल्द ही उन्हें खिला–पिला कर सुला दिया। जब वह सो गए तो दबे पांव उठी और बच्चों की कोठरी में ताला डाल दिया। फ़िक्र से आंखों की नींद उड़ गई थी। रह–रह कर दिल में हूक सि उठती थी। हाय! अल्लाह! हरमे नुबुव्वत के इन राजदुलारों को कुछ हो गया तो हश्र के दिन सैय्यदा को क्या मुंह दिखाऊंगी? हाय! अफ़सोस! इस घर को

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मासूम बच्चे अपना ही घर समझ रहे होंगे। कहीं यह राज़ फ़ाश हो गया तो उनके नन्हें दिल पर क्या गुज़रेगी? वह मुझे अपने तईं क्या समझेंगे? लेकिन मेरे दिल का हाल तो अल्लाह और उसके रसूल से छुपा हुआ नहीं है। कुछ भी हो जीते जी लाडलों पर कोई आफ़त नहीं आने दूंगी।

आधी रात के बाद बच्चों ने एक निहायत दर्दनाक और हैजान–अंगेज़ ख़्वाब देखा। चश्मए कौसर की सफ़ेद मौजें से नूर की किरण फूट रही है। बाग़े फ़िरदौस की शाहराहों पर चांदनी का ग़िलाफ़ बिछा दिया गया। क़रीब ही कुछ फ़ासले पर शहंशाहे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, मौलाए काइनात हज़रत अली मुश्किल–कुशा, बिन्ते रसूल सैय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा और शहीद मज़लूम हज़रत इमाम मुस्लिम रिज़वानुल्लाह अलैहिम जल्वा अफ़रोज़ हैं। दोनों बच्चों पर नज़र पड़ते ही सरकार ने इमाम मुस्लिम से मुख़ातिब होकर फ़रमाया :

मुस्लिम! तुम ख़ुद तो आ गए हो और जौर व सितम का निशाना बनने के लिए हमारे जिगरपारों को अशक़िया के हाथों छोड़ आए। हज़रत मुस्लिम ने नीची निगाह किए जवाब दिया : वह भी पीछे–पीछे आ रहे हैं हुज़ूर! बहुत क़रीब आ चुके हैं। बस दो चार क़दम का फ़ासला रह गया है। ख़ुदा ने चाहा तो कल सूरज तुलू होते ही दामने रहमत में पहुंच जाएंगे।
यह ख़्वाब देखकर दानों भाई चौंक पड़े। बड़े ने छोटे को झिंझोड़ते हुए कहा : अब सोने का वक़्त नहीं है। हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी वक़्त आ चुका है। भैया उठो! बाबा जान ने ख़बर दी है कि अब हम चन्द घन्टों के मेहमान हैं। हौज़े कौसर पर नाना हुज़ूर हमारे इन्तिज़ार में खड़े हैं।

छोटे भाई ने डबडबाती आंखों से जवाब दिया : भाईजान! मैंने भी इसी तरह का ख़्वाब देखा है। क्या सचमुच हम दोनों सुबह क़त्ल कर दिए जाएंगे। हाय! एक दूसरे को ज़बह होते हम कैसे देख सकेंगे, भैया?

यह कह-कर दोनों भाई एक दूसरे के गले में बाहें डाल कर लिपट गए और फूट–फूट कर रोने लगे। हवा ने यह आवाज़ हारिस के कानों तक पहुंचा दी। मुतहैयर होकर उठा और बीवी को जगा कर पूछने लगा : यह बच्चों के रोने की आवाज़ कहां से आ रही है ? सूरते हाल की नज़ाकत से बीवी का कलेजा सूख गया। उसने टालते हुए जवाब दिया। सो जाइए। कहीं पड़ोस के बच्चे रो रहे होंगे। संगदिल ने तेवर बदल कर कहा। पड़ोस से नहीं, हमारे घर से यह आवाज़ आ रही है। हो न हो यह वही मुस्लिम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के बच्चे हैं जिनकी तलाश में कई दिन से सर गरदां हूं। यह कहते हुए उठा और उस कोठरी के पास जाकर खड़ा हो गया। ताला तोड़कर दरवाज़ा खोला। अन्दर जाकर देखा तो दोनों बच्चे रोते-रोते बेहाल हो गए थे। करख़्त लहजे में दरयाफ़्त किया। तुम कौन हो? अचानक उस अजनबी आवाज़ पर बच्चे सहम गए। लेकिन चूंकि उस घर को दारुल-अमान समझे हुए थे इसलिए साफ़ कह दिया कि हम मुस्लिम बिन अक़ील के यतीम बच्चे हैं। ज़ालिम यह सुनते ही गुस्से से बेक़ाबू हो गया और कहा : मैं सारा दिन ढूंढते-ढूंढते परेशान हो गया और तुम लोगों ने हमारे ही घर में ऐश का बिस्तर लगाया है। यह कहते हुए आगे बढ़ा और निहायत बेरहमी के साथ उन नन्हें यतीमों के रुख़सारों पर तमाचे बरसाना शुरू कर दिया। शिद्दते कर्ब से दोनों भाई बिलबिला उठे। बेतहाशा बीवी दौड़ती हुई आई और यह कहती हुई दर्मियान में हायल हो गई। अरे ज़ालिम! यह क्या कर रहा है? यह फ़ातिमा के राज दुलारे हैं। उनकी चांदनी-जैसी सूरतों पर तरस खा। हाथ रोक ले सितमगर! जन्नत के फूलों का सुहाग मत लूट। चमनिस्ताने कुदुस की नाज़ुक कलियों को ज़ख़्मी मत कर। फिर मामता की झोंक में उठी और उसके क़दमों पर अपना सर पटकने लगी और कहा : ले मेरा सर कुचल कर अपने हवस की आग बुझा ले लेकिन फ़ातिमा के जिगरपारों को बख़्श दे। गुस्से में चूर संगदिल ज़ालिम शौहर ने उसे इतने ज़ोर की ठोकर मारी कि वह पत्थर कि एक सुतून से टकरा कर लहूलुहान हो गई।

ज़ालिम जब बच्चों को मारते-मारते थक गया तो दोनों भाईयों की मश्कें कस दीं और ज़ुल्फ़ों को खींचकर आपस में एक दूसरे को बांध दिया। उसके बाद यह कहता हुआ कोठरी से बाहर निकल आया कि जिस क़दर तड़पना है सुबह तक तड़प लो। दिन निकलते ही मेरी चमकदार तलवार तुम्हें हमेशा के लिए चैन की नींद सुला देगी।

सुबह होते ही ज़ालिम ने तलवार उठाई, ज़हर में बुझा हुआ खंजर संभाला और ख़ूंख़्वार दरिन्दे की तरह कोठरी की तरफ़ बढ़ा। नेक बख़्त बीवी ने दौड़कर उसकी कमर थाम ली। हारिस ने इस ज़ोर का झटका दिया कि उसका सर दीवार से टकरा गया और वह आह कर के ज़मीन पर गिर पड़ी। बीवी को ज़ख़्मी करने के बाद जब वह कोठरी में दाख़िल हुआ तो हाथ में नंगी तलवार और चमकता हुआ ख़ंजर देखकर दोनों बच्चे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कांप उठे। बदबख़्त ने आगे बढ़कर दोनों भाईयों की जुल्फ़ें पकड़ लीं और निहायत बेदर्दी के साथ घसीटता हुआ बाहर लाया। तकलीफ़ से दोनों भाई तिलमिला उठे लेकिन ज़ालिम हारिस को तरस न आया। सामान की तरह एक ख़च्चर पर लाद कर दरियाए फ़ुरात की तरफ़ चल पड़ा। जब उसके किनारे पहुंचा तो उन्हें ख़च्चर से उतारा। मश्कें खोलीं और सामने खड़ा किया। फिर म्यान से तलवार निकाला ही था कि इतने में उसकी बीवी हांपती–कांपती आई और आते ही उसने अपने शौहर का हाथ पकड़ लिया और खुशामद करते हुए बोली : खुदा के लिए अब भी मान जाओ। अहले बैते रिसालत के ख़ून से अपना हाथ रंगीन न करो। हारिस पर शैतान पूरी तरह सवार था। ज़ालिम ने बीवी पर ऐसा वार किया कि वह ज़ख़्मी होकर गिरी और तड़पने लगी। लौंडी सामने आई तो वह भी उसके तेग़े सितम से घायल हुई। यह दर्दनाक मन्ज़र देखकर बच्चे सहम गए। अब सियाह बख़्त जल्लाद अपनी ख़ून आलूद तलवार ले कर बच्चों की तरफ़ बढ़ा। छोटे भाई पर वार करना ही चाहता था कि बड़ा भाई चीख पड़ा। खुदारा! पहले मुझे ज़बह कर। जान से ज़्यादा अज़ीज़ भाई की तड़पती हुई लाश मैं नहीं देख सकूंगा। छोटे भाई ने सर झुकाते हुए खुशामद की। बड़े भाई के क़त्ल का मन्ज़र मुझसे हरगिज़ न देखा जा सकेगा। खुदारा! पहले मेरा सर क़लम करो।

ज़ालिम हारिस की तलवार चमकी। दो नन्हीं चीखें बुलन्द हुई और यतीम बच्चों के कटे हुए सर ख़ून में तड़पने लगे। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।** (नक़्शे वफ़ा सफ़ा ३० शामे करबला सफ़ा ५४)

सलाम तुम पर ऐ मुहम्मद व इब्राहीम !

ऐ इमामे मुस्लिम के राज दुलारो

तुम्हारे मुक़द्दस ख़ून की सुर्ख़ी से आज तक गुलशने इस्लाम की बहारों का सुहाग क़ाइम है। खुदाए रब्बे क़दीर तुम्हारी तुरबतों पर शाम व सहर रहमत व नूर की बारिश बरसाए।

क़ातिल हारिस का अन्जाम

ज़ालिम हारिस ने जब पिसराने मुस्लिम को शहीद कर दिया तो उनकी लाशों को दरियाए फ़ुरात में फेंक दिया और सरों को एक बड़े थैले में रखकर इब्ने–ज़्याद के सामने पेश किया। उसने पूछा : इस थैले में क्या

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

है? हारिस ने कहा : इनाम व इकराम की उम्मीद में आपके दुश्मनों का सर काट कर लाया हूं। इब्ने-ज़्याद ने कहा : यह मेरे दुश्मन कौन हैं? जाओ और उन सरों को साफ़ करके तश्त में रखकर मेरे सामने पेश करो। हारिस ने कहा : मुस्लिम बिन अक़ील के फ़र्ज़न्द हैं। इब्ने-ज़्याद इतना सुनते ही ग़ज़बनाक हो गया और कहा तुझको क़त्ल करने का हुक्म किस ने दिया था? कम्बख़्त! मैंने यज़ीद को लिखा है कि अगर हुक्म हो तो मैं इन्हें आपके पास ज़िन्दा रवाना कर दूं। अगर यज़ीद ने ज़िन्दा भेजने का हुक्म दिया तो फिर मैं क्या करूंगा? तू मेरे पास उनको ज़िन्दा क्यों नहीं लाया? हारिस ने कहा : मुझे अन्देशा था कि अहले शहर हमला करके मुझसे छीन लेंगे। इब्ने-ज़्याद ने कहा : अगर तुझे छीन लेने का डर था तो किसी महफ़ूज़ जगह पर उनको ठहरा कर मुझे इत्तिला कर देता। मैं ख़ुद मंगवा लेता। तूने मेरे हुक्म के बग़ैर उनको क़त्ल क्यों किया? फिर इब्ने-ज़्याद ने मजमा पर निगाह डाली और फिर एक शख़्स जिसका नाम मक़ातिल था, जो ख़ानदाने अहले-बैत का दिल व जान से मुहिब्ब था, उसको बुलाकर कहा। इस शख़्स को फ़ुरात के किनारे ले जा और जहां इसने उन दोनों बच्चों को शहीद किया था वहीं पर इसे क़त्ल कर दे। इन बच्चों का सर भी साथ लेता जा और वहीं डाल दे जहां इसने उनके जिस्मों को डाला था। मक़ातिल ने निहायत ख़ुशी का इज़हार किया और अपने साथियों से कहा : अगर उबैदुल्लाह इब्ने-ज़्याद मुझे तमाम बादशाही दे देता तो भी मुझे इतनी ख़ुशी न हासिल होती जितनी इस मरदूद को क़त्ल करके होगी। फिर उसने हुक्म दिया कि उसका हाथ पीछे की तरफ़ बांध कर नंगे सर कूफ़ा के बाज़ारों में फिराते हुए नहरे फ़ुरात के पास ले चलो। दरियाए फ़ुरात के पास जब मक़ातिल अपने साथियों के साथ पहुंचे तो देखा एक लौंडी शहीद पड़ी हुई है और एक औरत ज़ख़्मी हालत में कराह रही है। मक़ातिल के पूछने पर ख़ातून ने बताया कि मैं इस बदबख़्त, रू-सियाह की बीवी हूं और यह उसकी लौंडी है। हारिस ने मक़ातिल से कहा : मैं तुझको दस हज़ार सुर्ख़ दीनार देता हूं तू मुझे छोड़ दे। मैं कहीं रूपोश हो जाऊंगा। मक़ातिल ने कहा : अगर तमाम दुनिया तेरे क़ब्ज़े में हो जाए और तू वह सब मुझको दे दे तो भी मैं तुझको न छोड़ूंगा। तूने जब उन नौनिहालों पर रहम नहीं किया तो मैं भी तुझपर रहम नहीं कर सकता और तुझे उससे बुरी तरह क़त्ल कर के अल्लाह तआला की बारगाह में सवाबे उम्मीद लेकर जाऊंगा। फिर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मक़ातिल घोड़े से उतरा और जब उसने इमाम मुस्लिम के साहबज़ादों का ख़ून देखा तो उसकी आंखों में ख़ून जारी हो गया। उसने रोते हुए शहज़ादों के ख़ून अपने चेहरे पर मला और हक़ तआला से इस मुबारक ख़ून की तुफ़ैल अपनी मग़फ़िरत की दुआ मांगी। फिर उन सरों को फ़ुरात के हवाले कर दिया। रिवायतों में आता है कि मक़ातिल ने जैसे ही उन शहज़ादों के सरों को फुरात में डाला जिस्म पानी के ऊपर आ गए और हर एक का सर मुबारक अपने जिस्म के साथ जुड़ गया। दोनों ने एक दूसरे के गर्दन में बाहें हाइल कर दीं और पानी के बहाव पर बहने लगे।

रिवायतों में यह भी आता है कि फिर उन दोनों को पानी से निकाल कर फ़ुरात के किनारे मदफ़ून कर दिया गया।

मर्वी है कि मक़ातिल ने गुलामों को हुक्म दिया कि सबसे पहले हारिस के हाथ काट दिए जाएं। फिर उसके पांव काटे जाएं। फिर दोनों कान काटे जाएं। फिर उसकी आंखें निकाल दीं। फिर उसका पेट फाड़कर उस में कटे हुए आज़ा रखो और उस पर पत्थर बांध कर दरिया में डाल दो। जैसे ही उस ज़ालिम की लाश को दरिया के अन्दर डाला गया उसी वक़्त दरिया की एक मौज उभरी और उसे किनारे पर उछाल दिया। मक़ातिल के गुलामों ने उसे तीन बार दरिया में डाला मगर दरिया ने उसे तीनों बार बाहर फेंक दिया। उसके बाद उन्होंने एक गढ़ा खोदा और उसमें उसे डाल कर ऊपर से मिट्टी और पत्थर भर दिए। थोड़ी देर गुज़री थी कि ज़मीन लरज़ने लगी। ज़मीन ने बाहर उगल दिया। उसके बाद वह लोग जंगल से लकड़ियां लाए और उसमें उस ख़बीस नारी को जला दिया।

बाद अज़ां हारिस की लौंडी को बाबे बनी खुज़ैमा में मदफ़ून कर दिया गया। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द दोम सफ़ा १२४)

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे, न उधर के रहे

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

क़्यामत-नुमा हादसा

ज़मीने करबला
का
ख़ूनी मन्ज़र

और

हक़ व बातिल की एक बेमिसाल जंग

हज़रत इमाम हुसैन
को
कूफ़ा आने की दावत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मनक़बत

दर शाने शहीदे करबला

जो जवां बेटे की मैय्यत पर न रोया वह हुसैन
जो दहकती रेत के बिस्तर पे सोया वह हुसैन
जिसने अपने ख़ून से दुनिया को धोया वह हुसैन
जिसने सब कुछ खोके फिर भी कुछ न खोया वह हुसैन

मर्तबा इस्लाम का जिसने दोबाला कर दिया
ख़ून ने जिसके दो आलम में उजाला कर दिया
शेर की मानिन्द जो मक़तल में आया वह हुसैन
वह बहत्तर ज़ख़्म खाकर मुस्कुराया वह हुसैन
राहे हक़ में जिसने अपना सर कटाया वह हुसैन
करबला में जिसने अपना घर लुटाया वह हुसैन

ज़ेरे ख़न्जर जिसका सज्दा अज़मते इस्लाम है
जिसका हर तेवर रसूले पाक का पैग़ाम है
अल्लाह! अल्लाह! राकिबे दोशे पयम्बर वह हुसैन
फ़ातिमा का नूरे दीदह, जाने हैदर वह हुसैन
अज़मत व इख़लास व कुर्बानी का पैकर वह हुसैन
करबला के ग़ाज़ियों का मीरे लशकर वह हुसैन

परचमे हक़ ता अबद जिस का सलामी हो गया
ज़िन्दए जावेद जिसका नामे नामी हो गया
दीन की ख़ातिर थी जिसकी ज़िन्दगानी वह हुसैन
कट गई इस्लाम में जिसकी जवानी वह हुसैन
ख़ुल्द में की हक़ ने जिसकी मेहमानी वह हुसैन
मिल गई जिसको हयाते जाविदानी वह हुसैन

नामे नामी जिस का लौहे दह्‌र पर मरकूम है
फ़र्श से ता अर्श जिसको अज़मतों की धूम है

(माख़ूज़ अज़ 'ख़ुतबाते मुहर्रम')

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की मक्का से कूफ़ा रवानगी

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त आने के बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़ुबूल फ़रमाने में कोई वजहे तअम्मुल व जाइज़ उज़्र बाक़ी नहीं रहा था। ज़ाहिरी शक्ल तो यह थी। हक़ीक़त में क़ज़ा व क़द्र के फ़रमान नाफ़िज़ हो चुके थे। शहादत का वक़्त आ चुका था। इसलिए इमाम आली मक़ाम सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा जाने का अज़्मे मुसम्मम कर लिया और असबाबे सफ़र दुरुस्त होने लगे।

जब मक्का वालों को आपकी तैयारी का इल्म हुआ तो उन्होंने आप का मक्का से कूफ़ा जाना पसंद न किया। क्योंकि वह कूफ़ा वालों की बेवफ़ाई व ग़द्दारी को ख़ूब जानते थे। और उनको इल्म था कि उन कूफ़ियों ने हज़रत अली और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ क्या सुलूक किया था ? चुनांचे उन्होंने आपको सख़्ती से रोका। उनमें ख़ास तौर से जलीलुल–क़द्र सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद खुदरी, हज़रत अबू वाक़िदुलैसी व दीगर सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन आपके पास आए और अर्ज़ किया कि आप कूफ़ा हरगिज़–हरगिज़ न जाए कि वहां के लोग दिरहम व दीनार के बन्दे हैं। बद–अहदी और ` –वफ़ाई उनका शिआर है। और उनका हाकिम उन पर मुसल्लत है तो आप जान लीजिए कि कूफ़ा वाले आप को जंग व ज़िदाल के लिए बुला रहे हैं। हमें अन्देशा है कि वह लोग आप को धोखा देंगे। आपको झुठलायेंगे और आपको बेयार व मददगार छोड़कर हुकूमते वक़्त से मिलकर आप पर हमला कर देंगे। यही लोग जो आप को दावत दे रहे हैं आप के दुशमन बन जाएंगे। और आपको शहीद कर देंगे। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : मैं ख़ुदा से ख़ैर का तालिब हूं, देखिए क्या होता है। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २०६)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर जो पहले ही मक्का में मौजूद थे, आपके पास आए और कहा : आप इराक़ जाने का इरादा तर्क फ़रमा दें। तो आपने ने फ़रमाया : **हद्दसनी अबी अन्न न लिमक्कत कबशन बिही यस्तहिल्लु हुरमतुहा फ़मा उहिब्बु अंन अकू न अ न ज़ालिकल कबशु।** मैंने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हदीस सुनी है कि एक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मेंढा मक्का मुअज़्ज़मा की हुर्मत को हलाल कर देगा। तो मैं वह मेंढा नहीं बनना चाहता।

(तारीखे़ तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१०—सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६५२)

दूसरी रिवायत यह है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर ने आपसे सफ़रे इराक़ मुलतवी करने के लिए इसरार किया और कहा कि आप मस्जिदे हराम में रहिए, मैं आपकी नुसरत के लिए लोगों को जमा कर लूंगा। तो आपने फ़रमाया : अगर एक बालिश्त भर मैं उस मस्जिद के बाहर निकलूं तो क़त्ल किया जाऊंगा। तो वल्लाह! मैं इसे उस बात से बेहतर समझता हूं कि एक बालिश्त भर मस्जिद के अन्दर क़त्ल किया जाऊं। बख़ुदा ! अगर मैं हशरातुल–अर्ज़ के किसी सुराख़ में भी छुपूंगा तो लोग मुझे वहां से भी निकाल लेंगे और जो सुलूक मेरे साथ करना चाहते हैं, करेंगे। (तारीखे़ तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २११)

ग़र्ज़ यह कि बड़े–बड़े सहाबा–ए–किराम आपको सफ़रे इराक़ से रोकने के लिए बहुत इसरार करते रहे और आख़िर तक यही कोशिशें करते रहे कि आप मक्का मुकर्रमा से तशरीफ़ न ले जाएं। मगर उनकी कोशिशें बार–आवर न हुई। हज़रत इमाम आली मक़ाम ३ ज़िलहिज्ज : सन् ६० हिजरी को अपने अहले–बैत मवाली व खुद्दाम कुल ब्यासी (८२) नुफ़ूस को हमराह ले कर मक्का शरीफ़ से इराक़ की तरफ़ रवाना हो गए।

करबला जाने वाले अह्ले-बैत

•हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मक्का शरीफ़ से इराक़ की जानिब सफ़र करने वालों में आपके तीन साहिबज़ादे आपके हमराह थे। हज़रत अली औसत जिनको इमाम ज़ैनुल–आबिदीन कहते हैं। यह हज़रत शहरबानो के बतन से थे। उस वक़्त आपकी उम्र २२ साल थी और बीमार थे। आपके दूसरे साहिबज़ादे हज़रत अली अकबर थे जो याला बिन्ते अबी मुर्रह के शिकम से थे। उनकी उम्र १८ बरस की थी। यह करबला में शहीद हुए। आपके तीसरे साहिबज़ादे हज़रत अली असग़र थे। उनकी वालिदा रुबाब बिन्त इमरउल–क़ैस क़बीलए बनी क़ुज़ाआ से थीं। आप शीर–ख़्वार बच्चे थे। आपकी एक बहन हज़रत सकीना भी करबला में हज़रत इमाम आली मक़ाम के हमराह थीं। उस वक़्त उसकी उम्र सात (७) साल की थी। करबला में हज़रत क़ासिम के साथ उनका निकाह होने की जो रिवायत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मशहूर है, वह ग़लत है। उनका निकाह हज़रत मुसअब बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हुआ।

हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु की दो बीवियां आपके पास थीं। एक शहरबानो और दूसरी हज़रत अली असग़र की वालिदा रुबाब बिन्त इमरउल–क़ैस।

हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के चार नौजवान फ़र्ज़न्द १–हज़रत क़ासिम २–हज़रत अब्दुल्लाह, ३–हज़रत उमर और ४–हज़रत अबू–बक्र। हज़रत इमाम आली मक़ाम के हमराह थे और करबला में शहीद हुए।

हज़रत मौला अली कर्रमल्लाह वजहहू के पांच फ़र्ज़न्द। १. हज़रत अब्बास इब्ने अली, २. हज़रत उस्मान इब्ने अली, ३. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अली, ४. हज़रत मुहम्मद इब्ने अली और ५. हज़रत जाफ़र बिन अली हज़रत इमाम के हमराह थे और सब–के–सबने करबला में शहादत पाई।

हज़रत अक़ील के फ़र्ज़न्दों में हज़... इमाम मुस्लिम तो हज़रत इमाम के करबला पहुंचने से पहले ही कूफ़ा में शहीद हो चुके थे। और तीन फ़र्ज़न्द १. हज़रत अब्दुल्लाह २. हज़रत अब्दुर्रहमान ३. और हज़रत जाफ़र–हज़रत इमाम के हमराह थे और करबला में शहीद हुए।

हज़रत जाफ़र तैयार के दो पोते १. हज़रत मुहम्मद और २. हज़रत औन हज़रत इमाम के हमराह हाज़िर होकर शहीद हुए। उनके वालिद का नाम अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र है। यह दोनों हज़रत इमाम के हक़ीक़ी भांजे हैं। उनकी वालिदा हज़रत ज़ैनब हज़रत इमाम की हक़ीक़ी बहन हैं। साहबज़ादगाने अह्ले–बैत में से कुल सतरह हज़रात हज़रत इमामे आली मक़ाम के हमराह हाज़िर होकर रुतबए शहादत को पहुंचे। और हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन, हज़रत उमर बिन हसन, मुहम्मद बिन उमर बिन अली और दूसरे कम उम्र साहबज़ादे क़ैदी बनाए गए। हज़रत ज़ैनब हज़रत इमाम की हक़ीक़ी हमशीरा और शहरबानो हज़रत इमाम की ज़ौजा और दूसरे अह्ले–बैत हज़रात की बीवियां हमराह थीं। (सवानेह करबला सफ़ा ८६)

अह्ले–बैत व दीगर बहत्तर जांनिसारों का यह क़ाफ़िला ६१ अफ़राद पर मुश्तमिल था जिसमें १६ अह्ले–बैत क़िराम और ७२ जांनिसार थे जिनके असमा यह हैं :

(१) ज़ुबैर बिन हस्सान मुहम्मदी (२) साद बिन हन्ज़ला तमीमी (३) बुरैर बिन हुज़ैर हमदानी (४) वहब बिन अब्दुल्लाह कलबी (५) उमरु बिन ख़ालिद सैदावी (६) ख़ालिद बिन उमरू मक्की (७) अब्दुल्लाह बिन उमरु कलबी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(८) उमरु बिन अब्दुल्लाह सायदी (९) हम्माद बिन अनस मुहम्मदी (१०) वक़ास बिन मालिक अहमदी (११)शुरैह बिन उबैद मक्की (१२) नुस्लिम बिन औसजा असदी (१३)बिलाल बिन नाफ़े बजली (१४) मुर्रह बिन अबी मुर्रह गिफ़ारी (१५) कैस बिन मुबत्ता मदनी (१६) हाशिम बिन उतबा मक्की (१७) बशीर बिन अम्र हज़रमी (१८)नईम बिन अजलान अंसारी (१९) ज़हीर बिन कैस बजली (२०) अनस बिन काहिद असदी (२१) खुबैब बिन मज़ाहिर असदी (२२) कैस बिन रबीई अंसारी (२३) अब्दुल्लाह बिन उर्वा बिन ख़र्राक़ गिफ़ारी (२४) अब्दुर्रहमान बिन उर्वा बिन ख़राक़ गिफ़ारी (२५) हुर्रह बसीर गुलाम आज़ाद अबूज़र गिफ़ारी (२६) शीस बिन अब्दुल्लाह बहिश्ती (२७) फ़ासित बिन जुहैर सालबी (२८) करदूस बिन ज़ुहैर सालबी (२९) कनाबा बिन अतीक़ अंसारी (३०) ज़रआमा बिन मालिक अंसारी (३१) जुवैर बिन मालिक अंसारी (३२) उमर बिन सनीआ सनीई (३३) यज़ीद बिन मुस्बत कैसी (३४) अब्दुल्लाह बिन मुस्बत कैसी (३५) आमिर बिन मुस्लिम अनसारी (३६)उबैदुल्लाह बिन मुस्बत कैसी (३७) क़ानब बिन उमरु ननरी (३८) सालिम गुलाम आज़ाद आमिर बिन मुस्लिम (३९) सैफ़ बिन मालिक अंसारी (४०) जुहैर बिन बशीर जाफ़ी (४१) बदर बिन माक़ल जाफ़ी (४२) हज्जाज बिन मसरूक़ मुअज़्ज़िन लश्करे शाम (४३) मसऊद बिन हज्जाज अंसारी (४४) मजमा बिन अब्दुल्लाह ग़ायदी (४५) अम्मार बिन हस्सान मदनी (४६) हस्सान बिन हारिस सुलैमानी असदी (४७) जुन्दुब बिन हज्र ख़ौलानी (४८) यज़ीद बिन ज़्याद मज़ाहिर किन्दी (४९) ताहिर गुलाम आज़ाद दीनुल-हक़ खुज़ाई (५०) जबला बिन अली शैबानी (५१) असलम बिन कसीर आरज़ अज़्दी (५२) जुहैर बिन सुलैम अज़्दी (५३) क़ासिम बिन हबीब अज़्दी (५४) उमरु बिन जुन्दुब हज़रमी (५५) अबू तमामा अन्सारी (५६) सलमान गुलाम आज़ाद जनाब इमाम आली मक़ाम (५७) काब गुलाम आज़ाद जनाब इमाम आली मक़ाम (५८) उरवा गुलाम आज़ाद हुर्र बिन यज़ीद रियाही (५९) मुअसब बिरादर बिन रियाही (६०) हुर्र बिन यज़ीद रियाही (६१) अली बिन हुर्र बिन यजीद बिन रियाही (६२) अम्मार बिन अबी सलामा अन्सारी (६३) शौज़ब गुलाम आज़ाद शाकिर अंसारी (६४) साद बिन अब्दुल्लाह अतबकी (६५) शैब बिन हारिस अन्सारी (६६) मालिक बिन सुरिअ अन्सारी (६७) मुहम्मद बिन अनस अन्सारी (६८) मिक़दाद अन्सारी (६९) मुजाहिदीन बिन मुरव्वक़ (७०) हन्ज़ला बिन असद शैबानी (७१) अब्दुल्लाह बिन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अब्दुल्लाह बिन कनन अरजनी (७२) आइस बिन हबीब शाकिरी रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का शरीफ़ से रवाना हुए। हाकिमे मक्का अमरू बिन सईद के सवारों ने रोकने की कोशिश की लेकिन आप आगे बढ़ गए। जब आप मक़ामे सफ़ाह पर पहुंचे तो फ़िरज़ौक़ नामी शाइर मिला। आपने उससे कूफ़ा वालों का हाल दरयाफ़्त किया। उसने कहा : आपने एक बाख़बर शख़्स से हाल पूछा है। ऐ इमामे आली मक़ाम! कूफ़ा वालों के दिल तो आप के साथ हैं लेकिन उनकी तलवारें बनी–उमैय्या के साथ हैं। क़ज़ाए इलाही आसमान से नाज़िल होती है। ख़ुदा जो चाहता है करता है। आपने फ़रमाया : तुम ने सच कहा। लेकिन हर बात अल्लाह तआला के दस्ते कुदरत में है वह जो चाहता है करता है। अगर अल्लाह तआला ने हमारी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ किया तो हम उसका शुक्रिया अदा करेंगे और अगर क़ज़ाए इलाही हमारे मतलब के ख़िलाफ़ हुई तो इन्सान के लिए यही क्या कम है कि उसकी नीयत में ख़ुलूस और उसके दिल में पारसाई हो। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१२)

फ़िरज़ौक़ शाइर से गुफ़्तगू करने के बाद हज़रत इमाम आली मक़ाम आगे बढ़े तो आपके भांजे हज़रत औन व मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त लेकर आए और आपको रास्ता में मिल कर ख़त पेश किया। इसमें लिखा था कि :

"मैं आपको अल्लाह का वास्ता देकर दरख़्वास्त करता हूं कि मेरा यह ख़त मिलते ही फ़ौरन वापस आ जाएं क्योंकि आप जहां जा रहे हैं वहां आप की हलाकत और आपके अह्ले–बैत की बरबादी का मुझे अन्देशा है। अगर ख़ुदा–न–ख़्वास्ता आप हलाक हो गए तो इस्लाम का नूर बुझ जायेगा और दुनिया में अंधेरा हो जाएगा। आप अह्ले हिदायत के रहनुमा और अह्ले ईमान की उम्मीद हैं। आप रवानगी में जल्दी न करें। इस ख़त के पीछे–पीछे मैं भी आ रहा हूं। वस्सलाम।"

फ़र्ज़न्दों के हाथ ख़त रवाना करने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र हाकिमे मक्का अमरू बिन सईद से जाकर मुलाक़ात की और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए अमान का परवाना और उनके साथ नेकी और एहसान करने का वादा तहरीरी तौर पर हासिल किया, और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम आली मक़ाम के मज़ीद इतमीनान के लिए हाकिमे मक्का के भाई यह्या बिन सईद को साथ लेकर आपके पास पहुंचे। यह्या ने हाकिमे मक्का का ख़त पेश किया। आपने उसे पढ़ा मगर वापस आने से इन्कार कर दिया। उन लोगों ने कहा : आख़िर क्या बात है ? आप कूफ़ा जाने पर इस क़दर बज़िद क्यों हैं? हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम की ज़्यारत की है। आप ने मुझे इस ख़्वाब में एक हुक्म दिया है जिसको मैं ज़रूर पूरा करूंगा। ख़्वाह वह मेरे मुख़ालिफ़ हों या मेरे मवाफ़िक़। उन लोगों ने कहा : वह ख़्वाब क्या है ? आपने फ़रमाया : वह ख़्वाब न मैं ने अब तक किसी से ब्यान किया है और न ब्यान करूंगा। यहां तक कि अपने ख़ुदा से जा मिलूं। (तारीख़े तबरी जिल्द पंजुम सफ़ा २१३)

छुट जाए अगर दौलते कौनैन तो क्या ग़म
छूटे न मगर हाथ से दामाने मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने हाकिमे मक्का की तहरीर का जवाब लिखकर उनके सुपुर्द किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र कुछ मजबूरियों की वजह से हज़रत इमाम हुसैन के साथ न जा सके लेकिन अपने दोनों साहिबज़ादों औन व मुहम्मद को आपके साथ रहने की हिदायत की। और ख़ुद वापस हो गए।

इधर इब्न–ज़्याद बदनिहाद को इत्तिला मिल चुकी थी कि हज़रत इमाम हुसैन कूफ़ा की जानिब बढ़ते चले आ रहे हैं। उसने पुलिस के हाकिमे आला हुसैन बिन नुमैर तमीमी को आपके रोकने पर मामूर किया। उसने क़ादसीया से ख़ुफ़्फ़ान,फ़तक़्ताना और जबले लाल तक सवारों को मुक़र्रर कर दिया कि एक तो वह हज़रत हुसैन के क़ाफ़िले की नक़्ल व हरकत की ख़बरें दम–बदम उसे देते रहें। दूसरे अह्ले कूफ़ा और हज़रत इमाम हुसैन के दर्मियान ख़त व किताबत का सिलसिला क़ाइम न रहे। इस इन्तिज़ाम का नतीजा यह हुआ कि न उस इलाक़े का कोई शख़्स बाहर जा सका और न कोई अन्दर आ सका। (अल–हुसैन (अरबी) सफ़ा ६६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

हज़रत कैस रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

हज़रत इमाम हुसैन ने मक़ाम हाजिर में पहुंचकर अपने एक रफ़ीक़ कैस विन मुसहिर सैदावी को अपनी आमद की इत्तिलाई तहरीर देकर कूफ़ा रवाना किया। लेकिन उमवी हुक्काम ने पहले से रास्तों की नाकाबन्दी कर ली थी। इसलिए कैस जब क़ादसीया के क़रीब पहुंचे तो गिरफ़्तार कर लिए गए। हुसैन ने उनको इब्न–ज़्याद के पास कूफ़ा भेज दिया। इब्न–ज़्याद ने उनको यह गुस्ताख़ाना हुक्म दिया कि क़स्रे इमारत की छत पर चढ़कर कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन विन अली को गालियां दो (मआज़ल्लाह!)। कैस इस हुक्म पर क़स्र के ऊपर चढ़ गए और अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद कहा–

लोगो! हुसैन विन अली फ़ातिमा विन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के लख़्ते जिगर, इस वक़्त ख़लके ख़ुदा में सब से बेहतरीन शख़्स हैं। मैं उन्हीं का भेजा हुआ तुम्हारे पास आया हूं। वह मक़ामे हाजिर तक पहुंच चुके हैं। इसलिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि उनकी मदद के लिए आगे बढ़ो और उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहो। फ़िर हज़रत कैस ने इब्न–ज़्याद और उसके बाप को बुरा भला कहा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दुआएं मग़फ़िरत की।

इब्न–ज़्याद आपकी बातों को सुनकर आग बगोला हो गया और हुक्म दिया कि उसको बहुत ऊंची इमारत से इस तरह नीचे गिराओ कि उसके टुकड़े–टुकड़े हो जाएं। चुनांचे इब्न–ज़्याद के जल्लादों ने हुक्म की तामील की और उनको नीचे गिरा दिया गया। जिससे उनकी हड्डियां चकनाचूर हो गईं और वह इन्तिक़ाल कर गए। उस तरह हज़रत इमाम का यह सच्चा मुहिब्ब और क़ासिद आप पर कुर्बान हो गया। रज़ियल्लाहु अन्हु।

(तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२०)

अब्दुल्लाह बिन मुती से मुलाक़ात

हज़रत इमाम आली मक़ाम अपने रुफ़क़ा के साथ बराबर आगे बढ़ रहे थे कि बतने रमला से आगे एक चश्मा पर आपकी मुलाक़ात अब्दुल्लाह बिन मुती से हुई। उन्होंने जब आपको देखा तो आगे बढ़कर सलाम किया और कहा **फ़िदैतु बिअबी व उम्मी या इब्ने रसूलुल्लाह** ऐ इब्ने रसूल! मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप यहां कैसे तशरीफ़ लाए? आपने फ़रमाया : कूफ़ा वालों ने हमें बुलाया है कि मआलिमे हक़ ज़िन्दा किया जाए और ज़ुल्म व जौर को ख़त्म किया जाए। अब्दुल्लाह ने कहा : मैं आप को ख़ुदा की क़सम

Presented by: https://jafrilibrary.com
https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

देता हूं कि आप हुर्मते इस्लाम, हुर्मते रसूल और हुर्मते अरब के वास्ते कूफ़ा का क़सद हरगिज़ न कीजिए। आप वहां यक़ीनन शहीद कर दिए जाएंगे। हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया **लैंयुसीबना इल्ला मा कतयल्लाहु** लना हमें वही मुसीबत पहुंच सकती है जो ख़ुदाए तआला ने हमारे लिए मुक़द्दर कर दिया है। (तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२१)

ज़हीर बिन क़ीन का जज़्बा-ए-शहादत

अब्दुल्लाह बिन मुती से मुलाक़ात के बाद हज़रत इमाम हुसैन ने मक़ामे ज़रूद में क़्याम फ़रमाया तो वहां क़रीब ही एक ख़ेमा नज़र आया। पूछा : किसका ख़ेमा है? अर्ज़ किया गया ज़हीर बिन क़ीन अल बहेली का। वह हज से फ़ारिग होकर कूफ़ा जा रहे हैं। आपने उनको बुलाया मगर उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया। उनकी इन्कार पर उनकी बीवी ने कहा : सुब्हानल्लाह! फ़र्ज़न्दे रसूल तुम को बुलाये और तुम मिलने से इन्कार करो। बीवी की बात सुनते ही वह हज़रत इमाम हुसैन के पास गए और बहुत हश्शाश–बश्शाश होकर वापस आए और अपना ख़ेमा और कुल सामान आपकी तरफ़ भिजवा दिया। बीवी को तलाक़ देकर कहा : तुम अपने भाई के साथ घर चली जाओ। फिर अपने हमराहियों से कहा : तुम में से जो लोग शहादत के तलबगार हैं वह मेरे साथ चले आएं और जो जाना चाहे, चला जाए और यह समझ कर जाए कि यह मेरी आख़िरी मुलाक़ात है। सब हैरान हो गए कि आख़िर माजरा क्या है? आप ने कहा : मैं तुम लोगों से ब्यान करता हूं। बलंजर में जंग की थी, ख़ुदाए तआला ने हमको फ़तह अता फ़रमाई थी और बहुत–सा माले ग़नीमत हाथ आया था। जिससे हम बहुत ख़ुश हुए थे। तो हज़रत सलमान फ़ारसी सहाबिए रसूल ने हमसे फ़रमाया : एक वक़्त आएगा कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के अह्ले–बैत के जवानों के सरदार (हज़रत हुसैन) से मिलोगे और उनके साथ मिल कर उनके दुश्मनों से जंग करो तो इस फ़तह और माले ग़नीमत से ज़्यादा ख़ुशी हासिल करोगे। लिहाज़ा मैं तुम लोगों को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं। फिर हज़रत ज़हीर इमाम आली मक़ाम के साथ रहे। यहां तक कि करबला में आपके दुश्मनों से लड़कर शहादत से सरफ़राज़ हुए।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२२)

अब्रे रहमत उनके मरक़द पर गुहर-बारी करे
हश्र में शाने करीमी नाज़बर्दारी करे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शहादते हज़रत इमाम मुस्लिम की ख़बर

हज़रत इमाम हुसैन अभी तक कूफ़ा के हालात से बे–ख़बर थे। जब आप मकामे सालबीया में पहुंचे तो बुकैर बिन शाबा असदी के ज़रिया आप को मालूम हुआ कि हज़रत इमाम मुस्लिम और हानी बिन उरवा दोनों शहीद कर दिए गए हैं और उनकी लाशों के पांव पकड़ कर बाज़ार में घसीटा गया। उस अलमनाक ख़बर को सुनकर आप ने बार–बार **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** पढ़ा।

अब्दुल्लाह बिन सुलैम और मज़री जो हज से फ़ारिग़ होकर मक़ामे ज़रूद में हुसैनी क़ाफ़िले से आकर मिले थे। उन्होंने हज़रत इमाम आली मक़ाम से कहा : हम आपको ख़ुदा की क़सम देते हैं कि अपनी जान और अपने अह्ले–बैत का ख़्याल कीजिए। यहीं से लौट जाईए इसलिए कि अब कूफ़ा में आप का न कोई हामी है और न मददगार। बल्कि हमें तो यह अन्देशा है कि जो लोग आपको बुलाने वाले हैं आपके कूफ़ा पहुंचने पर वही आपके दुश्मने हो जाएंगे। और आपके ख़िलाफ़ मैदान में निकल आएंगे। यह सुनकर हज़रत इमाम मुस्लिम के तीनों भाई खड़े हुए और जोश में कहा : ख़ुदा की क़सम! जब तक हम अपने भाई मुस्लिम के ख़ून का बदला नहीं ले लेंगे या उनकी तरह ख़ुद शहीद न हो जायेंगे उस वक़्त तक लौट नहीं सकते। हज़रत इमाम हुसैन के बाद ज़िन्दा रहने में कोई लुत्फ़ नहीं। आपके बाज़ साथियों ने कहा : वल्लाह! आप मुस्लिम बिन अक़ील की तरह नहीं। कुजा मुस्लिम बिन अक़ील और कुजा आप ? जूं ही आप कूफ़ा पहुंचेंगे वहां के सब लोग आपकी नुसरत के लिए दौड़ पड़ेंगे। आप ख़ामोश रहे। और सुबह का इन्तिज़ार फ़रमाने लगे। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२३)

सुबह होने के बाद इमाम आली मक़ाम का क़ाफ़िला यहां से आगे चला। हज़रत इमाम जिन–जिन देहात से गुज़रते थे, लोग जोक़–दर–जोक़ आप के साथ होते जाते थे। जब आप ज़ुबाला के मक़ाम पर पहुंचे तो आपको अब्दुल्लाह बिन बक़तर की शहादत की ख़बर मिली।

हज़रत इमामे आली मक़ाम को जब मुसलसल यह दिल–शिकन ख़बरें मिलीं तो आपने अपने साथियों को जमा कर के तक़रीर फ़रमाई कि मुस्लिम बिन अक़ील, हानी बिन उरवा, और अब्दुल्लाह बिन बक़तर के दर्दनाक क़त्ल की ख़बरें मौसूल हो चुकी हैं। हमारी इताअत के दावेदारों

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ने हमें छोड़ दिया है, लिहाज़ा तुममें से जो शख़्स वापस जाना चाहे वह बख़ुशी जा सकता है। हमारी जानिब से उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

यह तक़रीर सुनकर वह लोग जो रास्ते में आपके साथ हो गए थे, वह छटने लगे। और सिर्फ़ वही जांनिसार बाक़ी रह गए जो मदीना तैयबा से आपके साथ आए थे। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२४)

❖❖❖

मुहर्रम सन् 61 हिजरी के ख़ूनी साल का आग़ाज़ और हुर्र की आमद

मुहर्रम सन् ६१ हिजरी मुताबिक़ सन् ६८१ ई० का आग़ाज़ हो चुका था। आप कोहे ज़ी–हश्म के दामन में पहुंचकर ख़ेमाज़न हुए। हुर्र बिन यज़ीद तमीमी एक हज़ार लश्कर के साथ इब्ने ज़्याद और यज़ीद की तरफ़ से आपको गिरफ़्तार करने के लिए भेजा गया था, ज़ी–हशम में आ पहुंचा। ऐन दोपहर की वक़्त चिलचिलाती धूप में हुर्र के घोड़े और सारे सिपाही बहुत प्यासे हो गए थे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने सब को पानी पिलवाया।

हज़रत इमाम हुसैन की इस बुलन्द ज़रफ़ी का जो असर मुख़ालिफ़ सरदार यानी हुर्र के दिल पर क़ायम हुआ उसके ज़ाहिर होने का अभी वक़्त न आया था। लेकिन कम–अज़–कम वह शशदर रह गया होगा कि इस एहसान के बाद अब इस बुज़ुर्ग फ़ितरत इन्सान से किस तरह गुफ़्तगू करूं। इमाम ने भी अपने फ़ितरी इस्तिक़लाल व इतमीनान की वजह से उस वक़्त कुछ न पूछा कि तुम क्यों आए हो और क्या मतलब है ? हुर्र के सिपाहियों ने कुछ देर आराम किया। यहां तक कि नमाज़ ज़ुहर का वक़्त आया। हज़रत इमाम हुसैन ने हज्जाज बिन मसरूक़ जाफ़ी को अज़ान का हुक्म दिया। अज़ान के बाद आप लशकरे हुर्र के सामने तशरीफ़ लाए और हम्द व सना के बाद हुर्र और उसकी फ़ौज को मुख़ातब करते हुए इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो! मैं ख़ुदाए तआला की बारगाह में, और तुम्हारे सामने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपनी सफ़ाई पेश करना चाहता हूं कि मैं तुम्हारी तरफ़ उस वक़्त तक नहीं आया जब तक कि तुम्हारे ख़ुतूत मेरे पास नहीं आ गए कि आप हमारी तरफ़ आइए। हमारा कोई इमाम नहीं है। शायद ख़ुदाए तआला आप के ज़रिए हम लोगों को हिदायत पर जमा फ़रमा दें। अब अगर तुम लोग अपनी बात पर क़ायम हो तो मैं आ ही गया हूं। अगर तुम अहद व पैमान करके मुझे पूरा इतमिनान दिला दो तो मैं तुम्हारे शहर चलूं। और अगर तुम ऐसा नहीं करते और मेरा आना तुम्हें नागवार है तो मैं जहां से आया हूं, वहीं वापस चला जाऊं।

यह सुनकर सब लोग ख़ामोश हो गए। किसी ने जवाब न दिया आपने मुअज़्ज़िन से कहा : इक़ामत कहो और हुर्र से पूछा : मेरे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अलग? हुर्र ने कहा : आप नमाज़ पढ़ाइये हम सब आप के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ। दोनों तरफ़ के लोगों ने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ी। उसके बाद आप अपने ख़ेमा में तशरीफ़ ले गए। हुर्र और उसके लशकर के सिपाही अपने ख़ेमों में पहुंच गए।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२७)

जब नमाज़े अस्र का वक़्त हुआ तो हज़रत इमाम हुसैन ने अपने असहाब को हुक्म दिया कि रवानगी की तैयारी करो। फिर ख़ेमा से बाहर तशरीफ़ लाकर नमाज़ का एलान फ़रमाया और इसी सूरत से दोनों गिरोहों ने आप के पीछे नमाज़ अदा फ़रमाई। नमाज़ के बाद फिर आप ने मज्मा की तरफ़ रुख़ किया और हम्द व सलात के बाद फ़रमाया : ऐ लोगो! अगर तुम तक़वा इख़्तियार करो और हक़दार का हक़ पहचानो तो अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी हासिल करोगे। यक़ीनन हम अहले–बैत उम्मते इस्लामिया की फ़रमांरवाई के उन लोगों से ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं जो आज इस मन्सब के ग़लत दावेदार हैं और मुसलमानों पर सितम ढाते हैं। लेकिन अगर तुम हम को नापसंद करते हो और हमारे हक़ का इक़रार नहीं पहचानते हो, और तुम्हारी राय उसके ख़िलाफ़ हो गई है जो तुम्हारे ख़ुतूत और तुम्हारे क़ासिदों से मालूम हुई थी, तो मैं वापस चला जाऊंगा।

हुर्र ने कहा : ख़ुदा की क़सम! हमें तो ख़बर भी नहीं कि वह कि[illegible] ख़ुतूत, और कौन क़ासिद हैं जिन का हवाला आप दे रहे हैं। यह [illegible] आप ने उक़बा बिन समआन से फ़रमाया : लाओ वह थैले जिनमें उन [illegible] के ख़ुतूत भरे हुए हैं। उक़बा ने दो थैले ख़ुतूत से भरे हुए लाकर सामने रखा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और उनमें से खुतूत निकाल कर फैला दिए। हुर्र ने कहा : हम इन लोगों में से नहीं हैं जिन्होंने आपको यह ख़त लिखे हैं। हम को तो यह हुक्म दिया गया है कि जहां भी आप मिल जाएं हम आपका साथ न छोड़ें, यहां तक कि इब्न–ज़्याद के पास पहुंचा दें। हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया : तुम्हारी मौत उस से ज़्यादा क़रीब है। फिर आप ने साथियों को सवार होकर लौटने का हुक्म दिया। हुर्र ने मुज़ाहमत की आपने फ़रमाया : तेरी मां तुझे रोए, तू क्या चाहता है ? हुर्र ने कहा : ख़ुदा की क़सम! अगर आपके अलावा कोई दूसरा अरब यह बात कहता तो मैं उसकी मां को भी ऐसी ही बददुआ देता। लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैं आप की वालिदा माजिदा का ज़िक्र अहसन तरीक़े से ही करूंगा। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : फिर आख़िर तुम क्या चाहते हो? हुर्र ने जवाब दिया : मैं आपको इब्न–ज़्याद के पास ले जाना चाहता हूं। आपने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम! यह नहीं होगा। हुर्र ने कहा : फिर बख़ुदा आप को छोड़ूंगा भी नहीं। यूं ही तीन मर्तबा रद्द व बदल हुई।

आख़िर में हुर्र ने कहा : मुझे आपसे लड़ने का हुक्म नहीं दिया गया है। मुझे सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया है कि साथ–साथ रहूं यहां तक कि आप कूफ़ा पहुंच जाएं। अब अगर आप कूफ़ा जाने से इन्कार करते हैं तो एक ऐसा रास्ता इख़तियार कीजिए जो न कूफ़ा की तरफ़ जाता हो, न मदीना की तरफ़। बस मेरे और आपके दर्मियान इन्साफ़ का यही एक तरीक़ा है। इस दर्मियान में मैं इब्न–ज़्याद को ख़त लिखकर उसकी राय मालूम कर लेता हूं। हज़रत इमाम को हुर्र की यह बात माक़ूल मालूम हुई। चुनांचे आप क़ादसीया और उज़ैब के रास्ते से बाएं सम्त मुड़कर चलने लगे और हुर्र भी आपके साथ चलता रहा। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२८)

❖❖❖

हज़रत इमाम हुसैन का बैज़ा में खुतबा

हज़रत इमाम आली मक़ाम का कारवां चलता रहा और मक़ामे बैज़ा में पहुँच कर आपने अपने और हुर्र के साथियों के सामने एक पुरजोश ख़ुतबा दिया। जिसमें आपने फ़रमाया : लोगो! रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी ऐसे ज़ालिम बादशाह को देखे जो ज़ुल्म व जौर करता हो। सुन्नते रसूल की मुख़ालिफ़त करता हो और

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अल्लाह के बन्दों पर गुनाह और ज़्यादती के साथ हुकूमत करता हो., तो वह शख़्स बक़दरे ताक़त क़ौलन व फ़ेलन, उसको न बदले तो अल्लाह तआला को हक़ पहुंचता है कि उसको उस बादशाह की जगह दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा।

उसके बाद मौजूदा सूरतेहाल पर तबसिरा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : लोगो! तुम्हें मालूम नहीं कि बनी–उमैया ने शैतान की इताअत इख़्तियार की और अल्लाह की इताअत से मुंह फेरा। मुल्क में फ़साद बरपा कर दिया है। हुदूदे शरा को मुअत्तल कर दिया है। माले ग़नीमत को अपने लिए मख़सूस कर लिया है। इस सूरत में मुझसे ज़्यादा किस पर यह फ़र्ज़ आइद होता है कि वह इसलाह की कोशिश करे। मेरे पास तुम्हारे ख़ुतूत आए और क़ासिद पहुंचने की तुमने बैअ़त कर ली है कि तुम मुझे बेयार व मददगार न छोड़ोगे। पस! अगर तुम अपनी बैअ़त पूरी करोगे तो राहे रास्त पर पहुंचोगे। मैं अली और फ़ातिमा बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम का बेटा हुसैन हूं। मेरी शख़्सीयत तुम लोगों के लिए नमूना है और अगर तुम ऐसा न करोगे तो अपना अहद और मेरी बैअ़त तोड़ दोगे। तो वल्लाह! यह भी तुम्हारी ज़ात से बईद और तअज्जुब–अंगेज़ फेल न होगा। तुम इससे पहले मेरे बाप और मेरे इब्ने उम्म के साथ ऐसा ही कर चुके हो। जिसने भी तुम पर भरोसा किया वह तुम्हारे धोखे में आ गया। तुमने अपने फ़ेल से एक बहुत बुरी मिसाल क़ाइम की है। इन्शाअल्लाह! अन्क़रीब अल्लाह तआला मुझे तुम्हारी मदद से बेनियाज़ कर देगा। वस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू।

यह तक़रीर सुनकर हुर्र ने कहा : मैं आपको आप ही की जान के बारे में अल्लाह तआला की याद दिलाता हूं और शहादत देता हूं कि अगर आप ने जंग की तो क़त्ल कर दिए जाएंगे। हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया : क्या तुम मुझे मौत से डराते हो, और क्या तुम्हारी शक़ावत इस हद तक पहुंच जाएगी कि मुझे क़त्ल कर दोगे? मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या जवाब दूं। मैं सिर्फ़ वही जवाब दे सकता हूं जो उसके चचाज़ाद भाई ने उसे उस वक़्त दिया था जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहे वसल्लम की मदद को जा रहे थे। और उसने उन्हें कहा था कि तुम कहां जा रहे हो? अगर तुम रसूल की मदद को निकलोगे तो क़त्ल कर दिए जाओगे। इस पर उन्होंने यह जवाब दिया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सअम्ज़ी वमा बिल मौति आरुन अलल
फ़ता : इज़ा मा नवा ख़ैरन व जाहि द मुसलिमन

मैं अन्क़रीब अपने मक़सद को पूरा करूंगा और मौत जवांमर्द के लिए बाइसे नंग व आर नहीं जबकि उसकी नीयत नेक हो और मुसलमान रह कर जिहाद करे। हुर्र ने यह तक़रीर सुनी तो अलग हट कर चलने लगा।
(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२६, अल–हुसैन, अरबी, सफ़ा ११०)

तरमाह बिन अदी की आमद

कारवाने अह्ले–बैत 'अज़ीबुल हिजानात' पहुंचा तो इमाम हुसैन और हुर्र के लशकर ने एक तीर की मुसाफ़त का फ़ासला दर्मियान में छोड़कर अलग–अलग क़याम किया। उसी असना में कूफ़ा के चार आदमी घोड़ों पर सवार वारिद हुए जिनके साथ एक कोतल घोड़ा था। तरमाह इब्ने अदी उनके रहबर थे। और यह शेर पढ़ते हुए आ रहे थे। (तर्जुमा) ऐ मेरी ऊंटनी! तू तुलूए फ़ज्र से पहले हिम्मत से चल खड़ी हो। सब से अच्छे मुसाफ़िरों को सब से अच्छे सफ़र पर ले चले। यहां तक कि शरीफ़ुन्नसब शख़्स तक पहुंच जाए जो इज़्ज़त व मर्तबा में बहुत बुलन्द और सख़ावत व फ़ैयाज़ी में कुशादा दिल हैं। अल्लाह तआला उसको एक कारे ख़ैर के लिए लाया है। वह उसको रहती दुनिया तक बाक़ी व सलामत रखे। जब हज़रत इमाम हुसैन ने यह अशआर सुने तो फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम! मुझे अल्लाह तआला से यही उम्मीद है कि उसकी मशीयत में हम लोगों को क़त्ल होना या फ़तहयाब होना। दोनों अम्रे ख़ैर ही है।

हुर्र जो हज़रत इमाम की हर नक़्ल व हरकत का निगरां था, आगे बढ़ा और इमाम से कहा : यह कूफ़ा के लोग हैं और आपके साथियों में से नहीं हैं। इसलिए मैं उन्हें क़ैद कर दूंगा या कूफ़ा वापस कर दूंगा। इमाम ने फ़रमाया : अब जब यह मेरे पास पहुंच ही गए हैं तो उनकी हिफ़ाज़त मैं अपनी जान की तरह करूंगा। और अब वह मेरे अन्सार व आवान की जमाअत में दाख़िल हो गए हैं। हुर्र यह सुनकर ख़ामोश हो गया।

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने उनसे अह्ले कूफ़ा की कैफ़ियत दरयाफ़्त की। मजमा बिन अब्दुल्लाह आयज़ी ने कहा कि कूफ़ा के बड़े आदमियों को रिशवतें दी गई हैं और माल व दौलत से पुर कर दिया गया है। इसलिए वह सब आपके ख़िलाफ़ मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ हैं। रह गए दूसरे लोग तो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनके दिल आपकी तरफ़ हैं मगर उनकी तलवारें आपके ख़िलाफ़ हैं। फिर आपने क़ैस बिन मुसहिर का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया : उन्होंने उनकी जुर्रते ईमानी और शहादत की तमाम तफ़सीलात ब्यान कर दीं। क़ैस की शहादत का हाल सुन कर आपकी आंखों में आंसू डबडबाने लगे और आपने क़ुरआन पाक की यह आयते करीमा पढ़ी : **फ़मिन्हुम मन क़ज़ा नहबहू व मिन्हुम मैंयन्तज़िरु व मा बद्दलू तबदीला।** उसके बाद आपने दुआ फ़रमाई: **अल्लाहुम्मजअल लना व लहुमुल जन्न त न ज़ ला वज्मअ बै नना व बैनहुम फ़ी मुस्तक़िर्र मिर्रहमति क व रग़ाइब मदख़ूर सवाबक।** ऐ अल्लाह! हमें और उनको नेमते बहिशत अता फ़रमा और हमें और उनको अपनी रहमत के मुस्तक़िर्र में जमा फ़रमा। और अपने सवाब के ज़ख़ीरों का बेहतरीन हिस्सा अता फ़रमा।

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर
अल्लाह अल्लाह! मौत को किसने मसीहा कर दिया

तरमाह इब्ने अदी का मशवरा

तरमाह बिन अदी ने बारगाहे इमाम आली मक़ाम में अर्ज़ किया : हुज़ूर! हालात बहुत नाज़ुक सूरते हाल इख़तियार कर गए हैं। मैं चारों तरफ़ नज़र दौड़ाता हूं मगर मुझे आपके साथ चन्द आदमियों के सिवा कोई लशकर दिखाई नहीं देता। अगर हुर्र के साथी, जो आप की पीछे लगे हुए हैं, आप पर टूट पड़ें तो यही काफ़ी रहेंगे। मैंने कूफ़ा से रवानगी से पेशतर वहां लोगों का इतना जम्मे ग़फ़ीर देखा है कि आज तक किसी एक मैदान में कभी न देखा था। मैंने एक शख़्स से पूछा कि यह लशकर कहां जाने के लिए जमा हो रहा है? तो उसने कहा : हुसैन के मुक़ाबले के लिए। इसलिए मैं आपका अल्लाह का वास्ता देता हूं कि अगर हो सके तो एक क़दम भी आगे न बढ़ाइए। अगर आप किसी ऐसे मक़ाम पर जाना चाहते हैं जहां अल्लाह तआला आपको हिफ़ाज़त से रखे और जो कुछ आप करना चाहते हैं उसके मुतअल्लिक़ भी कोई राय और आख़िरी फ़ैसला कर लें, तो आप मेरे साथ चलिए। मैं आपको अपने बुलन्द पहाड़ पर, जिससे कोहे आजाह कहते हैं, ले चलूं। ख़ुदा की क़सम! वह पहाड़ ऐसा है जिस की वजह से हम सलातीन अनान व हमीरा नोमान बिन मुन्ज़िर और हर असवद व अहमर अक़्वाम से महफ़ूज़ रहे हैं। वल्लाह हम को कभी कोई मुती नहीं कर सका।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

में आपके साथ चल कर आपको वहां पहुंचा दूंगा। और फिर कोहे आजाह व सल्मा के बाशिन्दों में आपकी दावत पहुंचा दूंगा। ख़ुदा की क़सम! दस दिन भी गुज़रने न पाएंगे कि आपके पास क़बीला तय के सवारों और प्यादों का बीस हज़ार का लशकर आप के पास जमा हो जाएगा।

हज़रत इमाम हुसैन ने तरमाह की मुख़लिसाना पेशकश का शुक्रिया अदा किया और उन्हें दुआए ख़ैर दी। लेकिन उनके मशवरे पर अमल करने से माज़ूरी ज़ाहिर फ़रमाई। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३१)

क़स्रे बनी मक़ातिल और ख़्वाब

अज़ीबुल हिजानात से चल कर क़ाफ़िलए इमाम क़स्रे बनी मक़ातिल में उतरा। थोड़े ही फ़ासले पर हुर्र ने भी क़याम किया। आधी रात के बाद आपने अपने रुफ़क़ा से फ़रमाया : पानी भर लो और चलो। अभी थोड़ी दूर चले थे कि आप पर ग़ुनूदगी सी तारी हुई। फिर चौंक कर कहा : **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन वल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन।** दो या तीन मर्तबा आपने यही कलिमात ज़ुबाने मुबारक से अता फ़रमाए। यह सुनकर आपके साहबज़ादे हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : अब्बाजान! मैं आप पर फ़िदा हो जाऊं। इस वक़्त आपने यह कलिमात किस वजह से फ़रमाए हैं? आपने फ़रमाया : अभी मेरी आंख लग गई थीं कि मैं ने एक सवार को देखा जो कह रहा था कि यह लोग तो रास्ते पर जा रहे हैं और मौत उनकी तरफ़ आ रही है। मैं समझता हूं कि इस तरह हमको हमारी मौत की इत्तिला दी गई है। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : बाबा जान! अल्लाह तआला आपको हर बला से महफ़ूज़ रखे, क्या हम लोग हक़ पर नहीं हैं? आपने फ़रमाया : उस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की क़सम जिसकी तरफ़ सबको लौट कर जाना है, हम हक़ पर हैं। बहादुर फ़र्ज़न्द ने कहा : जब हम हक़ पर हैं तो हमें मौत की क्या परवाह है ? हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : बेटा! तुम्हें ख़ुदाए तआला जज़ाए ख़ैर दे। बेहतरीन जज़ा जो किसी बेटे को उसके बाप की तरफ़ से मिल सकती है।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३३)

रंग जब महशर में लाएगी तो तो उड़ जाएगा रंग
यूं न कहिए सुर्ख़िए ख़ूने शहीदां कुछ नहीं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

का नैनवा में क़याम और इब्न-ज़्याद बद निहाद का ख़त

सुबह हुई और बाद नमाज़े फ़ज्र कारवाने इमाम आली मक़ाम ने आगे बढ़ना शुरू किया। हुर्र भी आपके साथ–साथ था। यहां तक कि क़ाफ़िला मैदाने नैनवा में पहुंचा तो कूफ़ा की तरफ़ से एक सवार आता दिखाई दिया। सब ठहर कर उसका इन्तिज़ार करने लगे। जब वह पहुंचा तो उसने हुर्र और उसके साथियों को तो सलाम किया लेकिन इमाम हुसैन और आपके साथियों को सलाम करना ज़रूरी न समझा और उनकी तरफ़ से मुंह फेर कर इब्न–ज़्याद का ख़त जो हुर्र के नाम था, दिया। उसमें लिखा था मेरा क़ासिद और मेरा ख़त तुम्हें जिस वक़्त पहुंचे हुसैन पर बहुत सख़्ती करो और उन्हें आगे बढ़ने से रोक दो। और एक ऐसे चट्टान में उतरने पर मजबूर करो जहां कोई पनाह की जगह न हो और न पानी हो। मैंने अपने क़ासिद को हुक्म दिया है कि वह तुम्हारे साथ–साथ रहे और तुम्हारी कारगुज़ारी की मुझे इत्तिला दे। तुम से अलग न हो जब तक मेरे हुक्म की तामील न हो जाए। हुर्र ने यह ख़त हज़रत इमाम हुसैन और आपके रुफ़क़ा को सुना दिया। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : अच्छा हमको ज़रा आगे बढ़कर सामने वाले गांव ग़ाज़रिया या [illegible]फ़ीया में ठहरने दो। हुर्र ने कहा : हमें तो चटयल मैदान में, जहां आब व ग्याह न हो, ठहराने का हुक्म दिया गया है। इब्न–ज़्याद का निगरां भी हमारे साथ है जो हमारे हर तर्ज़े अमल की इत्तिला उसको जाकर देगा। हुर्र के इस जवाब पर इमाम हुसैन के असहाब में जोश पैदा हो गया। ज़ुहैर बिन क़ीन ने कहा : फ़र्ज़न्दे रसूल! इनसे जंग कर लेना हमारे लिए आसान है बनिस्बत उन लोगों के जो इनके बाद आएंगे। क्योंकि इनके बाद इतनी फ़ौजें आएंगी कि उनसे मुक़ाबला की हममें ताक़त न होगी। मगर इमाम ने फ़रमाया : हम अपनी तरफ़ से जंग की इब्तिदा नहीं करेंगे। फिर इमाम हुसैन ने हुर्र से फ़रमाया : अच्छा कुछ तो चलने दो; हुर्र ख़ामोश रहा और आप बाएं तरफ़ चल पड़े। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३४–अल हुसैन (अरबी) सफ़ा ११६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरज़मीने करबला में क़याम

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बाएं तरफ़ मुड़कर थोड़ा-सा चले थे कि हुर्र के सिपाहियों ने आकर रोक दिया और कहा बस यहीं उतर पड़िए। फ़ुरात यहां से दूर नहीं है। हज़रत इमाम ने पूछा : इस जगह का क्या नाम है? लोगों ने कहा : इसका नाम करबला है। आपने फ़रमाया अच्छा कर्ब व बला की यही मन्ज़िल है। यह कह कर घोड़े से उतर पड़े और फ़रमाया **हाज़िही करबलाऊ मौज़उ करबिउं व बलाइन हा ज़ा मनाख़ु रिकाबिना व महत्तु रिहालिना व मक़्तलु रिजालिना** यह करबला है जो मक़ामे कर्ब व बला है, यही हमारे माल व असबाब उतरने की जगह और हमारे ऊंटों की बैठने की जगह और हमारे आवान व अन्सार के क़त्ल होने की जगह है। यह मुहर्रहम सन् ६१ हिजरी २ तारीख़ बरोज़ पंजशंबा जुमेरात मुताबिक़ २० अकतूबर सन् ६८१ ई० का दिन था।

(सआदतुल-कौनैन सफ़ा ६८ अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा ११७ 'तारीखे तबरी' जिल्द ५ सफ़ा २३६)

जब हुर्र ने इब्न-ज़्याद के ख़त की तामील करते हुए हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को करबला में उतरने पर मजबूर कर दिया तो उसने इब्न-ज़्याद को उसकी इत्तिला कर दी। यह वह वक़्त था जबकि मुल्के ईरान में वैलमियों (कुर्दों) ने बग़ावत कर दी थी। उस वक़्त बग़ावत को फ़रो करने के लिए इब्न-ज़्याद ने मशहूर सहाबी हज़रत साद बिन वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे अमरू बिन साद को चार हज़ार फ़ौज का सरदार बना कर और रैय की हुकूमत का परवाना लिखकर रवाना कर दिया था। इब्न-साद अपने फ़ौज के साथ निकल कर मक़ामे हम्माम आयुन तक ही पहुंचा था कि इब्न-ज़्याद ने उसे वापस बुलाकर हुक्म दिया कि पहले हुसैन की जो मुहिम दरपेश हुई है उसे सर करो, उसके बाद ईरान की तरफ़ रवाना होना।

अमरू इब्ने साद एक सहाबी का बेटा था। इस निस्बत से वह ख़ूब जानता था कि इमाम नवासए रसूल हैं और उनसे जंग करना गोया अपने आप को आतिशे जहन्नम में डालना होगा। इसलिए उसने इब्न-ज़्याद से

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कहा : मुझे इस अम्र से अलग कर दीजिए तो बेहतर होगा। इब्न–ज़्याद ने कहा : अगर हुसैन के मुक़ाबले के लिए नहीं जाते तो रैय की हुकूमत का परवाना, जो तुम्हारे नाम लिखा गया है, उसे वापस कर दो। इब्न–साद ने उस मामला पर ग़ौर करने के लिए एक दिन की मोहलत मांगी। फिर आख़िर दुनयवी हुकूमत की लालच में आकर इमामे आली मक़ाम से मुक़ाबला के लिए तैयार हो गया। और वही चार हज़ार का लशकर जो मुल्के ईरान के लिए तैयार था उसे साथ लेकर तीसरी मुहर्रम को करबला पहुंचा। यहां तक कि इब्न–साद के पास बाईस हज़ार का लशकर जमा हो गया। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३६)

इब्न–साद करबला पहुंच कर उरवा बिन क़ैस अल–अहमसी को हुक्म दिया कि वह हज़रत इमाम हुसैन के पा‌‌‌‌‌‌स जाए और उनसे पूछे कि वह किस ग़र्ज़ से यहां आए हैं और क्या चाहते हैं? उरवा उन लोगों में से था जिन्होंने ख़त लिखकर आपको कूफ़ा बुलवाया था इसलिए उसे शर्म महसूस हुई। उसने यह ख़िदमत बजा लाने से इन्कार कर दिया। उसके इन्कार के बाद दूसरे लोगों के सुपुर्द यह काम किया गया। लेकिन उनमें से हर शख़्स हज़रत इमाम हुसैन को बुलाने वालों में शामिल था इसलिए कोई भी आपके पास जाने पर आमादा न हुआ। आख़िरकार अमरू बिन साद ने कुरह बिन सुफ़ियान हन्ज़ली को आपके पास भेजने के लिए तैयार कर लिया। और उससे कहा कि तुम सिर्फ़ इमाम हुसैन से यह पूछना कि यहां आने से आपकी ग़र्ज़ क्या है ? चुनांचे कुरह बिन सुफ़ियान हज़रत इमाम के पास आया और यही सवाल किया। आपने उससे फ़रमाया : तुम्हारे शहर वालों ने पै–दर–पै ख़ुतूत लिखकर मुझे बुलाया। अब अगर तुम्हें मेरा आना पसंद नहीं है तो मैं वापस चला जाऊंगा। जब अमरू बिन साद को हज़रत इमाम आली मक़ाम का यह जवाब मिला तो उसने अपना सवाल और इमाम आली मक़ाम का जवाब लिखकर इब्न–ज़्याद के पास भेज दिया।

ख़त पहुंचा। इब्न–ज़्याद ने पढ़ा। और ग़ुरूर व तकब्बुर और ज़ुल्म व सफ़्फ़ाकी के जज़्बे के तहत उसने यह शेर पढ़कर अपनी तारीक ज़ेहनीयत का सुबूत दिया :

अलआन इज़ अतक़त मुख़ालिबुना बिही
यरजुन्नजा त वला त ही न मनास

यानी अब जबकि हमारे पंजों ने उसे जकड़ लिया है तो निकलना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहता है हालांकि अब कोई जाए फ़रार नहीं। यह कह कर उसने इब्न–साद को जवाब लिखा।

तुम्हारा ख़त मिला। तुमने जो कुछ तहरीर किया है, मैं उसे अच्छी तरह समझ गया हूं। तुम हुसैन और उसके तमाम साथियों से कहो कि वह यज़ीद की बैअ़त करें। अगर वह बैअ़त कर लें तो उसके बाद हम जो मुनासिब समझेंगे करेंगे। इब्न–साद को जब यह ख़त मिला तो उसने कहा : मैं समझ गया कि इब्न–ज़्याद को आफ़ियत और अमन मन्ज़ूर नहीं।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३७)

हज़रत इमाम हुसैन और साथियों पर पानी बन्द

सातवीं मुहर्रम को इब्न–ज़्याद का दूसरा ख़त अमरू बिन साद के पास पहुंचा जिसमें यह हुक्म लिखा हुआ था कि –

"हुसैन और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दो। इस तरह कि उन्हें एक क़तरा पानी न मिलने पाए। जैसा कि अमीरुल–मोमिनीन हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ किया गया था।"

उस ख़त को देखते ही अमरू बिन साद ने अमरू बिन हज्जाज ज़ुबैदी को पांच सौ (५००) सवारों की फ़ौज के साथ नहरे फ़ुरात पर मुक़र्रर कर दिया और ताकीद कर दी कि हज़रत हुसैन और उनके साथियों तक पानी का एक क़तरा भी न पहुंचने पाए।

हाकिम का हुक्म यह है कि पानी बशर पिएं
घोड़े पिएं, सवार पिएं और शुतुर पिएं
काफ़िर तलक पिएं तो मना तुम न कीजियो
पर फ़ातिमा के लाल को पानी न दीजियो

तारीख़ी किताबें इस बात की गवाह हैं कि इमाम हुसैन की शहादत से तीन रोज़ क़बल पानी बन्द कर दिया गया था।

अब्दुल्लाह इब्ने अबी हुसैन अज़्दी ने पुकार कर कहा : ऐ हुसैन! देखते हो, यह पानी नीला–नीला आसमानी रंग का, किस तरह बह रहा है। लेकिन ख़ुदा की क़सम! तुम्हें इससे एक क़तरा भी नसीब नहीं होगा और तुम इसी तरह प्यासे ही मर जाओगे। (मआज़ल्लाह!) यह सुनकर आपने फ़रमाया : **अल्लाहुम्मक़्तलहु अतशौं वला तग़्फ़िर अ बदन** ऐ अल्लाह! उसको प्यास की हालत में मार और उसको हरगिज़ कभी न बख़्शना।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बाद अज़ीं यह बे–अदब गुस्ताख़ बीमार पड़ा। हमीद बिन मुस्लिम कहते हैं मैं उसकी अयादत को गया, तो ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की क़सम! मैंने उसे देखा कि पानी पीता और क़य कर देता। फिर प्यास– प्यास कहता। उसको पानी दिया जाता मगर सैराब न होता यहां तक कि उसी हालत में मर गया। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३६)

इमाम आली मक़ाम और अमरू बिन साद की मुलाक़ात

हज़रत इमाम आली मक़ाम हरगिज़–हरगिज़ इस बात को पसंद नहीं फ़रमाते थे कि मुसलमानों के दर्मियान ख़ूंरेज़ी हो और उसका धब्बा मेरे ऊपर लगाया जाए। इसलिए आपने इतमाम हुज्जत के लिए दोबारा ख़ुद अपनी जानिब से सुलह की गुफ़्तगू का आग़ाज़ फ़रमाया और उमरू बिन क़ुर्ज़ा बिन काब अन्सारी के ज़रिए इब्न–साद को यह पैग़ाम भेजा कि आज रात हम तुमसे मिलना चाहते हैं। इब्न–साद ने यह बात मान ली और रात के वक़्त बीस सवारों के साथ लशकरे इमाम हुसैन के सामने आया। हज़रत इमाम हुसैन भी इतने ही साथियों के साथ तशरीफ़ लाए। मगर जब क़रीब पहुंचे तो आपने अपने साथियों को हटा दिया। उसके बाद इब्न–साद ने भी अपने साथियों को अलाहदगी का हुक्म दे दिया। दोनों में काफ़ी रात गए तक गुफ़्तगू होती रही। जिसको किसी ने नहीं सुना। फिर दोनों अपने–अपने साथियों के साथ अपनी–अपनी क़्यामगाह में आ गए।

इस गुफ़्तगू के मुतअल्लिक़ किसी को सही इल्म नहीं है कि यह गुफ़्तगू क्या थी लेकिन लोगों ने मुख़तलिफ़ क़्यासात लगाए हैं। पहली रिवायत जो लोगों ने अपने–अपने वहम व गुमान से ब्यान की है वह यह है कि हज़रत इमाम हुसैन ने यह तजवीज़ पेश की कि हम दोनों अपनी–अपनी फ़ौजों को छोड़कर यज़ीद के पास चले चलें। इब्न–साद ने कहा कि मुझे ख़ौफ़ है कि ऐसा करने से मेरा मकान गिरा दिया जाएगा और मेरी सारी जायदाद छीन ली जाएगी। इमाम हुसैन ने फ़रमाया : मैं तुम्हें उससे अच्छा मकान बनवा दूंगा और उससे अच्छी जायदाद दूंगा जो हिजाज़ में है। लेकिन इब्न–साद किसी क़ीमत पर तैयार न हुआ। दूसरी क़्यासी रिवायत यह ब्यान की जाती है कि हज़रत इमाम हुसैन ने यह तीन बातें पेश कीं :

(१) मैं जहां से आया हूं मुझे वहीं चले जाने दो।(२) मुझे मम्लकते इस्लाम के किसी भी सरहदी मक़ाम पर ले चलो, मैं वहीं रह कर वक़्त

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

गुज़ार लूंगा। (३) मुझको सीधा यज़ीद के पास भेज दो, उससे मिल कर मैं अपना मामला तय कर लूंगा। एक वहमी कौल यह पेश किया जाता है कि आपने यह फ़रमाया कि मैं यज़ीद के हाथ में हाथ दे दूंगा।

मुसन्निफ़ तारीखे़ तबरी ने उन दोनों रिवायतों को लोगों का वहम व गुमान बताया है। और आगे लिखते हैं कि यह बातें हरगिज़–हरगिज़ हज़रत इमाम हुसैन ने नहीं कहीं, यह लोगों का ख़्याल है। बल्कि सही रिवायत यह है कि इमाम हुसैन ने यह फ़रमाया कि मुझे इस वसी व अरीज़ ज़मीन में से किसी तरफ़ निकल जाने दो। मैं देखूंगा कि अन्जाम क्या होता है।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४०)

मुअल्लिफ़े सियरुस्सहाबा मौलाना शाह मुईनुद्दीन नदवी ने भी दूसरी रिवायत के मुतअल्लिक़ लिखा है कि यह रिवायतन और दिरायतन दोनों हैसियतों से कमज़ोर और नाक़ाबिले एतबार है। इसकी रिवायती हैसियत यह है कि इस रिवायत का एक रावी मुजाहिद बिन सईद मुहद्देसीन के नज़दीक पायए एतबार से साक़ित है। अल्लामा हाफ़िज़ ज़हबी और इब्ने हजर दोनों ने इस पर जिरह की है और उसको नाक़ाबिले एतबार क़रार दिया है। उसके अलावा उक़बा बिन समआन का ब्यान है कि मैं मदीना से मक्का और मक्का से इराक़ तक बराबर हज़रत इमाम हुसैन के साथ रहा। शहादत तक उन से जुदा नहीं हुआ। मगर आप ने मदीना में, मक्का में, रास्ता में, इराक़ में, लश्करगाह में – ग़र्ज़ शहादत तक कहीं भी किसी गुफ़्तगू में कोई ऐसा ख़्याल ज़ाहिर नहीं फ़रमाया जिससे यह मालूम होता कि आप यज़ीद के हाथ में हाथ देने या किसी सरहदी मक़ाम पर बस जाने के लिए आमादा थे। आपने हमेशा यही फ़रमाया कि मुझे इस वसी व अरीज़ ज़मीन में से किसी तरफ़ निकल जाने दो। अल्लाह की ज़मीन बहुत वसी है और मैं उस वक़्त तक वहां रहूंगा जब तक लोग कोई फ़ैसला न कर लें। दिरायती हैसियत यह है कि इब्न–ज़्याद का तो यही हुक्म था कि अगर हुसैन बैअ़त कर लें तो फिर उनसे कोई तअर्रुज न किया जाए। इब्ने–साद भी दिल से चाहता था कि किसी तरह जंग की नौबत न आए। चुनांचे उसने उसे टालने की पूरी कोशिश की थी और इब्न–ज़्याद को लिखा था कि हुसैन वापस जाने पर आमादा हैं और यज़ीद से बैअ़त करने पर तैयार हैं। तो फिर इब्न–साद और इब्न–ज़्याद का उसको कुबूल न करना और आपके साथ लड़ाई कर के आपको और आपके रुफ़क़ा को शहीद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कर देना क्या माने रखता है ? (सियरुस्सहावा जिल्द ६ सफ़ा १४७)

नोट : नदवी मस्लक वालों को अपने आलिम की उस इबारत से सबक़ हासिल करना चाहिए। ख़ास तौर से औरंगाबाद (महाराष्ट्र) दारुल—उलूम काशिफ़ुल उलूम के एक मुदर्रिस ने जो मुअल्लिफ़े किताब की हिमायत की है। इस इबारत को पढ़कर अपनी ग़लती से तौबा व इस्तिग़फ़ार करना चाहिए।

हज़रत इमाम हुसैन से मुलाक़ात करने के बाद इब्ने साद को यह कहना पड़ा कि आप सुलह के रास्ते पर गामज़न हैं। उसने बहुत ख़ुश होकर इब्न—ज़्याद को ख़त लिखा और हज़रत इमाम हुसैन की इस शर्ते मसालिहत से इत्तिला दी कि ख़ुदाए तआला ने आग के शोले को बुझा दिया। मुसलमानों के शीराज़ा को बिखरने से बचा लिया है और इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा दिया। इब्न—साद को यह ख़त इब्न—ज़्याद के पास पहुंचा तो ख़त पढ़कर इब्न—ज़्याद ने कहा : यह ख़त एक ऐसे शख़्स का है जो अपने अमीर का ख़ैर ख़्वाह और अपनी क़ौम पर मेहरबान है। अच्छा मैं इस तजवीज़ को क़ुबूल करता हूं। यह सुनकर बदबख़्त शमरज़ील जौशन खड़ा हुआ और कहा : आप यह बात उनकी क़ुबूल कर रहे हैं। जबकि वह आपके क़ब्ज़े में आ चुके हैं। वल्लाह! अगर हुसैन हाथ से निकल गए और उन्होंने आपकी इताअत क़ुबूल न की तो वह आगे चल कर ज़रूर क़ुव्वत व शौकत हासिल कर लेंगे और आप कमज़ोर व आजिज़ हो जायेंगे। मेरी राय में तो आप उन्हें यह क़द्र व मन्ज़िलत हासिल करने का मौक़ा न दें बल्कि आप उन्हें हुक्म दें कि वह और उनके साथी अपने आपको हमारे हवाले कर दें। इस सूरत में अगर आप उन्हें सज़ा देंगे तो सज़ा देना आप का हक़ होगा और अगर माफ़ कर देंगे तो इसका भी आपको इख़्तियार है। वल्लाह! मुझे तो मालूम हुआ है कि हुसैन और इब्न—साद दोनों लशकरों के दर्मियान रात—रात भर बैठे बातें किया करते हैं।

शिमर ख़बीस की उस ख़ुशामदाना और फ़ितना—परवर तक़रीर से इब्ने ज़्याद की राय बदल गई। उसने कहा : ऐ शिमर! तुमने अच्छी राय दी है। और फिर इब्न—साद को लिखा कि मैंने तुम्हें इस लिए नहीं भेजा कि तुम हुसैन के बचाने की फ़िक्र करो और सिफ़ारशी बन कर उनकी सलामती चाहो। देखो, अगर हुसैन और उनके साथी मेरे हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म करें तो उनको मेरे पास भेज दो और अगर वह इन्कार करें तो उन पर हमला कर दो। उनके सर काट कर मेरे पास रवाना करो और हुसैन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

को सर पर घोड़े दौड़ा कर रौंद डालो। इसलिए कि वह इसी के मुस्तहिक है। अगर तुमने हमारे अहकाम की तामील की तो हम तुम्हें बेश करार इनामात से नवाज़ेंगे और अगर तुम्हें यह मन्ज़ूर न हो तो हमारा लशकर शिमर के हवाले कर दो और खुद अलग हो जाओ।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४०)

जब शिमर ने इब्न–ज़्याद का ख़त अमरू बिन साद को लाकर दिया तो उसने पढ़कर कहा। खुदा तुझे ग़ारत करे। तू मेरे पास यह क्या लाया है? वल्लाह! मैं समझता हूं कि तूने ही इब्न–ज़्याद को मेरे मशवरा पर अमल करने से रोक दिया और इस बात को बिगाड़ दिया जिसके बन जाने की उम्मीद थी। खुदा की क़सम! हुसैन कभी इब्न–ज़्याद के सामने नहीं झुकेंगे। उनके पहलू में एक खुद्दार दिल है। शिमर ने कहा : इन बातों को जाने दो। यह बताओ अब क्या करोगे? अमीर के हुक्म की तामील करके उनके दुशमनों को क़त्ल करोगे या लश्कर मेरे हवाले करोगे? इब्न–साद दुनिया पर जान देने वाला और रैय की हुकूमत का मुतमन्नी था। उसने कहा : मैं लशकर तुम्हारे सुपुर्द नहीं करूंगा। बल्कि यह मुहिम में खुद सर करूंगा। तुम पैदल फ़ौज की निगरानी करो।

एक रात की मोहलत : ९ मुहर्रमुल–हराम सन् ६० हिजरी बरोज़ जुमेरात शाम के वक़्त इब्न–साद ने अपने साथियों को हमला करने का हुक्म दिया। उस वक़्त हज़रत इमाम आली मक़ाम अपने ख़ेमा के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे कि आपकी आंख लग गई थी। अचानक फ़ौज के शोर व गुल की आवाज़ सुनकर आपकी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा परदे के पास आईं और इमाम आली मक़ाम को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया : देखिए दुश्मन के फ़ौज की आवाज़ बहुत नज़दीक से आ रही है। आपने सर उठाया और फ़रमाया : मैं ने अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम अन्क़रीब हमारे पास आने वाले हो। हज़रत ज़ैनब ने यह सुनकर रोते हुए कहा **या वैलताह** (हाय मुसीबत!)। आप ने फ़रमाया : तुम्हारे लिए मुसीबत नहीं। अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाए। सब्र करो और ख़ामोश रहो। अभी यह गुफ़्तगू हो ही रही थी कि हज़रत अब्बास ने आकर इत्तिला दी कि फ़ौजे आदा ने हमला कर दिया है। यह सुनकर हज़रत इमाम आली मक़ाम अपनी जगह से उठे और फ़ौजे आदा की तरफ़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

जाने लगे तो हज़रत अब्बास ने कहा : नहीं, आप नहीं, मैं जाता हूं। आप ने फ़रमाया : मगर यह पूछ लेना कि इस वक़्त हमला का सबब क्या है? हज़रत अब्बास यज़ीदी फ़ौज के सामने आए और पूछा : जवाब मिला इब्न-ज़्याद का हुक्म है कि आपलोग उसकी इताअत करो या फिर जंग के लिए तैयार हो जाओ। हज़रत अब्बास ने कहा : ज़रा ठहरो, जल्दी न करो, मैं इब्ने रसूलुल्लाह को तुम्हारे मक़सद से आगाह करता हूं। उन्होंने इमाम को इब्न-साद और उनके साथियों के मक़सद से आगाह किया तो आपने फ़रमाया : उन लोगों से कहो कि एक रात की मोहलत दें ताकि आज रात भर हम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ लें, दुआएं मांग लें और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मुझको नमाज़, दुआ और इस्तिग़फ़ार से कितनी मुहब्बत है। हज़रत अब्बास ने जाकर इब्ने साद के दस्ता से कहा कि हमें एक रात की मोहलत दो। इब्न-साद ने शिमर और दूसरे साथियों से पूछा तो सब ने मोहलत की राय दी। इब्न-साद ने सब साथियों से मशवरा करने के बाद हज़रत अब्बास से कहा हम लोगों ने तुम्हें कल तक मोहलत दे दी है। यह कह कर इब्न-साद वापस चला गया। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने अपने साथियों को जमा कर के हस्बे ज़ैल ख़ुतबा दिया।

ख़ुतबा-ए-इमाम आली मक़ाम

तमाम तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं और आराम व तकलीफ़ हर हाल में उसका शुक्र है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा शुक्र अदा करता हूं कि तूने हमें (अहलेबैत) को नुबूवत की इज़्ज़त अता फ़रमाई। क़ुरआन का इल्म अता फ़रमाया और दीन की समझ-बूझ अता की। सुनने वाले कान, देखने वाली आंखें, और दाना दिल की नेमतों से मालामाल फ़रमाया। उसके बाद हज़रत इमाम ने फ़रमाया : मैं दुनिया में किसी के साथियों को अपने साथियों से ज़्यादा वफ़ादार और बेहतर नहीं जानता और न किसी के घर वालों को अपने घर वालों से ज़्यादा निकोकार और सिलारहमी करने वाला देखता हूं। ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर तुम सबको मेरी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए। सुन लो! मैं यक़ीन रखता हूं कि उन लोगों के हाथों सुबह हमारी शहादत है। इसलिए मैं तुम सबको बख़ुशी इजाज़त देता हूं कि रात की तारीकी में जहां तुम लोगों का जी चाहे चले जाओ। मेरी तरफ़ से कोई मलामत और रोक नहीं होगी। बिला शुब्हः यह लोग मेरे ही क़त्ल के तालिब

Presented by: https://jafrilibrary.com

है और जब मुझे क़त्ल कर लेंगे तो किसी दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होंगे।

इस खुतबा को सुनकर सबसे पहले हज़रत अब्बास, फिर आपके दूसरे भाईयों, बेटों, भतीजों और भांजों ने यक–ज़ुबान होकर कहा : क्या हम सिर्फ़ इसलिए चले जाएं कि आपके बाद ज़िन्दा रहें। ख़ुदा हमें वह दिन न दिखाए। इसके बाद इमाम आली मक़ाम ने ख़ास तौर से औलादे अक़ील की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मुस्लिम की शहादत तुम्हारे लिए काफ़ी है। इसलिए मैं तुम्हें इजाज़त देता हूं कि तुम चले जाओ। लेकिन बा–हमिय्यत भाईयों ने कहा : हम, लोगों को क्या जवाब देंगे? क्या हम उन्हें यह कहेंगे कि हम अपने सरदार, अपने आक़ा, और बेहतरीन इब्न–अम को दुश्मनों के नर्ग़े में छोड़कर आए हैं। न हमने उनके साथ मिलकर कोई तीर चलाया, न नेज़ा मारा, न तलवार का कोई वार किया। और फिर हमें यह भी नहीं मालूम कि उनका क्या हश्र हुआ ? ख़ुदा की क़सम! हम हरगिज़ ऐसा नहीं करेंगे बल्कि हम अपनी जानें, अपना माल और अपने अह्ल व अयाल सब आप पर क़ुर्बान कर देंगे। आपके साथ होकर आपके दुश्मनों से लड़ेंगे जो अन्जाम आपका होगा, वही हमारा होगा। ख़ुदा वह ज़िन्दगी न दे जो आपके बाद हो।

उसके बाद असहाब में से हज़रत मुस्लिम बिन औसजा खड़े हुए और कहा : हम आपको छोड़कर चले जाएं! यह हमसे हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा की क़सम! मैं दुश्मनों से नेज़ा के साथ जंग करूंगा, यहां तक कि मेरा नेज़ा उनके सीनों में टूट जाए। और तलवार चलाऊंगा जब तक उस का क़ब्ज़ा मेरे हाथ में ठहर सके। ख़ुदा की क़सम! अगर मेरे पास हथियार न होंगे तो मैं पत्थर मार–मार कर दुश्मनों से लडूंगा और आप पर अपनी जान निसार कर दूंगा।

उसके बाद हज़रत सईद बिन अब्दुल्लाह हन्फ़ी ने कहा : ख़ुदा की क़सम! हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। जब तक अल्लाह तआला की बारगाह में यह साबित न कर लें कि हमने रसूले-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद आप के नवासे की कैसी हिफ़ाज़त की है ? ख़ुदा की क़सम! अगर मुझको यह मालूम हो जाए कि मैं क़त्ल हो जाऊंगा, फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा, और फिर जीते जी जला दिया जाऊंगा और मेरी राख हवा में मुन्तशिर कर दी जाएगी और उसी तरह सत्तर मर्तबा मेरे साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

होगा तब भी मैं आप का साथ न छोड़ूंगा। और यह तो एक ही मरतबा क़त्ल होना है। उसके बाद वह दायमी इ़ज़्ज़त है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं है।

उसके बाद हज़रत ज़ुहैर बिन क़ीन खड़े हुए और कहा : मेरी तो यह आरज़ू है कि मैं क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं, और फिर क़त्ल किया जाऊं। ऐसे ही मेरे साथ हज़ार मरतबा हो, मगर किसी तरह ख़ुदाए तआला आपको और आपके अहले बैत के नौजवानों को बचा ले।

ग़र्ज़ यह कि इसी तरह आपके हर रफ़ीक़ और जां–निसार ने अपनी–अपनी अक़ीदत और जां–निसारी का इज़हार किया। उसके बाद आप और आपके तमाम साथियों ने नमाज़ व दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में सारी रात गुज़ार दी। उसके साथ ही ख़ेमों की पुश्त पर ख़न्दक़ खोद कर लकड़ियां भर दीं ताकि बवक़्ते जंग उनमें आग लगा दी जाए तो दुशमन पीछे से हमला न कर सके।

इधर दुशमनों के घोड़े बराबर ख़ेमों के गिर्द चक्कर लगाते रहे ताकि कोई शख़्स बच कर निकल न सके।

(तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २४५)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

करबला में

क़यामते सुग़रा

दसवीं मुहर्रम सन् ६१ हिजरी के दिलदोज़ वाक़िआत

आशूरए मुहर्रम की रात ख़त्म हुई और दसवीं मुहर्रम सन् ६१ हिजरी मुताबिक़ २८ अक्तूबर सन् ६८१ हिजरी की क़्यामत–नुमा सुबह नमूदार हुई। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अहले बैत और अपने तमाम साथियों के साथ नमाज़े फज्र निहायत ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ अदा फ़रमाई। पेशानियों ने सज्दे में ख़ूब मज़े लिए और ज़ुबानों ने क़िरअत व तस्बीहात के लुत्फ़ उठाए। यह शुहदाए करबला की आख़िरी नमाज़ थी। नमाज़ के बाद इमाम पाक ने सबके लिए सब्र व इस्तिक़ामत की दुआ मांगी। अब दसवीं मुहर्रम का सूरज अन्क़रीब निकलने वाला था। हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके तमाम रूफ़क़ा व अह्ले–बैत तीन दिन के भूखे प्यासे हैं। एक लुक़मा किसी की हलक़ के नीचे नहीं उतरा। और न एक क़तरा पानी किसी को मुयस्सर हुआ। भूख व प्यास से जिस क़दर ज़ोफ़ व तवानाई का ग़ल्बा हो जाता है वही लोग कुछ अन्दाज़ा कर सकते हैं जिन्हें कभी दो–तीन वक़्त फ़ाक़े की नौबत आई हो। उसके अलावा वतन से दूर परदेस और तेज़ धूप, गरम रेत और गरम हवाएं इन सब ने नाज़ परवरगाने आग़ोशे रिसालत को कैसा पज़्मुर्दा कर दिया होगा। उन लोगों पर ज़ुल्म व जफ़ा का पहाड़ तोड़ने के लिए बाईस हज़ार का ताज़ा दम लशकर मौजूद है। बग़ैर इत्तिला के यज़ीदियों ने जंग का नक़्क़ारा बजा दिया। आक़ाए दो जहां सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़र्ज़न्द और फ़ातिमा ज़ुहरा के जिगरबन्द को मेहमान बना कर बुलाने वाली क़ौम ने जानों पर खेलने की दावत दी। हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ ले गए और ख़ुतबा फ़रमाया :

हम्द व सलात के बाद आपने फ़रमाया : लोगो! मेरे हसब व नसब पर ग़ौर करो कि मैं कौन हूं? फिर अपने गिरीबानों में मुंह डाल कर सोचो कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तुम्हें मेरा ख़ून बहाना और मेरी तौहीन करना जायज़ है? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं हूं? क्या मैं आप (सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम) के चचा–ज़ाद भाई हज़रत अली का फ़र्ज़न्द नहीं हूं? क्या सैयदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार के चचा और हज़रत जाफ़र तय्यार खुद मेरे चचा नहीं हैं? क्या तुममें से किसी ने यह नहीं सुना कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फ़रमाया है क़ि यह दोनों जन्नती जवानों के सरदार हैं। अगर तुम मेरी बात को सच समझते हो और हक़ीक़त में वह सच ही है इसलिए कि मैं कभी झूठ नहीं बोलता और अगर तुम मेरी बात को झूठी समझते हो तो अब भी इस्लामी दुनिया में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी, अबू–सईद ख़ुदरी, अनस बिन मालिक, सहल बिन साद साअ़दी और ज़ैद बिन अरक़म मौजूद हैं उनसे पूछ लो। तुम मुझे बताओ कि क्या यह हदीस तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोकने के लिए काफ़ी नहीं है?

शिमर ज़िल–जौशन बदबख़्त ने आपके ख़ुतबे में मुदाख़िलत करते हुए कुछ बदतमीज़ी की तो हबीब इब्ने मज़ाहिर ने उसे सख़्त जवाब देते हुए कहा कि अल्लाह ताअला ने तेरे दिल पर मोहर लगा दी है। इसलिए तू समझ नहीं पा रहा है कि हज़रत इमाम क्या फ़रमा रहे हैं ? शिमर और हबीब की गुफ़्तगू के बाद इमाम आली मक़ाम ने फ़िर फ़रमाया : ऐ लोगो! अगर तुम्हें इस हदीस की सेहत में कुछ शक हो तो क्या इसमें भी शक है कि मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूं। ख़ुदा की क़सम! इस वक़्त मशरिक़ व मग़रिब में कोई भी नबी का नवासा मेरे सिवा मौजूद नहीं है। न तुममें और न तुम्हारे सिवा दूसरी क़ौमों में। और मैं तो खुद तुम्हारे ही नबी का नवासा हूं। ज़रा ग़ौर तो करो कि मेरे क़त्ल पर तुम कैसे आमादा हो गए? क्या मैं ने किसी का क़त्ल किया है? या किसी का माल हलाक कर दिया है या किसी को ज़ख़्मी किया है जिसका क़सास तुम मुझसे लेना चाहते हो?

जब मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला तो आपने पुकार कर कहा : ऐ! शीश बिर रबई! ये हजार बिन अल जबर! ऐ क़ैस बिन अशअस! क्या तुम लोगों ने मुझे ख़त लिखकर नहीं बुलाया था? उन्होंने कहा : हमने कोई ख़त आपको नहीं लिखा था। आपने फ़रमाया तुम लोगों ने लिखा था, ज़रूर लिखा था। अच्छा अगर बफ़र्ज़े महाल नहीं भी लिखा था और तुम लोग नहीं चाहते थे कि मैं इधर आऊं तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी ऐसी जगह चला जाऊं जहां अम्न व अमान की ज़िन्दगी गुज़ार सकूं। (तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५१)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कैस बिन अशअस ने कहा : तुम अपने कराबतदार इब्न-ज़्याद के सामने सर झुका दो फिर आप के साथ कोई ना-पसंदीदा सुलूक नहीं होगा।

आपने फ़रमाया : तुम ऐसा क्यों न कहोगे। तुम मुहम्मद बिन अशअस ही के भाई तो हो। क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि मुस्लिम बिन अक़ील के ख़ून की ज़िम्मेदारी तुम पर ही है। ख़ुदा की क़सम! मैं ज़िल्लत के साथ अपना हाथ तुम्हारे हाथ में नहीं दूंगा। और न ग़ुलामों की तरह इताअत का इक़रार करूंगा।

मुख़ालिफ़ फ़ौज के मानने की पहले से ही उम्मीद न थी। मगर इमाम हुसैन को अपना फ़र्ज़ पूरा करना था, वह हो गया। फिर ऊंटनी बैठाकर उतर पड़े और उक़बा बिन सम्आन को हुक्म दिया कि उसे बांध दो।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद आपके साथियों ने भी उसी क़िस्म की तक़रीरें कीं। लेकिन शिमर ज़िल-जौशन और दूसरे तमाम कूफ़ियों की आंखों पर पर्दे पड़ चुके थे और दिलों पर मुहर लग चुकी थी इसलिए हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों की सारी इफ़हाम व तफ़हीम रायगां गई। किसी पर कोई असर न हुआ और इब्न-ज़्याद के लालची कुत्तों ने हज़रत इमाम हुसैन से कहा : आपके तमाम फ़ज़ाइल हमें मालूम हैं। मगर इस वक़्त यह मसला ज़ेरे बहस नहीं है। आप जंग के लिए मैदान में किसी को भेजिए और गुफ़्तगू ख़तम फ़रमाइए।

हुर्र की आमद : मुख़ालिफ़ीन की लशकर में उस वक़्त सिर्फ़ हुर्र ही वह वाहिद शख़्स था जिसके दिल पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की बातों का असर हुआ। हमारी किताब के नाज़रीन के लिए यह नाम कोई अजनबी हैसियत नहीं रखता। यह वही हुर्र है जिसने सबसे पहले हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके रुफ़क़ा को एक हज़ार फ़ौज की जमईयत के साथ आकर कूफ़ा के रास्ता में रोका था और घेर-घार कर करबला की सरज़मीन तक लाया था।

जब अमरू व बिन साद जंग शुरू करने के लिए आ गया तो हुर्र बिन यज़ीद रियाही ने आगे बढ़कर कहा : ख़ुदा तेरा भला करे, क्या तू वाक़ई उनसे जंग करेगा? इब्न-साद ने कहा : हां, ख़ुदा की क़सम! और ऐसी जंग कि जिसमें कम-अज़-कम सर कटेंगे और हाथ क़लम होकर ज़मीन पर गिरेंगे। हुर्र ने कहा : क्या इतनी सूरतें मसालिहत की जो इमाम हुसैन ने पेश कीं उनमें से तुम लोगों के नज़दीक क़ाबिले क़ुबूल नहीं? उमरू बिन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

साद ने कहा : ख़ुदा की क़सम! अगर मामला मेरे इख़्तियार में होता तो मैं ज़रूर मंज़ूर कर लेता। मगर क्या करूं? तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। उमरू बिन साद का यह जवाब उसकी नेकनीयती पर महमूल नहीं करना चाहिए कि अगर वह यही चाहता तो करबला की सरज़मीन पर हज़रत इमाम हुसैन को शहीद करने नहीं आता। नाज़रीन को याद होगा कि अमरू बिन साद रैय की हुकूमत के लालच में करबला आया था। उसकी तमाम बातों से हुर्र वाक़िफ़ था। ज़ब उमरू बिन साद की ज़ुबान से यह सुना कि तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। तो वह वहां से हट गया।

नवासए रसूल से जंग करने के तसव्वुर ने उसके बदन पर कपकपी तारी करदी और चेहरे पर परेशानी के आसार ज़ाहिर होने लगे। तो मुहाजिर बिन औस जो उसी के क़बीला का एक शख़्स था, कहने लगा : हुर्र ! यह तुम्हारी क्या हालत है? तुम पर इस क़दर ख़ौफ़ व हिरास क्यों ग़ालिब है? मैंने इससे पहले तुम्हारी यह कैफ़ियत नहीं देखी। मुझसे जब पूछा जाता कि कूफ़ा में सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है तो मैं तुम्हारे सिवा किसी का नाम न लेता। मगर इस वक़्त मैं तुम्हारी अजीब हालत देख रहा हूं, आख़िर उसका सबब क्या है? हुर्र ने कहा : यह नवासए रसूल से जंग है। मैं इस वक़्त जन्नत और दोज़ख़ के दो राहे पर खड़ा हूं। मगर मैं जन्नत को किसी चीज़ के बदले नहीं छोड़ूंगा चाहे मेरे जिस्म के टुकड़े–टुकड़े कर दिए जायें और आग में जला दिया जाए। यह कहते–कहते उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और हज़रत इमाम आली मक़ाम की बारगाह में पहुंच गया। अर्ज़ किया : ऐ! फ़र्ज़न्दे रसूल! मेरी जान आप पर फ़िदा। मैं वही गुनाहगार हूं जिसने आपको वापस जाने से रोका। रास्ते में आपके साथ साथ रहा और आपके इस जगह ठहरने पर मजबूर किया। क़सम उस ख़ुदा की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैं हरगिज़ यह नहीं समझता था कि यह लोग आप के तमाम शराइत को जो आप पेश करेंगे मुस्तरद कर देंगे। और नौबत यहां तक पहुंच जायेगी। वल्लाह! अगर मुझे यह मालूम होता कि यह लोग आपके साथ ऐसा सुलूक करेंगे तो मैं हरगिज़ उनका साथ न देता, और जो गुस्ताख़ियां मुझ से हुई उनका मुर्तकिब न होता। अब मैं अपने किए पर नादिम हूं और अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा करता हूं और आप पर अपनी जान क़ुर्बान करने के लिए हाज़िर हुआ हूं। फ़रमाइए क्या मेरी यह तौबा क़ुबूल होगी? आपने फ़रमाया : हां, अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा। और तुम्हें बशारत हो कि जिस तरह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तुम्हारी मां ने तुम्हारा नाम जिस तरह हुर्र रखा है तुम दुनिया व आख़िरत में भी इन्शाअल्लाह हुर्र (आज़ाद) हो। घोड़े से तो उतरो। हुर्र ने कहा : मेरा आप की मदद में घोड़े पर सवार रहना नीचे उतरने से बेहतर है। अब मैं आख़िरी शहीद होकर घोड़े से उतरूंगा। हज़रत इमाम हुसैन ने फ़रमाया : अच्छा जो तुम्हारा दिल चाहे वही करो। ख़ुदाए तआला तुम पर रहम फ़रमाए। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५४)

हुर्र का कूफ़ियों से ख़िताब

हज़रत इमाम आली मक़ाम से माफ़ कराने के बाद हुर्र फ़ौरन मैदान में आ गये। और पहले तो उसने कूफ़ियों यज़ीदियों से मुलायम अन्दाज़ में कहा : ऐ लोगो! हुसैन ने जो बातें पेश की हैं उनमें से किसी एक बात को तुम क्यों नहीं मानते? ताकि ख़ुदाए तआला तुम को उनसे जंग करने से बचा ले। कूफ़ियों ने कहा : हमारा अमीर उमरू बिन साद है, जो कुछ कहना है उनसे कहो। हुर्र ने उमरू बिन साद से वही गुफ़्तगू की जो उससे पहले कर चुका था। तो इब्ने साद ने वही जवाब दिया जो उससे पहले दे चुका था। यह सुनकर हुर्र को गुस्सा आ गया और कहा : ऐ कूफ़ा वालो! ख़ुदाए तआला तुम को ग़ारत करे कि तुमने हज़रत इमाम हुसैन को बुलाया और जब वह आ गए तो उन्हें दुशमन के हवाले कर दिया। तुम कहते थे कि हम उन पर अपनी जानें क़ुरबान कर देंगे। और अब तुम उन्हीं पर हमला कर के उनके क़त्ल पर आमादा हो गए हो। उनको तुमने गिरफ़्तार कर लिया, उनको चारों तरफ़ से घेर लिया। और तुमने उनको ख़ुदाए तआला की लम्बी चौड़ी ज़मीन में, जिधर वह अम्न का रास्ता पाए, जाने से रोक दिया और वह अब तुम्हारे हाथों में क़ैदी की तरह हो गए हैं। तुमने उनको, उनके अह्ले हरम को, उनके बच्चों को, उनके रुफ़क़ा को दरियाए फ़ुरात के उस बहते हुए पानी से रोक दिया है जिससे यहूदी, मजूसी, और नसरानी तक पीते हैं और इराक़ के सूअर और कुत्ते तक उसमें लोटते हैं। मगर उस पानी के लिए इमाम हुसैन और उनके अह्ल व अयाल और असहाब तरस रहे हैं। तुम ने रसूलुल्लाह के बाद उनकी औलाद के साथ क्या बुरा सुलूक किया है ? अगर आज तुम इसी वक़्त तौबा नहीं करोगे और अपने तर्ज़े अमल से पशीमान होकर बाज़ न आओगे तो क़यामत के दिन ख़ुदाए तआला तुम्हें भी प्यास से तड़पाएगा।

हुर्र की तक़रीर दुशमन के मफ़ाद के ख़िलाफ़ बहुत ख़तरनाक साबित

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हो सकती थी इसलिए वह हुर्र पर तीर बरसाने लगे। हुर्र ने यह देखा तो तक़रीर मौकूफ़ कर दी। और चूंकि अभी जंग बाक़ायदा शुरू न हुई थी इसलिए वह वापस आकर इमाम हुसैन के सामने खड़े हो गए।

जंग का आग़ाज़

और इब्न-साद का पहला तीर

हुर्र के वापस आने के बाद इब्न–साद ने अपने लशकर को आगे बढ़ाया और अपने गुलाम ज़ुवैद को, जो अलमबरदार था, आवाज़ दी कि झण्डा मेरे क़रीब लाओ। वह उसके पास आकर खड़ा हो गया। इब्न–साद ने कमान में तीर जोड़कर हुसैनी लशकर की तरफ़ चला कर अपनी फ़ौज से पुकार कर कहा : तुम सब लोग गवाह रहना कि सबसे पहला तीर मैं ने ही मारा है। सिपहसालार लशकर के इन अल्फ़ाज़ को सुनकर लशकरियों में जोश व ख़रोश पैदा हो गया। और वह सब लोग भी तीर बरसाने लगे। इस तरह जंग का आग़ाज़ हुआ। और अब दोनों तरफ़ से सिपाही निकल निकल कर आने और अपने बहादुरी का मुज़ाहिरा करने लगे। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५६)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी

यह बनी–अलीम में से हैं। कूफ़ा के रहने वाले थे और क़बीलए हमदान के बिरे जआ नाम के कुंए के पास अपने ज़ाती मकान में रहते थे। उनकी बीवी उम्मे वहब जो ख़ानदाने नुमैर बिन फ़ा[illegible] से थीं, उनके साथ थीं, अब्दुल्लाह ने मक़ाम नख़लीया में एक लश्कर जर्रार देखा तो लोगों से पूछा कि यह लशकर कहां जा रहा है ? किसी ने उनसे कह दिया फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह के फ़र्ज़न्द हुसैन के साथ जंग करने के लिए। अब्दुल्लाह को मुद्दत से यह आरज़ू थी कि मुश्रिकीन से जिहाद करें। ख़्याल आया कि यह लोग अपने पैग़म्बर के नवासे पर लशकर कशी कर रहे हैं इसलिए इन लोगों से जिहाद करना इन्दल्लाह मुश्रिकीन के साथ जिहाद करने से अज्र व सवाब में कम नहीं है। फिर अपनी बीवी के पास आए और तन्हाई में बुला कर उसको सब हालात और अपने इरादे से आगाह किया। नेक सीरत बीवी ने कहा : तुम्हारा इरादा बहुत अच्छा है। अल्लाह तआला तुम्हारी आरज़ू पूरी फ़रमाए। चलो और मुझे भी अपने साथ ले चलो। अब्दुल्लाह अपनी बीवी के हमराह रातों–रात चल कर लशकरे इमाम में पहुंच गए। उस वक़्त जब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ौज इब्ने साद की जानिब से तीरों की बारिश हो चुकी थी, जो पैग़ामे जंग की हैसियत रखती थी। तो ज़्याद निब सुफ़ियान का आज़ाद करदा ग़ुलाम सालिम कूफ़ियों की तरफ़ से निकल कर मैदान में आए और मुक़ाबला के लिए मुबारिज़ तलब किया। हज़रत इमाम आली मक़ाम के दो जांनिसार साथी हबीब बिन मज़ाहिर और बरीर बिन हफ़ीर जोश में भरे हुए आगे बढ़े मगर इमाम ने उनको रोक दिया। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी खड़े हो गए और जंग की इजाज़त तलब की। हज़रत ने सर से पैर तक उन पर निगाह डाली। और फ़रमायाः अगर तुम्हारा दिल चाहता है तो जाओ। यह तन्हा दोनों के मुक़ाबिल गए। उन्होंने पूछा, तुम कौन हो? अब्दुल्लाह ने अपना नाम व नसब ब्यान किया तो उन्होंने क़हाः हम तुम्हें नहीं जानते। हमारे मुक़ाबले में ज़हीर बिन क़ीन, हबीब बिन मज़ाहिर या बरीर बिन हौजेर को आना चाहिए। यसार उस वक़्त सालिम से आगे बढ़ा हुआ था। अब्दुल्लाह ने कहा, ओ फ़ाहिशा के बेटे! तू मुझसे लड़ने में अपनी बेइज़्ज़ती समझता है। यह कहते हुए यसार पर हमला कर दिया। और तलवार की ऐसी ज़र्ब लगाई कि वह एक ही वार में ठण्डा हो गया। सालिम ने एक दम झपट कर हमला कर दिया। अब्दुल्लाह ने उसकी तलवार की वार को बाएं हाथ पर रोका जिससे उसकी हाथ की उंगलियां कट गई। उसके बाद ही अब्दुल्लाह ने मुड़कर एक ऐसा वार किया कि उसे भी ढेर कर दिया। और जोश में आकर शेर पढ़ने लगे जिसका मतलब यह था कि अगर मुझे नहीं पहचानते तो पहचान लो। मैं ख़ानदाने कलब का एक फ़र्द हूं। मेरे हसब व नसब के लिए इतना काफ़ी है कि ख़ान्दाने अलीम में मेरा घराना है। मैं बड़ी क़ुव्वत वाला हूं और मुसीबत के वक़्त पस्त–हिम्मती से काम लेने वाला नहीं हूं।

अब्दुल्लाह की बीवी ने जब यह सुना तो ख़ेमा की एक चोब (लकड़ी) हाथ में ली और आगे बढ़कर कहा। मेरे मां बाप तुम पर फ़िदा हो जाएं। नवासए रसूल की तरफ़ से लड़ते जाओ। वह अपनी बीवी के पास आए और चाहा कि उन्हें ख़ेमा में पहुंचा दें मगर वह मानने वाली नहीं थीं। कहा, मैं तुम्हारा साथ हरगिज़–हरगिज़ न छोड़ूंगी जब तक कि मैं ख़ुद भी तुम्हारे साथ जान न दे दूंगी। इमाम हुसैन ने देखा तो आवाज़ दी कि अल्लाह तआला तुम दोनों को जज़ाए ख़ैर दे। ऐ मोमिना! अह्ले–हरम के पास आ जाओ और उनके साथ बैठी रहो, क्योंकि औरतों पर जिहाद वाजिब नहीं है। उम्मे वहब ने हज़रत का हुक्म सुना तो अह्ले हरम के पास ख़ेमा में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वापस आ गई। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह ने कूफ़ियों के साथ बहुत दिलेरी और बहादुरी से जंग की। दुशमन के दो सिपाही फिर क़त्ल किए। मगर उसके बाद हानी बिन सबीत हज़रमी और बुकैर बिन हयी तमीमी ने उनपर हमला कर दिया। और उन दोनों के हाथ से दरजए शहादत पर पहुंच गए। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहे राजिऊन।**

नेक दिल बीवी को जब यह मालूम हुआ कि उनका शौहर हमेशा–हमेशा के लिए उनसे जुदा हो गया तो वह अपने शौहर की लाश पर आई। और अपने शौहर के सिरहाने बैठ कर उनके चेहरा से गर्द व गुबार साफ़ करती ज़ाती थीं और कहती जाती थीं। तुम्हें जन्नत मुबारक हो, बहिश्त की सैर मुबारक हो। मगर दुशमन का ज़ुल्म व तशद्दुद इस दर्जा बढ़ा हुआ था कि शमर ने अपने ग़ुलाम रुस्तम को आवाज़ दी कि इस औरत को भी काम तमाम कर दे। वह बढ़ा और उसने उस नेक दिल ख़ातून के सर पर ऐसा गुर्ज़ मारा कि वह जगह पर ही शहीद हो गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५६ और सफ़ा २६२)

मैदाने करबला में इमाम आली मक़ाम की करामतें

यज़ीदियों की जानिब से एक शख़्स घोड़ा कुदाता हुआ सामने आया जिसका नाम मालिक बिन उरवा था। जब उसने देखा कि लशकरे इमाम आली मक़ाम के ख़ेमों के गिर्द ख़न्दक़ में आग जल रही है और शोले बुलन्द हो रहे हैं। और इस तदबीर से अह्ले ख़ेमा की हिफ़ाज़त की जा रही है तो उस गुस्ताख़ बद–बातिन ने हज़रत इमाम आली मक़ाम से कहा: ऐ हुसैन! तुमने वहां की आग से पहले यहीं आग लगा ली है। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया **कज़बत या अदूव्वुल्लाह** ऐ दुश्मने ख़ुदा! तू झूठा है। तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा। हज़रत मुस्लिम बिन औसजा को मालिक उरवा का यह कलिमा बहुत नागवार हुआ और उन्होंने हज़रत इमाम से उस बद ज़ुबान के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त चाही। आप ने उन्हें इजाज़त न दी। मगर ख़ुदाए तआला की बारगाह में हाथ उठा कर दुआ की। या रब! अज़ाबे नार से पहले इस गुस्ताख़ को दुनिया के अन्दर आग के अज़ाब में मुब्तला फ़रमा। इमाम का हाथ उठाना था कि उस के घोड़े का पांव एक सुराख़ में गया और वह घोड़े से गिरा उसका पांव रिकाब में उलझा और घोड़ा उसे लेकर भागा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया। हज़रत इमाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ने सज्दए शुक्र अदा किया : अपने परवरदिगार की हम्द व सना की और अर्ज़ किया : ऐ परवरदिगार! तेरा शुक्र है कि तूने अहले–बैत रिसालत के बदख़्वाह को सज़ा दी। हज़रत इमाम की ज़ुबान से यह जुमला सुनकर दुशमनों की सफ़ में से एक और बेबाक ने कहा : आपको पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से क्या निस्बत? यह कलिमा तो हज़रत इमाम के लिए इंतिहाई तकलीफ़देह था। आपने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह! इस बद–ज़ुबान को फ़ौरन ज़िल्लत में गिरफ़्तार कर। इमाम ने यह दुआ फ़रमाई और उसको क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत पेश आई। वह घोड़े से उतर कर एक तरफ़ भागा और किसी जगह क़ज़ाए हाजत के लिए बरहना होकर बैठा। एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा, तो नजासत आलूदा तड़पता फिरता था। उस रुस्वाई के साथ पूरे लशकर के सामने इस नापाक की जान निकली। मगर सख़्त दिलाने बे–हमिय्यत को ग़ैरत न हुई।

(सवानहे करबला सफ़ा १०१)

एक मुज़नी ने इमाम के सामने आकर कहा कि ऐ इमाम! देखो तो दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें ले रहा है। ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि तुम्हें इसका एक क़तरा न मिलेगा। और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे। हज़रत इमाम ने उसके हक़ में फ़रमाया **अल्लाहुम्म म अमितहु अतशान** या रब! उसको प्यासा मार। इमाम का यह फ़रमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चमका। मुज़नी गिरा। घोड़ा भागा और मुज़नी उसके पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ा। और उस पर इस शिद्दत की प्यास ग़ालिब हुई कि अलअतश–अलअतश! पुकारता था। जब पानी उसके मुंह से लगाते थे तो एक क़तरा न पी सकता था यहां तक कि उसी शिद्दते प्यास में मर गया।

(सवानहे करबला सफ़ा १०३)

फ़र्ज़न्दे रसूल को यह बात भी पेश करनी थी कि उनकी मक़बूलियत बारगाहे हक़ पर और उनके क़ुर्ब व मन्ज़िलत पर उनके ख़्वारिक व करामात भी गवाह हैं। जैसा कि नुसूस कसीरा और अहादीसे शहीरा शाहिद हैं। अपने इस फ़ज़्ल का इज़्हार भी इतमामे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो, कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्दावात है उसके मुक़ाबले में आना ख़ुदा से जंग करना है। उसका अन्जाम सोच लो और बाज़ रहो। मगर शरारत के मुजस्समे उससे भी सबक़ न ले सके।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम के साथियों की शुजाअत और शहादत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पर जिन ख़ुशनसीबों ने अपनी जानें फ़िदा करने की सआदत हासिल की उस मुक़द्दस ज़ुमरा में हुर्र बिन यज़ीद रियाही क़ाबिले ज़िक्र हैं। अब्दुल्लाह बिन उमैर कलबी की शुजाअत और बहादुरी का मन्ज़र हुर्र ने अपनी निगाहों से देखा तो दिल में ख़्याल हुआ कि कहीं नासिर हुसैन मुझसे पहले न क़त्ल हो जाए। यह सोच कर हज़रत इमाम आली मक़ाम से इजाज़त ली और दुशमन के सामने पहुंचे। निहायत शुजाअत का मुज़ाहिरा करते हुए तीन भाइयों को फ़ी नारे जहन्नम किया और बहुत फुर्ती के साथ लशकरे इब्न–साद के मैमना पर हमला किया और ख़ूब ज़ोर की जंग की।

दुशमनों ने चारों तरफ़ से आप को घेर लिया। और वह जांबाज़ सादिक़ दादे शुजाअत दे कर फ़र्ज़न्दे रसूल के ज़ानूए मुबारक पर जान फ़िदा कर गया। आपके बाद हज़रत मुस्लिम बिन औसजा, बरीर बिन हज़ीर, हबीब बिन मज़ाहिर असदी व दीगर रुफ़क़ा ने अपनी–अपनी जानें कुर्बान कर दीं और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ुशनूदी के मुस्तहिक़ ठहरे। करबला की तारीख़ में हज़रत इमाम आली मक़ाम के साथियों की वफ़ादारी का यह बहुत बड़ा कारनामा रहा कि जब तक उनमें का एक भी बाक़ी रहा इमाम पाक के ख़ानदान के किसी शख़्स को उन्होंने मैदाने कारज़ार में जाने नहीं दिया। बल्कि उनके किसी एक फ़र्द को कोई तकलीफ़ भी न पहुंचने दी। उनके बाद ही औलाद हज़रत मौला अली मुशकिल कुशा व दीगर अह्ले–बैत अतहार की बारी आई कि वह मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ लाएं और इमाम पर अपनी जानें निछावर फ़रमाए।

औलादे अक़ील की शहादत

हज़रत इमाम आली मक़ाम के अक़रबा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील हज़रत इमाम आली मक़ाम से राहे हक़ में कुर्बान होने की इजाज़त तलब की तो आप की आंखों में आंसू आ गए। फ़रमाया : बेटे! अभी तुम्हारे बाप हज़रत इमाम मुस्लिम की जुदाई का दाग़ मेरे दिल से नहीं मिटा है। मैं किस तरह तुम्हें इजाज़त दे दूं? हज़रत अब्दुल्ला ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अर्ज़ किया : ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आप को उस ज़ाते माबूद बरहक़ की क़सम! जिसने आप के नाना जान को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया मुझे आप इजाज़त दीजिए। मेरा दिल अपने बाप के पास जाने के लिए बेक़रार है। हज़रत इमाम ने उनका शौक़े शहादत देखकर इजाज़त दे दी।

उस हाशमी जवान ने मैदान में आकर मुक़ाबला के लिए पुकारा। यज़ीदी लशकर से कुद्दामा बिन असद फ़ज़ारी जो बड़ा बहादुर समझा जाता था। आपसे मुक़ाबला करने के लिए निकला। थोड़ी देर तक दोनों में मुक़ाबला होता रहा। आख़िर अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने तलवार का एक ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि वह खीरे की तरह कट कर ज़मीन पर आ गया। फिर किसी यज़ीदी में हिम्मत न हुई कि तन्हा आपके मुक़ाबले में आता। आप तीन दिन के भूखे प्यासे होने के बावजूद दुशमनों पर शेर बब्बर की तरह हमला आवर होते और उनके सफ़ों को दरहम–बरहम करते चले जाते। आपकी तलवार से बहुत–से यज़ीदी ज़ख़्मी हुए और कई एक को जहन्नम रसीद किया। आख़िरकार नौफ़ल बिन मज़ाहिम हुमैरी ने आपको नेज़ा मार कर शहीद कर दिया। तारीखे तबरी में है कि उमरू बिन सबीह सदाई ने आप पर तीरों की बारिश कर दी जिससे आप शहीद हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु। (रौज़तुश्शुहदा जिल्द २ सफ़ा २७७)

हज़रत जाफ़र बिन अक़ील अपने भतीजे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम की शहादत के बाद अशकबार आखों से आगे बढ़े और हज़रत इमाम पाक को सलाम कर के इजाज़त तलब की। इमाम पाक ने उनको सीने से लगाया और इजाज़त दी। आप यह रिज्ज़ पढ़ते हुए मैदान में आए कि मैं मक्का का रहने वाला हूं। हाशमी नस्ल और तालिब के घराने का हूं। बेशक हम तमाम क़बीलों के सरदार हैं और हुसैन तमाम पाकीज़ा लोगों में सब से ज़्यादा पाकीज़ा शख़्सीयत हैं। उसके बाद आपने लड़ना शुरू किया और शुजाअत व बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि बहुत–से यज़ीदियों को वासिले जहन्नम किया। जब यज़ीदी मरदुम–ख़ोर कुत्ते उनसे मुक़ाबला न कर सके तो चारों तरफ़ से घेर कर आप पर तीरों की बारिश शुरू कर दी। और फ़र्ज़न्दे अक़ील लहूलहान हालत में अब्दुल्लाह बिन उज़्रा ख़शअमी के तीर से जामे शहादत नोश फ़रमा गए। रज़ियल्लाहु अन्हु। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ील ने जब अपने भाई को ख़ाक व ख़ून में तड़पते देखा तो बेताब हो गए और शेर की तरह मैदान में कूद गए। और वह बहादुरी दिखाई कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यज़ीदियों के ख़ून से मैदाने करबला को लालाज़ार बना दिया। आख़िर उस्मान बिन ख़ालिद जोहनी और बशर बिन सौत हमदानी के हाथों शहीद हो गए। रज़ियल्लाहु अन्हु।

फ़र्ज़न्दाने हज़रत अली की शहादत

औलादे हज़रत अक़ील की शहादत के बाद अब हज़रत मौला अली मुशकिल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़र्ज़न्दों की बारी आई। सब से पहले हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इमाम आली मक़ाम से इजाज़त लेकर मैदान में तशरीफ़ लाए। और अपनी बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि जिससे हज़रत मौला अली मुशकिल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी याद आ गई। आप जिधर रुख़ फ़रमाए दुशमनों की सफ़ों का सफ़ाया फ़रमा देते। आख़िर में इक्कीस कारी ज़ख़्म लगने से कुद्दामा नौसली के नेज़े से और बक़ौले बाज़ अब्दुल्लाह बिन उक़बा के तीर से जामे शहादत नोश फ़रमा कर जन्नत की तरफ़ रवाना हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु।

(रौज़तुश्शुहदा जिल्द २ सफ़ा २१२)

हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु के शहादत के बाद हज़रत उस्मान बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली और हज़रत जाफ़र बिन अली, यह तीनों भाई एक एक कर के मैदान में गए। और हज़ारों कूफ़ियों पर भारी हुए। और अपनी शुजाअत और क़ुव्वते हैदरी का वह जौहर दिखाया कि दुश्मनों ने दांतों तले उंगली दबा ली। बिलआख़िर बहुत–से यज़ीदियों को क़त्ल और ज़ख़्मी करने के बाद उन तीनों ने भी फ़र्ज़न्दे रसूल पर अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं।

हज़रत क़ासिम की शहादत

आप हाशिमी ख़ानदान के एक महकते हुए फूल हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनकी उम्र उन्नीस (१९) साल है। हज़रत इमाम आली मक़ाम के सामने दस्त बस्ता खड़े हैं। हज़रत इमाम देखते ही इरशाद फ़रमाते हैं : बेटा क़ासिम! क्यों क्या बात है? अर्ज़ किया : हुज़ूर वाला! अब्बा जान का जब इन्तिक़ाल हो रहा था उस वक़्त उन्हों ने मुझे एक तावीज़ दिया था। और वसीयत फ़रमाई थी कि उसे अपने बाज़ू में बांध लेना। एक वक़्त आएगा जब मेरे भाई हुसैन पर मुश्किल पड़ेगी तब उस तावीज़ को खोल कर देख लेना और जो कुछ उस में लिखा होगा उस पर अमल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

करना। चचा जान! इससे ज़्यादा और कौन–सी मुश्किल पेश आएगी। मैंने तावीज़ खोला तो उसमें लिखा हुआ है "क़ासिम! करबला के मैदान में जब वक़्त आ पड़े तो अली अकबर को मैदान में न जाने देना बल्कि ख़ुद पहले जाकर अपनी जान अल्लाह की राह में कुर्बान कर देना" चचा जान! मैं अपने अब्बा जान की वसीयत पूरी करने के लिए इजाज़त लेने आया हूं। हज़रत इमाम की आंखों में आंसू भर आये। फ़रमाया : बेटा! तुम्हें देखकर मैं अपने भाई जान की याद ताज़ा कर लेता था। तुम ही बताओ किस दिल से इजाज़त दूं। हज़रत क़ासिम ने अर्ज़ किया : चचा जान! अगर आप इजाज़त नहीं देंगे और हज़रत अली अकबर शहीद हो गए तो कल क़यामत के दिन मैं अपने अब्बा जान को क्या जवाब दूंगा? जब हज़रत क़ासिम का असरार ज़्यादा बढ़ा तो आपने आंखों में आंसू लिए हुए उन्हें सीने से लगाया और इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी।

दुशमन के एक सिपाही हमीद बिन मुस्लिम का ब्यान है कि जब आप मैदाने जंग में आए तो ऐसा मालूम होता था जैसे चांद का टुकड़ा नुमूदार हो गया। उनके जिस्म पर ज़िरह भी न थी बल्कि सिर्फ़ एक पैराहन पहने हुए थे शौक़े शहादत के जोश में आ गए और यज़ीदियों को मुख़ातब कर के फ़रमाया : ऐ दीन के दुशमनो! मैं क़ासिम बिन हसन बिन अली हूं। मैं ख़ानदाने रिसालत का चश्मे चिराग़ हूं। जिसे मेरे मुक़ाबले में भेजना हो, भेजो। अमरू बिन साद ने मुल्के शाम के एक नामी गिरामी पहलवान अरज़क़ से कहा : तुम उसके मुक़ाबले में जाओ। उसने कहा : उस बच्चे के मुक़ाबले में जाना मेरी तौहीन है। मैं हरगिज़–हरगिज़ नहीं जाऊंगा। इब्न–साद ने कहा : उसे बच्चा न समझो। यह हसन का बेटा और फ़ातेह ख़ैबर का पोता है। तीन दिन का भूखा–प्यासा है मगर उसका मुक़ाबला आसान नहीं है। अरज़क ने कहा : कुछ भी हो, मैं तो नहीं जाऊंगा। अलबत्ता अपने चार बेटों में से बड़े बेटे को भेज देता हूं। अभी एक मिनट में उसका सर काट कर ले आएगा।

अरज़क़ का बड़ा बेटा आपके मुक़ाबले में आया। आपने उसका मुक़ाबला किया और चन्द मिन्टों में उसे तड़पा कर रख दिया और उसकी तलवार उठा ली। अरज़क़ का दूसरा बेटा अपने भाई को ख़ाक व ख़ून में तड़पता हुआ देखा तो ग़ुस्से में भरा हुआ सामने आया। आपने पहले ही वार में उसे जहन्नम रसीद कर दिया। अब तीसरा भाई इन्तिहाई ग़ैज़ व ग़ज़ब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ने आया और गालियां बकने लगा। आपने फ़रमाया कि हम गालियों का जवाब गालियों से नहीं देते कि यह अहले–बैते नुबूव्वत की शान के ख़िलाफ़ है। अलबत्ता तुझे भी तेरे भाईयों के पास जहन्नम में पहुंचा देता हूं। यह कह कर उस पर ऐसा हमला किया कि उसके दो टुकड़े हो गए। उसके बाद अरज़क का चौथा बेटा सामने आया तो हज़रत क़ासिम ने उसके कन्धे पर ऐसा वार किया कि वह मुंह के बल ज़मीन पर गिर गया। फिर दूसरा वार उसके सर पर ऐसा मारा कि सर जिस्म से जुदा हो गया।

जब हाशिमी शेर ने अरज़क़ के चारों बेटों को जहन्नम रसीद कर दिया तो अरज़क़ का सारा गुरूर ख़ाक में मिल गया और गुस्से में कांपने लगा। जिनके मुक़ाबले में आना वह अपनी तौहीन समझता था अब उन ही से लड़ने पर मजबूर हो गया। हाथी की तरह चिंघाड़ता और शेर की तरह दहाड़ता हुआ मैदान में आया और हज़रत क़ासिम को ललकारा कि लड़के, तैयार हो जाओ, अब मौत तुम्हारे सर पर आ गई है। आपने फ़रमाया : अरज़क़! होश की दवा कर, तू औरों के लिए ताक़त का पहाड़ होगा, लेकिन हाशिमी बहादुरों को तूने नहीं देखा है। हमारी रगों में शेरे खुदा का ख़ून है। तू हमारे सामने कोई हैसियत नहीं रखता। अरज़क़ आग बगोला हो गया और हज़रत क़ासिम पर नेज़ा से हमला कर दिया। आप ने उसके वार को बेकार कर दिया। फिर आपने भी नेज़ा से वार किया जो ख़ाली गया। फिर दोनों तरफ़ से तलवारें चलने लगीं। अचानक हज़रत क़ासिम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ! अरज़क़ तू अपने आपको इतना बहादुर समझता है लेकिन हमारे मुक़ाबले में आकर लड़ाई के सब गुर भूल गया। घोड़े की ज़ीन ज़रा कस ले। आपके उस फ़रमान पर जैसे ही अरज़क़ झुका आप ने तलवार का एक ऐसा कारी वार किया कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर गया।

हज़रत क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हु अरज़क़ के घोड़े पर सवार हो गए, और ख़ेमे की तरफ़ आकर हज़रत इमाम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया **या अम्माहु अल-अतश!** ऐ चचा जान! प्यास, प्यास। चचा जान अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो अभी उन सब को मौत के घाट उतार दूं। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : बेटा! थोड़ी देर और सब्र करो। अन्क़रीब तुम साक़िए कौसर हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के दस्ते अक़दस से जामे कौसर पी कर सैराब हो जाओगे। उस

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Presented by: https://jafrilibrary.com

के बाद फिर कभी तुम्हें प्यास नहीं सताएगी। हज़रत क़ासिम फिर मैदान में आए। इब्न–साद ने चिल्लाकर कहा : इस नौजवान को घेरे में लेकर क़त्ल कर दो। चुनांचे दुशमनों ने आपको घेरे में ले लिया। और घमसान की जंग शुरू हो गई। आप के जिस्म पर सत्ताईस ज़ख़्म आए। बिल आख़िर शीस बिन साद ने आप के सीना पर ऐसा नेज़ा मारा कि आप घोड़े से गिर पड़े और **या अम्माहु अदरिक्नी** पुकारा। यानी या चचा जान! आइए और मेरी ख़बरगीरी कीजिए। हज़रत इमाम ने अपने भतीजे की आवाज़ सुनी तो दौड़ते हुए आए। देखा कि जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर–चूर है। आपने सरे क़ासिम को गोद में लेकर चेहरए मुबारक से गर्द व ग़ुबार साफ़ करने लगे। इतने में हज़रत क़ासिम ने आंखें खोलीं। और अपना सर इमाम पाक की गोद में पाकर मुस्कुराए फिर आप की रूह परवाज़ कर गई। (रज़ियल्लाहु अन्हु)। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

(आले मुस्तफ़ा की कहानी सफ़ा १७ शामे करबला सफ़ा १३४)

हज़रत औन व मुहम्मद की शहादत

हज़रत औन व मुहम्मद इमाम आली मक़ाम के हक़ीक़ी भांजे और हज़रत बीबी ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के लख़्ते जिगर हैं। उनमें से एक की उम्र तेरह साल और दूसरे की उम्र पन्द्रह साल है। चमने ज़ुहरा के उन जन्नती फूलों ने आगे बढ़कर हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया : मामू जान! हमें भी निसार होने की इजाज़त मर्हमत फ़रमाएं। इमाम पाक ने फ़रमाया : नहीं, तुम्हें इजाज़त नहीं। तुम अपनी मां के पास जाओ। औन व मुहम्मद ने कहा : मामू जान अम्मा जान का भी यही हुक्म है, देखिए वह भी सामने खड़ी हैं। इमाम पाक ने अपनी बहन सैय्यदा ज़ैनब की तरफ़ देखकर फ़रमाया : मेरी बहन! कुछ ख़्याल करो। क्या मैं इन फूल–जैसे बच्चों के सीनों पर तीर और नेज़े पार होते देख सकूंगा। हज़रत सैयदा ज़ैनब ने फ़रमाया : मेरे प्यारे भैया! अपनी बहन का यह हक़ीर हदिया क़ुबूल नहीं करोगे? अगर तुमने मेरा यह हदिया क़ुबूल न किया तो मैं अपनी मां फ़ातिमा ज़ुहरा को क्या जवाब दूंगी। जब वह पूछेंगी : बेटी! तुमने उस वक़्त क्या नज़्र पेश की थी जब सरवरे कौनैन के शहज़ादे के हुज़ूर जानों के हदिए पेश हो रहे थे। मेरे यह दो ही फ़र्ज़न्द हैं, दोनों आप पर क़ुर्बान। हज़रत इमाम हुसैन ने बहन की तरफ़ देखा और बच्चों को सीने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

से लगाकर रुख़्सत कर दिया। दोनों बच्चों ने मैदान में जाकर बहादुरी के वह जौहर दिखाए कि दुशमन के दांत खट्टे कर दिए। बिलआख़िर हज़रत औन को अब्दुल्लाह बिन कुत्बतुत्ताई ने और हज़रत मुहम्मद को आमिर बिन नहशल ने शहीद किया (रज़ियल्लाहु अन्हुमा)। हज़रत इमाम पाक उन दोनों की लाशों को ख़ेमे में लेकर आए तो हज़रत ज़ैनब ने अपने दोनों लाल को देखकर कहा : ख़ुदा तआला का शुक्र है आज ज़ैनब सुर्ख़ुरू है।

(शामे करबला सफ़ा १३७)

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

हज़रत औन व मुहम्मद की शहादत के बाद हज़रत इमाम आली मक़ाम के अलमबरदार हज़रत अब्बास इब्ने–अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा इमाम पाक की ख़िदमत में आए और मैदाने कारज़ार में जाने की इजाज़त तलब फ़रमाई। साथ ही यह भी अर्ज़ किया कि मुझसे अली असग़र और दूसरे नन्हें–नन्हें बच्चों की प्यास देखी नहीं जाती। आप मुझे इजाज़त दीजिए ताकि मैं नहरे फ़ुरात से एक मश्कीज़ा पानी लाऊं और उन प्यासों को पिलाऊं। हज़रत इमाम पाक की आंखें अश्कबार हो गईं। फ़रमाया : भाई! तुम तो मेरे अलमबरदार हो। अर्ज़ किया : मेरी जान आप पर क़ुरबान! अब मुझसे नन्हें–नन्हें बच्चों की प्यास और उनका तड़पना देखा नहीं जाता। इसलिए आप इजाज़त दीजिए ताकि नहरे फ़ुरात से पानी लाकर उनकी प्यास बुझा सकूं। जब हज़रत अब्बास अलमबरदार का इसरार ज़्यादा बढ़ा तो हज़रत इमाम आली मक़ाम ने आपको सीना से लगाया और अश्कबार आंखों से रुख़्सत दे दी।

हज़रत अब्बास एक मशकीज़ा कांधे पर लटका कर घोड़े पर सवार हुए और नहरे फ़ुरात की तरफ़ रवाना हुए। यज़ीदी फ़ौज ने आपका रास्ता रोक लिया। हज़रत अब्बास ने यज़ीदी फ़ौज से ख़िताब फ़रमाया कि ऐ कूफ़ियो! अल्लाह तआला से डरो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम से शरमाओ! अफ़सोस सद अफ़सोस कि तुम लोगों ने बेशुमार ख़ुतूत और क़ासिद भेजकर नवासए रसूल हज़रत इमाम आली मक़ाम को बुलाया और जब वह आ गए तो उनके साथ तुम ने बेवफ़ाई की और दुशमनों से मिल कर उनके तमाम रुफ़का और अज़ीज़ व अक़ारिब को शहीद कर दिया। और रसूलज़ादियों और नन्हें–नन्हें बच्चों को एक–एक बूंद पानी के लिए तरसाया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सोचो और ग़ौर करो। मैदाने हश्र में उनके नाना जान हुज़ूर सरवारे काइनात सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? कूफ़ियों ने जवाब दिया : अगर तमाम रूए ज़मीन पानी हो जाए तो भी हम लोग तुम्हें पानी का एक क़तरा न लेने देंगे। ज़ालिमों का यह जवाब सुन कर आपको जलाल आ गया। एक नारए शेराना लगाया और फ़रमाया : हुसैन सर कटा सकते हैं लेकिन फ़ासिक़ व फ़ाजिर के सामने झुका नहीं सकते।

फ़ुरात के मुहाफ़िज़ों ने यह कलिमात सुने तो हज़रत अब्बास पर टूट पड़े और तलवारों, नेज़ों और तीरों की बारिश कर दी। हज़रत अब्बास ने भी डट कर उनका मुक़ाबला फ़रमाया और नहरे फ़ुरात के क़रीब पहुंच गए। और घोड़े को फ़ुरात में दाख़िल कर दिया। मशकीज़ा भरा और एक चुल्लू पानी का लिया। मगर नन्हें–नन्हें बच्चों का प्यास से तड़पना और बिलकना याद आया तो ग़ैरते ईमानी ने यह गवारा न किया कि साक़िए कौसर के दुलारे और अली व फ़ातिमा के जिगर पारे प्यासे रहें। और मैं सैराब हो जाऊं, फ़ौरन पानी को फेंका और भरा हुआ मशकीज़ा बायें कन्धे पर लटकाया और निकल पड़े। चारों तरफ़ से शोर उठा कि रास्ता रोक लो। मश्कीज़ा छीन लो। अगर यह मशकीज़ा ख़ीमए हुसैन तक पहुंच गया तो फिर हमारी ख़ैर नहीं। इधर हज़रत अब्बास इस कोशिश में थे कि किसी भी तरह अह्ले बैते नुबूव्वत के प्यासों तक यह पानी पहुंच जाए। जब दुशमनों ने आपको चारों तरफ़ से घेर लिया तो आपने बिफरे हुए हुए शेर की तरह यज़ीदियों पर हमला करना शुरू कर दिया। लाश पर लाश गिरने लगी। और ख़ून की नाली बहने लगी। इसी तरह आप बराबर दुशमनों को मारते–काटते और चीरते–फाड़ते हुए ख़ीमा–ए–हुसैन की तरफ़ बढ़ते हुए चले जा रहे थे कि अचानक एक ख़बीस ज़िरारा नामी पीछे से धोखा देकर ऐसी तलवार चलाई कि बायां हाथ कट कर कन्धे से अलग हो गया। आप ने फ़ौरन मश्कीज़ा को अपने दायें हाथ में और उसी हाथ से तलवार भी चलाते रहे कि अचानक नौफ़ल बिन अरज़क़ ख़बीस ने ऐसा वार किया कि दाहिना हाथ कन्धे से कट कर अलग हो गया। अब आप ने मशकीज़ा को दांतों से पकड़ लिया। मगर मशकीज़ा का ख़ेमा–ए–हुसैन तक पहुंचना अल्लाह तआला को मंज़ूर ही न था। एक बदबख़्त ने ताक कर ऐसा तीर मारा की मशकीज़ा के पार हो गया और सारा पानी बह गया। फिर ज़ालिमों ने आपको चारों तरफ़ से घेर कर ज़ख़्मों से चूर–चूर कर दिया। यहां तक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कि आप घोड़े की ज़ीन से ज़मीन पर आ गए और या अख़ाह अदरिक्नी फ़रमाया : यानी ऐ भाई जान! मेरी ख़बरगीरी फ़रमाइए। इमाम आली मक़ाम दौड़कर तशरीफ़ लाए। देखा कि अब्बास अलमबरदार ख़ून में नहाए हुए हैं और अन्क़रीब जामे शहादत नोश फ़रमाने वाले हैं। शिद्दते ग़म से इमाम की ज़ुबान पर यह कलिमात जारी हुए : **अल आ न इन्कस र ज़हरी** अब मेरी कमर टूट गई। फिर हज़रत अब्बास की लाश को आप उठाकर ख़ेमा की तरफ़ ला रहे थे कि उनकी रूह क़फ़से अन्सरी से परवाज़ कर गई।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(शामे करबला सफ़ा १३६ 'रौज़तुश्शुहदा' जिल्द २ सफ़ा २२०)

हज़रत अली अकबर की शहादत

हज़रत इमाम आली मक़ाम ने जब देखा कि जुमला अहबाब, अक़रबा और भाईयों, भतीजों में से सबने जामे शहादत नोश फ़रमा लिया है और आपके साथ बजुज़ आपके तीन (३) साहबज़ादों–इमाम ज़ैनुल आबिदीन, हज़रत अली अकबर और हज़रत अली असग़र रज़ियल्लाहु अन्हुम के और कोई बाक़ी न रहा। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन बीमार थे। हज़रत अली असग़र अभी शीरख़्वार थे। और हज़रत अली अकबर की उम्र शरीफ़ अट्ठारह साल की थी। आपने ख़ुद बनफ़्से नफ़ीस मैदाने जंग में जाने का इरादा फ़रमाया। हज़रत अली अकबर ने जब वालिदे गिरामी को मैदान में जाते हुए देखा तो आगे बढ़कर हज़रत इमाम से लिपट गए और अर्ज़ क्या की: अब्बाजान! आप मेरे होते हुए मैदाने जंग में क्यों तशरीफ़ ले जा रहे हैं ? मुझे इजाज़त दीजिए। हज़रत इमाम ने मुहब्बत भरी निगाह अपने फ़र्ज़न्द अर्जमन्द पर डाली और फ़रमाया : बेटा! मैं तुम्हें किस दिल से इजाज़त दे दूं ? क्या मैं तुम्हें ख़ाक व ख़ून में ग़ल्तां होने की इजाज़त दूं ? यह सिर्फ़ मेरे ख़ून के प्यासे हैं। मुझे शहीद करने के बाद यह किसी से तआरुज़ न करेंगे। लेकिन हज़रत अली अकबर ने बहुत इसरार किया और क़समें दीं तो इमाम आली मक़ाम को चार व नाचार इजाज़त देनी पड़ी।

हज़रत अली अकबर मैदाने जंग में जाने के लिए तैयार हुए तो इमाम आली मक़ाम ने ख़ुद अपने हाथों से अट्ठारह साला हसीन व जमील जवान बेटे को घोड़े पर सवार किया। अपने दस्ते मुबारक से असलहे लगाए, तलवार हमायल की और नेज़ा अपने दस्ते अक़दस से उनके हाथ में दिया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बेटे ने अब्बा जान और ख़ेमा में खड़ी हुई दुख रसीदा बीवियों को सलाम किया और मैदाने जंग की तरफ़ चल पड़े।

यहां पर हम एक लम्हे के लिए अपने क़ारिईन की तवज्जह इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अलैहिमस्सलातु वस्सलाम के वाक़ियए क़ुर्बानी की तरफ़ मब्ज़ूल कराते हैं कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को क़ुर्बान करने के लिए तैयार कर चुके तो कहा : अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेता हूं ताकि शफ़्क़ते पेदरी की वजह से इसमें नाकामी न हो। करबला की धरती पर हज़रत इमाम अपनी आंखों पर पट्टी नहीं बांधते हैं बल्कि ख़ुद अपने हाथों तैयार कर के अपने बेटे को मैदाने कारज़ार में भेज रहे हैं और उनको क़ुर्बान होते और लाश लाते हुए देखते हैं।

हज़रत अली अकबर, जो शक्ल व शमाइल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम के बहुत मुशाबह थे, मैदाने जंग में पहुंचे और मुबारिज़ तलब फ़रमाया। लेकिन यज़ीदी लशकर में से कोई सामने न आया तो आपने ख़ुद ही लशकरे आदा में घुसकर हमला कर दिया और अश्क़िया को दरहम–बरहम कर दिया। काफ़ी देर तक लड़ते रहे। जब प्यास से बेक़रार हो गए तो पलट कर अब्बा की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया : **या अबताहुल अतश** अब्बा जान! प्यास का बहुत ज़्यादा ग़लबा है। हज़रत इमाम ने उनके चेहरे के गर्द व ग़ुबार साफ़ किए और अपनी अंगुश्तरी उनके मुंह में डाल दी जिसके चूसने से उन्हें तसकीन हुई। फिर मैदान में आए। मुबारिज़ तलब फ़रमाया। उमरू बिन सअ्द के बार–बार ग़ैरत दिलाने और मौसम की गवर्नरी के लालच में तारिक़ नामी एक पहलवान आपके मुक़ाबले में निकला। लेकिन हज़रत अली अकबर ने ऐसा कारी वार किया कि वह घोड़े से गिरा और ढेर हो गया। तारिक़ के बेटे उमरू बिन तारिक़ ने जब अपने बाप का यह हाल देखा तो ग़ुस्से में आग बगोला हो गया और दौड़ कर हज़रत अली अकबर पर हमला कर दिया।

शहज़ादे ने एक ही वार में उसका भी काम तमाम कर दिया। उसके बाद तारिक़ का दूसरा बेटा तलहा बिन तारिक़ आया। उसे भी मौत के घाट उतार दिया। शहज़ादे की हैबत से पूरा यज़ीदी लशकर थर्रा उठा। अब यज़ीदियों में से किसी की हिम्मत न हुई कि आपके मुक़ाबले में आए। आख़िर इब्ने–साद ने मुहकम बिन तुफ़ैल को हज़ार सवारों के साथ

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यकबारगी हमला करने के लिए भेजा। उन नाबकारों ने चारों तरफ़ से आप को नरगे में ले लिया और उस चमनिस्ताने फ़ातिमी के फूल को ज़ख़्मों से चूर–चूर कर दिया। बिल–आख़िर आप पुश्ते ज़ीन से रूए ज़मीन पर आ गए और पुकारा **या अबताहु अदरिक्नी** ये अब्बा जान! मेरी ख़बरगीरी फ़रमाइए। हज़रत इमाम आली मक़ाम घोड़ा बढ़ाकर मैदान में पहुंचे और शहज़ादे को उठा कर ख़ेमा में लाये। सर को गोद में लिया और उनके चेहरए अनवर से गर्द आलूद ख़ून साफ़ करने लगे। इतने में हज़रत अली अकबर ने आंखें खोली। अब्बा जान का आख़री दीदार किया और बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

(शामे करबला सफ़हा १४४ 'रौज़तुश्शुहदा' सफ़ा ३२७)

हज़रत अली असग़र की शहादत

सैयदुश्शुहदा हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के छोटे फ़र्ज़न्द अर्जमन्द सैयदना अली असग़र रज़ियल्लाहु अन्हु, जो अभी कमसिन हैं, शीर–ख़्वार हैं, प्यास से बेताब हैं। शिद्दते तिशनगी से तड़प रहे हैं। दुशमनाने इस्लाम यज़ीदियों ने मैदाने करबला में नहरे फ़ुरात का पानी ७ मुहर्रमुल–हराम से बन्द कर रखा है। तीन दिन हो गए हैं। अह्ले–बैते अतहार पर खाना पानी बन्द है। भूखी–प्यासी माँ के सीने में दूध ख़ुश्क हो चुका है और ख़ेमे में कहीं भी पानी का नाम व निशान तक भी नहीं है। ऐसे आलम में उस नन्हें बच्चे की ख़ुश्क ज़ुबान कभी बाहर आती है। और कभी बेचैनी से पूरा बदन हिलने लगता है और ग़श खाकर बेहोश हो जाते हैं। फिर चन्द लम्हा बाद कभी माँ की तरफ़ देखते हैं और अपनी सूखी ज़ुबान मां की तरफ़ दिखाते हैं। मासूम बच्चा क्या जाने कि ज़ालिमों ने उनके ऊपर दाना पानी बन्द कर रखा है। जब उस नन्हें बच्चे की बेताबी हद से ज़्यादा बढ़ गई तो हज़रत रुबाब बिन्त इम्रउलक़ैस (वालिदए अली असग़र) बच्चे को गोद में लिए हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया मेरे सरताज! अब अली असग़र की प्यास और बेताबी देखी नहीं जाती। उसको गोद में लेकर जाइये और ज़ालिमों को दिखाइए। शायद उन संगदिलों को इस बच्चे की प्यास और बेताबी पर तरस आ जाए और पानी के चन्द घूंट उसको पिला दें। यह नन्हीं–सी जान, छः महीने का अली असग़र न जंग करने के लायक़ है और न मैदाने कारज़ार के क़ाबिल।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम आली मक़ाम उस नन्हें से नूरे नज़र को सीना से लगाकर सियाह दिल दुश्मनों के सामने तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ मेरे नाना जान के कलिमा पढ़ने वालो! मैंने अपना तमाम कुम्बा और ख़ानदान व अहबाब को तुम्हारी बेरहमी और जौर व जफ़ा की नज़्र कर दिया। अब अगर आतिशे बुग्ज़ व इनाद जोश में है तो उसके लिए मैं हूं। यह मेरा बच्चा अली असग़र शीरख़्वार है, प्यास से दम तोड़ रहा है। उसकी बेताबी देखो और कुछ शाइबा भी रहम का हो तो उसका हलक़ तर करने को एक घूंट पानी दे दो।

हज़रत इमाम आली मक़ाम की इस तक़रीर का ज़ालिमाने संग दिल पर कोई असर नहीं हुआ। और उस बे–ज़ुबान बच्चे पर उनको ज़रा भी रहम नहीं आया। बजाए पानी के एक बदबख़्त अज़्ली हरमला बिन काहिल ने तीर का ऐसा निशाना बांध कर मारा कि अली असग़र के हलक़ को छेदता हुआ इमाम पाक के बाज़ू में पैवस्त हो गया। हज़रत इमाम ने तीर खींचा तो हज़रत अली असग़र के गले से ख़ून का फ़व्वारा जारी हो गया और बच्चे ने तड़प–तड़प कर बाप की गोद में जान दे दी। रज़ियल्लाहु अन्हु।

जब हज़रत इमाम आली मक़ाम उस शगूफ़ए तमन्ना को ख़ेमा में लाए और उनकी वालिदा ने अव्वल नज़र में देखा कि बच्चा में बेताबाना हरकतें नहीं हैं, सुकून का आलम है तो गुमान किया कि पानी दे दिया गया होगा। हज़रत इमाम से दरयाफ़्त किया और फ़रमाया : यह भी साक़िए कौसर के जामे रहमत व करम से सैराब होने के लिए अपने भाईयों से जा मिले। अल्लाह तआला ने यह छोटी–सी कुर्बानी भी क़ुबूल फ़रमा ली।

अल्हमदुलिल्लाह अला इहसानिहि व नवालिहि।

फूल तो दो दिन बहारे जांफ़िज़ा दिखला गए
हसरत उन गुन्चों पे है जो बिन खिले मुरझा गए

(सवानहे करबला, सफ़ा १२३ रौज़तुश्शुहदा जिल्द २ सफ़ा ३३८)

नोट : हज़रत इमाम आली मक़ाम हज़रत अली असग़र को दुश्मनों के सामने सिर्फ़ हुज्जत क़ायम करने के लिए गए थे कि कल यज़ीदी यह न कहें कि अगर हमें नन्हें शीरख़्वार अली असग़र का इल्म होता तो हम ज़रूर उस बच्चे को पानी देते।

❖❖❖

❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ताजदारे करबला सैय्यदना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

जांनिसार एक–एक कर के रुख़्सत हो चुके और हज़रत इमाम आली मक़ाम पर अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं। अब तन्हा इमाम आली मक़ाम, राकिबे दोशे रसूल, शहज़ादए बतूल, हज़रत अली के नूरे नज़र, जन्नती नौजवानों के सरदार, शहनशाहे करबला, पैकरे सब्र व रज़ा हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। आपके फ़र्ज़न्द अर्जमन्द हज़रत सैयदना इमाम ज़ैनुलआबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु जो अपनी बीमारी नक़ाहत और कमज़ोरी की वजह से बिस्तरे अलालत पर हैं। हज़रत इमाम आली मक़ाम को तन्हा देखा तो नेज़ा हाथ में लिए हुए हज़रत इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : बाबाजान! पहले हमें मैदाने कारज़ार में जाने और अपनी जान निसार करने की इजाज़त दीजिए। मेरे होते हुए आप शहीद हो जाएं यह नहीं हो सकता। हज़रत इमाम आली मक़ाम ने बीमार नूरे नज़र को अपनी आग़ोशे मोहब्बत में लिया, प्यार किया और फ़रमाया : बेटा! अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया है। अभी तो तुम्हें ग़मज़दा ख़्वातीने अह्ले–बैत की निगहदाश्त करनी है और इन बेकसां अह्ले–बैत को वतन तक पहुंचाना है। मेरे फ़र्ज़न्द! अल्लाह तआला तुम ही से मेरी नस्ल और हुसैनी सादात का सिलसिला जारी फ़रमाएगा और जो अमानतें मेरे जद व पिदर की मेरे पास हैं, वह तुमको देना है। तुमसे बहुत सारी उम्मीदें बाक़ी हैं। देखो, मेरे फ़र्ज़न्द! मेरे लख़्ते जिगर! सब्र व इस्तिक़ामत से रहना और राहे हक़ में आने वाली हर तकलीफ़ व मुसीबत को ख़न्दा–पेशानी के साथ बर्दाश्त करना। और हर हालत में अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करना। और जब भी मदीना पहुंचना तो नाना जान से मेरा सलाम कहना और सारा आंखों देखा हाल सुनाना। मेरे बाद तुम ही मेरे जांनशीन हो, इसलिए तुम्हें मैदाने कारज़ार में जाने की इजाज़त नहीं है।

फ़िर इमामे आली मक़ाम ने उनको तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया। अपनी दस्तार मुबारक उतार कर उनके सर पर रखी। और उस सब्र व रज़ा के पैकर को बिस्तरे अलालत पर लिटा दिया। अब इमाम पाक

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपने ख़ेमा में तशरीफ़ लाए। सन्दूक़ खोला। कुबाए मिस्री ज़ेबे तन फ़रमाई। अपने नाना जान का अमामए मुबारक सर पर बांधा। सैयदुश्शुहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ढाल पुश्त पर रखी। शेरे ख़ुदा हज़रत सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार ज़ुलफ़िक़ार गले में हमाइल की और हज़रत जाफ़र तय्यार का नेज़ा हाथ में लिया। और अपने बिरादरे अकबर सैयदना इमाम हसन का पटका कमर में बांधा। इस तरह शहीदों के आक़ा, जन्नत के नौजवानों के सरदार सब कुछ राहे हक़ में कुरबान करने के बाद अब अपनी जाने अज़ीज़ का नज़राना पेश करने के लिए तैयार हो गए। अह्ले ख़ेमा ने इस मन्ज़र को किस आंखों से देखा होगा? उनका सरदार उनसे तवील अरसा के लिए जुदा होने वाला है। नाज़ परवरदों के सरों पर शफ़क़ते पिदरी का साया उठने वाला है। नौनिहालाने अह्ले–बैत के गर्द यतीमी मंडला रही है। अज़्वाज़ का सुहाग रुख़्सत हो रहा है। बेकस क़ाफ़िला हसरत भरी निगाहों से इमाम के चेहरे पर नज़र कर रहा है। नूरानी आंखों से आंसू जारी हैं। हज़रत इमाम पाक ने अह्ले–बैत अतहार को ख़ुदा के सुपुर्द फ़रमाया। सब को सब्र व शुक्र की तलक़ीन फ़रमाई और सबको अपना आख़री दीदार दिखा कर और आख़री सलाम कर के घोड़े पर सवार हो गए।

तीन दिन के भूखे–प्यासे और अपनी निगाहों के सामने अपने बेटों भाईयों, भतीजों और जां–निसारों को राहे हक़ में क़ुर्बान कर देने वाले इमाम। पहाड़ों की तरह जमी हुई फ़ौजों के मुक़ाबले में शेर की तरह डट कर खड़े हो गए और मैदाने करबला में एक वलवला अंगेज़ रिज्ज़ पढ़ी जो आपके नसब और ज़ाती फ़ज़ाइल पर मुशतमिल थी और इसमें शामियों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाख़ुशी व नाराज़गी और ज़ुल्म के अन्जाम से डराया था। उसके बाद आपने एक फ़सीह व बलीग़ तक़रीर फ़रमाई। उसमें आपने हम्द व सलात के बाद फ़रमाया :

ऐ लोगो! तुम जिस रसूल का कलिमा पढ़ते हो उसी रसूल का इरशाद है कि जिसने हसन व हुसैन से दुशमनी की, उसने मुझसे दुशमनी की और जिसने मुझसे दुशमनी की उसने अल्लाह तआला से दुशमनी की। तो ऐ यज़ीदियो! अल्लाह तआला से डरो और मेरी दुशमनी से बाज़ आओ। अगर वाक़ई ख़ुदा व रसूल पर ईमान रखते हो तो सोचो, उस ख़ुदाए समी व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बसीर को क्या जवाब दोगे? और मुंहसिने आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? तुमने मुझे ख़ुतूत और क़ासिद भेज कर बुलाया और कहा कि हमारी रहनुमाई फ़रमाइए और हमें शरीअत व सुन्नते रसूल पर आमिल बनाइए वरना हम ख़ुदा के हुज़ूर आपका दामन पकड़ कर शिकायत करेंगे। इसलिए मैं चला आया। और जब मैं यहां आ गया तो तुमने मेरे साथ बुरा सुलूक किया और मज़ालिम की इन्तिहा कर दी। ज़ालिमो! तुम ने मेरे बेटों, भाईयों और भतीजों को ख़ाक व ख़ून में तड़पाया। मेरे रुफ़क़ा को शहीद किया और अब मेरे ख़ून के प्यासे हो। ऐ यज़ीदियो! सोचो कि मैं कौन हूं? किस का नवासा हूं? मेरे वालिदे गिरामी और मेरी वालिदा साहिबा कौन थीं? बेग़ैरतो! अब भी वक़्त है शर्म से काम लो और मेरे ख़ून से अपने हाथों को रंगीन कर के अपनी आक़िबत बरबाद न करो। इतने में यज़ीदी लशकर में शोर उठा। किसी ने कहा : ऐ हुसैन! हम कुछ सुनना नहीं चाहते। आ के लिए सीधा रास्ता है कि आप यज़ीद की बैअ़त कर लीजिए या फिर जंग के लिए तैयार हो जाइये। इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : ऐ बदबख़्तो! मुझे ख़ूब मालूम है कि तुम्हारे दिलों पर मुहर लग चुकी है और तुम्हारी ग़ैरते ईमानी मुर्दा हो चुकी है। ऐ यज़ीदियो! मैं ने यह तक़रीर सिर्फ़ इतमामे हुज्जत के लिए की थी ताकि कल तुम यह न कह सको कि हमने हक़ और इमामे बरहक़ को नहीं पहचाना था। अल्हमदुलिल्लाह! मैंने तुम्हारा यह उज़्र ख़त्म कर दिया। अब रहा यज़ीद की बैअ़त का सवाल? तो यह मुझसे हरगिज़–हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं फ़ासिक़ व फ़ाजिर के सामने सर झुका दूं।

मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ़ खा सकता नहीं।
सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं।।

इमाम आली मक़ाम ने जब यह देखा कि यह बदबख़्त मेरे क़त्ल का वबाल अपनी गर्दनों पर ज़रूर लेंगे और मेरा ख़ून बहाए बग़ैर चैन से नहीं बैठेंगे, तो आप ने फ़रमाया : अब तुम लोग जो इरादा रखते हो उसे पूरा करो और जिसे मेरे मुक़ाबले के लिए भेजना चाहते हो भेजो। चुनांचे मशहूर जंगजू और बहादुर जो हज़रत इमाम हुसैन से मुक़ाबला करने के लिए महफ़ूज़ रखे गए थे उनसे इब्ने–साद ने सबसे पहले तमीम बिन क़हतबा को आपके मुक़ाबले के लिए भेजा जो मुल्के शाम का नामी गिरामी पहलवान

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

था। वह गुरूर व तकब्बुर के कलिमात कहता हुआ और अपनी बहादुरी की डींगें मारता हुआ हज़रत इमाम के सामने आया। और आते ही आप पर हमला करना चाहा कि शेरे ख़ुदा के शेर ने ज़ुलफ़िक़ार का ऐसा कारी वार किया कि उसका सर जिस्म से जुदा हो गया और उसकी तमाम बहादुरी और गुरूर ख़ाक में मिला दिया। यह देखकर यज़ीद ने बड़े कर्र व फ़र्र के साथ आगे बढ़ा और आपके सामने पहुंच कर एक नारा मारा और कहा कि शाम व इराक़ के बहादुरों में मेरी बहादुरी का ग़लग़ला है। मैं रोम व मिस्र में शोहरा–ए–आफ़ाक़ हूं। बड़े–बड़े बहादुरों को आंख झपकते मैं मौत के घाट उतार देता हूं। सारी दुनिया के लोग मेरी शुजाअत व बहादुरी का लोहा मानते हैं। किसी में मेरे मुक़ाबले की ताब नहीं। आज तुम मेरी क़ुव्वत व बहादुरी देख लोगे। इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया : तू मुझे नहीं जानता, मैं फ़ातेहे ख़ैबर शेरे ख़ुदा अली मुश्किल–कुशा का शेर हूं। तुम जैसे नामर्दों की मेरे नज़दीक कोई हक़ीक़त नहीं है। शामी जवान यह सुनकर आग बगूला हो गया और फ़ौरन घोड़ा कुदा कर आप पर तलवार का वार किया। हज़रत इमाम ने उसके वार को बेकार कर के फुर्ती के साथ उसकी कमर पर ऐसी तलवार मारी कि उसके दो टुकड़े हो गए।

बदर बिन सुहैल यह मंज़र देख कर गुस्से से लाल पीला हो गया। और इब्ने साद से कहा : किन बुज़िदलों और बहादुरी के नाम को बदनाम करने वालों को हुसैन के मुक़ाबले में भेज दिया। जो दो हाथ भी जम कर मुक़ाबला न कर सके। मेरे चारों बेटों में से किसी को भेज दे। फिर देख मिन्टों में हुसैन का सर काट लाते हैं। चुनांचे इब्ने–साद ने उसके बड़े लड़के को इशारा किया। वह घोड़ा कुदाता हुआ इमाम आली मक़ाम के सामने पहुंच गया। आपने फ़रमाया कि बेहतर होता कि तेरा बाप मुक़ाबला में आता ताकि वह तुझे ख़ाक व ख़ून में तड़पता हुआ न देखता। फिर आप ने ज़ुल–फ़िक़ारे हैदरी के एक ही वार से उसका काम तमाम करके जहन्नम में पहुंचा दिया।

बदर ने जब अपने बेटे का यह हश्र देखा तो ग़ैज़ व ग़ज़ब में दांत पीसता हुआ घोड़ा दौड़ा कर इमाम के सामने आया। और आते ही नेज़ा से वार किया। आपने नेज़ा को रोका तो उसने फ़ौरन तलवार से हमला कर दिया। आपने उस वार को भी ख़ाली कर दिया और उस शमशीर ज़ुल फ़िक़ार का

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ऐसा वार किया कि बदर का सर कट कर गेंद की तरह दूर जा गिरा। इसी तरह नए–नए शमशीर–ज़न, नेज़ेबाज़ और बहादुराने शाम व इराक़ आप के मुक़ाबले में आते और गाजर मूली की तरह कट कर ख़त्म हो जाते। शेरे खुदा के शेर ने तीन दिन के भूख प्यास के बावजूद शुजाअत व बहादुरी का वह जौहर दिखाया कि ज़मीने करबला बहादुराने शाम व इराक़ की लाशों से खेत हो गई। दुशमनाने इस्लाम के लशकर में एक शोर उठा कि अगर जंग का यही अन्दाज़ रहा तो हमारी जमाअत का एक भी सिपाही न बच सकेगा। लिहाज़ा मौक़ा मत दो। और चारों तरफ़ से घेर कर यकबारगी हमला कर दो। अब सैंकड़ों तलवारें चमकने लगीं और दुशमनाने इस्लाम बढ़–बढ़ कर इमाम पाक पर हमला करने लगे। इधर आप की तलवार जुल–फ़िक़ार से आप जिस तरह हमला करते परे के परे काट डालते। और दुशमनों के सरों को इस तरह उड़ाते जैसे बादे ख़ज़ां के झोंके दरख़्तों से पत्ते गिराते हैं।

इब्ने–साद को जब इस तरह की जंग में कामयाबी नज़र न आई तो उसने हुक्म दिया कि चारों तरफ़ से तीरों की बौछार कर दी जाए। और जब ख़ूब ज़ख़्मी हो जाएं तो नेज़ों से हमला किया जाए। तीर अन्दाज़ों ने आपको चारों तरफ़ से घेर लिया। और चारों तरफ़ से तीरों की बारिश शुरू हो गई। हज़रत इमाम पाक का घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उसमें काम करने की ताक़त न रही। मजबूरन हज़रत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा। हर तरफ़ से तीर आ रहे हैं और इमाम मज़लूम का जिस्म अक़दस तीरों का निशाना बन रहा है। तने नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर और लहूलहान हो रहा है। बेवफ़ा कूफ़ियों ने जिगर पारए रसूल फ़र्ज़न्दे बतूल को ख़ुतूत और क़ासिदों के ज़रिए बुला कर मेहमान बनाने का वादा किया था और वह अपने मेहमान के साथ ऐसा सुलूक कर रहे हैं।

अचानक ज़हर में बुझा हुआ एक तीर आया और हज़रत इमाम की पेशानी पर लगा। यह वह पेशानी है जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़ारों बार चूमा था। तीर लगते ही चेहरए अनवर पर ख़ून का धारा बह निकला। आप ग़श खाकर ज़मीन पर आ गए। अब ज़ालिमों ने नेज़ा से हमला कर दिया। शैतान सिफ़त सनान ने एक ऐसा नेज़ा मारा जो तने अक़दस के पार हो गया। तीर, नेज़ा और शमशीर के बहत्तर (७२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ज़ख़्म खाने के बाद आप सज्दे में गिरे और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए वासिले बहक़ हो गए। ६५ साल ५ माह ५ दिन की उम्र शरीफ़ में जुमा के दिन मुहर्रम की दसवीं तारीखे सन : ६१ हिजरी मुताबिक़ ६८० ई० को इमाम आली मक़ाम इस दारे फ़ानी से रेहलत फ़रमा गए। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

नज़र बिन ख़रशा आपके सरे मुबारक को तने अक़दस से जुदा करने के लिए आगे बढ़ा मगर इमाम आली मक़ाम की हैबत से उसके हाथ कांप उठे और तलवार हाथ से छूट गई। फिर बदबख़्त अज़्ली ख़ौली बिन यज़ीद, सिनान बिन अनस, शबल बिन यज़ीद, या शिमर ख़बीस ने आपके सरे अक़दस को तने मुबारक से जुदा कर दिया।

यज़ीदियों ने समझा कि हम ने हुसैन को मार डाला। और वह मर गए। लेकिन ज़मीने करबला का ज़र्रा–ज़र्रा ज़ुबाने हाल से हमेशा यह पुकारता रहेगा कि ऐ हुसैन !

तू जिन्दा है वल्लाह, तू ज़िन्दा है वल्लाह!
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर्फ़ बेदर्दी से शहीद करने पर ही यज़ीदियों ने इकतिफ़ा नहीं किया बल्कि आपके जिस्मे मुबारक पर जो कपड़े थे उसको भी लूट लिया गया। चुनांचे इसहाक़ बिन हैवक़ हज़रमी ने क़मीज उतार ली। बहर बिन काब ने पाजामा उतारा। क़ैस बिन अशअस ने चादर उतार ली। जब से उसका नाम क़ैस क़तीफ़ा मशहूर हो गया। असवद बिन ख़ालिद ने नालैन मुबारक उतार ली। बनी नहशर्ल के एक शख़्स ने आपकी तलवार ले ली जो बाद में हबीब बिन बदील के ख़ान्दान में आ गई। इस क़दर ज़ुल्म व सितम करने के बाद भी संगदिल और ख़ूनी शामियों और कूफ़ियों का जज़्बए बुग्ज़ व इनाद सर्द न हुआ। उसके बाद यज़ीदी फ़ौज ने ख़्यामे अहले–बैत नब्वी पर छापा मारा और उनमें का तमाम असबाब व सामान लूट लिया। हत्ता कि पर्दा नशीनाने अफ़्फ़ाफ़ के सरों से चादरें (ओढ़नियां) उतार लीं। उसके बाद ख़ेमों में आग लगा दी गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २७८)

उसके बाद अमरू बिन साद ने अपनी फ़ौज में आवाज़ दी कि

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कौन–कौन ऐसे हैं जो लाशे हुसैन को घोड़ों से पामाल करने के लिए तैयार हैं। इस पर दस आदमी तैयार हुए। उनमें इसहाक़ बिन हैवाह हज़रमी भी था। यह दसों सवार आए और अपने घोड़ों से इमाम हुसैन के जिस्मे अक़दस को पामाल करके उनके सीना व पुश्त को चूर–चूर कर दिया।

इस शक़ावत व संगदिली पर ज़मीन कांप उठी। अर्श इलाही थर्रा गया। ज़मीन व आसमान ख़ून के आंसू रोए और जिन्न व इन्स में सफ़े मातम बिछ गई। ख़ास तौर से इस शक़ावत से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितना सदमा पहुंचा होगा। इसका अन्दाज़ा आने वाले सफ़हात से होगा। मुलाहज़ा फ़रमाएं।

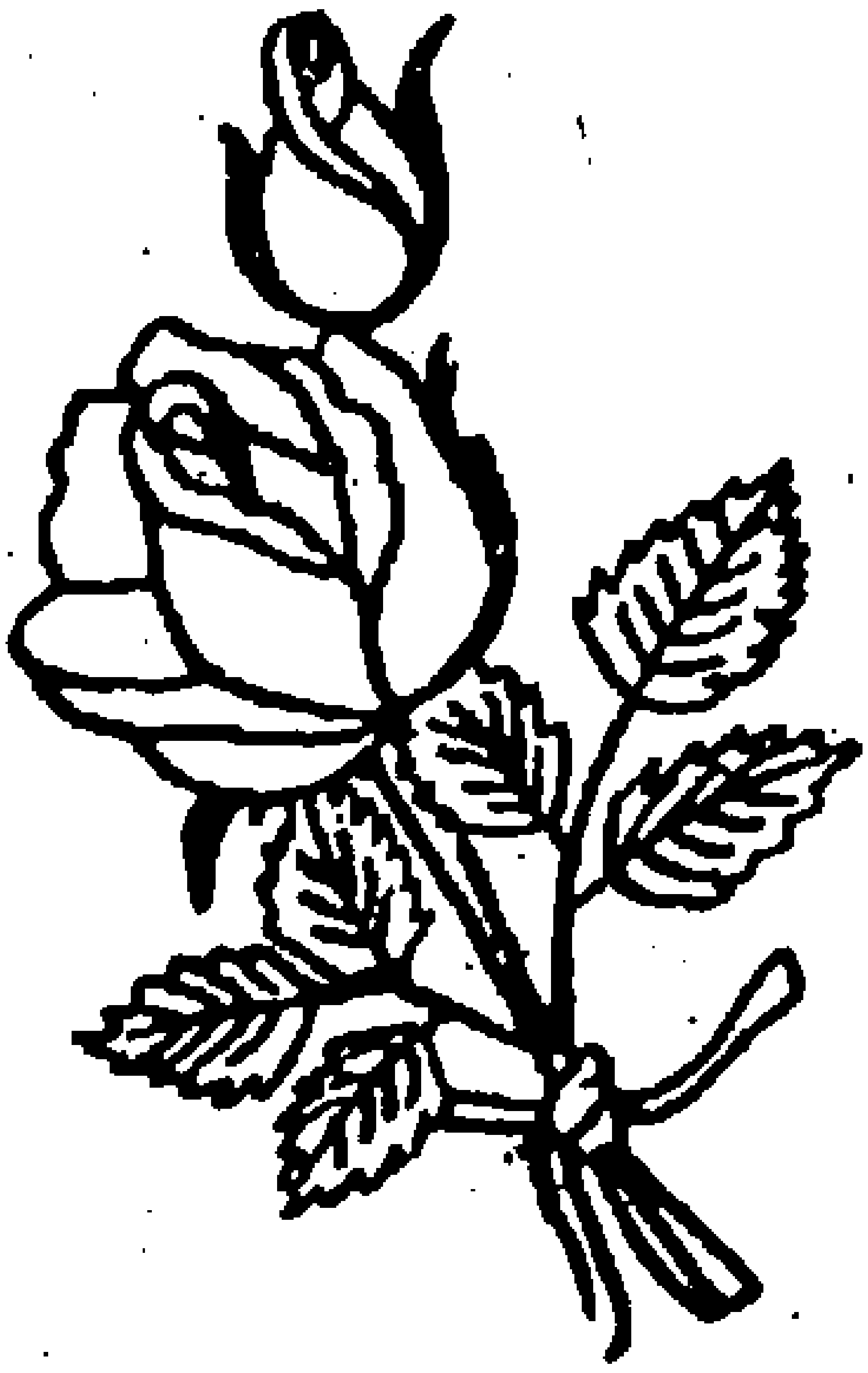

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ऐ हुसैन !

कल्मा–ए–तौहीद है तेरी शहादत ऐ हुसैन!
तू न होता तो न रह जाती सदाक़त ऐ हुसैन!
तेरी क़ुर्बानी ने ज़िन्दा कर दिया इस्लाम को !
वह रहेगा ता अबद तेरी बदौलत ऐ हुसैन !
तालिबाने मन्ज़िले अम्न व सुकूं के वास्ते!
तेरी क़ुर्बानी हुई शमा–ए–हिदायत ऐ हुसैन !
मिल्लते इस्लाम को मिलता है एक दर्से हया!
कैसे भूलें हम तेरा यौमे शहादत ऐ हुसैन !
इहतमाल आने का है फिर से यज़ीदियत का दौर!
फिर जहाने नौ को है तेरी ज़रूरत ऐ हुसैन !
हाल मेरा कुछ भी हो, मेरा अक़ीदा है यही!
बख़्शवाएगी मुझे तेरी मोहब्बत ऐ हुसैन !

(बेकल बलरामपुरी)

सलाम

जिसने हक़ करबला में अदा कर दिया
अपने नाना का वादा वफ़ा कर दिया
घर का घर सब सुपुर्दे ख़ुदा कर दिया
कर लिया नोश जिसने शहादत का जाम
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

ऐ ख़ाके करबला !

ऐ करबला की ख़ाक! उस एहसान को न भूल
तड़पी है तुझ पे लाशे जिगर गोशए रसूल
इस्लाम के लहू से तेरी प्यास बुझ गई
सैराब कर गया तुझे ख़ूने रगे रसूल

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को

सदम-ए-जानकाह

सरज़मीने करबला में हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ यज़ीदियों ने जो सुलूक किया उस वाक़ियए हाइला से हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो रंज पहुंचा और क़ल्बे मुबारक को जो सदमा हुआ, वह अन्दाज़ा और क़्यास से बाहर है। इमाम अहमद व बैहक़ी व मिश्कात ने हज़रत सैयदना इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है। आप फ़रमाते हैं **रऐतुन्नबीय्य सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ीमा यरन्नाइमु ज़ा त यौमिन बिनिस्फ़िन्नहार अशअ स अग़ब र बियदिही क़ारूरतुन फ़ीहा दमुन फ़क़ुल्तु ब्रिअबी अन त व उम्मी मा हा ज़ाक़ा ल· हाज़ा दमुल हुसैनि व असहाबिही व लम अज़लउलक़ितुहू मुन्जुल यौमि फ़उहसी ज़ालिकल वक़ त फ़अजिदु कुति ल ज़ालिकल वक़ त** एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़्यारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ। मैंने देखा कि सुम्बुल मुअम्बर व गेसूए मुअत्तर बिखरे हुए और ग़ुबार आलूद हैं। दस्ते मुबारक में एक ख़ून भरा शीशी है। मैंने अर्ज़ किया : मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान! यह क्या है? फ़रमाया : हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है। मैं उसे आज सुबह से उठा रहा हूं। हज़रत इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं ने उस तारीख़ और वक़्त को याद रखा। जब ख़बर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन उसी वक़्त और उसी तारीख़ को शहीद किए गए थे। (मिश्कात शरीफ़ मुतर्जम बाब फ़ज़ाइले अहले–बैत सफ़ा ४६१ 'तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा' सफ़ा ३०४)

हज़रत सलमा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज़ाद करदा ग़ुलाम अबू राफ़े की ज़ौजा और हज़रत इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाई हैं, वह ब्यान फ़रमाती हैं कि मैं उम्मुल–मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि वह रो रही हैं। मैं ने अर्ज़ किया : आप क्यों रो रही हैं? उन्होंने फ़रमाया : **रऐतु रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तानी फ़िल मनामि व अला रासिही व लिहयतिहित्तुराबु फ़कुल्तु माल क या रसूलुल्लाह! क़ा ल**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शहिदत्तु क़त्लल हुसैनि आनिफ़न। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके सरे मुबारक व रीशे अक़दस (दाढ़ी मुबारक) पर गर्द व गुबार है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप का यह क्या हाल है? फ़रमाया : मैं अभी हुसैन की शहादतगाह पर गया था।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द २ सफ़ा ७३१ शरहुस्सुदूर सफ़ा २५१ तारीख़ुल ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०४)

मुहतरम क़ारिईन किराम! मज़कूरा बाला दोनों अहादीसे करीमा से यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो रही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी क़ब्र अनवर में ज़िन्दा हैं और उम्मत के आमाल से भी बाख़बर हैं। नीज़ उन इब्ने यज़ीद फ़ासिक़ों और नमक हरामों को भी उससे सबक़ हासिल करना चाहिए। ख़ास तौर से औरंगाबाद के ज़ुहूर अहमद क़र्शी और उसके मुत्तबईन को जो वाक़िआते करबला का इन्कार करते हैं और उसे अफ़सानवी हैसियत क़रार देते हैं।

❖❖❖

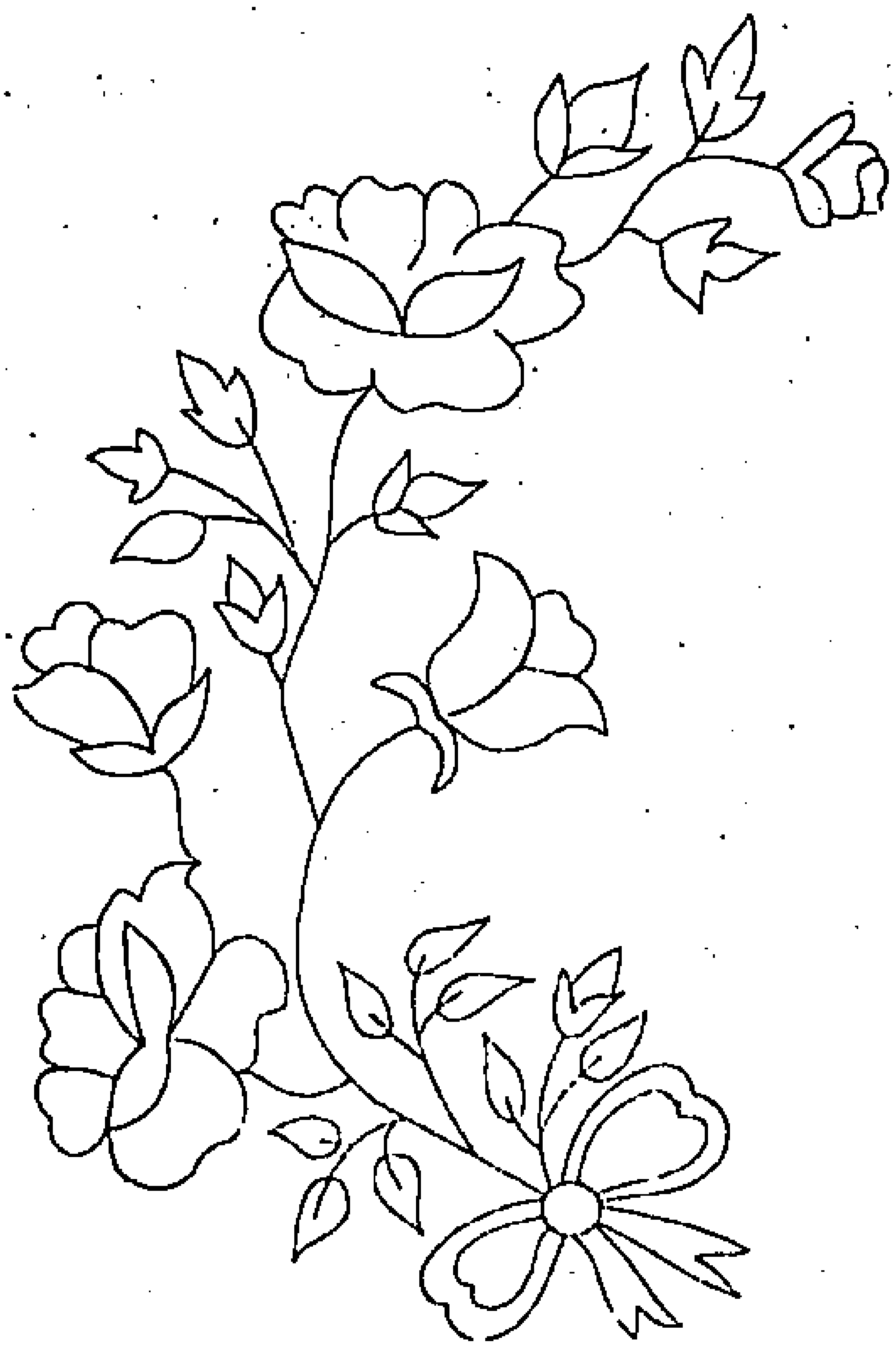

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जिसको आग़ोशे रहमत में पाला गया
जिसको दोशे नबी पर बिठाया गया
जिसको क़ुदरत के हाथों संभाला गया
जो मदीने से जबरन निकाला गया
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम

जिसको झूला फ़रिश्ते झुलाते रहे
लोरियां दे के नूरी सुलाते रहे
जिसको सीने से आक़ा लगाते रहे
जिस पे सफ़्फ़ाक ख़न्जर चलाते रहे
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम

तीन दिन भूखा–प्यासा जो रखा गया
जो रहा पैकरे शाने सब्र व रज़ा
जिससे राज़ी था लारैब उसका ख़ुदा
जिसके क़दमों से जन्नत बनी करबला
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम

जो जवानाने जन्नत का सालार है
जिसका नाना दो आलम का सरदार है
जो सरापाए महबूबे ग़फ़्फ़ार है
जिस का सर दश्त में ज़ेरे तलवार है
उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम
उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम

❖ ❖ ❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वाक़िआते बादे शहादत

हाफ़िज़ अबू–नईम ने दलाइलुन्नुबुव्वः में बसरा अज़दीया से रिवायत की है कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए तो आसमान से ख़ून बरसा। सुबह को हमारे मटके, घड़े और तमाम बरतन ख़ून से भरे हुए थे। हज़रत ज़ुहरी फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन जिस रोज़ शहीद किए गए उस रोज़ बैतुल–मक़दिस में जो पत्थर उठाया जाता उसके नीचे ताज़ा ख़ून पाया जाता। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६४४)

हज़रत उम्मे हिब्बान फ़रमाती हैं कि हज़रत इमाम हुसैन जिस रोज़ शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन दिन तक अंधेरा रहा। और जिस शख़्स ने मुंह पर ज़ाफ़रान मला उसका मुंह जल गया। और बैतुल–मक़दिस के पत्थरों के नीचे ताज़ा ख़ून पाया गया। हज़रत अली बिन शेर से रिवायत हैं कि मैं ने अपनी दादी से सुना : वह कहती हैं कि मैं हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के ज़माने में जवान लड़की थी, कई रोज़ तक आसमान रोया यानी ख़ून बरसा। ('ख़साइसे कुबरा' जिल्द २ सफ़ा २०६)

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के दिन सूरज गहन में आ गया था और मुसलसल छः माह तक आसमान के किनारे सुर्ख़ रहे। बाद में रफ़्ता–रफ़्ता वह सुर्ख़ी जाती रही, अलबत्ता उफ़क़ की सुर्ख़ी जिसको शफ़क़ कहा जाता है, आज तक मौजूद है। यह सुर्ख़ी शहादत इमाम हुसैन से पहले मौजूद नहीं थी।

यज़ीदी लशकरियों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के लशकर में एक ऊंट पाया और शहादते इमाम के बाद उसको ज़बह किया और पकाया तो उसका गोश्त आग की तरह सुर्ख़ बन गया। और जब उसको पकाया तो वह कड़वा हो गया। और आप फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम की शहादत के बाद सात दिन तक अंधेरा रहा। दीवारों पर धूप का रंग ज़र्द पड़ गया और बहुत सितारे भी टूटे।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०४ 'सवाइक़े मुहर्रक़ा' सफ़ा ६४५)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जिन्नों की नौहा-ख़्वानी

अबू–नईम ने दलाइलुन्नुबुव्व: में हज़रत उम्मे सलमा की ज़ुबानी लिखा है कि मैंने शहादते हुसैन पर जिन्नात को अश्कबारी और नौहा करते देखा है। सालब ने उमाली में अबी हुबाब कलबी के हवाले से लिखा है कि मैंने करबला में जाकर एक मुअज़्ज़ज़ अरब से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने जिन्नात को गिर्या व ज़ारी करते हुए सुना है। उसने कहा : तुम जिससे चाहो पूछ लो। उनकी गिर्या व ज़ारी हर एक ने सुनी है। मैं ने कहा : जो कुछ तुम ने सुना है, वह मुझे भी बताओ। उस शख़्स ने जवाब दिया। मैंने जिन्नात की ज़ुबानी यह अशआर सुने हैं :–

मसहर्रसूलु जबीनहु
फ़लहू बरीकुन फ़िल-ख़ुदूदि
उस जबीं को रसूल ने चूमा था
है नूर वही उनके चेहरे पर
अबवाहु मिन उलिया क़ुरैशिन
व जद्दहू ख़ैरल जुदूद
उनके वालिदैन कुरैश के आला ख़ान्दान
उनके नाना जान तमाम अजदाद से बेहतर।

(तारीखुल-खुलफ़ा सफ़ा ३०५ 'ख़साइसे कुबरा' जिल्द २ सफ़ा २०६)

अहले-बैत अतहार की करबला से कूफ़ा को रवानगी

नवासए रसूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद आपकी लाशे मुबारक को घोड़ों की टापों से रौंदने के बाद यज़ीदी लुटेरों ने अहले–बैत का कुल सामान छीन लिया। उस वक़्त ख़ानवादए नब्वी में आबिदे बीमार हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु बाक़ी थे। जिस वक़्त शिमर की नज़र उन पर पड़ी, अपने साथियों से कहा : उसको क्यों बाक़ी रखा ? उसको भी क़त्ल कर दो। एक शख़्स हमीद बिन मुस्लिम के दिल में अल्लाह ने रहम डाल दिया। उसने कहा : सुब्हानल्लाह! यह बीमार, कमसिन है, इसको क़त्ल मत करो। इतने में इब्ने साद आया और उसने कहा कि कोई शख़्श औरतों के ख़ेमा में न जाए और जो कुछ माल लूटा गया है उसको वापस कर दिया जाए। लेकिन किसी ने कोई चीज़ वापस न की। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २७६)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसके बाद अमरू इब्ने-साद ने तमाम शुहदा के सर काटने का हुक्म दिया और शिमर ज़िल-जौशन, क़ैस बिन अशअस, उमरू बिन अल हुज्जाज और उर्वह बिन क़ैस के हाथ यह सर हज़रत इमाम आली मक़ाम के सर के साथ इब्न-ज़्याद के पास भिजवा दिए। यह लोग उन सरों को नेज़ों पर लटका कर इब्न-ज़्याद के पास ले गए। ख़ुद इब्न-साद उस रोज़ करबला में ठहर गया। और ११ मुहर्रम की सुबह को अपनी फ़ौज के तमाम मक़्तूलीन को जमा किया और उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न कर दिया। मगर शोहदाए राहे हक़ की लाशों को ऐसे ही बे-गोर कफ़न पड़ी रहने दिया। फिर पर्दानशीं ख़्वातीन जो बीमार ज़ैनुल-आबिदीन और चन्द छोटे बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे रात भर पड़ी रहीं, उन्हें क़ैदी बनाकर कूफ़ा रवाना हुआ।

यज़ीदी फ़ौज के एक सिपाही क़ुर्रह बिन क़ैस तमीमी का ब्यान है कि जब यह तबाहशुदा क़ाफ़िला उस जगह से गुज़रने लगा जहां हज़रत हुसैन और दीगर शोहदा की लाशें बे-गोर व कफ़न चटयल मैदान में पड़ी थीं तो क़ाफ़िले में एक मातम बपा हो गया और हज़रत इमाम की बहन हज़रत ज़ैनब ने इन्तिहाई दर्द के साथ रोते हुए कहा **या मुहम्मदाह! या मुहम्मदाह!** आप पर अल्लाह और मलाइका का दुरूद व सलाम हो। देखिए, यह हुसैन चटयल मैदान में ख़ाक व ख़ून में ग़ल्तां और टुकड़े-टुकड़े होकर पड़े हैं। या मुहम्मदाह! आपकी बेटियां क़ैदी बना कर ले जाई जा रही हैं। आप की औलाद क़त्ल की गई, और हवा उन पर ख़ाक उड़ा रही है। यह दिल्दोज़ फ़रयाद सुनकर दोस्त व दुश्मन सब रोने लगे। फिर जब अमरू बिन साद करबला से चला गया तो क़बीलए बनी असद, जो क़रियए ग़ाज़िरीया के थे, उन लोगों ने आकर उन शोहदा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और हज़रत इमाम हुसैन और उनके साथियों की लाशों को दफ़न कर दिया।

(तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८०/२८१-अल-हुसैन (अरबी) सफ़ा १५४)

इमाम हुसैन का सरे अनवर और इब्ने-ज़्याद

इब्ने-ज़्याद दारुल-इमारात में बैठा था और लोगों को महल में आने की आम इजाज़त थी। जब दरबार भर गया तो इब्ने-ज़्याद के सामने हज़रत इमाम आली मक़ाम का सरे अक़दस एक तश्त में रख कर पेश किया गया। उस वक़्त ज़ालिम इब्ने-ज़्याद के हाथ में छड़ी थी। जिससे

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वह बार–बार आपके लबों और दांतों को मारता था। एक सहाबिए रसूल हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु जो उस वक़्त वहां पर मौजूद थे उनसे यह गुस्ताख़ी न देखी गई। तड़प उठे और रोते हुए कहा : ऐ इब्ने मरजाना! छड़ी को हटा ले। ख़ुदा की क़सम! मैं ने अपनी आंखों से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा है कि आप उन लबों और दांतों को चूमा करते थे। यह कह कर बेइख़्तियार रोने लगे। इब्ने–ज़्याद ने कहा : ख़ुदा तुझे ख़ूब रुलाए। अगर बूढ़ा न होता और तेरी अक़्ल ख़राब न हो गई होती तो मैं इसी वक़्त तेरी गर्दन मार देता। हज़रत ज़ैद वहां से उठे और यह कहते हुए चले गए कि ऐ लोगो! आज के बाद से तुम सब गुलाम बन गए। क्योंकि तुम लोगों ने फ़ातिमा के लख़्ते जिगर को क़त्ल किया और मरजाना के बेटे को अपना हाकिम बनाया जो तुम्हारे नेक लोगों का क़त्ल कर रहा है और बुरों को गुलाम बना रहा है। तुम ने ज़िल्लत को गवारा किया जो ज़िल्लत को गवारा करे उस पर ख़ुदा की मार हो।

(तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८१ सियरुस्सहाबा सफ़ा १७४ मुअल्लिफ़ नदवी)

इब्ने-ज़्याद और हज़रत ज़ैनब

सरे इमाम आली मक़ाम के बाद अहले–बैत के दूसरे अफ़राद इब्न ज़्याद के सामने पेश किए गए। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत इमाम आली मक़ाम की हमशीरा हैं। आपकी कनीज़ों ने आपके गर्द हलक़ा बना लिया था। इब्ने–ज़्याद ने पूछा : यह कौन औरत है? तीन दफ़ा उसने यही कहा। मगर किसी ने जवाब न दिया। आख़िर एक कनीज़ ने कह दिया। यह रसूलुल्लाह की नवासी, फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा की बेटी और हज़रत इमाम हुसैन की हमशीरा हैं। यह सुन कर इब्न–ज़्याद, जो फ़तह व ज़फ़र के नशे में चूर था, आपको मुख़ातब करते हुए कहा : अल्लाह का शुक्र है जिस ने तुम्हें ज़लील व ख़्वार किया और झुठलाया। शेरे ख़ुदा की बेटी हज़रत ज़ैनब ने फ़रमाया : अल्लाह का शुक्र है जिसने अपने नबी के ज़रिए से हमें इज़्ज़त दी और हमें पाक व साफ़ फ़रमाया। हम नहीं, फ़ासिक़ ज़लील होते हैं और फ़ाजिर झुठलाए जाते हैं। ज़ालिम इब्न–ज़्याद ने कहा : तूने देखा अल्लाह ने तेरे घर वालों से क्या सुलूक किया ? हज़रत सैय्यदा ने जवाब दिया : उनके लिए शहादत मुक़द्दर हो चुकी थी। इस लिए वह अपने मक़्तल में पहुंच गए। अन्क़रीब अल्लाह तुझे और उन्हें एक जगह जमा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़रमायेगा उस वक़्त वह उस के सामने इसका इन्साफ़ तलब करेंगे। यह दन्दान शिकन जवाब सुन कर इब्न-ज़्याद गुस्सा से बेताब होकर बोला : खुदा ने तेरे सरकश सरदार और तेरे अहले-बैत के नाफ़रमान बाग़ियों की तरफ़ से मेरा दिल ठण्डा कर दिया। उस अज़ीयतनाक जुमले पर हज़रत ज़ैनब अपने तई संभाल न सकीं बे-इख़्तियार रो पड़ीं। वल्लाह! तू ने मेरे सरदार को क़त्ल कर डाला। मेरे ख़ानदान का निशान मिटाया। मेरी शाख़ें काट दीं। अगर इस से तेरा दिल ठण्ढा हो सकता तो हो जाए। उस के बाद इब्न-ज़्याद बदनिहाद की नज़र बीमार पर पड़ी। वह उन्हें भी क़त्ल करना ही चाहता था कि हज़रत ज़ैनब बेक़रार होकर चीख़ पड़ीं और फ़रमाया : ऐ इब्न-ज़्याद! मैं तुझे खुदा का वास्ता देती हूं। अगर तू इस बच्चे को क़त्ल करना चाहता है तो मुझे भी इस के साथ क़त्ल कर डाल। इब्ने ज़्याद पर देर तक सकते का आलम तारी रहा। उसने लोगों से मुख़ातब होकर कहा : ख़ून का रिश्ता भी कैसी अजीब चीज़ है। वल्लाह! मुझे यक़ीन है कि यह सच्चे दिल से लड़के के साथ क़त्ल होना चाहती है। अच्छा इसे छोड़ दो। यह भी अपने ख़ान्दान की औरतों के साथ जायेगा।

एक जांनिसार की शहादत

उसके बाद इब्न-ज़्याद ने जामा मस्जिद में शहर वालों को जमा किया। और मिम्बरे रसूल पर खुतबा देते हुए कहा : उस खुदा की हम्द व सताइश जिसने अमीरुल-मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया को ग़ालिब किया और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अली को हलाक कर डाला। इस इजतिमा में मशहूर मुहिब्बे रसूल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अफ़ीफ़ अज़्दी, जो दोनों आंखों से नाबीना थे, उनसे खुतबे के यह अल्फ़ाज़ सुन कर रहा नहीं गया। फ़र्ते ग़ज़ब में कांपते हुए खड़े हो गए और इब्न-ज़्याद को ललकारते हुए कहा : खुदा की क़सम! तू ही कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब है। हुसैन सच्चा, उसके नाना जान सच्चे। इब्न-ज़्याद उस जवाब से तिलमिला उठा और जल्लाद को हुक्म दिया कि शाहराह पर ले जाकर इस अन्धे बुढ्ढे का भी सर क़लम कर दो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफ़ीफ़ शौक़े शहादत में मचलते हुए उठे और मक़तल पहुंच कर चमकती हुई तलवार का मुस्कुराते हुए ख़ैरमक़दम किया। ख़ून बहा; लाश तड़पी और ठण्ढी हो गई। कौसर के साहिल पर जां-निसारों की तादाद में एक अदद का और इज़ाफ़ा हो गया।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८४)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सरे इमाम की कूफ़ा में तशहीर

इब्ने-ज़्याद बद-निहाद ने हुक्म दिया कि तमाम सरों को कूफ़ा के बाज़ारों में फिराया जाए उसके बाद दरवाज़ए क़स्र पर आवेज़ां कर दिया जाए। (तारीख़े तबरी जिल्द सफ़ा २८४)

तारीख़े तबरी की दूसरी रिवायत यह है कि इब्ने-ज़्याद ने कूफ़ा में इमाम आली मक़ाम के सरे मुबारक की तशहीर के बाद हज़रत इमाम और उनके तमाम जांनिसार शोहदाए किराम के सरों और असीराने अहले-बैत को ज़हर बिन क़ैस, अबू बुर्दह बिन औफ़ अज़्दी और तारिक़ बिन अबू ज़िब्यान अज़्दी के हमराह शिमर वग़ैरह की सरकरदगी में यज़ीद पलीद के पास दमिश्क़ उस हालत में रवाना किया कि हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पांव को ज़ंजीर से जकड़ दिया गया था। और बीबियों को ऊंटों की नंगी पीठों पर बिठाया गया था। और ज़ालिम इब्ने-ज़्याद ने हुक्म दिया था कि सरों को नेज़ों पर चढ़ाए हुए आबादियों से गुज़रना ताकि लोगों को इ॰॰त हो और आइन्दा कोई यज़ीद की मुख़ालफ़त पर आमादा न हो। (सआदतुल-कौनैन सफ़ा २३)

असनाए सफ़र में सरे मुबारक से अजीब-अजीब ख़वारिक़ व करामात का ज़ुहूर हुआ। चुनांचे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि जब इब्ने-ज़्याद ने हुक्म दिया कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे अनवर को नेज़ा पर चढ़ाकर कूफ़ा की गलियों मे फिरा या जाए तो उस वक़्त मैं अपने मकान की खिड़की में खड़ा क़ुरआने हकीम की सूरतुल कहफ़ की तिलावत कर रहा था। पढ़ते-पढ़ते जब इस आयत करीमा तक पहुंचा **अम हसिबत अन्न न असहाबल कहफ़े वर्रक़ीमे कानू मिन आयातिना अ ज बा** तो सरे अक़्दस ये आवाज़ सुनी **आजबु मिन असहाबिल कह्फ़े क़तली व हमली** असहाबे कहफ़ के वाक़िआ से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अजीबतर है। दरहक़ीक़त बात यही है। क्योंकि असहाबे कहफ़ पर काफ़िरों ने ज़ुल्म किया था लेकिन क़त्ल नहीं किया था। और हज़रत इमाम हुसैन को उनके नाना जान के कलिमा पढ़ने वालों ने मेहमान बनाकर बुलाया फिर बेवफ़ाई की और तीन दिन भूखे-प्यासे रखकर शहीद कर दिया। यह ज़रूर अजीब बात है।

(शवाहिदुन्नुबुव्वः सफ़ा ३०८ ख़साइसे कुबरा जिल्द २ सफ़ा २१०)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जब अश्क़िया की जमाअत इमाम आली मक़ाम के सरे मुबारक को लेकर पहली मंज़िल पर एक गिरजा घर के पास रात गुज़ारने के लिए उतरी और शराबे नबीज़ पी रही थी। उनके सामने लोहे का क़लम गैब से नमूदार हुआ। उस क़लम ने एक सतर ख़ून से यह शेअ़र लिखा—

अ तरजू उम्मतुन क़तलत हुसैनन

शफ़ाअतु जदिही यौमल हिसाबि

यानी जिन्होंने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल किया है, क्या वह इस बात की उम्मीद रखते हैं कि उनके नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत के दिन उनकी शफ़ाअत करेंगे?

(ख़साइस कुबरा जिल्द २ सफ़ा २१०. सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा ४४३)

यज़ीदियों ने जब देखा तो उनको बहुत तअज्जुब हुआ। गिरजा घर के राहिब से पूछा : यह शेअ़र किसने लिखा है और कब का लिखा हुआ है?

राहिब ने कहा : किसने लिखा है यह मुझे नहीं मालूम, अलबत्ता इतना जानता हूं कि तुम्हारे नबी के ज़माने से पांच सौ बरस पहले का लिखा हुआ है।

(ह्यातुल—हैवान हिस्सा २ सफ़ा १२५)

ख़साइसे कुबरा जिल्द अव्वल में है सफ़ा ७७ पर छः सौ साल लिखा है।

राहिब ने जब शहीदों के सरों को नेज़ों पर और चन्द बीबियों और बच्चों को बहालते क़ैदी देखा तो उसका दिल भर आया। और दरयाफ़्त करने पर जब पूरा हाल उसको मालूम हुआ तो कहा **मआज़ल्लाह!** तुम लोग कितने बुरे आदमी हो कि अपने नबी की औलाद को क़त्ल किए हो और फिर उनके बाल—बच्चों को क़ैदी बनाए हो। फिर उस राहिब ने उन यज़ीदियों से कहा कि अगर रात भर के लिए अपने नबी के नवासे का सर हमारे पास रहने दो तो मैं तुमको दस हज़ार दिरहम देता हूं। वह लोग राज़ी हो गए। राहिब रक़म अदा करके हज़रत इमाम का सरे मुबारक लिया और अपने मख़सूस कमरे में ले गया। फिर सरे अनवर, चेहरए मुबारक और ज़ुल्फ़ों और दाढ़ी के बालों पर जो गर्द व ग़ुबार और ख़ून जमा हुआ था धोया और इत्र काफ़ूर लगाया और बड़ी ताज़ीम व तकरीम के साथ अपने सामने रख कर ज़्यारत करने लगा। ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल उसके उस अदब से राज़ी हुआ और अपनी रहम के दरवाज़े खोल दिए। राहिब रोने लगा और उसकी निगाहों से पर्दे उठ गए। उसने देखा कि सरे अक़दस से आसमान तक नूर ही नूर है। जब उसने सरे अक़दस की यह करामत और अनवार व तजल्लियात

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

का मुशाहिदा किया तो बे–साख़्ता सिद्क़ दिल से **ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** पढ़कर मुसलमान हो गया। सुबह को सरे अनवर उनके हवाले कर दिया। गिरजा घर को हमेशा–हमेशा के लिए छोड़ कर अह्ले–बैत का मुती व ख़ादिम बन गया। यहां एक और सख़्त इबरतख़ेज़ वाक़िआ यह हुआ कि लशकरे साद ने बाहम यह फ़ैसला किया कि जो दिरहम राहिब ने दिया है यहीं तक़सीम कर लिया जाए। चुनांचे जैसे ही दिरहम से भरी हुई थैलियों का मुंह खोला तो देखा कि सब दिरहम ठेकरी हो गए हैं और उनके एक तरफ़ यह आयते करीमा लिखी हुई है **वला तहसबन्नल्ला ह ग़ाफ़िलन अम्मा यामलुज़्ज़ालिमून।** ज़ालिम जो करते हैं ख़ुदाए तआला को उससे ग़ाफ़िल हरगिज़ न जानो। और दूसरी तरफ़ यह आयते मुबारका तहरीर थी : **व सयालमुल्लज़ी न ज़ ल मू अय्य मुन्क़लिबिं यन्क़लिबून।** ज़ुल्म करने वाले अन्क़रीब जान लेंगे कि वह किस करवट पल्टा खाएंगे। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६६१, सआदतुल–कौनैन सफ़ा १२४)

इमाम आली मक़ाम का सर दरबारे यज़ीद में

जब शोहदा के सर और असीराने अह्ले–बैत यज़ीद के दरबार (दमिश्क़) में पहुंचे तो यज़ीद ने उनके साथ क्या सुलूक किया। इस सिलसिले में मुख़तलिफ़ रिवायतें तारीख़ के सफ़हात पर तहरीर हैं। एक रिवायत यह है कि शहादते इमाम हुसैन से यज़ीद नाराज़ हुआ और अपनी बेज़ारी का इज़हार किया। दूसरी रिवायत यह कि यज़ीद उससे ख़ुश हुआ। महफ़िले सुरूर आरास्ता की और बर सरे महफ़िल सरे इमाम की तौहीन की। और दीगर रिवायतें पेश करके बहुत–से यज़ीदी यज़ीद इब्ने मुआविया को वाक़िआते करबला का ज़िम्मेदार होने से बरी करने की नापाक कोशिश कर रहे हैं जैसा कि एक इब्ने यज़ीद ज़ुहूर अहमद कर्शी औरंगाबादी ने हाल ही में किया है। लेकिन दर हक़ीक़त सही तरीन रिवायत जिसको हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः ने तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०५ में ब्यान फ़रमाया है : वह यह है कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपने तमाम साथियों के साथ शहीद हो चुके तो इब्ने–ज़्याद ने उन तमाम शोहदा के सरों को यज़ीद के पास दारुस्सलतनत में भेज दिया। यज़ीद तो उस सरहाए बुरीदा को देख कर बहुत ख़ुश हुआ मगर जब आम्मतुल–मुस्लिमीन उसके उस फ़ेल पर उस से नाराज़ हुए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और मलामत की तो उसको भी अफ़सोस हुआ और अपने फ़ेल पर नदामत हुई। सच तो यह है कि आम्मतुल मुस्लिमीन का यज़ीद के उस फ़ेल पर नाराज़गी का इज़्हार बिल्कुल बजा था।

मुसन्निफ़े तारीखे तबरी अल्लामा अबी जाफ़र जरीरुत्तबरी लिखते हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन का सर यज़ीद के सामने पेश किया गया तो उसने लोगों को दरबार में आने की आम दावत दी। जब सब लोग आ गए तो उस वक़्त लोगों ने यह देखा कि यज़ीद के हाथ में एक छड़ी थी जिससे वह आपके सामने के दांतों में ठोंका देता और यह कहता कि अब हमारी और उनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि शायर हुसैन बिन अल हम्माम ने कहा है कि हमारी तलवारें ऐसे लोगों की खोपड़ियां तोड़ती हैं जो हम पर ग़ालिब थे और वह निहायत नाफ़रमान और ज़ालिम थे।

रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अबू–दरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त वहां मौजूद थे। उन्होंने यह देखा तो फ़रमाया : ऐ यज़ीद! तू अपनी छड़ी हुसैन के दांतों और लबों से लगा रहा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूमा करते थे। सुन ले क़यामत के दिन तेरा हश्र इब्न–ज़्याद के साथ होगा और हुसैन रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ होंगे। यह कह कर वह दरबारे यज़ीद से उठे और चले गए। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २६१)

अल्लामा इमाम इब्न–हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब यज़ीद ने हज़रत इमाम हुसैन के सरे मुबारक के साथ बे–अदबी की (जैसा कि गुज़रा) तो उस वक़्त यज़ीद के पास क़ैसरे रोम का सफ़ीर मौजूद था। उसने बहुत मुतअज्जिब होकर कहा कि हमारे यहां एक जज़ीरा के गिरजा में ईसा अलैहिस्सलाम के गदहे के खुर का निशान अभी तक महफ़ूज़ है। हम लोग हर साल हदिए और नज़राने लेकर उसकी ज़्यारत को जाते हैं। उसकी उसी तरह ताज़ीम करते हैं जिस तरह तुम लोग अपने काबे की करते हो। बिलाशुब्हः तुम लोग झूठे और बेहूदा हो। इसी तरह उस वक़्त एक ज़िम्मी यहूदी भी मौजूद था। उस ने कहा मेरे और मेरे पैग़म्बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के दर्मियान सत्तर (७०) पुश्तें गुज़र चुकी हैं लेकिन अब तक यहूदी मेरी ताज़ीम व तकरीम करते हैं और तुमने अपने नबी के फ़र्ज़न्द को इस तरह बेदरेग़ क़त्ल कर दिया।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६६०)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अह्ले-बैत की मदीना मनव्वरा वापसी

सहाबिए रसूल हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु, जो हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कूफ़ा में सख़्ती न करने के सबब बहुक्मे यज़ीद गवर्नरी से माज़ूल कर दिए गए थे, यज़ीद ने उन्हें अह्ले–बैते नुबुव्वत का हमदर्द समझ कर बुलवाया और कहा कि अहल व अयाल को इ़ज़्ज़त व एहतराम के साथ मदीना पहुंचाने का इन्तिज़ाम करो।

उसके बाद यज़ीद ने अपने आपको क़त्ले हुसैन से बरी ज़ाहिर करने की कोशिश करते हुए हज़रत ज़ैनुल–आबिदीन रज़ियल्लाहु अन्हु को तन्हाई में बुलाकर कहा : ख़ुदा इब्ने–ज़्याद पर लानत करे। वल्लाह! अगर बराहे–रास्त आपके वालिद का मेरा सामना हो जाता तो जो कुछ वह फ़रमाते, मैं मंज़ूर कर लेता और उनको क़त्ल करना हरगिज़ गवारा न करता। लेकिन ख़ुदा को जो मंज़ूर था, वह हुआ। अब आप मदीना तशरीफ़ ले जाइए और मुझको वहां से ख़त लिखते रहिएगा। जो भी ज़रूरत हो उससे मुझे मुत्तला कीजिएगा। (तबरी जिल्द ५ सफ़ा २८७)

हज़रत नोमान बिन बशीर के हमराह तीस आदमियों का हिफ़ाज़ती दस्ता रवाना किया गया। वह अह्ले–बैत को लेकर मदीना मनव्वरा के लिए रवाना हुए। और रास्ता भर निहायत ताज़ीम व तकरीम से पेश आए। मदीना मनव्वरा के लोगों को वाक़ियए करबला की ख़बर पहले ही पहुंच चुकी थी। जब यह लुटा हुआ क़ाफ़िला शहर में दाख़िल हुआ तो एक कुहराम मच गया। क़यामत से पहले क़यामत आ गई। वुफ़ूरे ग़म और जज़्बए बे–ख़ुदी में अह्ले मदीना और हज़रत उम्मे सलमा व हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया घरों से रोते हुए निकल पड़े। क़ाफ़िला सीधा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुआ। हज़रत इमाम ज़ैनुल–आबिदीन की नज़र जैसे–ही रौज़ए मुतह्हरा पर पड़ी तो बेइख़्तियार रो पड़े और सिर्फ़ इतना ही कह सके। दादा जान! अपने नवासे का सलाम कुबूल फ़रमाइए।

आह व फ़ुग़ां का उबलता हुआ सागर थम जाने के बाद शहज़ादए कौनैन हज़रत इमाम आली मक़ाम सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक जन्नतुल–बक़ी (मदीना मनव्वरा) में मादरे मुशफ़िक़ा सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहलू में सुपुर्दे ख़ाक किया गया।

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद

यज़ीद पलीद की दूसरी नापाक जसारत

मस्जिदे नब्वी

और

मदीना मनव्वरा

पर जारिहाना हमला और शर्मनाक बेहुर्मती

वाक़िआ-ए-हुर्रह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मदीना मनव्वरा पर हमला और क़त्ल व ग़ारतगरी

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद यज़ीद पलीद ने अपने चचा–ज़ाद भाई उस्मान इब्ने मुहम्म्द इब्न अबी सुफ़ियान को मदीना मनव्वरा रवाना किया ताकि बाशिन्दगाने मदीना को यज़ीद की बैअ़त पर दावत दें। उस्मान बिन मुहम्मद मदीना पहुंचते ही एक जमाअत को यज़ीद की जानिब रवाना किया। बादहू जब यह जमाअत यज़ीद के पास से मदीना तैय्यबा वापस आई तो उसने यज़ीद पलीद की दुशनाम–तराज़ी पर अपनी गुफ़्तगू का आग़ाज़ किया और उसकी बेदीनी, शराब–नोशी, गाना गाने वालियों से फ़हश और गन्दे गाने सुनने, क़िस्सा–गोई में वक़्त सर्फ़ करने, हराम–ख़ोरी, बहन भाई का निकाह और कुत्तों के साथ खेलने का ज़िक्र किया और कहा कि हम लोगों ने उसकी उन तमाम ख़ुराफ़ात को देखकर उसकी बैअ़त तोड़ दी है। तुम लोगों से भी हमारा कहना यही है कि वह बैअ़त के क़ाबिल नहीं।

अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः 'तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा' सफ़ा ३०६ में लिखते हैं कि उस वफ़्द के क़ाइद हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि वल्लाह! हम ने यज़ीद की मुख़ालिफ़त उस वक़्त इख़्तियार की जब हमको यक़ीन हो गया कि अब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। क्योंकि यज़ीद के फ़िस्क़ व फुजूर का यह आलम था कि लोग अपनी मां, बहनों और बेटियों से निकाह कर रहे थे, शराबें आम तौर से पी जा रही थीं और लोगों ने नमाज़ तर्क कर दी थी। उसी वफ़्द के एक रुक्न मुंज़िर बिन ज़ुबैर ने भी क़सम खाकर कहा कि मुझको यज़ीद ने एक लाख दिरहम दिए हैं और मेरे साथ एहसान भी किया है। लेकिन मैं सच्चाई को हाथ से जाने न दूंगा। यज़ीद शराब–नोश और तारिके सौम व सलात है। इब्न–जौज़ी अबुल–हसन बदाहिनी से जो सिक़ः रावी हैं, नक़ल करते हैं कि अहले मदीना यज़ीद की अलामाते फ़िस्क़ व फुजूर के ज़ाहिर होने के बाद मिम्बर पर चढ़कर उसकी बैअ़त से मुनकिर हो गए। अब्दुल्लाह इब्ने अमरू बिन हफ़स मख़ज़ूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा कि अगरचे यज़ीद ने मुझको सिला और इनाम दिया है नीज़ मेरी जाइदाद में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी इज़ाफ़ा किया है लेकिन जो ख़ुदा का दुशमन और दायमुल–ख़मर हो मैंने उसको इस तरह अपने से अलाहिदा कर दिया, जिस तरह अपनी दस्तार को। उसके बाद दीगर और लोगों ने यज़ीद की बैअ़त से अपनी बेज़ारी का इज़हार करते हुए उसकी बैअ़त तोड़ दी। और उस्मान बिन मोहम्मद, जो यज़ीद शक़ी की जानिब से गवर्नरे मदीना मनव्वरा मुक़र्रर हुआ था उसको मदीना से निकाल कर अब्दुल्लाह बिन हंज़ला ग़सीलुल–मलाइका के दस्त पर बैअ़त कर ली।

जब यज़ीद पलीद को यह ख़बर पहुंची तो वह बर–अफ़रोख़ता हुआ और मुस्लिम बिन उक़बा को सन् ६३ हिज़री में बीस हज़ार लशकर के साथ मदीना तैयबा और मक्का मुकर्रमा पर हमला के लिए भेजा। उस बदबख़्त लशकर ने मदीना मनव्वरा में वह तूफ़ाने बदतमीज़ी बरपा किया कि जिस के तसव्वुर से रूह लरज़ उठती है। क़त्ल व ग़ारतगरी और तरह–तरह के मज़ालिम का बाज़ार गर्म किया। लोगों के घरों को लूट लिया। सात सौ सहाबा को बे–गुनाह शहीद किया। और ताबईन व हुफ़्फ़ाज़े कुरआन वग़ैरह मिला कर कुल दस हज़ार से ज़्यादा शहीद किया। लड़कों को क़ैद कर लिया और पाक दामन औरतों को तीन शबाना रोज़ अपने और यज़ीदी फ़ौजियों पर हलाल कर लिया। रौज़ए शरीफ़ व मिम्बर शरीफ़ की दर्मियानी जगह – जिसकी बाबत सही हदीस में आया है कि यह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है – यहां पर घोड़े बांधे और उनके लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े। तीन दिन तक मस्जिदे नब्वी में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके।

सिर्फ़ सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु, जो किबार ताबईन में से थे पागल बन कर वहां हाज़िर रहे। आख़िर में उन ज़ालिमों ने उनको भी गिरफ़्तार कर लिया मगर फिर दीवाना समझ कर छोड़ दिया। इब्न–जौज़ी ने ऐसी सनद के साथ कि जो हज़रत सईद बिन मुसैइब रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़्ल है ब्यान फ़रमाते हैं कि उन्होंने कहा कि हर्रह की रातों में (जिस वक़्त यज़ीदियों ने हमला किया) मेरे सिवा दूसरा कोई शख़्स मस्जिद नब्वी शरीफ़ में न था। अह्ले शाम जबकि मस्जिद में आए तो कहते थे कि यह दीवाना बूढ़ा इस मक़ाम पर क्या कर रहा है ? नमाज़ का कोई वक़्त ऐसा न गुज़रता था जब मैं अज़ान व इक़ामत की आवाज़ हुजरए मुक़द्दसा (मस्जिद नब्वी) से न सुनता। फिर मैं उसी अज़ान व इक़ामत से नमाज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अदा करता था। यज़ीदी लूट खसूट की गर्म बाज़ारी और गुंडा–गर्दी का अन्दाज़ा उस से किया जा सकता है कि हज़रत सैय्यदना अबू–सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलीलुल–क़द्र सहाबी हैं, जब यज़ीदी फ़ौज उनके मकान में घुसी और कुछ न पाया तो आपकी दाढ़ी के सब बाल उखेड़ लिए। इसी तरह उस ख़बीस लशकर ने एक नौजवान को पकड़ लिया। उसकी मां फ़रयाद करती आई तो उसके सामने उसके लड़के को शहीद कर दिया। और उसका सर उसकी मां की गोद में दे दिया। और कहा : तू अपने ज़िन्दा रहने को ग़नीमत नहीं समझती कि बेटे को लेने चली आई।

जब मुस्लिम बद–किरदार ने अहले मदीना से ज़बर्दस्ती यज़ीद पलीद की बैअ़त व इताअ़त पर मजबूर किया तो एक शख़्स जो क़बीलए क़ुरैश से था उसने बवक़्ते बैअ़त यह कहा कि मैं तरीक़ाए ताअ़त पर बैअ़त करता हूं, मासियत पर नहीं। मुस्लिम ने उसके क़त्ल का हुक्म दे दिया। उस मक़तूल की मां यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन रबीया ने क़सम खाई कि अगर मैं क़ुदरत पाऊं तो इस ज़ालिम मुस्लिम को ज़िन्दा या मुर्दा जला दूंगी। जब वह ज़ालिम मदीना मनव्वरा में क़त्ल व ग़ारतगरी के बाद मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ़ मुतवज्जह हुआ ताकि वहां अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और उन तमाम लोगों का ख़ातेमा कर दे, जो यज़ीद के ख़िलाफ़ हैं, तो इत्तिफ़ाक़न रास्ते में उस पर फ़ालिज का हमला हुआ और वह फ़ौरन मर गया। उसकी जगह यज़ीद के हुक्म के मुताबिक़ हुसैन बिन नुमैर सुकूनी क़ाइदे लशकर बना। मुस्लिम को उन्होंने वहीं दफ़न कर दिया।

जब यह ख़बीस लशकर आगे बढ़ गया तो उस औरत को मुस्लिम के मरने का पता चला। वह कुछ आदमियों को साथ ले कर उसकी क़ब्र पर आई ताकि उसको क़ब्र से निकाल कर जलाए। जब क़ब्र खोदी तो क्या देखा कि अज़दहा उसकी गर्दन से लिपटा हुआ उसकी नाक की हड्डी पकड़े चूस रहा है। यह देख कर सब डरे और उस औरत से कहने लगे : खुदाए तआला खुद ही उसके आमाल की सज़ा उसको दे रहा है और उसने अज़ाब के फ़रिश्ता उस पर मुसल्लत कर दिया है। अब तू इसको रहने दे। उस औरत ने कहा : नहीं, खुदा की क़सम! मैं अपने अहद और क़सम को ज़रूर पूरा करूंगी। और इसको जला कर अपने दिल को ठंडा करूंगी। मजबूर होकर सब ने कहा : अच्छा! फिर इसको पैरों की तरफ़ से निकालना

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

चाहिए। जब उधर से मिट्टी हटाई तो क्या देखा कि उसी तरह पैरों की तरफ़ भी एक अज़दहा लिपटा हुआ है। फिर सब ने उस औरत से कहा : अब तू इसको छोड़ दे। इसके लिए यही अज़ाब काफ़ी है। मगर वह औरत न मानी। वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला के हुज़ूर हाथ उठाकर दुआ मांगी। इलाही! तू ख़ूब जानता है कि इस ज़ालिम पर मेरा गुस्सा महज़ तेरी रज़ा के लिए है। मुझे यह कुदरत दे कि मैं अपनी क़सम पूरी करूं और उसको जला दूं। यह दुआ करके उसने एक लकड़ी अज़दहे की दुम पर मारी वह गर्दन से उतर कर चला गया। फिर दूसरे अज़दहे को मारी वह भी चला गया। तब उन्होंने मुस्लिम की लाश को क़ब्र से निकाला और जला दिया।

('ज़ज़्बुल–कुलूब' सफ़ा ३७ 'शामे करबला' सफ़ा २२१)

'जज़्बुल–कुलूब' में है कि मुस्लिम की मौत मुहर्रम की चांद रात सन् ६४ **हिजरी** को हुई उसके बाद लोगों ने उसका नाम मुसरिफ़ रख दिया।

फ़ज़ाइले मदीना मनव्वरा

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **ला यकीदु अहलल मदीनति अहदुन इल्ला अनमा अ कमा यनमाउल मिल्हु फ़िल** माए जो शख़्स अह्ले मदीना से मक्र व फ़रेब करे या जंग करे तो वह उस तरह पिघल जाएगा जैसे नमक पानी में पिघलता है। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा ६७७) हज़रत साद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **ला युरीदु अहदुन अहलल मदीनति बिसूइन इल्ला अज़ाबहुल्लाहु फ़िन्नारि ज़ौबर्रसास** जो मदीना मनव्वरह वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग में रांगे की तरह पिघलायेगा। (मुस्लिम शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा १४४)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **मन अख़ा फ़ अहलल मदीनति ज़ुल्मल लहुम अख़ाफ़हुल्लाहु व कानत अलैहि लानतुल्लाहि वल मलाइकति वन्नासि अजमईन। ला यक़बलुल्लाहु मिन्हु यौमल क़्यामते सरफ़ौं वला अदला** जिसने अह्ले मदीना को अपने ज़ुल्म से ख़ौफ़ज़दा किया ख़ुदाए तआला उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करेगा। उसपर अल्लाह तआला, फ़रिश्ते और सब लोगों की लानत है, क़्यामत के दिन अल्लाह तआला न उसकी फ़र्ज़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrililibrary.com

क़बूल फ़रमायेगा और न नफ़्ल। (जज़्बुल कुलूब सफ़ा ३२)

इन अहादीसे करीमा से साबित हुआ कि जो अहले मदीना को डराए, उनसे जंग करे, उन पर ज़ुल्म ढाए या उनसे किसी बुराई का भी इरादा करे तो ख़ुदाए तआला उसे दोज़ख़ की आग में रांगे की तरह पिघलाएगा और उस पर अल्लाह, उसके फ़रिश्ते और तमाम इन्सानों की लानत है। और उसकी कोई इबादत चाहे वह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल अल्लाह तआला क़बूल नहीं फ़रमाएगा।

❖ ❖ ❖

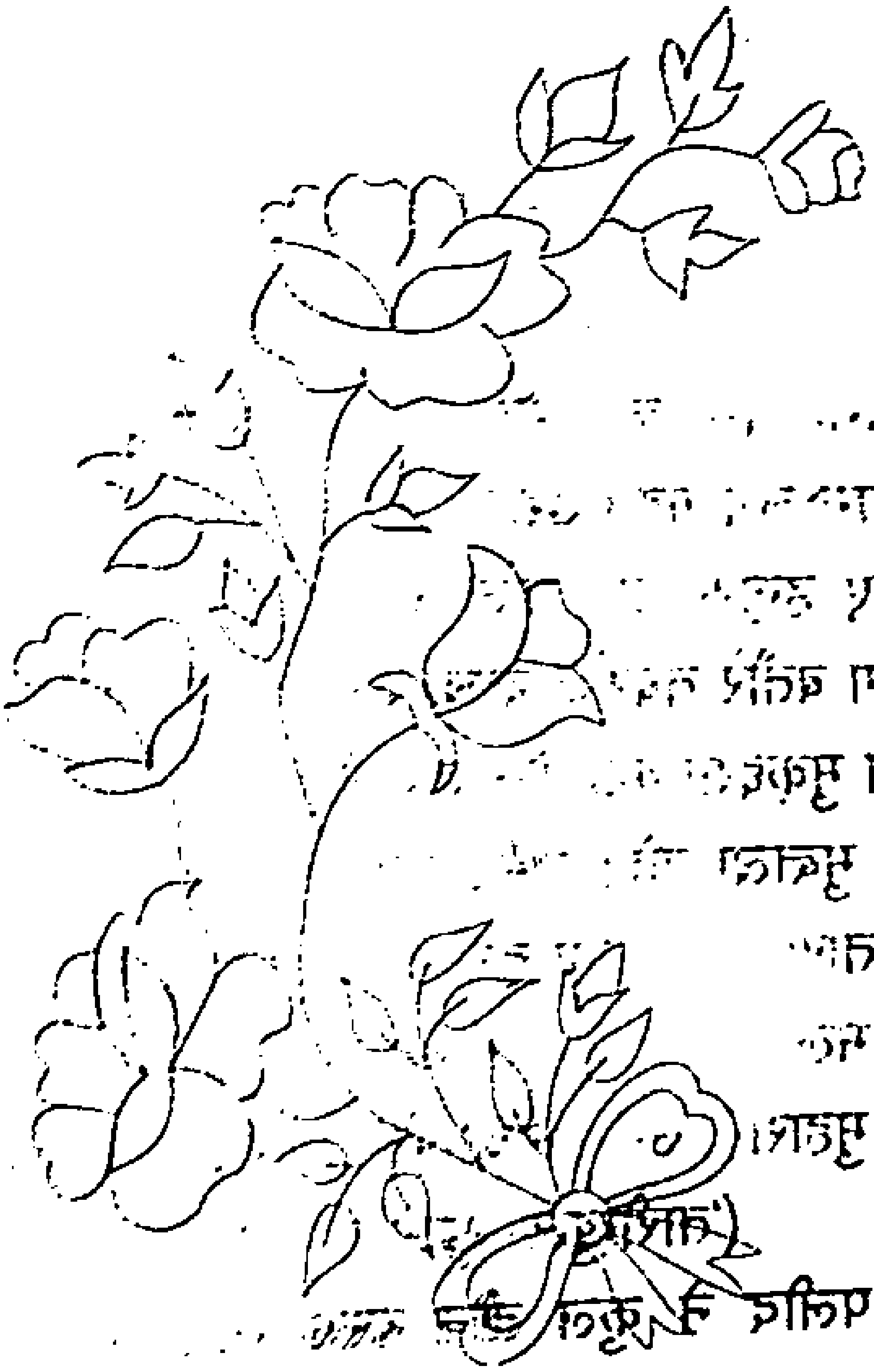

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यज़ीद की तीसरी शरारत व शैतनत हरमे मक्का और ख़ाना काबा पर मिन्जनीक़ से हमला और बेहुरमती

मदीना मनव्वरा को ताराज करने के बाद यज़ीद की यह फ़ौज हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर के मुक़ाबले के लिए मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो गई। फ़ौज का सिपहसालार मुस्लिम बिन उक़बा तो रास्ते ही में हलाक हो गया लेकिन मरने से पहले उसने हुसैन बिन नुमैर को बहुक्म यज़ीद अपना क़ाइम–मक़ाम बना गया था। इब्न–नुमैर ने मक्का पहुंच कर हरम का (जहां हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु पनाहगज़ीं थे) मुहासरा कर लिया और मिन्जनीक़ से संगबारी की। (मिन्जनीक़ पत्थर फेंकने का आला होता है जिससे पत्थर फेंक कर मारा जाता है। उसकी ज़द बड़ी ज़बरदस्त और दूर की मार होती है।) संगबारी से सेहने हरम शरीफ़ पत्थरों से भर गया। उसके सदमे से मस्जिदे हराम के सुतून टूट गए। काबए मुकर्रमा पर संगबारी करने से उसकी दीवारें शिकस्ता हो गईं और छत गिर गई। शामी पत्थर बरसाने के बाद रूई, गंधक और राल के गोले भी बना–बना कर और जला–जला कर फेंकने लगे जिससे ख़ानए काबा में आग लग गई। उसका ग़िलाफ़ जल गया। और उस दुंबा का सींग जो फ़िदयए हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम में जन्नत से भेजा गया था उसकी सींग बतौरे तबर्रुक काबा शरीफ़ की छत में आवेज़ां था, वह भी जल गया। काबा मुक़द्दसा कई रोज़ तक बेलिबास रहा और वहां के बाशिन्दे सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे। अभी शामी लशकर काबा शरीफ़ और अहलियाने मक्का की ताराजी में लगा हुआ ही था कि अचानक यज़ीद पलीद के मरने की इत्तिला मली। इब्न–नुमैर ने यह ख़बर सुनी तो उसके हौसले पस्त हो गए और उसने मुहासरा उठा लिया और हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर से सुलह कर ली। ('तारीखुल–ख़ुलफ़ा' सफ़ा ३०६ 'जज़्बुल–क़ुलूब' सफ़ा ४५)

यज़ीद पलीद ने कुल तीन बरस सात महीने हुकूमत की और १५ रबीउल–अव्वल सन् ६४ हिजरी उन्तालीस साल की उम्र में शहर हिम्स मुल्के शाम में हलाक हुआ।

यज़ीद के मरने के बाद अहले हिजाज़ व यमन व इराक़ व ख़ुरासान ने

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर के दस्ते मुबारक पर बैअ्त की और अह्ले शाम व मिस्र ने यज़ीद के बेटे मुआविया को उसका जांनशीन बनाया। मुआविया अगरचे यज़ीद की औलाद में से था लेकिन आदमी नेक और सालेह था और बाप के नापाक अफ़आल को दिल से बुरा जानता था। अनाने हुकूमत लेते वक़्त ही से बीमार था और आख़िर तक बीमार रहा और चालीस रोज़ या दो तीन महीने हुकूमत करने के बाद इन्तिक़ाल कर गया।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा)

अल्लाह हमें और हमारे तमाम अहबाब व रिशतादारों को अह्ले–बैत के ज़ुमरे में रखे और यज़ीद पलीद के तमाम हवारीईने के शर्र व फ़साद से महफ़ूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन बजाहे सैयदुल मुर्सलीन।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

क़ातिलाने हुसैन का इबरतनाक अंजाम

हज़रत आमिर बिन साद अलबजली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा। आपने फ़रमाया : ऐ आमिर! मेरे सहाबी बराअ् बिन आज़िब के पास जाकर मेरा सलाम कह और ख़बर दे कि जिन्होंने मेरे बेटे हुसैन को क़त्ल किया है, वह दोज़ख़ी हैं। पस मैं ने बराअ् बिन आज़िब की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह ख़्वाब ब्यान किया। उन्होंने सुनकर फ़रमाया : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सच फ़रमाया। ('सआदतुल–कौनैन' सफ़ा १५४)

हाकिम ने सैयदना इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि **औहल्लाहु इला मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्नी क़तलतु बियह्या बिन ज़करीया सबईन अल्फ़न व इन्नी क़ातिलुन बिइब्ने बिन्तिक सबईन अलफ़ौं व सबईन अल्फ़ा।** यानी अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास वह्य भेजी कि मैं ने यह्या बिन ज़करीया के इवज़ सत्तर हज़ार को मारा और ऐ महबूब! तुम्हारे नवासे के इवज़ सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार यानी एक लाख चालीस हज़ार मारूंगा।

(सवाइके मुहर्रक़ा सफ़ा ६६२, ख़सईसे कुब्रा जिल्द २ सफ़ा २०८, मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा ३०)

हज़रत सैयद इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद सरज़मीने शाम पर क़हरे इलाही का आतिश–फ़शां फट पड़ा और एक–एक गुस्ताख़ से मवाख़ज़ा हुआ। एक–एक मूज़ी को सज़ा मिली। दमिश्क़ से कूफ़ा और करबला तक के सारे सितमगर लरज़ा देने वाली हलाकतों का निशाना बने। यज़ीदी इक़्तिदार क़हर व ग़ज़ब की कड़कती हुई बिजलियों से जल गया। आबादियों में हौलनाक बीमारियां और वबायें फूट पड़ीं।

इब्न–जौज़ी ज़ुहरी से रिवायत करते हैं कि क़ातिलाने इमाम हुसैन में से कोई भी शख़्स दुनिया में सज़ा से न बचा। बाज़ को क़त्ल की सज़ा मिली, बाज़ अन्धे हो गए और जो लोग बरसरे इक़्तिदार थे बहुत थोड़ी मुद्दत में उनका इक़्तिदार जाता रहा।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इब्ने–कसीर लिखते हैं। हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के बाद जो फ़ित्ने बरपा हुए और जिनका ज़िक्र तारीख़ों मे आता है उनमें से अकसर बिल्कुल सही हैं।

(अल–हुसैन (अरबी) सफ़ा १६४ 'सवाइक़े मुहर्रक़ा' सफ़ा ६४८)

अब्दुल–मलिक के ज़माने में जब मुख़्तार बिन अबी उबैद सक़फ़ी कूफ़ा का हाकिम मुक़र्रर हुआ तो उसने सबसे पहले हज़रत इमाम हुसैन के क़ातिलों से इन्तिक़ाम का नारा बुलन्द किया। और लोगों से कहा कि मुझे हर उस शख़्स का नाम व पता बताओ जो हज़रत इमाम हुसैन के मुक़ाबले में करबला गया था। लोगों ने बताना शुरू किया और मुख़्तार सक़फ़ी ने एक–एक को गिरफ़्तार करना और शाहराहों पर क़त्ल करना शुरू कर दिया।

यज़ीद बिन मुआविया का अंजाम

दमिश्क़ के भरे दरबार में अह्ले–बैते नुबुव्वत के एक मज़लूम ने यज़ीद को मुख़ातब करते हुए कहा था– ऐ यज़ीद सुन लें! हुसैन के ख़ून से जिस सल्तनत की बुनियाद को तूने पानी दिया है तेरी औलाद भी उस पर नहीं थूकेगी।" इस जुरअत–मन्दाना ख़िताब पर सारा दरबार सन्नाटे में आ गया था और सामेईन के दिलों में यह बात उतर गई थी कि ख़ानदाने अह्ले–बैते रिसालत के मज़लूम की यह आह कभी ख़ाली नहीं जाएगी।

वाक़ियाए करबला के कुछ ही दिनों बाद यज़ीद एक हलाकत आफ़रीं और इन्तिहाई मूज़ी मर्ज़ में मुब्तला हुआ। पेट के दर्द और आंतों के ज़ख़्म की टीस से माहिए–बे–आब की तरह तड़पता रहता था। हिम्स में जब उसे अपनी मौत का यक़ीन हो गया तो अपने बड़े लड़के मुआविया को बिस्तरे मर्ग पर बुलाया। और उमूरे सलतनत के बारे में कुछ कहना ही चाहता था कि बेसाख़्ता बेटे के मुंह से एक चीख़ निकली और निहायत ज़िल्लत व हिक़ारत के साथ यह कहते हुए बाप की पेशकश को ठुकरा दिया कि "जिस ताज व तख़्त पर आले रसूल के ख़ून के धब्बे हैं मैं उसे हरगिज़ क़ुबूल नहीं कर सकता। ख़ुदा इस मनहूस सल्तनत की विरासत से मुझे महरूम रखे जिसकी बुनियादें सिब्ते रसूल के ख़ून पर रखी गई हैं।"

यज़ीद अपने बेटे के मुंह से यह अल्फ़ाज़ सुन कर तड़प गया, और शिद्दते रन्ज व अलम से बिस्तर पर पांव पटकने लगा। मौत से कुछ दिन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पहले यज़ीद की आंतें सड़ गईं और उसमें कीड़े पड़ गए। तकलीफ़ की शिद्दत से ख़िन्ज़ीर की तरह चीख़ता था। पानी का क़तरा हलक़ से नीचे उतरने के बाद नश्तर की तरह चुभने लगता था। अजीब क़हरे इलाही की मार थी। पानी के बग़ैर भी तड़पता था और पानी पीकर भी चीख़ता था। बिल-आख़िर उसी दर्द की शिद्दत से तड़प-तड़प कर उसकी जान निकली। लाश में ऐसी हौलनाक बदबू थी कि क़रीब जाना मुश्किल था। जैसे-तैसे उसको सुपुर्दे ख़ाक किया गया। (नक़्शे करबला सफ़ा ६५)

इब्ने-ज़्याद का अंजाम

उबैदुल्लाह इब्न-ज़्याद यह वह बदबख़्त व बद-निहाद इन्सान है जो यज़ीद की तरफ़ से कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर किया गया था। उसी बदबख़्त के हुक्म से हज़रत इमाम मुस्लिम और उनके यतीम बच्चों की शहादत हुई। और हज़रत इमाम हुसैन और आपके अह्ले-बैत व असहाब को तमाम ईज़ाएं पहुंचाई गईं। यही इब्न-ज़्याद मोसिल में तीस हज़ार फ़ौज के साथ उतरा। मुख़्तार ने इब्राहीम बिन मालिक अशतर को उसके मुक़ाबले के लिए एक फ़ौज को लेकर भेजा। मोसिल से तक़रीबन २५ किलोमीटर के फ़ासले पर दरियाए फ़ुरात के किनारे दोनों लशकरों में मुक़ाबला हुआ और सुबह से शाम तक ख़ूब जंग रही। जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफ़ताब गुरूब होने के क़रीब था उस वक़्त इब्राहीम की फ़ौज ग़ालिब आई। इब्न-ज़्याद को शिकस्त हुई और उसके हमराही भागे। इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए उसको ज़िन्दा न छोड़ा जाए चुनांचे बहुत-से हलाक किए गए। उस हंगामा में इब्न-ज़्याद भी फ़ुरात के किनारे मुहर्रम की दसवीं तारीख़ सन् ६७ हिजरी में मारा गया। उसका सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया। इब्राहीम ने मुख़्तार के पास कूफ़ा भिजवाया। मुख़्तार ने दारुल-इमारते कूफ़ा को आरास्ता किया और अह्ले-कूफ़ा को जमा करके इब्न-ज़्याद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस मग़रूरे हुकूमत व बन्दए दुनिया ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक रखा था। मुख़्तार ने अह्ले कूफ़ा को ख़िताब करके कहा : ऐ अह्ले कूफ़ा! देख लो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ूने नाहक़ ने इब्ने ज़्याद को न छोड़ा। आज उस नामुराद का सर इस ज़िल्लत व रुसवाई के साथ यहां रखा हुआ है। छः

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

साल हुए हैं। वही तारीख़ है, वही जगह है। ख़ुदा वन्दे आलम ने इस मग़रूर फ़िरऔन ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लत व रुसवाई के साथ हलाक किया। उसी कूफ़ा और उसी दारुल–इमारात में उस बे–दीन के क़त्ल व हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।

(सवानहे करबला सफ़ा १४२)

तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि जिस वक़्त इब्न–ज़्याद और उसके सरदारों के सर मुख़्तार के सामने लाकर रखे गए तो एक बड़ा सांप नमूदार हुआ। उसकी हैबत से लोग डर गए। वह तमाम सरों में फिरा। जब उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद के सर के पास आया तो उसके नथुने में घुस गया और थोड़ी देर ठहर कर उसके मुंह से निकला। इस तरह तीन बार सांप उसके सर के अन्दर दाख़िल हुआ। और ग़ायब हो गया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द २ सफ़ा ७६४)

अमरू बिन साद का अंजाम

अमरू बिन साद यह वही शक़ीए अज़ली है जिसकी दसों उंगलियां आले हैदर के ख़ून में डूबी हुई हैं। जिसकी कमान में करबला का ख़ूंरेज़ मारका सर हुआ। और ख़ानदाने रिसालत के लाल व जवाहिरे ख़ाक व ख़ून में आलूदा हुए। मुल्क रैय की लालच में उस ज़ालिम ने बीबी बतूल का हरा भरा चमन ताराज किया। जब मुख़्तार के हुक्म से यज़ीदी कुत्तों का क़त्ले आम शुरू हुआ तो इब्न–साद कुत्तों की तरह इधर–उधर भागने लगा। लेकिन मुख़्तार के जांबाज़ सिपाहियों ने उसको पकड़ लिया। जिस वक़्त इब्न–साद सामने आया तो मुख़्तार की आंखों से चिंगारियां बरसने लगीं। गरजते हुए कहा : ओ दुशमने रूसल! बता तुझे क्या सज़ा दूं जिससे दुनियाए इस्लाम के कलेजों की वह आग ठंडी हो जाए जो तेरे नापाक हाथों ने करबला में लगाई है। इब्न–साद ने जवाब दिया। मैं बेगुनाह हूं वाक़िआते करबला की सारी ज़िम्मेदारी यज़ीद और इब्ने ज़्याद पर है। मैं ने सिर्फ़ हुक्म की तामील की है। मुख़्तार की आंखें गुस्सा से सुर्ख़ हो गईं और कहा : ओ नंगे इस्लाम! सच बता, यज़ीद अगर तेरे ख़ून की औलाद के क़त्ल का हुक्म देता तो क्या उसकी तामील कर सकता था? यज़ीद के हुक्म की तूने तामील की और नबी के हुक्म का जनाज़ा निकाल दिया।

उसी दर्मियान ख़बर मिली कि इब्न–साद का बेटा हफ़्स, जो करबला में इमाम आली मक़ाम के ख़िलाफ़ अपने बाप की मदद कर रहा था, वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी गिरफ़्तार करके लाया गया है। मुख़्तार ने हुक्म दिया : उसे फ़ौरन हाज़िर किया जाए। जब वह सामने आया तो जल्लाद से कहा : इब्ने–साद की आंखों के सामने उसके बेटे का सर तन से जुदा कर ताकि उसे मालूम हो जाए कि हज़रत अली अकबर और हज़रत अली असग़र की तड़पती हुई लाश देखकर हज़रत इमाम आली मक़ाम के दिल पर क्या गुज़री होगी? जल्लाद आगे बढ़कर जूं ही गर्दन पर तलवार चलाई इब्न–साद चीख पड़ा। अभी वह अपना सर पीट ही रहा था कि इशारा पाते ही जल्लाद ने इब्न–साद की गर्दन भी उड़ा दी। इस तरह ज़ुल्म व शक़ावत के एक बहुत बड़े इफ़रीयत के नापाक वुजूद से धरती का बोझ हल्का हुआ। तारीख़े तबरी में है कि मुख़्तार के सिपाहियों ने इब्न–साद को उसके मकान में क़त्ल करके उसका सर मुख़्तार के सामने पेश किया। उस वक़्त उसका बेटा हफ़्स वहीं मौजूद था। बाप का सर देख कर तड़प उठा। उसके बाद मुख़्तार ने उसका भी सर क़लम कर देने का हुक्म दिया। और दोनों सर हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया।

(नक़्शे करबला सफ़ा ७० 'तारीख़े तबरी' जिल्द ५ सफ़ा ५०४)

शिमर का अंजाम

यह वही सियाहबख़्त है जिसने जिगर गोशए रसूल की गर्दन पर तलवार चलाई थी। और फ़ातिमा के चांद को ख़ाक व ख़ून में डुबोया था। इब्ने साद के क़त्ल से फ़ारिग होकर मुख़्तार ने उसे सामने खड़ा किया। मारे ख़ौफ़ व दहशत के शिमर थर–थर कांपने लगा। मुख़्तार ने गरजते हुए कहा : नाहन्जार! तुझे ज़रा भी ग़ैरत नहीं आई कि तूने अपने हाथों से काबा की दीवार ढा दी। ऊंट और बकरी की तरह फ़ातिमा के लाल को ज़बह किया। अफ़सोस! हरम का चिराग़ और अर्श की क़न्दील तूने फूंकों से बुझा दी। ऐ शक़ीयुल–क़ल्ब! तीन दिन भूखे–प्यासे नाज़नीन को तहे तेग़ करते हुए तुझे ज़रा भी तरस नहीं आया। तेरा ज़िन्दा जिस्म फूंक कर उसकी राख हवाओं में उड़ा दी जाए तब भी हुसैन के ख़ून का बदला नहीं हो सकेगा। संगदिल क़ातिल! ज़र्रा–ज़र्रा हुसैन का नारा बुलन्द कर रहा है। तेरे हाथों ने बह्र व बर में आग लगा दी है। अब उसे कौन बुझा सकता है? आलमे ग़ैज़ में जूं ही मुख़्तार ने तलवार उठाई, शिमर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा : प्यास से तड़प रहा हूं, एक घूंट पानी पिला दे। मुख़्तार ने कहा :

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शिमर! वह वक़्त याद कर जब तेरी फ़ौज ने फ़ुरात की लहरों पर २२ हज़ार तलवारों का पहरा बिठा दिया था और अह्ले–बैत के मासूम बच्चे और पर्दा–नशीन सैय्यदानियां तीन शबाना रोज़ पानी के एक–एक क़तरे को तरस के रह गईं। तुझे पानी नहीं मिल सकता। जहन्नम का माए हमीम तेरे इन्तिज़ार में है। शिमर कुछ कहना ही चाहता था कि मुख़्तार ने इशारा किया और जल्लाद ने आगे बढ़कर सर तन से जुदा कर दिया।

(नक़्शे करबला सफ़ा ७२)

तारीख़े तबरी में है कि मुख़्तार के सिपाहियों ने शिमर लईन पर हमला किया और उसके सर को काट कर मुख़्तार के पास भेज दिया और लाश कुत्तों के लिए फेंक दिया। 'सवाइके़ मुहर्रक़ा' में हैं कि शिमर की लाश को घोड़ों की टापों से रौंद डाला गया।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा ४६६, सवाइके़ मुहर्रक़ा सफ़ा ६५८ अल–हुसैन (अरबी) सफ़ा १६५)

ख़ौली बिन यज़ीद का अंजाम

यह वही ज़ालिम व बेरहम इन्सान है जिसने सिब्ते रसूल के कलेजे में बरछा मारा था। सर को नेज़े में चढ़ाकर ख़ुशी में नाचता था। मुख़्तार के सामने जब लाया गया तो बेद की तरह कांप रहा था। उसे देखते ही मुख़्तार के ग़ज़ब की आग भड़क उठी। जल्लाद को हुक्म दिया कि उसके दोनों हाथ काट डालो। जब उसके दोनों हाथ काट डाले गए तो दोनों पावं काटने का हुक्म दिया। तकलीफ़ की शिद्दत से ज़मीन पर उछलने लगा। मुख़्तार ने कहा : ज़ब्त से काम ले। तेरे क़त्ल के बाद भी तेरी लगाई हुई आग मुसलमानों के सीनों में भड़कती रहेगी। यह भी तेरे आमाल की काफ़ी सज़ा नहीं है। तू जिस दर्दनाक अज़ाब का मुस्तहिक़ है उसका सिलसिला तेरी आख़िरी हिचकियों के बाद शुरू होगा। (नक़्शे करबला सफ़ा ७३)

तारीख़े तबरी और अल–हुसैन (अरबी) तसनीफ़ में है कि मुख़्तार ने ख़ौली के घर वालों के सामने उसे क़त्ल किया। और फिर उसको जला दिया। और उस वक़्त तक उसकी लाश के पास खड़ा रहा जब तक उसकी लाश जल कर राख नहीं हो गई।

(तबरी जिल्द ५ सफ़ा ५०२–अल–हुसैन (अरबी) सफ़ा १६५)

हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई का अंजाम

हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई, वह बदनसीब इन्सान है, जिसने करबला में हज़रत अब्बास अलम बरदार को शहीद कर के उनके लिबास और असलहा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

पर क़ब्ज़ा कर लिया था। और आपके मश्कीज़ा पर तीरों की बारिश करके उसमें छेद कर दिया था। जिससे तमाम पानी गिर गया था। जब मुख़्तार के सामने पेश किया गया तो उसने जल्लाद को हुक्म दिया कि उसके चेहरे पर तीरों की बारिश कर दो। चुनांचे जब तीर लगने लगे तो हकीम बिन तुफ़ैल उसकी तकलीफ़ से चीख़ने लगा। मुख़्तार ने कहा : बस यही तकलीफ़ और यही सदमा! हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्बास पर तीरों की बारिश की तो उस वक़्त यह ख़्याल नहीं आया था। आख़िरकार तीरों ही की बौछार में वह मर गया। (शहादतुल–कौनैन सफ़ा ७४)

दीगर अश्क़िया का अंजाम

हज़रत इमाम आली मक़ाम की शहादत के बाद जब्बार बिन यज़ीद ने आपका अमामा शरीफ़ ब–नीयते इस्तिहज़ा अपने नापाक सर पर रख लिया था। उस जुर्म की पादाश में वह कुछ दिनों के बाद पागल हो गया और फ़ौलाद की ज़ंजीरों से टकरा कर ज़िल्लत की मौत मरा।

अब्दुर्रहमान बिन हुसैन नामी गुस्ताख़ व बेअदब ने ख़ेमा–ए–मुबारक से इमाम आली मक़ाम का पैराहन शरीफ़ लूट कर पहना था। उस गुस्ताख़ी की उसे यह सज़ा मिली कि वह बर्स की नापाक बीमारी में मुब्तला हो गया। कोई उसके क़रीब न जाता था। कुत्तों की तरह उसे दाना पानी देते। मरते वक़्त उसका चेहरा मस्ख़ हो गया।

यज़ीदी फ़ौज का एक सिपाही असवद बिन हंज़ला ने इमाम आली मक़ाम की तलवार अपने क़ब्ज़े में कर ली। उस बेअदबी की उसे यह सज़ा मिली कि वह जज़ाम में मुब्तला हो गया। सारा बदन फूट–फूट कर बहने लगा। (नक़्शे करबला सफ़ा ७४)

क़ातिलाने हुसैन पर तरह-तरह के अज़ाब

हज़रत अबू–शैख़ फ़रमाते हैं कि एक मजलिस में लोग आपस में गुफ़्तगू कर रहे थे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल में जिस किसी ने भी किसी भी तरह की कोई इआनत की वह मरने से पहले किसी न किसी अज़ाब में ज़रूर मुब्तला हो गया। इसी मजलिस में एक बूढ़ा बैठा हुआ था। उसने कहा : मैंने भी तो मदद की थी मगर मैं किसी अज़ाब में मुब्तला नहीं हुआ। इतने में वह चिराग़ दुरुस्त करने के लिए उठा तो उसकी आग ने बूढ़े को पकड़ लिया। जिससे उसका पूरा बदन जलने लगा। वह

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आग–आग चिल्लाता हुआ दरियाए फ़ुरात में कूद पड़ा मगर वह आग नहीं बुझी और उसी में वह मर गया। इसी तरह का एक वाक़िआ इमाम सुद्दी से भी मन्कूल है। उन्होंने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम! मैंने उसे देखा कि जलते हुए वह कोयले की तरह हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६४८)

सब्त इब्ने–जौज़ी ने वाक़दी से ब्यान किया है कि एक बूढ़ा आपके क़त्ल में शरीक हुआ तो वह अंधा हो गया। उस से अंधेपन का सबब पूछा गया तो उसने बताया कि मैंने रसूलुल्लाह को ख़्वाब में देखा कि आप आस्तीन मुबारक चढ़ाए हुए और हाथ शरीफ़ में नंगी तलवार लिए हुए खड़े हैं। और आपके सामने एक चमड़ा बिछा हुआ है। और दस क़ातिलाने इमाम हुसैन ज़बह किए हुए पड़े हैं। जब आपकी निगाह मुझ पर पड़ी तो बहुत लानत मलामत की और ख़ून में डुबो कर एक सलाई मेरी आंखों में फेर दी। उसी वक़्त से मैं अन्धा हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६४९)

मुसन्निफ़े सवाइक़े मुहर्रक़ा हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि यज़ीद का एक सिपाही जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था। कुछ दिनों के बाद उसका चेहरा काला हो गया। लोगों ने उससे उसका सबब पूछा कि तू इतना ख़ूबसूरत था फिर इतना ज़्यादा काला कैसे हो गया? उसने कहा : जिस रोज़ मैं ने इमाम हुसैन के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था उसी रोज़ से हर रात को दो आदमी मेरे पास आते और मुझे पकड़ कर ऐसी जगह ले जाते हैं जहां आग होती है। फिर मुझे मुंह के बल उस आग में डाल कर निकालते हैं। इसी वजह से मेरा मुंह क़ाला हो गया है। उसके बाद वह बहुत बुरी मौत से मरा।

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६४९)

इसी तरह मर्वी है कि एक बूढे ने ब्यान किया कि मैं ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके सामने एक तश्त रखा हुआ है जो ख़ून से भरा हुआ है और लोग आपके सामने पेश किए जा रहे हैं। आप उस ख़ून से उनकी आंखों में लगा रहे हैं। यहां तक कि मैं भी आपके सामने हाज़िर किया गया। तो मैं ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मैं तो क़त्ले हुसैन के वक़्त मौजूद नहीं था। तो हुज़ूर ने अर्ज़ किया : तू उसकी तमन्ना रखता था कि हुसैन क़त्ल हो। फिर आप ने मेरी तरफ़ अपनी उंगली से इशारा किया तो मैं अंधा हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६५०)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः नक़ल फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को सब्ब व शतम किया तो बहुक्मे इलाही आसमान से तारे टूटे और वह अंधा हो गया।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०४)

अल्लामा बारज़ी हज़रत मंसूर से रिवायत करते हैं कि उन्होंने मुल्के शाम में एक ऐसे शख़्स को देखा जिसका मुंह सूअर जैसा था। उन्होंने उस से उसकी वजह पूछी तो उसने बताया कि वह रोज़ाना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक हज़ार मर्तबा और जुमा के दिन चार हज़ार मर्तबा उनकी औलाद पर लानत भेजा करता था। तो एक रात उसने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा। और एक लम्बा ख़्वाब बताया। जिसमें एक बात यह भी थी कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके लानत भेजने की हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत अक़दस में शिकायत की तो आपने उस पर लानत फ़रमाई और उसके मुंह पर थूक दिया तो उसका मुंह सूअर जैसा हो गया। और लोगों के लिए एक निशान हो गया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ६५०)

ग़र्ज़ कि मुख़्तार ने बहुत–से लोगों को हलाक किया और बेशुमार लोग तरह–तरह के अज़ाब में मुब्तला हो गए। इस तरह वादा–ए–इलाही पूरा हुआ। कुल एक लाख चालीस हज़ार लोग क़त्ले इमाम के इवज़ मारे गए।

मुख़्तार सक़फ़ी का हशर

मुख़्तार ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलान के बारे में बड़ा शानदार कारनामा अंजाम दिया। लेकिन आख़िर में नुबूव्वत का दावा कर के मुर्तद हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ तो आपने उस पर लशकर–कशी की और सन् ६७ हिजरी में मुख़्तार पर ग़ल्बा पाकर उस मलऊन को क़त्ल कर दिया।

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

फ़ज़ाइले आशूरह

खुदावन्दे कुद्दूस अपने मुक़द्दस कलाम पाक में इरशाद फ़रमाता है : इन्न न इद्दतश्शुहूरि इन्दल्लाहिस्ना अ श र शहरन फ़ी किताबिल्लाहि इला कौलिही अरबअ त हुरुम (पारा १० सूरह तौबा)

बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़दीक बारह महीने हैं। अल्लाह की किताब में जबसे उसने आसमान और ज़मीन बनाए उनमें से चार हुरमत वाले हैं। (कंज़ुल–ईमान सफ़ा २७८)

उन ही हुरमत वाले महीनों में माहे मुहर्रम भी शामिल है। इस महीने की दसवीं तारीख़ जिसे आशूरह के नाम से याद किया जाता है दुनिया की तारीख़ में इतनी अज़मत व बरकत वाला दिन है कि जिसमें खुदावन्द कुद्दूस की कुदरतों और नेमतों की बड़ी–बड़ी निशानियां ज़ाहिर हुई। उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कुबूल हुई; उसी दिन हज़रत इदरीस व हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए; उसी दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती तूफ़ाने नूह में सलामती के साथ जूदी पहाड़ पर पहुंची; उसी दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की विलादत हुई; उसी दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से ज़िन्दा सलामत बाहर आए। उसी दिन अर्श व कुर्सी, लौह व क़लम, आसमान व ज़मीन, चाँद व सूरज, सितारे व जन्नत बनाए गए। उसी दिन हज़रत ऐय्यूब अलैहिस्सलाम की तकलीफ़ दूर की गई; उसी दिन हज़रत युसूफ़ गहरे कुंए से निकाले गए; उसी दिन याकूब की अपने बेटे युसूफ़ से मुलाक़ात हुई। उसी दिन हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लग़ज़िश माफ़ हुई, उसी दिन हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को जिन्न व इन्स पर हुकूमत अता हुई। उसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फ़िरऔन से नजात मिली और फ़िरऔन अपने लशकर समेत दरिया में ग़र्क़ हो गया; उसी दिन आसमान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश हुई; उसी दिन क़यामत आएगी और उसी दिन हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके रुफ़क़ाए किराम ने मैदाने करबला में तीन दिन के भूखे प्यासे रह कर इस्लाम की बक़ा व तहफ़्फ़ुज़ के लिए जामे शहादत नोश फ़रमा कर हक़ के परचम को सरबुलन्द फ़रमाया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शबे आशूरह

हज़रत मौला अली मुश्किल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने आशूरह की शब (९ मुहर्रम का दिन गुज़र कर आने वाली रात)को इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहेगा उसको ज़िन्दा रखेगा।

(गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा ४२८)

हज़रत सैयदना ग़ौसे आज़म दस्तगीर अल–हसनी वल–हुसैनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स शबे आशूरह में रात भर इबादत में मशग़ूल रहे और सुबह को रोज़ा रखे तो उसको इस तरह मौत आएगी कि उसको मरने का एहसास भी न होगा (गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा ४२७)। इसीलिए उलमाए किराम ने इस बर्कत वाली रात में बहुत–सी नमाज़ें ब्यान फ़रमाई हैं। उनमें से चन्द क़ारिईने किराम की ख़िदमत में पेश की जा रही हैं–

(१) दो रकअत नमाज़ नफ़्ल उस रात में रौशनी–ए–क़ब्र के लिए पढ़ें। उसकी तरकीब यह है कि दोनों रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद) तीन–तीन बार पढ़ें। हक़ तआला क़यामत तक उस नमाज़ पढ़ने वाले की क़ब्र को रौशन फ़रमा देगा।

(२) चार रकअत नमाज़ नफ़्ल एक सलाम से पढ़ें। चारों रकअतों में अलहमद के बाद सूर: इख़्लास पचास–पचास मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तआला उस नमाज़ पढ़ने वाले के पिछले पचास साल के गुनाह और आइन्दा पचास साल के गुनाह बख़्श देगा। (जवाहरे ग़ैबी)

(३) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया : शबे आशूरह में चार रकआत नफ़्ल इस तरतीब से पढ़ें कि हर रकअत में अल्हमदुलिल्लाह के बाद आयतुल–कुर्सी एक बार और सूर: इख़्लास तीन बार पढ़ें। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सूरह इख़्लास सौ (१००) बार पढ़ें तो उसकी बरकत से गुनाहों से पाक हो जाएंगे और जन्नत में बे–इन्तिहा नेमतें हासिल होंगी। राहतुल–कुलूब में आयतुल–कुर्सी ३ बार और सूर: इख़्लास दस (१०) बार लिखा है। और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर सूर: इख़्लास सौ (१००) बार पढ़ें। (राहतुल–कुलूब सफ़ा २२५)

(४) चार रकआत एक सलाम से पढ़ें। चारों में अल्हमदुलिल्लाह के बाद सूर: इख़्लास ५ बार पढ़ें। अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होगी।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आशूरह का रोज़ा

नवीं और दसवीं मुहर्रम दोनों दिन का रोज़ा रखना चाहिए। इसकी बहुत फ़ज़ीलत है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरह के दिन रोज़ा रखे हुए देखा। आप ने उनसे फ़रमाया : यह कैसा दिन है कि जिसमें तुम लोग रोज़ा रखते हो? उन्होंने कहा : यह वह अज़मत वाला दिन है जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को फ़िरऔन के ज़ुल्म से नजात दी और उसको उसकी क़ौम के साथ डुबो दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने उसी के शुक्रिया में रोज़ा रखा। इसलिए हम भी रोज़ा रखते हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मूसा अलैहिस्सलाम की मुवाफ़िक़त करने में तो तुम्हारी बनिस्बत हम ज़्यादा हक़दार हैं। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी आशूरह का रोज़ा रखा और सारी उम्मत को उस दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया। (बुख़ारी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा ७१४)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आशूरह (मुहर्रम) के दसवीं दिन का रोज़ा रखने का हुक्म दिया। (तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा २६१)

हज़रत अबू–क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि आशूरह का रोज़ा एक साल क़ब्ल का गुनाह मिटा देता है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ जिल्द १ सफ़ा २६०)

मुसनद इमाम अहमद और बज़्ज़ाज़ में हज़रत इब्न–अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यौमे आशूरह का रोज़ा रखो और उसमें यहूद की मुख़ालफ़त करो। यानी नवीं और दसवीं मुहर्रम दोनों दिन रोज़ा रखो।

(मदारिजुन्नुबुव्वः जिल्द २ सफ़ा १२४)

अशअतुल–लम्आत शरह मिश्क़ात जिल्द सोम सफ़ा २१७ पर है कि जब हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आशूरह–ए–मुहर्रम का रोज़ा रखने का हुक्म दिया तो लोगों ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! यह तो वह दिन है जिसकी ताज़ीम यहूद व नसारा करते हैं। उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अगर मैं अगले साल तक दुनिया में ज़िन्दा रहा तो मैं ज़रूर नवीं मुहर्रम का रोज़ा रखूंगा।

कुतबुल–अक्ताब हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज–शकर रहमतुल्लाह अलैह ने आशूरह के रोज़े की फ़ज़ीलत के बारे में फ़रमाया कि : आशूरह के दिन जंगल की हिरनियां भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ानदान की दोस्ती के सबब अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं। आदमियों के हाल पर अफ़सोस व तअज्जुब है कि वह रोज़ा नहीं रखते।

(राहतुल–कुलूब सफ़ा २२३)

उम्मुल–मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि चार अमल ऐसे हैं जिनको हुज़ूर अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने कभी नहीं छोड़ा। आशूरह का रोज़ा, अशरा–ए–ज़िल–हिज्जः का रोज़ा, हर माह का तीन रोज़ा (ऐय्यामे बीज़ का रोज़ा)और फ़ज्र से पहले दो रकआत सुन्नते मुवक्क़दा। (मासब्त–बिस्सुन्न : सफ़ा १६)

आशूरह और साले नौ की नफ़्ल नमाज़ें

(१) सरकार कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया : कि हुज़ूर ग़रीबनवाज़ अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान के औराद में मैं ने लिखा देखा है कि जो कोई मुहर्रमुल हराम की चाँद रात में दो रकअत पढ़े। दोनों रकअतों में अलहम्दु के बाद सूरः इख़्लास दस (१०) मर्तबा पढ़े तो उस नमाज़ पढ़ने वाले को अल्लाह तआला बहिशत में दो हज़ार महल अता फ़रमाएगा। हर महल में हज़ार दरवाज़े याक़ूत के होंगे। हर दरवाज़े पर एक तख़्त ज़बरजद का होगा और उस पर हूर बैठी होगी। और छः हज़ार बुराइयां उस नमाज़ी की दूर हो जाएंगी और छः हज़ार नेकियां उसके नामा–ए–आमाल में लिखी जायेंगी।

(२) मुहर्रम की पहली तारीख़ को दो रकअत नफ़्ल पढ़े यानी दिन में। हर रकअत में सूरः फ़ातिहा के बाद सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े। बाद सलाम के हाथ उठा कर इस दुआ को पढ़े: **अल्लाहुम्म अन्तल्लाहुल फ़र्दुल अबदुल क़दीमु हाज़िही सु न तुन जदीदतुन असअलुक फ़ीहिल असमते मिनश्शैतानिर्रजीम वल-अमाने मिनस्सुल्तानिल जाबिरे व मिन शर्रि कुल्लि ज़ी शर्रिंम मिनल बलाया वल-आफ़ाति व असअलुकल औनु वल-अदलु अला हाज़िहिन्नफ़्सिल अम्मारति बिस्सूए वल-इशतिग़ालि**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिमा लम यक़रिबुनी इलै क या बर्रु या रऊफ़ु या रहीमु या ज़ुल्जलालि वल-इकराम। बि-रहमति क या अरहमर्राहिमीन साहिबे जवाहरे ग़ैबी फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस नमाज़ और दुआ को पढ़ेगा। अल्लाह तआला उसके ऊपर दो फ़रिश्ते मवक्कल करेगा ताकि वह मदद करें उसके कारोबार में। शैतान लईन कहता है कि अफ़सोस मैं नाउम्मीद हुआ उस शख़्स से तमाम साल तक। (राहतुल—क़ुलूब सफ़ा २२३ जवाहरे ऐनी)

(३) छः रकअत दो—दो रकअत करके पढ़ें। हर रकअत में अलहम्दु के बाद आयतुल—कुर्सी एक बार और सूर : इख़्लास पंद्रह बार पढ़ें। अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले को बेहद सवाब अता फ़रमाएगा।

आशूरह के दिन की नफ़्ल नमाज़ें

आशूरह के दिन चार रकआत नफ़्ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में सूर : फ़ातिहा के बाद सूर : इख़लास पचास मर्तबा पढ़ें। अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़ने वाले के पचास बरस गुज़िश्ता के और पचास बरस आइन्दा के गुनाह माफ़ फ़रमाएगा और जन्नत में उसके लिए नूर के हज़ार महल तामीर कराएगा। (गुनीयतुत्तलिबीन सफ़ा ४२७)

(२) चार रकअतें दो सलाम से पढ़े। हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इज़ा—ज़ुलज़िलतिल अर्ज़, सूरः कुल या—ऐयुहल काफ़िरून, और सूरह इख़लास एक—एक बार पढ़े। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सत्तर मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े। यह रिवायत हज़रत अबू—हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है। (गुनीयतुत्तालिबीन सफ़ा ४२७)

(३) आशूरह के दिन छः रकआत दो—दो रकअत करके पढ़ें। हर रकअत में सूर : फ़ातिहा के बाद सूरः वश्शमस, इन्ना अनज़लनाहु, इज़ा—ज़ुलज़िलतिल अर्ज़ों, कुल हुवल्लाहु अहद, कुल अऊज़ु बिरब्बिल—फ़लक़ और कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास एक—एक बार पढ़ें। इस तरह छः रकआत पूरी करें। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सज्दे में सर रख कर कुल या ऐयुहल—काफ़िरून एक बार पढ़कर अपनी हाजत तलब करें। (राहतुल—क़ुलूब)

(४) आशूरह—ए—मुहर्रम को सूरज बुलन्द होने के बाद (तक़रीबन नौ बजे सुबह) दो रकअत नमाज़ नफ़्ल अदा फ़रमाएं। हर रकअत में अलहम्द के बाद जो भी सूरह याद हो, पढ़ें। बेहद व बे—अन्दाज़ा सवाब पाएंगे। (राहतुल—क़ुलूब)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

(५) आशूरह को गुस्ल करके दो रकआत नमाज़ नफ़्ल इस तरह पढ़ें कि हर रकअत में अल्हमदु के बाद सूर : इख़्लास दस बार पढ़ें और सलाम के बाद एक मर्तबा आयतुल–कुर्सी और नौ मर्तबा दुरूद इब्राहीमी पढ़ें, उम्र में ख़ैर व बरकत और ज़िन्दगी में फ़लाह व नेमत हासिल होगी।

(६) यकुम मुहर्रम ता दस मुहर्रम रोज़ाना चार रकआत पढ़ें। हर रकआत में अलहम्द के बाद सूरः इख़्लास पंद्रह मर्तबा पढ़ें। नमाज़ पूरी करने के बाद उसका सवाब हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अरवाहे मुबारका के हुज़ूर पेश करें। साहबज़ादगाने सैयदुल–कौनैन इस नमाज़ पढ़ने वाले की क़्यामत के दिन शफ़ाअत करेंगे। हज़रत शिबली, जो इस वाक़िए के रावी हैं वह, फ़रमाते हैं कि मैं रोज़ाना इस नमाज़ को पढ़कर हज़रात हसनैन करीमैन को बख़्शा करता था। एक दिन मैं ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत इमाम हुसैन शहीदे करबला ने मेरी तरफ़ से मुंह फेर लिया। तो मैंने अर्ज़ किया : हुज़ूर! मुझसे क्या ख़ता सरज़द हुई। फ़रमाया : ख़ता नहीं। हमारी आंखें तुम्हारे एहसान से शर्मिन्दा हैं। जब तक हम क़्यामत के दिन उसका बदला न दिलवा देंगे उस वक़्त तक हमारी आंख मिलाने के क़ाबिल नहीं है। (यह उनका करम है) (जवाहरे ग़ैबी)

(७) आशूरह के रोज़ सत्तर मरतबा **हसबियल्लाहु व नेमल-वकील** पढ़े। अल्लाह तआला उसको बख़्श देगा और उसका नाम ज़ुमरए मशाइख़ व औलियाए किबार में तहरीर फ़रमाएगा।

खिचड़ा और सबीले इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मेरी माँ का इन्तिक़ाल हो गया है तो उनके लिए कौन–सा सदक़ा अफ़ज़ल है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **अलमाउ फ ह फ़ र बिअरौं वक़ा ल हाज़िही लिउम्मि सअ्द** तो हज़रत साद ने कुंआ खुदवाया और कहा यह कुआं साद की माँ के लिए है। (यानी उसका सवाब साद की माँ के लिए है।)

(अशअतुल–लम्आत जिल्द ३ सफ़ा १२३)

इस हदीस पाक में यह अल्फ़ाज़ 'हाज़िही लिउम्मि सअ्द' कि यह कुआं साद की मां के लिए है। यानी यह साद की मां के ईसाले सवाब के लिए

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वक़्फ़ है। इससे वाज़ेह तौर से यह साबित होता है कि जिसकी रूह को सवाब पहुंचाने की ग़रज़ से कोई सदक़ा व ख़ैरात की जाए और उस सदक़ा व ख़ैरात और न्याज़ पर मजाज़ी तौर पर उसका नाम लिया जाए यानी यूं कहा जाए कि यह सबील या खिचड़ा हज़रत इमाम हुसैन व शुहदाए करबला रिज़्वानुल्लाह अलैहिम के लिए है तो हरगिज़–हरगिज़ उस सबील का पानी या दूध और खिचड़ा हराम न होगा। वरना फिर यह भी कहना पड़ेगा कि उस कुंए का पानी भी हराम था जिसकी निस्बत ग़ैरुल्लाह यानी साद की माँ की तरफ़ थी। हालांकि उस कुएं का पानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व दीगर सहाबए किराम व अहले मदीना ने पिया है। अगर सिर्फ़ निस्बत कर देने से कोई चीज़ हराम हो जाती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्यों उस कुएं का पानी पीते? इससे बिल्कुल ज़ाहिर हो गया कि जिस तरह कुएं का पानी ग़ैरुल्लाह की तरफ़ निस्बत कर देने से हराम नहीं होता है। इसी तरह हज़रत इमाम हुसैन की न्याज़ शर्बत व खिचड़ा उनकी तरफ़ निस्बत कर देने से हराम नहीं होगा। खिचड़े के मुतअल्लिक़ तो एक रिवायत में आता है कि ख़ास मुहर्रम के दिन खिचड़ा पकाना हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की सुन्नत है। चुनांचे मंक़ूल है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती तूफ़ान से नजात पाकर जूदी पहाड़ पर ठहरी हो वह दिन आशूरए मुहर्रम था। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती के तमाम अनाजों को बाहर निकाला तो फ़ोल (बड़ी मटर), गेहूं, जौ, मसूर, चना, चावल, प्याज़ यह सात क़िस्म के ग़ल्ले मौजूद थे। आप ने उन सातों को एक हांडी में लाकर पकाया। चुनांचे अल्लामा शहाबुद्दीन कल्यूबी ने फ़रमाया कि मिस्र में जो खाना आशूरह के दिन तबीख़ुल–हुबूब (खिचड़ा) के नाम से मशहूर है उसकी असल व दलील यही हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अमल है। और हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अलैहिर्रहमः राहतुल–मुहिब्बीन में फ़रमाते हैं कि जो शख़्स आशूरह के दिन सात क़िस्म के दाने पकाए तो हर दाने के बदले उसके नामए आमाल में नेकी लिखी जाएगी और उसी मिक़दार से गुनाह महव (मिटाए) किए जाएंगे। (तफ़सीर रुहुल–ब्यान प.१२ आयाते क़िस्सा–ए–नूह)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : **मन वस्सअ़ अला अयालिही फ़िन्नफ़क़ति यौ म आशूरा अ वस्सअल्लाहु अलैहि साइ र**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

स न तिही यानी जो शख़्स आशूरह के दिन अपने बाल–बच्चों के खाने पीने में ख़ूब ज़्यादा फ़राख़ी व कुशादगी करेगा (यानी ज़्यादा खाना तैयार कराकर ख़ूब पेट भर कर खिलाएगा) अल्लाह तआ़ला साल भर तक उसके रिज़्क़ में वुसअत और ख़ैर व बरकत अता फ़रमाएगा।

(मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा १६, अशअतुल–लम्आत जिल्द ३ सफ़ा १३५, मुकाशिफ़तुल–कुलूब सफ़ा ६५८, मज़ाहिरे हक़ जिल्द २ सफ़ा १४२)

हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा : फ़रमाते हैं कि जो खाना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की न्याज़ के लिए पकाया जाए और उस पर फ़ातिहा, कुल शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए वह तबर्रुक हो जाता है और उसका खाना बहुत ही अच्छा है।

(फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा १८८)

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स मलीदा और खीर किसी बुजुर्ग के फ़ातिहा के लिए ईसाले सवाब की नीयत से पका कर खिलाए तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं है, यह जायज़ हैं (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा ६७) फिर चन्द सतर के बाद तहरीर फ़रमाते हैं कि अगर किसी बुज़ुर्ग के नाम की हो तो मालदारों को भी उसमें से खाना जायज़ है।

(फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा ६८)

इमाम अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत हज़रत सैयदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान से किसी ने मुहर्रम शरीफ़ के खिचड़े और सबील के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया तो आपने सबील के मुतअ़ल्लिक़ अपने फ़तावे में इरशाद फ़रमाया कि पानी या शरबत की सबील लगाना जबकि बनीयते महमूद और ख़ालिसन लिवजहिल्लाह सवाब रसानीए अरवाहे तैयबा अइम्मा–ए–अतहार मक़सूद हो तो बिला–शुब्हा बेहतर व मुस्तहब और कारे सवाब है। हदीस पाक में है : रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं **इज़ा कसुरत ज़ुनूबुक फ़स्क़िल-माअ अलल-माए ततनासिरुल वरकु मिनश्शजरे फ़िर्रीहिल आसिफ़** जब तेरे गुनाह ज़्यादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला, गुनाह झड़ जाएंगें जैसे सख़्त आंधी में पेड़ के पत्ते। इसी तरह खाना खिलाना, लंगर बांटना भी मन्दूब व बाइसे अज्र है। हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं : **इन्नल्ला ह अज़्ज़ व जल्ल युबाही मलाइकतहू बिल्लज़ी न युतइमूनत्तआ म मिन ओबैदिही** अल्लाह तआला

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अपने उन बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं फ़रिशतों के साथ मुबाहात फ़रमाता है (कि देखो यह कैसा अच्छा काम कर रहे हैं)।

(फ़तावा रज़विया जिल्द १०. निस्फ़ अव्वल सफ़ा ८८)

मुहतरम क़ारिईन! अभी आपने मुहद्दिस देहलवी हज़रत अल्लामा शाह अब्दुल-अज़ीज़ अलैहिर्रहम : का फ़तवा न्याज़े इमाम आली मक़ाम के मुतअल्लिक़ पढ़ा। जिसमें आपने जवाज़ का फ़तवा सादिर फ़रमाया जो सैयदना आला हज़रत से बहुत पहले के बुजुर्ग हैं। बादहू आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रजा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी का फ़तवा मुलाहज़ा फ़रमाया। अब आपके सामने वह्हाबियत, नजदीयत, तबलीग़ी जमाअत के गुरुघंटाल मौलाना रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा पेश किया जा रहा है। यह वही रशीद अहमद गंगोही है जिसने कौआ खाने को कारे सवाब बताया है। पढ़िए और हज़रत इमाम आली मक़ाम से उनकी दुशमनी मुलाहज़ा फ़रमाइऐ :-

रशीद अहमद गंगोही और तमाम देवबंदियों का अक़ीदा यह है कि मुहर्रम में सबील लगाना, शरबत पिलाना, या चन्दा सबील और शरबत में देना या दूध पिलाना सब ना-दुरुस्त और तशब्बहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम हैं। (फ़तावा रशीदिया जिल्द ३ सफ़ा ११३)

दूसरी जगह सवाल किया गया कि हिन्दुओं के तेहवार दीपावली और होली की पूरियां खाना मुसलमानों के लिए जायज़ है या नाजायज़? तो मौलाना रशीद अहमद गंगोही जवाब देता है : दुरुस्त है।

(फ़तावा रशीदिया हिस्सा दोम सफ़ा १२३)

एक और सवाल किया गया कि हिन्दु जो पियाऊ पानी की लगाते हैं सूदी रुपया सर्फ़ करके। मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरूस्त है या नहीं? उसका जवाब रशीद अहमद गंगोही देता है – उस पियाऊ से पानी पीने में मुज़ायक़ा नहीं। (फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा ११४)

मुसलमानो! हैरत का मक़ाम है कि देवबन्द का गुरुघंटाल औलिया-ए-किराम के नाम का शरबत तो हराम बता रहा है और बुतों के नाम पर एक काफ़िर नापाक के हाथ की बनी हुई पूरी कचौरी और सूदी रूपया के पियाऊ से पानी पीने को जायज़ बता रहा है। उससे उनके अक़ीदे का अन्दाज़ा बहुत आसानी से लग जाता है कि उस गुरूप का तअल्लुक़ औलियाए किराम से है या गिरोह शैतान से है। अल्लाह तआला मुसलमानाने आलम को उनके नापाक और गंदे अक़ीदों से महफ़ूज़ फ़रमाए।

आमीन बजाह-सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मजालिसे मुहर्रम

मुहर्रमुल–हराम के दसों दिन खुसूसन आशूरह के दिन मजलिस मुनअकि़द करना और सही रिवायतों के साथ हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन व शोहदाए करबला रज़ियल्लाहु अन्हुम के फ़ज़ाइल और वाकि़आते करबला ब्यान करना जायज़ व बाइसे सवाब है। हदीस शरीफ़ में है कि 'जिस मजलिस में सालिहीन का ज़िक्र हो, वहां रहमत का नुज़ूल होता है'। हज़रत अल्लामा शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहम: फ़रमाते हैं कि बिलफ़ेल जो कुछ मामूल इस फ़कीर का है, लिखता है। उससे क्यास कर लेना चाहिए कि साल भर में दो मजलिसें फ़कीर के मकान में मुनअकि़द हुआ करती हैं। एक मजलिसे ज़िक्रे वफ़ात शरीफ़ (मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), दूसरी मजलिसे शहादते हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा। यह मजलिस बरोज़े आशूरह या उस से दो एक दिन क़बल होती है। चार पांच आदमी बल्कि हज़ार आदमी जमा होते हैं। दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं। उसके बाद जब फ़कीर आता है तो लोग बैठते हैं और ज़िक्र फ़ज़ाइल हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जो हदीस शरीफ़ में वारिद है ब्यान किया जाता है। जो कुछ अहादीस में उन बुज़ुर्गों की शहादत की ख़बर है और रिवायते सहीहा में जो कुछ तफ़सील बाज़ हालात की है और उन हज़रात के क़ातिलों की बद–उनवानी का ब्यान है, वह ज़िक्र किया जाता है। और उस ज़िमन में बाज मरसिए जो जिन्न व परी से हज़रत उम्मे सलमा व दीगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सुने हैं वह भी ज़िक्र किए जाते हैं। और वह ख़्वाबे वहशतनाक ज़िक्र किए जाते हैं जो हज़रत अब्बास व दीगर सहाबा ने देखे थे कि उससे मालूम होता है कि जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस वाकि़आ से निहायत रंज व अलम हुआ। फिर ख़त्मे कुरआन किया जाता है और पंज आयत पढ़कर खाने की जो चीज़ मौजूद होती हैं उस पर फ़ातिहा किया जाता है। और इस असना में अगर कोई शख़्स खुश–अलहान सलाम पढ़ता है या मरसिया मशरू पढ़ने का इत्तिफ़ाक़ होता है तो अकसर हाज़िरीने मजलिस और उस फ़कीर को भी हालते रिक़्क़त व गिरया व बुका लाहिक़ होती है। इस क़दर अमल में आता है। तो अगर यह सब फ़कीर के नज़दीक, इस तरीक़ा से जिसका ज़िक्र किया गया है,

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जायज़ न होता तो हरगिज़ फ़कीर इन चीज़ों पर अक़दाम न करता।

(फ़तावा अज़ीज़ी २६५)

आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत अल्लामा शाह अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान फ़रमाते हैं – जो मजलिसे ज़िक्र शरीफ़ सैय्यदना इमाम हुसैन व अहले–बैत किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की हो जिसमें रिवायाते सहीहा मोतबरा से उनके फ़ज़ाइल व मक़ामात व मदारिज ब्यान किए जाएं। और मातम व तजदीदे ग़म वग़ैरह उमूरे मुख़ालिफ़ए शरा से यकसर पाक हो फ़ी–नफ़्सिही हसन व महमूद है। ख़्वाह उसमें नस्र पढ़ें या नज़्म। अगरचे वह नज़्म बवजहे एक मुसद्दस होने के जिसमें ज़िक्रे हज़रत सैयदुश्शोहदा है। उर्फ़ हाल में बनामे मरसिया हो कि अब वह मरसिया नहीं जिसकी निसबत से **नहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनिल मरासी वल्लाहु सुब्हानहू तआला।**

(इआलीयुल इफ़ादतः फ़ी ताज़ीयतिल हिन्द व ब्यानिश्शहादः सफ़ा १६)

इसी रिसाले में दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते हैं : ज़िक्रे शहादत शरीफ़ जबकि रिवायतें मौज़ूआ व कलिमाते मम्नूआ व नीयते नामशरूआ से ख़ाली हो ऐन सआदत है। **इन द ज़िकरिस्सालिहीन तंज़ीलुर्रहमः** (अल–हदीस) यानी सालिहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है। (सफ़ा ६)

उसके बरख़िलाफ़ देवबन्दी जमाअत के गुरूघंटाल मौलाना रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि मुहर्रम में ज़िक्रे शहादते हसनैन अलैहिनुस्सलाम करना अगरचे बरिवायात सहीहा हो तब भी नादुरूस्त और तशब्बुहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम है। (फ़तावा रशीदिया हिस्सा सोम सफ़ा ११३)

क़ारिईने किराम! मजालिसे मुहर्रम के सिलसिले में अहले सुन्नत व जमाअत का मौक़फ़ और देवबंदी जमाअत का फ़तवा आपकी नज़र के सामने है। अब फ़ैसला आपको करना है कि मुहिब्बे इमाम हुसैन कौन है और कौन दुशमने इमाम हुसैन ?

नोटः- आजकल जो मरसिए पढ़े जाते हैं उनमें अकसर रिवायतें ग़लत तौर से लिखी होती हैं इसलिए उनका पढ़ना जायज़ नहीं है। हां! अगर रिवायात सहीहा हों तो पढ़ने में कोई हर्ज नहीं। नाचीज़ ने मुस्तनद व मोतबर रिवायात की रौशनी में वाक़िआते करबला ब्यान किया है उसको अगर मजालिसे मुहर्रम में पढ़ा जाए तो इन्शाअल्लाह हज़रत इमाम हुसैन की रूह ख़ुश होगी।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ताज़ियादारी और ख़ुराफ़ाते मुहर्रम

हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः वर्रिज़वान ताज़ियादारी के बारे में फ़रमाते हैं कि अशरए मुहर्रम में ताज़ियादारी और क़ब्र व सूरत वग़ैरह बनाना जायज़ नहीं है। (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा १८२)

इसी फ़तावा अज़ीज़ी के सफ़ा १८२ पर तहरीर फ़रमाते हैं : ताज़ियादारी जैसा कि बद–मज़हब करते हैं, बिदअ़त है। और ऐसे ही ताबूत, क़ब्रों की सूरत, और अलम वग़ैरह यह भी बिदअत है। और ज़ाहिर है कि बिदअते सैईआ है।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाते हैं कि ताज़िया जो कि बनाया जाता है ज़्यारत के क़ाबिल नहीं। बल्कि इस क़ाबिल है कि उसे नीस्त व नाबूद किया जाए। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि **मन रआ मिन्कुम मुन्किरन फ़ल युग़ैयेरहु बियदिही फ़इल्लम यस्तति फ़बिलिसानिही फ़इल्लम यस्तति फ़बिक़बलिही व ज़ालि क अज़अफ़ुल ईमान** (रवाहु मुस्लिम)। तुममें से जो शख़्स कोई बात ख़िलाफ़े शरा देखे तो उसे अपने हाथ से ख़त्म करे; और अगर हाथ से ख़तम करने की क़ुदरत न हो तो ज़ुबान से मना करे; और अगर ज़ुबान से भी मना करने की क़ुदरत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सबसे कमज़ोर ईमान है। (सफ़ा १८४)

ताज़ियादारी में किसी तरह की इमदाद करना चाहिए या नहीं ? इस सवाल का जवाब देते हुए तहरीर फ़रमाते हैं कि यह भी जायज़ नहीं है। इसलिए कि गुनाह पर मदद नाजायज़ है। (फ़तावा रज़वीया सफ़ा १८६)

आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत सैयदना इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहम : वर्रिज़वान फ़रमाते हैं : ताज़िया की असल इस क़द्र थी। रौज़ए पुरनूर हुज़ूर शहज़ादए गुलगूं क़बा, हुसैन शहीदे ज़ुल्म व जफ़ा सलातुल्लाहि तआ़ला व सलामहु अला जद्दिहिल करीम व अलैह की सही नक़ल बना कर ब–नीयते तबर्रुक मकान में रखना। इसमें शरअन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कोई हर्ज न था कि तसवीर मकानात वग़ैरह हर ग़ैर जानदार की बनाकर रखना सब जायज़ और ऐसी चीज़ें कि मुअज़्ज़माते दीन की तरफ़ मन्सूब होकर अज़मत पैदा करें। उनकी तिमसाल ब–नीयते तबर्रुक पास रखना क़तअन जायज़ जैसे : सदहा साल से तब्क़तन फ़ितब्क़तन अइम्म–ए–दीन व उलमाए मोतमिदीन नालैन शरीफ़ैन हुज़ूर सैयदुल–कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नक़्शे बनाते और उनके फ़वाइदे जलीला व मनाफ़ए जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तसनीफ़ फ़रमाते हैं। जिसे इशतिबाह हो अल्लामा इमाम तिलसिमानी की फ़त्हुल–मुतआल वग़ैरह का मुताला करे। मगर जहां बेख़िर्द ने उस असल जायज़ को बिल्कुल निस्त व नाबूद करके सदहा ख़ुराफ़ात तराशीं कि शरीअते मुत्तहरा से अल–अमान अल–अमान की सदायें आएं। अव्वल तो नफ़्से ताज़िया में रौज़ए मुबारक की नक़ल महफ़ूज़ न रही। हर जगह नई तराश, नई गढ़त है जिसे उस नक़ल से कुछ इलाक़ा, न निसबत। फिर किसी में परियां, किसी में बुर्राक़, किसी में और बेहूदा तमतराक़। फिर कूचा–ब–कूचा व दस्त–बदस्त इशाअते ग़म के लिए उनका गश्त। और उनके गिर्द सीना–ज़नी और मातम–साज़ी की शोर अफ़गनी। कोई उन तसवीरों को झुक–झुक कर सलाम कर रहा है, कोई मशग़ूले तवाफ़, कोई सज्दे में गिरा है, कोई उन मायए बिदआत को मआज़ल्लाह जलवागाहे हज़रते इमाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलातु वस्सलाम समझ कर उस अबरक पन्नी से मुरादें मांगता, मिन्नतें मानता है, हाजत–रवा जानता है। फिर बाक़ी तमाशे, बाजे ताशे, मर्दों औरतों का रातों को मेल और तरह–तरह के बेहूदा ख़ेल उन सब पर तुर्रह हैं। गर्ज़ अशरए मुहर्रमुल–हराम कि अगली शरीअतों से इस शरीअते पाक तक निहायत बाबरकत व महल्ल इबादत ठहरा हुआ था। उन बेहूदा रूसूम ने जाहिलाना व फ़ासिक़ाना मेलों का ज़माना कर दिया। फिर वबाले इब्तिदा का वह जोश हुआ कि ख़ैरात को भी बतौरे ख़ैरात न रखा। रिया व तफ़ाख़ुर एलानिया होता है। फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मुहताजों को दें बल्कि छतों पर बैठ कर (या स्टेज लगाकर) फेंकेगे। रोटियां ज़मीन पर गिरती हैं, रिज़्क़े इलाही की बेअदबी होती है। पैसे इस तरह से फेंक देने में गिर कर ग़ायब होते हैं, माल की इज़ाअत होती है। मगर नाम तो हो गया कि फ़लां साहब लंगर लुटा रहे हैं। अब बहारे अशरा के फूल खिले। ताशे बाजे बजते चले। तरह–तरह के खेलों की धूम, बाज़ारी औरतों की हर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तरफ़ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रुसूमे जश्न। यह कुछ, और उसके साथ ख़्याल वह कुछ कि गोया यह साख़्ता तसवीरें बिऐनिही हज़रात शोहदा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के जनाज़े हैं। कुछ नोच उतार, बाक़ी तोड़–ताड़ कर दफ़्न कर दिए। यह हर साल इज़ाअते माल के जुर्म व वबाल जुदागाना रहे। अल्लाह तआला सदक़ए हज़रात शोहदाए करबला अलैहिमुर्रिज़वान वस्सना का हमारे भाईयों को नेकी की तौफ़ीक़ बख़्शे और बुरी बातों से तौबा अता फ़रमाए। आमीन। अब कि ताज़ियादारी उसी तरीक़ा–ए–नामर्ज़ीया का नाम है, क़तअन बिदअत व हराम है। हां, अगर अह्ले इस्लाम जायज़ तौर पर हज़रत शोहदाए किराम अलैहिमुर्रिज़वान की अरवाहे तैयबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इन्हसार करते तो किस क़दर ख़ूब व महबूब था। अगर नज़्रे शौक़ व मोहब्बत में नक़्ले रौज़ा–ए–अनवर की भी हाजत थी तो इस क़दर जायज़ पर क़नाअत करते कि सही नक़ल बग़र्ज़े तबर्रुक व ज़्यारत अपने मकानों में रखते। इशाअते ग़म व तसन्नुए अलम व नौहाख़्वानी व मातमकुनी व दीगर उमूरे शनीआ व बिदआते क़तईया से बचते। इस क़दर में कोई हर्ज न था। मगर अब उस नक़ल में भी अह्ले बिदअत से एक मुशाबहत और ताज़ियादारी की तोहमत का ख़दशा और आइन्दा अपनी औलाद अहले एतक़ाद के लिए इब्तलाए बिदआत का अन्देशा है। हदीस में आया है **इत्तक़ू मवाज़िअत्तुहमि** और वारिद हुआ **मन का न यूमिम बिल्लाहि वल-यौमिल आख़िरि फ़ला यक़ेज्फ़्फ़न्न मवाक़िफ़ुत्तुहमि।** लिहाज़ा रौज़ा–ए–अक़दस हुज़ूर सैयदुश्शोहदा की ऐसी तसवीरें भी न बनाए बल्कि सिर्फ़ काग़ज़ के सही नक़्शे पर क़नाअत करे। उसे बक़सदे तबर्रुक बेआमेज़िशे मन्हीयात अपने पास रखे। जिस तरह हरमैन मुहतरमैन से काबा–ए–मुअज़्ज़मा और रौज़ए आलिया के नक़्शे आते हैं या दलाइलुल–ख़ैरात शरीफ़ में क़ुबूर पुरनूर के नक़्शे लिखे हैं। वस्सलाम अला मनित्तबअल–हुदा वल्लाहु तआला व सुब्हानुहू आलम।

(इआलीयुल इफ़ादतः फ़ी ताज़ियतिलहिंद व ब्यानिश्शहादतः सफ़ा २)

ताज़िया पर जो खाना या मिठाई चढ़ाई जाती है उसको नहीं खाना चाहिए। आला हज़रत तहरीर फ़रमाते हैं : हज़रत इमाम के नाम की न्याज़ खानी चाहिए और ताज़िया का चढ़ा हुआ खाना न खाना चाहिए। फिर दो सतर बाद तहरीर फ़रमाते हैं – ताज़िया पर चढ़ाने से हज़रत इमाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

रज़ियल्लाहु अन्हु की न्याज़ नहीं हो जाती है। अगर न्याज़ देकर चढ़ाएं या चढ़ाकर न्याज़ दिलाएं तो उसके खाने से एहतराज़ करना चाहिए।

(रिसाला–ए–ताज़ियादारी सफ़ा १८)

एक जगह इरशाद फ़रमाते हैं : ताज़िया पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है वह अगरचे हराम नहीं हो जाती मगर उसके खाने में जाहिलों की नज़र में एक अम्रे नाजायज़ की वक़अत बढ़ाने और उसके तर्क में उससे नफ़रत दिलानी है, लिहाज़ा न खाई जाए। ढोल बजाना हराम है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द १० सफ़ा १८६)

ताज़िया राइजा यानी आजकल जो ताज़िया बनाया जाता है जिसमें हज़ारों रुपए ख़र्च किए जाते हैं। कोई ताजमहल बनाता है। कोई कुतुब मीनार बनाता है, तो कोई कुछ, तो कोई कुछ। ग़र्ज़ कि तमाम खुराफ़ात किए जाते हैं। असली रौज़ा नहीं बनाया जाता है। इसी के मुतअल्लिक़ आला हज़रत ने फ़रमाया है कि यह ताज़िया देखना, बनाना नाजायज़ है।

(फ़तावा रज़वीया जिल्द १० सफ़ा १८६)

खुराफ़ाते मुहर्रम

इस्लामी नया साल मुहर्रमुल–हराम से शुरू होता है और ज़िल–हिज्जतिल–हराम पर ख़त्म होता है। इस माहे मुबारक में बहुत–से खुराफ़ात और बिदआत राइज हैं। हम क़दरे तफ़सील से इस पर रौशनी डालने की कोशिश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए –

मुहर्रमुल–हराम का महीना शुरू हुआ कि बाज़ मुसलमान सैंकड़ों–हज़ारों रुपए ख़र्च करके नक़ली रौज़ा व दीगर खुराफ़ात बनाते हैं। और उसको हज़रत इमाम हुसैन के रौज़ा–ए–मुक़द्दसा की तरफ़ मन्सूब करते हैं। और उसका नाम ताज़िया रखते हैं। और उसमें दो मसनूई क़ब्रें बनाते हैं : एक पर सब्ज़ ग़िलाफ़ और दूसरी पर सुर्ख़ ग़िलाफ़ डालते हैं। सब्ज़ ग़िलाफ़ वाली को हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लहु अन्हु की क़ब्र और सुर्ख़ ग़िलाफ़ वाली को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र बताते हैं। और वहां शरबत या मलीदा वग़ैरह पर फ़ातिहा दिलाते हैं। नारियल चढ़ाते हैं। उससे मिन्नतें मांगते हैं, मरसिए पढ़े जाते हैं, नौहा और मातम भी करते हैं और सीना कोबी होती है। इतने ज़ोर–ज़ोर से सीना कूटते हैं कि वर्म हो जाता है। ज़ंजीरों और छुरियों से मातम करते हैं। फिर दसवीं मुहर्रम को अलम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और शुद्दे और ताज़िया का जुलूस निकालते हैं। उसके लिए आगे ढोल ताशे बजाते, कूदते नाचते हुए मसनूई करबला की तरफ़ जाते हैं और वहां उसको ले जाकर दफ़न कर देते हैं। कहीं–कहीं हमने ख़ुद देखा है, ख़ास तौर से सूरत में। (ख़ास हुज्जत के लिए) उन ख़ुराफ़ात को देखा कि लोग ताज़िया के ऊपर चढ़ते हैं। जो औरतें बे–पर्दा घरों से निकल कर उन ताज़ियों को देखने सड़कों पर निकल पड़ती हैं उनको छेड़–छाड़ करते हैं। फिर उसको मसनूई करबला में ले जाकर ठंडा करते हैं। कहीं पर उसको दफ़न करते हैं। उसके बाद ताज़िया या इमाम हुसैन का तीजा, दसवां,बीसवां और चालीसवां करते हैं कि इमाम हुसैन (मआज़ल्लाह!) इन्तिक़ाल कर गए। हालांकि आप शहीद हैं। और शहीद के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है : वह ज़िन्दा हैं, मरते नहीं हैं।

कहीं सवारियां बिठाई जाती हैं और उनसे मिन्नतें मांगते और चढ़ावे चढ़ाते हैं। कहीं बाग़ बनाए जाते हैं और सिर्फ़ लंगोट पहन कर कूदते उछलते हैं और शैतानी हरकत करते हुए गुज़रते हैं जिससे सतरे औरत का बिल्कुल ख़्याल नहीं करते। हदीस पाक में है कि **लानल्लाहुन्नाज़िर वल-मंज़ूर इलैह** यानी अल्लाह तआला की लानत है ऐसा मंज़र करने और देखने वाले पर। यह सब ख़ुराफ़ात व नाजायज़ हैं। मुसलमानों को उससे इहतराज़ करना चाहिए।[१] बाज़ सुन्नत जमाअत अशरा–ए–मुहर्रम में न तो दिन भर रोटी पकाते हैं और न झाड़ू देते हैं।

मुहर्रम में शादी–ब्याह करना नाजायज़ बताते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। कहीं सवारियां निकाली जाती है और नाचते–कूदते सड़कों का गश्त करते हैं। ऐसे अकसर लोग बेनमाज़ी और फ़ासिक़ व फ़ाजिर होते हैं। लोग उनसे सवालात करते हैं। और बाज़ अह्ले–सुन्नत व जमाअत कहते हैं कि हम जो भी सवाल उनसे करते हैं वह सही–सही जवाब देते हैं। उनका गुमान यह होता है कि उसके (सवारी के) आग में हज़रत इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आते हैं, वही उसका जवाब देते हैं। मआज़ल्लाह ! अल्लाह तआला मुसलमानों को ऐसे ख़ुराफ़ात और गंदे अक़ाइद से महफ़ूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन बजाह सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[१] फ़तावा रज़विया जिल्द १० सफ़ा ८७

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आशूरह के दिन हमें क्या करना चाहिए?

आशूरह के दिन दस चीज़ों को उलमाए किराम ने मुस्तहब लिखा है। बाज़ उलमा ने उसे इरशादे-नब्वी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और बाज़ ने उसे हज़रत सैय्यदना मौला अली मुश्किल–कुशा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल बताया है। बहरहाल! यह सब अच्छे काम हैं, उनको करना चाहिए।

(१) रोज़ा रखना (२) सदक़ा करना (३) नवाफ़िल पढ़ना (४) एक हज़ार मर्तबा सूर : इख़्लास पढ़ना (५) उलमा और औलिया की ज़्यारत करना (६) यतीमों के सर पर हाथ रखना (७) अपने घर वालों पर खाने में वुस्अत व फ़राख़ी करना (८) सुरमा लगाना (९) ग़ुस्ल करना (१०) नाख़ुन तराशना और मरीज़ों की बीमार–पुर्सी करना। इमाम आली मक़ाम व दीगर के नाम की फ़ातिहा करना।

ग़ुस्ल

मुहर्रम की दस तारीख़ को ग़ुस्ल ज़रूर करें। क्योंकि उस रोज़ ज़मज़म का पानी तमाम पानियों में पहुंचता है। मुसन्निफ़े तफ़सीर नईमी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं : आशूरह के दिन ग़ुस्ल करने वाला साल भर बीमारियों से महफ़ूज़ रहेगा। (बहवाला तफ़सीर रूहुल–ब्यान प–१२)

सुरमा लगाना

मुहर्रम की दस तारीख़ को जो शख़्स सुरमा लगाए तो इन्शाअल्लाह साल भर उसकी आंख नहीं दुखेगी।

(दुर्रे मुख़्तार किताबुस्सौम, मासबत बिस्सुन्नः सफ़ा २३)

अल्लाह तआला की बारगाह में दस्ते दुआ हूं कि मौलाए करीम अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल मुसलमानों को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्ची मुहब्बत अता फ़रमाए। और जिस मक़सद के लिए आपने अपनी जान क़ुरबान फ़रमाई उसको समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। और मुहर्रमुल–हराम की जुमला ख़ुराफ़ात व बिदआत से महफ़ूज़ व मामून फ़रमाए। आमीन।

व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व असहाबिही व अज़्वाजिही व अह्ले-बैतिही अजमईन। बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इब्ने यज़ीद, नज्दी, ख़ारजी, मलऊन, मतऊन

ज़ुहूर अहमद करशी औरंगाबादी

की

रुसवाए ज़माना किताब

आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें

का

दन्दाँ शिकन जवाब

अहादीसे करीमा और मोतबर तारीख़ी किताबों की रौशनी में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

कहता है कौन ज़िक्रे शहादत हराम है?

जिस दिल में हुब्बे आले नबी का असर नहीं
तारीक है वह, नूर का उसमें गुज़र नहीं

जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं हुसैन
उनके अदू का बागे जिनां में गुज़र नहीं

पानी जो बन्द करता है आले रसूल पर
क्या वह गिरोहे उम्मते खैरुल–बशर नहीं?

मुंकिर है जो मुहब्बते आले रसूल का
मोमिन है क्या? तुम्हीं कहो!काफ़िर अगर नहीं

कहता है कौन ज़िक्रे शहादत हराम है?
क्या खुद यह ज़िक्र करते थे खैरूल–बशर नहीं

शाने नुज़ूले आयते ततहीर देख लो !
गर पंजतन के वस्फ़ की तुम को खबर नहीं

जितने पड़े हैं नूर के टुकड़े यह ख़ाक पर
उन में से कौन गैरते शम्स व क़मर नहीं

ब–वक़्ते ज़बह लब पे दुआ थी हुसैन के
जब तक है दम, उठे तेरे सज्दे से सर नहीं

मुंकिर मक़ामे हैदर व हसनैन का है क्यों ?
हज़रत ने क्या उठाया उन्हें दोश पर नहीं ?

काफ़िर, जो मोमिनों को कहे खुद वह कौन है?
सब की खबर है, पर तुम्हें अपनी ख़बर नहीं!

क़ैसर जिसे है दुशमनी आले रसूल से
ईमां नसीब होगा उसे उम्र भर नहीं

(जनाब सैयद क़ैसरुल-वारसी साहब)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मक़ामे इमाम हुसैन
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु
और वाक़िआते करबला

ख़ारजी ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी की नज़र में ख़बासत व बेहयाई की मुंह बोलती तस्वीर

मुख़ालिफ़ीने इस्लाम की हमेशा से यह कोशिश रही है कि वह मुसलमानों के दिलों से पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम, अह्ले–बैते अतहार, उम्महातुल–मोमिनीन, सहाबए किराम और औलियाए इज़ाम की मुहब्बत व अक़ीदत को निकाल कर उनके दिलों को वीरान करके उन पर दुशमनाने इस्लाम को हावी कर दें। क्योंकि वह अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हीं मज़कूरा बाला हज़रात की मुहब्बत व अक़ीदत उनके ईमान की रूह है। जब यही कमज़ोर हो जाएगी तो उनको ख़त्म करना बिल्कुल आसान हो जाएगा। इसी लिए दुशमनाने दीन व मिल्लत ने सबसे पहले अपनी तनक़ीद का निशाना इन्हीं ज़वाते आलिया को बनाया। इस सिलसिले में बाज़ नाम निहाद मुस्लिम मुहक़्क़िक़ीन ने अपनी बेजा तहक़ीक़ के पर्दे में दुशमनाने इस्लाम का हाथ मजबूत किया और उनके नापाक और ख़तरनाक मिशन को आगे बढ़ाने में एक अहम रोल अदा किया। इसी क़िस्म की एक बेजा तहक़ीक़ सरज़मीने औरंगाबाद (महाराष्ट्र) के एक नासिबी, ख़ारजी, ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी ने पेश की है। जिसमें उसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को बाग़ी और यज़ीद पलीद को बरहक़ ख़लीफ़तुल–मुसलिमीन साबित करने की नाकाम कोशिश की है। ज़ुहूर अहमद की तहक़ीक़ से मुज़्तरिब ज़ेहनों में जो सवालात उठे हैं। हम एक–एक करके उसे ज़िक्र कर रहे हैं। और इन्शाअल्लाह व इन्शाअ रसूलिही हर एक सवाल का मुस्बत व मुस्कित जवाब देने की कोशिश कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवालात

१. क्या ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब में ख़्यानत से काम लिया है?
२. क्या यज़ीद की हुकूमत व ख़िलाफ़त कवानीने शरईया के ऐन मुताबिक़ थी, और क्या उस पर तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का इत्तिफ़ाक़ था ?
३. क्या यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कह सकते हैं और क्या उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखना अज़रूए शरा जायज़ है ?
४. क्या हुसैनी क़ाफ़िले पर ७/मुहर्रम से दरियाए फ़ुरात का पानी बन्द किया जाना झूठ और इफ़तरा पर मबनी है ?
५. क्या इमामे आली मकाम १० मुहर्रम को करबलाए मुअल्ला पहुंचे?
६. क्या इमाम आली मकाम और दीगर शोहदाए करबला को शहीद करने के बाद उनके सरों को लाशों से जुदा करना, फिर उन्हें नेज़ों पर चढ़ा कर उनकी तशहीर करना और लाशों पर घोड़े दौड़ाकर उनको रौंद डालना – यह तमाम बातें भी झूठ, ग़लत और बे–बुनियाद हैं ?
७. क्या करबला में पहला हमला हुसैनी खेमा से क्या गया था?
८. क्या यज़ीद ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल का हुक्म नहीं दिया था ? और क्या वह उस काम से राज़ी नहीं था?
९. क्या यज़ीद कुसतुन्तुनिया के अव्वल हमले में शरीक हुआ था और क्या वह जन्नती है ?

जवाबात

सवाल १: क्या ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी ने अपनी किताब **(आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें)** में ख़्यानत से काम लिया है ?

जवाब: जी हां! ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी ने अपनी किताब की तरतीब में पहले से बने बनाए प्रोगराम के तहत ख़्यानत व बद–दियानती की तो इन्तिहा कर दी है। बल्कि अगर यह कहा जाए कि यह मुकम्मल किताब ही ख़्यानत, बद–दियानती, किज़्ब व इफ़तरा और दज्ल व फ़रेब से भरी हुई है तो बेजा न होगा। इससे पहले कि हम ख़ाइन ज़ुहूर अहमद की बद–दियानती और कलमी चोरी का पर्दा फ़ाश करें, अपने कारिईन को यहीं

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बता देना ज़रूरी समझते हैं कि मज़कूरा बाला किताब ज़ुहूर अहमद की कोई अपनी क़लमी काविश या इल्मी क़ाबलीयत का नमूना नहीं है। बल्कि एक ऐसी ग़ैर–मुस्तनद और दिल–आज़ार किताब के मवाद को चोरी करके तरतीब दी गई है जिसे हुकूमते पाकिस्तान ने दुशमनीए इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से अपने मुल्क में पाबन्दी आइद कर दी थी और हिन्द व पाकिस्तान के उलमाए हक़ ने उस किताब की सतर–सतर की धज्जियां उड़ा दी थीं। किताब का नाम है : **"ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद"**। हमने इस किताब को बहुत कोशिश कर के हासिल किया। और जब उसका मुताला किया तो ज़ुहूर अहमद की इल्मी क़ाबलीयत का भांडा फूटा। नासबी ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब का मुकम्मल मवाद इसी किताब से चोरी कर के नक़ल किया है। लेकिन अवामुन्नास के सामने अपनी इल्मी क़ाबलीयत को साबित करने के लिए मुरत्तिबे किताब के भाई नासबी दुशमने अल्लाह व रसूल निसार अहमद औरंगाबादी ने अपने भाई की किताब को उसकी अपनी इल्मी काविश और अमानते इल्मीया के रूप में पेश करते हुए लिखा कि –

"मौसूफ़ ने मुहर्रम और उसकी फ़ज़ीलत, इस माह में होने वाले वाक़िआत, हादिसात और हक़ाइक़ को ज़िक्र करने में क़ुरआन व हदीस से दलाइल अख़ज़ करके, साथ ही साथ कुतुबे सियर व तारीख़ के असमा व सफ़हात का भी हवाला दिया है जिससे मौसूफ़ की दिक़्क़ते नज़री और अमानते इल्मीया का सुबूत मिलता है।"

("आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें" सफ़ा १)

यानी चोरी तो चोरी ऊपर से सीनाज़ोरी। अहले इल्म या जिनके पास **'ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद'** नामी किताब होगी वह मज़कूरा बाला इबारत को देखकर यक़ीनी तौर पर कह उठेंगे कि देखो किस तरह अवाम को धोखा और फ़रेब दिया जा रहा है। और हक़ाइक़ को छुपा कर अपनी इल्मी क़ाबलीयत का ढींडोरा पीटा जा रहा है। अब हम ज़ुहूर अहमद की बद–दियानती और मक्र व फ़रेब के चन्द नमूने पेश कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए :

ज़ुहूर अहमद की किताब में जो बात सब से ज़्यादा दिल–ख़राश और दुश्मनिए इमाम हुसैन का खुला हुआ नमूना है, वह यह है कि मुरत्तिबे किताब हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

वाक़िया ही को सिरे से सफ़हए हस्ती से मिटाने और अपने लाडले यज़ीद की पोज़ीशन को दाग़दार न होने की कोशिश में लगा हुआ है। चुनांचे इन्तिहाई शर्मनाक जसारत करते हुए शहज़ादए रसूल हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के मुतअल्लिक लिखता है कि :

"हुसैन इब्ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु माहे सफ़र को कत्ल हुए। उस वक़्त उनका सन् पचपन साल था"।

('आओ मुहर्रम की हक़ीकत तलाश करें' सफ़ा १० बहवाला तबरी)

मज़कूरा बाला इबारत तारीखे तबरी की एक नातमाम इबारत है जिसे इस तरह पेश करके उम्मते मुसलिमा को एक बड़ा फ़रेब दे कर इमाम आली मक़ाम की शहादत को सिरे से ख़त्म करने की एक सोचे समझे प्लान के तहत कोशिश की जा रही है। अब आइए हम आपके सामने असल इबारत, जिसका हवला ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब में दिया है, उसी तारीखे तबरी से सही हवाले के साथ नक़ल कर रहे हैं।

"आप इराक़ में आए और रोज़ा आशूरह सन् ६१ हिजरी नैनवा में क़त्ल किए गए। यह भी रिवायत है कि हुसैन इब्ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु सफ़र सन् ६१ हिजरी में क़त्ल किए गए और सन् आप का पचपन बरस का था। साबित यही होता है कि मुहर्रम की दसवीं को क़त्ल हुए।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२०)

मुहतरम क़ारिईन! अन्दाज़ा लगाएं कि मुरत्तिबे किताब ने असल हक़ीक़त के ब्यान में किस क़दर ख़्यानत और बद–दियानती से काम लिया है कि तबरी की असल और सही साबित हुई रिवायत को हड़प कर दिया और अपने मतलब के लिए अधूरी इबारत पेश कर के उम्मते मुसलिमा को धोखा देने और इत्तिहाद बैनल–मुसलिमीन को पारह–पारह करने की एक शर्मनाक जसारत की है। क्या है कोई मर्दे मुजाहिद जो ऐसे ख़ाइन को उसके करतूत की सज़ा दे ?

ज़ुहूर अहमद की तीसरी सबसे बड़ी ख़्यानत यह है कि वह हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की न्याज़ और सबील को हराम क़रार देते हुए लिखता है कि –

"मुहर्रम में जो भी चीज़ें बनाई जाती हैं – शरबत, नज़्र व न्याज़ के मलीदे, मिठाईयां और खिचड़ा वग़ैरह। यह सब ग़ैरुल्लाह के नाम की चीज़ें होती हैं जिनका खाना अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हराम क़रार दिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

है। अल्लाह तआला अपने कलाम में फ़रमाता है : "वह हर चीज़ जो अल्लाह के नाम के सिवा दूसरों के नाम पर मशहूर की जाए हराम है।"

(आओ मुहर्रम..... सफ़ा १८)

ख़ाइन ज़ुहूर अहमद ने जिस आयते करीमा का तर्जुमा पेश किया है, वह तर्जुमा सही नहीं है और आयते करीमा से जो मतलब निकाला है वह भी सही नहीं है। आइए! सबसे पहले हम असल हक़ीक़त आपके सामने पेश करें। सबसे पहले आयते करीमा का सही तर्जुमा और उसके बाद चन्द मुफ़स्सिरीने किराम का इस आयते करीमा के तहत तफ़ासीर पेश की जायेंगी। इमाम अहले सुन्नत अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी इस आयत का तर्जुमा करते हैं कि : और वह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम लेकर ज़बह किया गया है, वह हराम है। (कंज़ुल–ईमान) यहां उन जानवरों को हराम क़रार दिया गया है जो वक़्ते ज़बह ग़ैरे ख़ुदा का नाम लेकर ज़बह किए गए हों। चुनांचे तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान में इस आयत के तहत लिखा है कि ज़मानए जाहिलीयत के लोग बुतों के नाम पर जानवर ज़बह करते थे। जिस जानवर को ज़बह तो सिर्फ़ अल्लाह के नाम पर किया गया मगर दूसरे औक़ात में वह ग़ैरे ख़ुदा की तरफ़ मंसूब रहा, वह हराम नहीं। जैसे कि अब्दुल्लाह की गाय अक़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर, या वह जानवर जिससे औलिया के अरवाह को सवाब पहुंचाना मंज़ूर हो। उनको ग़ैर वक़्त में औलिया के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़बह उनका फ़क़त अल्लाह के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए, वह हलाल व तैयब है। इस आयते करीमा में सिर्फ़ उसी को हराम फ़रमाया गया है जिस पर ज़बह करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए। (तफ़सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान सफ़ा ३६)

तफ़सीर मवज़्ज़ेहुल–कुरआन में इसी आयत के मातहत है। "वह जानवर हराम है तुम पर जो आवाज़ उठाएं यानी कहें उसको ज़बह करने के वक़्त नाम सिवाए ख़ुदा तआला के।" (सफ़ा २६)

तफ़सीर हुसैनी क़ादरी में इसी आयत के मातेहत है – और हराम की वह चीज़ जिस पर ज़बह के वक़्त आवाज़ बुलन्द करें लिग़ैरिल्लाह वास्ते ग़ैरे ख़ुदा के, बुतों के नाम पर।" (जिल्द १ सफ़ा ४२)

तफ़सीर अहमदिया में इसी आयत के मातहत है **मानाहु ज़ुबेहे बिही लिइस्मे ग़ैरिल्लाहे मिसलु लात व उज़्ज़ा व असमाउल-अंबिया।** आयत

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के माना यह हैं कि उसको ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़बह किया गया हो और वह वह है जो लात व उज़्ज़ा के लिए ज़बह किया जाता था।

(सफ़ा ४१ मतबा रहीमिया, देवबन्द)

इन तमाम तफ़ासीर से मालूम हुआ कि इस आयत **'उहिल ल में 'मा उहिल ल'** से मुराद है ज़बह के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारना। लिहाज़ा अगर कोई जानवर या कोई चीज़ किसी तरफ़ मंसूब कर दी जाए तो वह हराम नहीं होती। जुहूर अहमद समझे आप। आयते करीमा में जानवरों के मुतअल्लिक़ ब्यान किया गया है और आप उससे औलियाए किराम और हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की नियाज़ मुराद ले कर हराम क़रार दे रहे हो। क्या यह ख़्यानत नहीं है? जो माना आप ने निकाला है अगर वही मुराद लिया जाए तो फिर दुनिया की कोई चीज़ भी बाक़ी नहीं रह जाएगी जो हुरमत के दायरे में न आ जाए। इस लिए आप ज़रा ठंडे दिल से ग़ौर फ़रमाइए और अपने गंदे अक़ीदे से तौबा कर लीजिए।

अल्लामा अहमद जीवन अलैहिर्रहमः जो अरब व अजम के उलमा के उस्ताद हैं और तमाम देवबन्दी भी उनको मानते हैं, अपनी किताब **तफ़सीराते अहमदिया** में इसी आयत 'मा उहिल ल बिही लिग़ैरिल्लाह' के मातेहत फ़रमाते है **व मिन हाहुना ओलि म इन्नल बक़रतल मंजूर त लिल-औलियाए कमा हुवर्रस्मु फ़ी ज़मानिना हलालुन तैयबुन लिअन्नहु लम यज़कुरी स म ग़ैरुललाहि अलैहा वक़्तुज़्ज़बहे व इन कानू यन्जुरूनहा** (सफ़ा ४२)

इस से मालूम हुआ कि जिस गाय की औलियाअल्लाह के लिए नज़र मानी गई जैसा कि हमारे ज़माने में रिवाज है, यह हलाल तैयब है क्योंकि उस पर ज़बह के वक़्त ग़ैर ख़ुदा का नाम नहीं लिया गया अगरचे उस गाय की नज़र मानते हैं।

लीजिए जुहूर अहमद औरंगाबादी, आप के शहर के बानी हज़रत औरंगज़ेब आलमगीर अलैहिर्रहम के उस्ताद गिरामी ने औलियाए किराम के जानवरों को जायज़ फ़रमा दिया। क्या अब अपने घर की गवाही को भी तसलीम नहीं की जाएगी?

उसके अलावा जुहूर अहमद ने जो सबील और खिचड़े को नाजायज़ और हराम बताया है उसका मुकम्मल जवाब नाचीज़ की उसी किताब के हिस्सा अव्वल में बहुत तफ़सील से ब्यान किया गया है, वहां मुताला किया जाए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल २ : क्या यज़ीद की हुकूमत व खिलाफ़त क़वानीने शरईया के ऐन मुताबिक़ थी और क्या उस पर तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का इत्तिफ़ाक़ था?

जवाब : हरगिज़ नहीं! बिल्कुल ग़लत, झूठ और खुला हुआ फ़रेब और तारीख़ी वाक़िआत के बिल्कुल खिलाफ़ है। बल्कि अगर तारीख़ी किताबों का मुताला किया जाए तो मामला उसके बिल्कुल बर–अक्स नज़र आता है। इससे पहले कि हम सहाबा किराम, ताबईने इज़ाम के अक़वाल और तारीख़ी शवाहिद पेश करें, सबसे पहले ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी की उस इबारत को पेश कर रहे हैं जिसमें यज़ीद को बिल–इत्तिफ़ाक़ मुसलमानों का ख़लीफ़ा (बादशाह) पेश किया गया है। मुलाहिज़ा फ़रमाइए। नासबी ज़ुहूर इब्ने यज़ीद लिखता है कि–

"अमीर यज़ीद का वली–अहद और उसके बाद ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होना पूरी उम्मत की रज़ामन्दी से हुआ था............और यह सब बड़े–बड़े सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक व ताईद से हुआ था।"

(आओ मुहर्रम..... सफ़ा २७)

क़ारिईने किराम ! नासबी ज़ुहूर इब्ने यज़ीद मज़कूरा बाला इबारत से यह तअस्सुर देने की नापाक कोशिश कर रहा है कि यज़ीद बड़े–बड़े सहाबा–ए–किराम की तहरीक व ताईद से ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुआ था। हालांकि तारीख़ी हक़ीक़त बिल्कुल उसके बरअक्स है। आइए, सबसे पहले हम इस बात का जायज़ा लें कि यज़ीद की वली–अहदी के लिए सब से पहले किस ने तहरीक शुरू की थी ? तो तारीखे इस्लाम का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि तमाम सहाबा–ए–किराम नहीं बल्कि सिर्फ़ एक शख़्स हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ही उस तहरीक के बानी थे। उन्होंने भी यह तहरीक सिर्फ़ अपनी गवर्नरी बाक़ी रखने के लिए हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने यह तजवीज़ पेश की कि यज़ीद को वली–अहद बनाया जाए। साहिबे तारीखे तबरी व तारीखुल–खुलफ़ा यज़ीद की वली–अहदी की हक़ीक़त ब्यान फ़रमाते हुए लिखते हैं कि हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा जो हज़रत अमीर मुआविया की तरफ़ से गवर्नर थे उनको जब अमीर मुआविया ने माज़ूली का फ़रमान लिख कर भेजा तो उन्होंने उसको मानने से साफ़ इन्कार कर दिया। और चन्द रोज़ के बाद खुद हज़रत अमीर मुआविया के पास पहुंचे। हज़रत अमीर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुआविया ने देर से हाज़िर होने की वजह दरयाफ़्त फ़रमाई तो मुग़ीरा बिन शोबा ने कहा कि मैं एक अहम काम की तकमील में मसरूफ़ था। जिसके बाइस तामीले हुक्म में इतनी ताख़ीर हुई। हज़रत अमीर मुआविया ने पूछा : वह अहम काम कौन–सा था? मुग़ीरा बिन शोबा ने जवाब दिया कि मैं लोगों से यज़ीद के लिए ख़िलाफ़त की बैअत ले रहा था। यह सुन कर हज़रत अमीर मुआविया ने दरयाफ़्त फ़रमाया : फिर तुमने इस काम की तकमील कर दी। मुग़ीरा ने कहा : हां! मैं उस काम को पूरा कर चुका हूं। इस पर हज़रत अमीर मुआविया ने मुग़ीरा को कूफ़ा की गवर्नरी के लिए बहाल कर दिया। हुक्म दिया कि यज़ीद की बैअ़त के लिए कुछ फ़िक्र करिए। उसके बाद हज़रत अमीर मुआविया ने ज़्याद (गवर्नर बसरा) से यज़ीद की वली–अहदी के लिए मशवरा तलब किया तो ज़्याद ने अपने मोतमद ख़ुसूसी उबैद बिन काब नुमैरी को यज़ीद की वली–अहदी से अपनी बेज़ारी और नफ़रत का मुन्दर्जा ज़ैल पैग़ाम देकर हज़रत अमीर मुआविया के पास रवाना किया कि इस्लाम का तअल्लुक और ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी चीज़ है और मैं देखता हूं कि यज़ीद की तबीयत में काहिली और सहल–अंगारी बहुत है। इसपर तुर्रह यह कि वह शिकार का गरवीदा है। इसलिए आप अभी तअम्मुल कीजिए।

(तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा सफ़ा ३०१ तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा १३३)

यज़ीद की वली–अहदी के लिए मशवरे जारी कि कुछ नौ–मुस्लिम और सरकारी मुसलमानों ने मुग़ीरा बिन शोबा की जानिब से नज़राने मिलने और उसके हुक्म से यज़ीद की वली–अहदी की ताईद करने के लिए हज़रत अमीर मुआविया के पास पहुंच गए। यह तादाद में थोड़े थे। इस लिए उनकी बात पर कुछ तवज्जह नहीं दी गई। इधर अकसंरीयत उस मामले को अहलियाने मदीना मुनव्वरह के मशवरे और राय पर चलने की ताईद की। तो हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु बज़ाते ख़ुद मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ ले गए और यज़ीद की वली–अहदी के लिए मदीना वालों बिलख़ुसूस सहाबा किराम से मशवरा तलब किया। लेकिन उसमें भी उनको कोई ख़ातिर–ख़्वाह कामयाबी नहीं मिली। उसकी पूरी तफ़सील नाचीज़ की किताब के हिस्सा अव्वल में मुलाहिज़ा फ़रमाइए। इमामुल–मुहद्दिसीन हज़रत सैयदना शैख़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा इब्ने–जौज़ी से नकल फ़रमाते हैं कि जब सन् ६० हिजरी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शुरू हुआ तो यज़ीद पलीद ने उसमान बिन मुहम्मद बिन अबू-सुफ़ियान को जो उसका चचाज़ाद भाई था मदीना मुनव्वरह रवाना किया ताकि बाशिन्दगाने मदीना से यज़ीद की बैअ़त ले। उसमान ने अह्ले मदीना की एक जमाअत को यज़ीद के पास भेजा। जब यह जमाअत यज़ीद के पास से मदीना मुनव्वरह लौटी तो उसने यज़ीद की बुराईयां खुले आम ब्यान करना शुरू कर दीं। और उसकी बेदीनी, शराबनोशी और मम्नूआत के इरतिकाब और कुत्तों से खेलने का ज़िक्र किया। नीज़ दूसरी और उसकी बुराईयां मंज़रे आम पर ले आए तो अहलियाने मदीना ने उस जमाअत से यह हालात सुन कर यज़ीद की बैअ़त व ख़िलाफ़त से बेज़ार हो गए। उसी जमाअत में मुंज़िर नामी एक शख़्स थे। उन्होंने ख़ुदा की क़सम खाकर फ़रमाया कि यज़ीद ने मुझको एक लाख दिरहम दिए हैं लेकिन मैं सच्चाई को हाथ से जाने न दूंगा। सुनिए। यज़ीद शराबनोश और तारिके सौम व सलात है। नीज़ यही शख़्स इब्न-जौज़ी अबुल-हसन बदाहिनी से, जो सिक़ा रावी हैं, नक़ल करते हैं कि अहलियाने मदीना ने यज़ीद की अलामात फ़िस्क़ व फ़ुजूर के ज़ाहिर होने के बाद मिम्बर पर चढ़कर उसकी बैअ़त तोड़ दी। अब्दुल्लाह इब्न-उमरू बिन हफ़्स मख़ज़ूमी ने अपना अमामा सर से उतार कर कहा अगरचे यज़ीद ने मुझको सिला और इनाम दिया है। लेकिन वह ख़ुदा का दुशमन और दायमुस्सुकर है। मैंने उसकी बैअ़त तोड़ दी है, जैसे अपनी दस्तार सर से उतार ली है। फिर दूसरे उठे और उन्होंने अपनी जूती पांव से निकाल कर फेंक दी और कहा : मैंने यज़ीद की बैअ़त तोड़ दी है। यहां तक कि अमामों और जूतियों से मजलिस भर गई।

(जज़्बुल-क़ुलूब सफ़ा ३७)

ऐ यज़ीद के हमनवा ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी! देखिए यह हैं वह हज़रात जो यज़ीद के हम-ज़माना और उसके तमाम फ़ासिक़ाना हालात के चश्मेदीद गवाह। जो यज़ीद के बारे में अहलीयाने मदीना के सामने गवाही दे रहे हैं। क्या अब भी आप यज़ीद को बिल-इत्तिफ़ाक़ ख़लीफ़ा तस्लीम करने की अपनी हठधर्मी पर क़ायम रहेंगे ?

मुहद्दिसे जलील हज़रत अल्लामा इब्न-हजर मक्की अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं कि - यज़ीद के गुनाहों में हद दर्जा बढ़ जाने की वजह से अहलियाने मदीना ने उसकी बैअत तोड़ दी थी। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३३२)

मुहतरम क़ारिईन! अब आइए हम ख़ाइन ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उस बद–दियानती का पोस्ट मार्टम करें जो उन्होंने यज़ीद की वली–अहदी के लिए मुक़द्दमा इब्ने ख़ल्लदून की नातमाम इबारत पेश करके अवामुन्नास को धोखा और फ़रेब देने की नाकाम कोशिश की है कि यज़ीद की वली–अहदी पर जमहूर सहाबा का इत्तिफ़ाक़ था। हालांकि हक़ीक़त यह है कि जब हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लहु अन्हु ने यज़ीद को अपना वलीए अहद बनाने की तहरीक शुरू की तो बक़ौले इब्न–ख़लदून यज़ीद फ़ासिक़ व फ़ाजिर नहीं था। लेकिन जब यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर ज़ाहिर हो गया तो सहाबा किराम उसके बारे में मुख़्तलिफ़ुर्राय हो गए। किसी ने यज़ीद की बैअ़त तोड़कर उससे जंग करने का इरादा फ़रमा लिया और कुछ लोगों ने अपने आप को जंग से रोक कर ख़ामोशी इख़्तियार करने पर इकतिफ़ा किया ताकि आपस में झगड़ा फ़साद और ख़ून ख़राबा न हो। वह इसलिए ख़ामोश नहीं थे कि उनको यज़ीद की ख़िलाफ़त व हुकूमत तस्लीम थी। इब्ने ख़लदून लिखते हैं कि –

"और जब यज़ीद में फ़िस्क़ व फ़ुजूर की वह बातें पैदा हो गईं जो होनी थीं, तो सहाबा में उसके बारे में इख़्तिलाफ़े राय हो गया! बाज़ ने उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर की वजह से उसके ख़िलाफ़ खड़े हो जाने और उसकी बैअ़त तोड़ देने को ज़रूरी समझा। जैसा कि हज़रत इमाम हुसैन और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा और उनके मानने वालों ने किया। और बाज़ ने फ़ित्ना और बहुत ज़्यादा क़त्ल व ग़ारत के ख़तरात और उनकी रोक–थाम से इज्ज़ महसूस करते हुए इनकार कर दिया। क्योंकि उस वक़्त यज़ीद की क़ुव्वत व शौकत बनी उमैया की असबीयत थी।"

(मुक़द्दमा इब्ने ख़ललदून सफ़ा ३३५)

इस इबारत से साबित हो गया कि जिन सहाबा ने यज़ीद की बैअ़त की और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ न उठाई वह उसके ख़लीफ़ए बरहक़ होने की वजह से न था बल्कि फ़ित्ना व फ़साद और क़त्ल व ग़ारतगरी से बचने के लिए था। क्योंकि वह समझते थे कि अगर फ़ित्ना व फ़साद बढ़ गया तो उसका रोकना नामुम्किन हो जाएगा। लिहाज़ा उन्होंने रुख़्सत पर अमल किया। और इमाम हुसैन हक़ के लिए डट गए। और अपनी और अपने अहल व अयाल की जान क़ुर्बान करके अज़ीमत पर अमल–पैरा हुए।

इसके इलावा इससे भी ज़्यादा साफ़ दलील हम पेश करने जा रहे हैं जिससे खुले लफ़्ज़ों में यह बात साफ़ और वाज़ेह हो जाती है कि उस दौर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के तमाम लोगों के नज़दीक यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर बिल्कुल मुसल्लम था जिसके मुक़ाबले के लिए हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए। इब्ने ख़लदून लिखते हैं :

"और रहे इमाम हुसैन, तो जब यज़ीद का फ़िस्क़ व फ़ुजूर उसके ज़माना के सब लोगों पर ज़ाहिर हो गया तो कूफ़ा के मुहिब्बीने अहले–बैत ने इमाम हुसैन के पास पैग़ाम भेजा कि वह कूफ़ा तशरीफ़ ले आएं वह सब उनकी इताअत में (यज़ीद के मुक़ाबले में) खड़े हो जायेंगे। पस उस वक़्त इमाम हुसैन ने भी महसूस फ़रमा लिया कि यज़ीद के ख़िलाफ़ उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर की वजह से खड़े हो जाना मुतऐयन हो गया है। ख़ास तौर से उस शख़्स के लिए जिसे उस पर क़ुदरत हासिल हो जाए। हज़रत इमाम को अपनी ज़ात में उस क़ुदरत व क़ुव्वत और अहलीयत का ज़न्ने ग़ालिब पैदा हो गया था।"

मुहतरम हज़रात ! इन्साफ़ कीजिए। मज़कूरा बाला इबारात से बिल्कुल साफ़ वाज़ेह हो रहा है कि यज़ीद के फ़िस्क़ व फ़ुजूर में सहाबए किराम की दो राएं न थीं। बल्कि उसके ख़िलाफ़ खड़े होने में दो राय थी। और वह भी उसकी अहलीयत व ना–अहलीयत की बिना पर नहीं जबकि यज़ीद का फ़िस्क़ मुसल्लमए कुल था। इसलिए इमाम हुसैन यज़ीद के ख़िलाफ़ अपने अक़दाम में हक़ पर थे।

अब रहा सवाल कि जो लोग यह कहते हैं कि इमाम हुसैन की ग़लती थी कि एक इमामे आदिल, बादशाहे वक़्त के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई जिस से आप बाग़ी कहलाए। और उसकी सज़ा क़त्ल है। तो ऐसे गंदे ख़्यालात की तरदीद फ़रमाते हुए अल्लामा इब्ने ख़लदून तहरीर फ़रमाते हैं –

"क़ाज़ी अबू–बक्र बिन अरबी मालिकी ने अपनी किताब *'अल–अवासिम वल–क़वासिम'* में यह कह कर सख़्त ग़लती की है कि इमाम हुसैन अपने नाना जान की शरीअत के मुताबिक़ क़त्ल किए गए। ग़लती की वजह यह है कि शरीअत ने इमाम के ख़िलाफ़ खड़े होने वालों के लिये क़त्ल की जो सज़ा तजवीज़ की है वहां शर्त यह है कि वह इमाम आदिल हो। क़ाज़ी साहब ने उस शर्त को नज़र–अन्दाज़ करके सख़्त ठोकर खाई है। हालांकि हुसैन के ज़माने में मिल्लत की इमामत व सरदारी के लिए इमाम हुसैन से ज़्यादा आदिल व कामिल और मुस्तहिक़ और कौन हो सकता है ?"

(मुक़दमा इब्ने ख़लदून सफ़ा २४१)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मज़कूरा बाला इबारत से भी ज़्यादा वाज़ेह तौर पर हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमः फ़िक़्हे अकबर में फ़रमाते हैं : **व अम्मा मा तफ़ूह बाज़ुल जहलते मिन अन्नल हुसैन का न बागियन फ़वातिलिन इन द अहलिस्सुन्नः वल-जमाअः व लअल्ला हा ज़ामिन हिज़यानातिल ख़्वारिजे अनिल-जादः**
(शरह फ़िक़्हे अकबर सफ़ा ८७)

और यह जो बाज़ जाहिलों ने अफ़वाह उड़ा रखी है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बाग़ी थे। तो यह अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक बातिल है शायद यह ख़ारजियों की बकवास है जो सिराते मुस्तक़ीम से हटे हुए हैं।

इमाम मुल्ला अली क़ारी की इस इबारत से यह बात बिल्कुल ही वाज़ेह हो रही है कि जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को बाग़ी और यज़ीद पलीद को इमाम आदिल ख़लीफ़तुल–मुसलिमीन समझते हैं, उनका शुमार हरगिज़–हरगिज़ अहले सुन्नत में नहीं है बल्कि वह ख़ारजी यज़ीदी हैं।

नीज़ एक सवाल यह उठाया जाता है कि उन तमाम सहाबा–ए–किराम के बारे में क्या कहा जाए जिन्होंने यज़ीद के ख़िलाफ़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ नहीं दिया। तो इस सिलसिले में भी अल्लामा इब्न–ख़लदून ने अपने मुक़द्दमे में निहायत वज़ाहत के साथ तहरीर फ़रमा दिया है। पढ़िए अल्लामा इब्न–ख़लदून फ़रमाते हैं। **व अम्मा ग़ैरल हुसैनि मिनस्सहाबतिल्लज़ी न कानू बिल-हिजाज़े वश्शामे वल-इराके व मिनत्ताबिई न लहुम फ़राऊ इन्नल खुरू ज अला यज़ीदु व इन कान फ़ासिक़ा। ला यजूज़ु लिमा यन्शा अन्हु मिनल हरजे वद्दिमाअ फ़क़सिरू अन ज़ालि क वलम युबाएउल हुसैनु वला अनकरू अलैहि वला इस्मूहु लिअन्नहु मुजतहिदु व हु व उसवतुल-मुजतहिदी न वला यज़हबु बिकल ग़लत इन्न तक़ूलु बितासीमे हाउलाए बिमुख़ालिफ़तिल हुसैनु व कुऊदुहुम अन नसरिही लिअन्हु....................अन इजतिहादे मिन्हु।**

(मुक़द्दमा इब्न–ख़लदून सफ़ा २४१)

लेकिन इमाम हुसैन के इलावा बाज़ सहाबा व ताबईन जो हिजाज़ व शाम व इराक़ में से थे उनकी राय यह थी कि यज़ीद अगरचे फ़ासिक़ व ना–अहल है लेकिन क़त्ल व ख़ूंरेज़ी के बाइस उसके ख़िलाफ़ किसी तरह का अक़दाम सही नहीं है। इसी वजह से अमलन उन्होंने इमाम हुसैन का साथ नहीं दिया। वरना जहां तक इमाम हुसैन के अक़दाम का सवाल है

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उनके बरहक़ होने पर कभी उन्हों ने इन्कार नहीं किया और न उन्होंने इस सिलसिले में इमाम हुसैन को ख़ताकार, गुनहगार ठहराया। क्योंकि वह मुज़तहिद थे। मुजतहिद की शान यही होती है। और इस ग़लती से भी हमेशा–हमेशा के लिए बचना कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ न देने की वजह से सहाबा व ताबईन को गुनहगार कहो, क्योंकि उनका मोक़िफ़ भी इजतिहाद ही के नतीजे में था।

मुहतरम क़ारिईन! हमारे मज़कूरा बाला ब्यानात से यह बात बिल्कुल रोज़े रोशन की तरह अयां हो गई कि यज़ीद फ़ासिक़ व फ़ाजिर था और उसमें तमाम सहाबा किराम व ताबईने इज़ाम और अहलियाने हिजाज़ व शाम व बसरा का इत्तिफ़ाक़ था। अब उसमें किसी भी किस्म के शक की कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रह जाती है। नीज़ ख़लीफ़तुल–मुसलिमीन अपने रसूल का नायब होता है और उसी के हाथ में मुसलमानों का दीन और दुनिया होती है। और जब ख़लीफ़ा ही फ़ासिक़ होगा तो क़ौम का क्या हाल होगा ? हर ज़ी–अक़्ल शख़्स उस बात को अच्छी तरह समझ सकता है। इन ही सब बातों को मद्दे नज़र रखते हुए इमाम आली मक़ाम ने यज़ीद की फ़ासिक़ाना आदतों को ख़तम करने के लिए उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई जो उनके लिए फ़र्ज़ भी था। अब सवाल यह है कि क्या यज़ीद के फ़िस्क़ व फ़ुजूर और गंदे किरदार के बारे में किसी मोतबर व मुस्तनद तारीख़ी किताबों में कुछ मिलता है। तो यहा हम उसी किताब के हवाले से यज़ीद के गंदे किरदार को पेश कर रहे हैं जिसका ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह हवाला दिया है। अल्लामा इब्ने कसीर अपने किताब अल–बिदाय: वन्निहाय: में लिखते हैं – और बेशक रिवायत से यह बात साबित है कि यज़ीद आलाते लहव व लइब, शराबनोशी और सैर व शिकार के लिए अपने ज़माने में बहुत ज़्यादा मशहूर था। नौ उम्र लड़कों, गाने वाली दोशीज़ाओं और कुत्तों को अपने पास जमा रख़ता था। और सींग वाले लड़ाका मेंढो, सांडो और बन्दरों के दर्मियान लड़ाई का मुक़ाबला करवाता था। और हर दिन सुबह के वक़्त नशे में मख़मूर होता था। और बन्दरों को ज़ीन कसे हुए घोड़ों पर सवार करके दौड़ाता था। और बन्दरों और नौउम्र लड़कों को सोने की टोपियां पहनाता था। घोड़ों की दौड़ का मुक़ाबला करवाता था। और जब कोई बन्दर मर जाता था तो उसका सोग मनाता था। (अल–बिदाय: जिल्द ८ सफ़ा २३५)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अलावा अज़ीं हज़रत अल्लामा इब्ने कसीर यज़ीद के ख़साइले मज़मूमा तहरीर करते हैं कि **वका न फ़ीहे ऐज़न इक़बालु अलश्शहवाति व तर्के बाज़िस्सलवाति फ़ी बाज़िल औक़ाति व अमानतिहा फ़ी ग़ालिबिल औक़ाते** (अल–बिदायः जिल्द ८ सफ़ा २३०)यानी यज़ीद के अन्दर शहवतों और नफ़सानी ख़्वाहिशात का बहुत ज़्यादा मैलान था। और बाज़ औक़ात बाज़ नमाज़ छोड़ देता था। और वक़्त गुज़ार कर पढ़ना तो अकसर औक़ात रहता था।

मुहतरम क़ारिईन! इन्साफ़ से बताइए क्या ऐसे करतूत वाला शख़्स मिल्लते इस्लामिया का अमीर व ख़लीफ़ा हो सकता है ? और इमाम हुसैन ने ऐसे शहवत–परस्त, बे–नमाज़ी, शराबी शख़्स के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द फ़रमाई तो क्या वह हक़ पर नहीं थे? हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद के ख़िलाफ़ जो ख़ुरूज किया वह उसी की अपनी फ़िस्क़ व फ़ुजूर की गंदी आदतों और शहवाते नफ़सानी और शराब–नोशी की बिना पर था। जिस का सुबूत अभी आपने एक मोतमद व मुस्तनद मुअर्रिख़ के हवाले से पढ़ लिया है। अब आइए हम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुद दरियाफ़्त करें कि आपने यज़ीद के ख़िलाफ़ क्यों आवाज़ बुलन्द फ़रमाई ? तो आप इरशाद फ़रमाते हैं:

ऐ लोगो! बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी ज़ालिम बादशाह को देखे कि उसने अल्लाह की हराम करदा चीज़ों को हलाल ठहरा लिया है, अहदे इलाही को तोड़ रहा है, सुन्नते रसूल की मुख़ालिफ़त कर रहा है और अल्लाह के बन्दों के साथ ज़ुल्म और उदवान का मामला करता है और देखने वाले को उस पर क़ौलन या अमलन ग़ैरत नहीं आई। तो ख़ुदा का **यह** हक़ है कि उस बादशाह की जगह (दोज़ख़) में उसे डाल दे। मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि उन लोगों (यज़ीद और यज़ीदियों) ने शैतान की इताअत की, रहमान की इताअत छोड़ दी। फ़ित्ना व फ़साद बरपा कर दिया और हुदूदे इलाही को बेकार कर दिया, माले ग़नीमत में अपना हिस्सा ज़्यादा लिया। अल्लाह की हराम करदा बातों को हलाल और हलाल को हराम किया। लिहाज़ा मैं बनिसबत किसी और शख़्स के (यज़ीद और यज़ीदियों के ख़िलाफ़ जिहाद करने में) ज़्यादा हक़दार हूं। (तारीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ४८)

मुहतरम क़ारिईन! हज़रत इमाम आली मक़ाम के ख़ुतबे में ग़ौर फ़रमाइए।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आपने उस अज़ीम ख़ुतबा में यज़ीद के एक–एक करतूत को जमा फ़रमा दिया है मगर किसी यज़ीदी ने उन बातों की तरदीद नहीं कि जिससे साबित होता है कि यज़ीद और यज़ीदी उन तमाम बातों में मुलव्विस थे। ऐसी सूरत में क्या एक इमाम आदिल, मुत्तक़ी, परहेज़गार, नवासए रसूल, जन्नती नौजवानों का सरदार अपना मुक़द्दस हाथ यज़ीदियों के हाथ में दे सकता था ? यही वह रम्ज़ है जिसे हुज़ूर ग़रीब नवाज़ ने अपनी मशहूर रुबाई में ज़ाहिर फ़रमा दिया –

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन, दीं पनाह अस्त हुसैन
सरे दाद न दादे दस्त, दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इला ह अस्त हुसैन

अब आइए आपके सामने उलमाए माबाद के फ़ैसले पेश करूं जो यज़ीद के बारे में है। सुनिए और ग़ौर फ़रमाइए कि बाप के हालात को बेटे से ज़्यादा कौन जान सकता है। जब यज़ीद के लड़के मुआविया को यज़ीद के तख़्त पर बिठाया गया तो उन्होंने जो ख़ुतबा दिया वह मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह ने सवाइक़े मुहर्रक़ा में बग़ीर अबू मुख़न्नफ़ के हवाले के यूं तहरीर किया है :

यानी फिर मेरे बाप को हुकूमत दी गई, वह नालायक़ था। नवासए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लड़ा। उसकी उम्र कम कर दी गई और उसकी नस्ल तबाह कर दी गई। और वह क़ब्र में गुनाहों के वबाल में गिरफ़्तार हो गया। फ़िर रोया और कहा : हम पर सब से ज़्यादा गिरां उसकी बुरी मौत और बुरा ठिकाना है। उसने इतरते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल किया। शराब हलाल की और काबा को बरबाद किया। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३३६)

मुहक़्क़िक़ अलल–इतलाक़ हज़रत शैख़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः 'तकमीलुल–ईमान' में फ़रमाते हैं –

यज़ीद इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के होते हुए अमीर कैसे हो सकता है? और मुसलमानों का इज्मा उस पर किस तरह वाजिब आता है ? जबकि उस वक़्त सहाबए किराम और सहाबा की औलाद जो भी मौजूद थी उसकी इताअत से बेज़ारी का एलान कर चुके थे। मदीना मनव्वरह से चन्द लोग

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

उसके पास शाम में जब्र व इकराह से पहुंचाए गए। मगर यज़ीद के नापसंदीदा आमाल को देखकर वापस मदीना चले आए और आरज़ी बैअ़त को फ़स्ख़ कर दिया और उन लोगों ने बरमला कहा कि वह (यज़ीद) खुदा का दुशमन है, शराबनोशी करता है और तारिकुस्सलात है, ज़ानी और फ़ासिक़ है, महारिम से सोहबत करने से भी बाज़ नहीं आता।

(तकमीलुल–ईमान सफ़ा २६२)

मुहतरम हज़रात! मज़कूरा बाला तमाम हक़ाइक़ मुस्तनद व मोतमद मुअर्रिख़ीन व मुसन्निफ़ीन के हवालों से पेश किए गए हैं। उसके बावजूद नासबी ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी अपने पेशवा यज़ीद की सफ़ाई ब्यान करते हुए लिखता है कि –

"ख़लीफ़ा यज़ीद के किरदार में कोई ख़ामी या बुराई ऐसी न थी कि उसके ख़िलाफ़ ख़ुरूज का कोई जवाज़ निकाला जा सकता।"

(आओ मुहर्रम की...... सफ़ा २८)

इस इबारत को पेश करके ज़ुहूर अहमद इस बात की नाकाम कोशिश कर रहा है कि जब यज़ीद में किसी क़िस्म की कोई ख़ामी या बुराई नहीं थी तो इमाम हुसैन ने जो यज़ीद के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया वह बिल्कुल ग़लत और बग़ावत पर मबनी था।

हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि हक़ाइक़ हमने पीछे ब्यान किए हैं और यहां ब्यान करने जा रहे हैं। इन तमाम से यह साबित है कि इमाम हुसैन का यज़ीद की बैअ़त से इन्कार उसके फ़िस्क़ व फ़ुजूर की वजह से था और ज़ालिम यज़ीद की हुकूमत का जो तसल्लुत हो गया था, उसको दफ़ा करने और मुसलमानों को यज़ीद के ज़ुल्म व सितम से बचाने के लिए था। चुनांचे हज़रत शाह अब्दुल–अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी जो हर मक्तबा–ए–फ़िक्र के लिए मुसल्लम शख़्सीयत हैं, फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ुरूज (यज़ीद के ख़िलाफ़) ख़िलाफ़ते राशिदा के दावे की बिना पर न था। क्योंकि वह तीस साल गुज़रने पर ख़त्म हो चुकी थी। बल्कि आप की ग़र्ज़ रियाया को एक ज़ालिम (यज़ीद) के हाथ से निजात दिलाने की बिना पर था। ज़ालिम के मुक़ाबले में मज़लूम की मदद करना वाजिब है। और यह जो मिशकात शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बादशाहे वक़्त और उसके ख़िलाफ़ खड़े होने से मना फ़रमाया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

है; ख़्वाह वह ज़ालिम ही क्यों न हो, यह उस वक़्त के लिए कि वह ज़ालिम बादशाह बिला किसी झगड़े और मुज़ाहमत के पूरा–पूरा तसल्लुत हासिल करे और उसके तसल्लुत में किसी को झगड़ा न हो और कोई उसका मुज़ाहिम न हो। और यहां अभी तक अह्ले मदीना व अह्ले मक्का व अह्ले कूफ़ा यज़ीद पलीद के तसल्लुत से राज़ी न थे। हज़रत इमाम हुसैन व अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास और अब्दुल्लाह इब्न–उमर और अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे हज़रात ने उसकी बैअ़त ही नहीं की थी। हासिले कलाम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ुरूज यज़ीद के ज़ालिमाना तसल्लुत के दफ़ा करने के लिए था, न उसका तसल्लुत रफ़ा करने के लिए। यानी यह अम्र न था कि यज़ीद का कामिल तसल्लुत हो गया था। और आपका यह मक़सूद था कि उसका तसल्लुत उठा देवें। वह ख़ुरूज जो हदीस में मम्नू है वह वही है जो ज़ालिम बादशाह का तसल्लुत रफ़ा करने के लिए हो। और दफ़ा और रफ़ा में जो फ़र्क़ है वह मसाइले फ़िक़्हीया में ज़ाहिर व मशहूर है। (फ़तावा अज़ीज़ी सफ़ा ४३)

इसी तअल्लुक़ से अब हम आपके सामने देवबन्दी जमाअत के बड़े–बड़े मौलवी हज़रात के फ़तवे पेश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए –

देवबन्दी जमाअत के हकीमुल–उम्मत अशरफ़ अली थानवी अपने फ़तावे में तहरीर करते हैं : यज़ीद फ़ासिक़ था और फ़ासिक़ की विलायत मुख़्तलफ़–फ़ीह है। दूसरे सहाबा ने जायज़ समझा। हज़रत इमाम ने नाजायज़ समझा, और गो इकराह में इनक़ियाद जायज़ था मगर वाजिब न था; और मुतमस्सिक बिल–हक़ (हक़ के साथ) होने के सबब यह मज़लूम थे और मक़तूल मज़लूम शहीद होता है। शहादत ग़ज़वा के साथ मख़्सूस नहीं। बस हम उसी बिनाए मज़लूमियत पर उनको (हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु) शहीद मानेंगे। बाक़ी यज़ीद को उस क़िताल में इस लिए माज़ूर नहीं कह सकते कि वह मुज्तहिद से अपनी तक़लीद क्यों कराता था? ख़ुसूसन जबकि हज़रत इमाम आख़िर में फ़रमाने भी लगे थे कि मैं कुछ नहीं कहता। उसको अदावत ही थी। चुनांचे इमाम हुसैन के क़त्ल की बिना यही थी। और मुसल्लत की इताअत का जवाज़ अलग बात है मगर मुसल्लत होना कब जायज़? ख़ुसूस ना–अहल को। इस पर ख़ुद वाजिब था कि माज़ूल हो जाता। फिर अह्ले हल्ल व अक़्द किसी को ख़लीफ़ा बनाते। (इमदादुल–फ़तावा जिल्द ४ सफ़ा ४६५ मतबा देवबन्द)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि यज़ीद फ़ासिक़ था।

(फ़तावा रशीदिया जिल्द १ सफ़ा ७)

मौलवी क़ारी तैयब साहब मुहतमिम दारुल–उलूम देवबन्द, लिखते हैं : बहरहाल यज़ीद के फ़िस्क़ व फ़ुजूर पर जबकि सहाबा किराम सब के सब ही मुत्तफ़िक़ हैं। ख़्वाह मुबाएईन हों या मुख़ालिफ़ीन। फिर अइम्मा मुज्तहिदीन भी मुत्तफ़िक़ हैं; और उनके बाद उलमाए रासिख़ीन, मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा मिस्ल अल्लामा क़ुस्तलानी, अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी, अल्लामा हैतमी, अल्लामा इब्ने–जौज़ी, अल्लामा सादुद्दीन तफ़ताज़ानी, मुहक़्क़िक़ इब्न –हमाम, हाफ़िज़ इब्न–कसीर, अल्लामा अलकियल हरासी जैसे मुहक़्क़िक़ीन यज़ीद के फ़िस्क़ पर उलमाए सलफ़ का इत्तिफ़ाक़ नक़ल कर रहे हैं और ख़ुद भी उसके क़ायल हैं तो उस से ज़्यादा यज़ीद के फ़िस्क़ के मुत्तफ़िक़ होने की शहादत और क्या हो सकती है ?

('शहीदे करबला और यज़ीद' सफ़ा १५२ मतबा दारुल–किताब, देवबन्द)

मुअर्रिख़े तारीख़े इस्लाम मौलाना अकबर शाह नजीबाबादी अपनी किताब तारीख़े इस्लाम में यज़ीद की वली–अहदी और उसको ख़लीफ़ा बनाने के मुतअल्लिक़ लिखते हैं कि मुग़ीरा बिन शोबा ने जब यज़ीद की वली–अहदी के लिए तहरीक पेश की तो उसी वक़्त से मदीना मुनव्वरह में मुख़ालफ़त शुरू हो गई थी। और यह ख़िलाफ़ते राशिदा की सुन्नत के ख़िलाफ़ और इस्लामी जमहूरियत के मनाफ़ी था। फिर चन्द सतर के बाद लिखते हैं कि जब अमीर मुआविया ने यज़ीद की वली–अहदी के लिए अपने गवर्नरों के नाम एक हुक्म जारी किया तो सभों ने उसकी मुख़ालफ़त की। मुहम्मद बिन अमरू बिन हज़म ने खड़े होकर कहा अमीरुल–मोमिनीन! आप यज़ीद को ख़लीफ़ा तो बना रहे हैं, लेकिन ज़रा उस पर भी ख़्याल फ़रमा लें कि क़यामत के दिन आपको इस फ़ेल का ख़ुदाए तआला के सामने जवाब देह होना पड़ेगा।

मुहम्मद बिन अमरू बिन हज़म के इन अल्फ़ाज़ से अन्दाज़ा होता है कि अवाम भी यज़ीद की वली–अहदी से ख़ुश नहीं थे। मज़ीद लिखते हैं कि यज़ीद ने इस मन्सब को हासिल करने के बाद अपने आपको ख़िलाफ़त का अहल साबित नहीं किया। और जब हज़रत इमाम को उसकी वली–अहदी की ख़बर मिली तो ऐसी मुक़द्दस हस्ती उसके हाथ पर कैसे बैअत कर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सकती थी। क्योंकि अव्वल तो उसका इन्तिख़ाब ही ग़ैर–शरई तरीक़े पर हुआ और उसकी हुकूमत ग़ैर शरई थी। दूसरे यह कि वह अपने आमाल व किरदार से भी इस क़दर गिरा हुआ था कि हमेशा लह्व व लइब, सैर व शिकार में मसरूफ़ रहता। ख़्वाजा–सराओं को उसने अपनी ख़िदमत पर मामूर किया था। रक़्स व सुरूर की महफ़िलों में बेमहाबा शरीक होता था। यह और इस क़िस्म के बहुत से उयूब उसमें थे। वह किसी भी तरह इस क़ाबिल नहीं था कि उसे एक मिनट के लिए मुसलमानों का ख़लीफ़ा या सरदार तसलीम किया जाए। (तारीख़े इस्लाम क़िस्त ५ सफ़ा १७३ ता सफ़ा १७६)

दारुल–उलूम नदवतुल–उलमा के फ़ारिग़ुत्तहसील आलिम मौलाना शाह मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब 'तारीख़े इसलाम' में लिखते हैं कि यज़ीद एक लाउबाली शख़्स था और मदीना मुनव्वरह, बसरा और मुख़्तलिफ़ मक़ामात के वफ़ूद ने हज़रत अमीर मुआविया के सामने यज़ीद को वली–अहद बनाने की राय न दी थी। लेकिन उसके बावजूद कुछ लोगों को डरा धमका और रुपयों का लालच देकर यज़ीद की बैअ़त ली गई। यज़ीद की वली–अहदी ने ख़िलाफ़त की रूह और इसलामी हुर्रीयत व आज़ादी का ख़ातमा कर दिया।

('तारीख़े इस्लाम' जिल्द दोम सफ़ा २० ता ३४)

बानीए जमाअते इस्लामी मौलाना अबुल–आला मौदूदी लिखते हैं कि यज़ीद की वली–अहदी और फिर उसकी तख़्तनशीनी से दरअसल जिस ख़राबी की इब्तिदा हो रही थी वह इसलामी रियासत के दस्तूर और उसके मिज़ाज और उसके मक़सद की तबदीली थी। इसी तबदीली को इमाम हुसैन की दूर–रस निगाहों ने देख लिया था। उसको सही इसलामी उसूल पर लाने के लिए ही इमाम ने अपनी जान तक दे देने का फ़ैसला किया।

(ख़िलाफ़त व मुलूकियत)

नोट : इन फ़तावे और इबारात को नक़ल करने का असल मक़सद यह है कि मालूम हो जाए कि थानवी साहब, गंगोही, क़ारी तैयब और मौदूदी साहिबान के नज़दीक यज़ीद की क्या हैसियत है ? और आज बाज़ देवबन्दी तब्लीग़ी कहलाने वाले यज़ीद को क्या समझ रहे हैं और उसको जन्नती, मग़्फ़िरत–याफ़्ता और न जाने क्या–क्या लिख रहे हैं ताकि वह अपने अक़दाम से तौबा करें।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुहतरम क़ारिईन! यह था यज़ीद की ख़िलाफ़त व इमारत का इस्तसवाब और इन्तिख़ाब। इस पर किसी तबसिरा व नतीजा के पेश करने की ज़रूरत नहीं है। अहले इल्म इन्साफ़ पसंद हज़रात ख़ुद ही फ़ैसला कर लेंगे कि ज़ुहूर अहमद का यह कहना कि यज़ीद की ख़िलाफ़त पर क़वानीने शरईया के मुताबिक़ तमाम सहाबा और जमहूर मुसलिमीन का ऐसा इत्तिफ़ाक़ था कि कोई उसके ख़िलाफ़ न था, कहां तक दुरुस्त है?

शिद्दते ग़म से छलक आए हैं आंसू वरना
मुद्दआ मेरा नहीं आप से शिकवा करना

सवाल ३ : क्या यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कह सकते हैं ? और क्या उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखना अज़रूए शरा जायज़ है?

जवाब : यज़ीद एक शराबी, ज़ानी और बद–किरदार शख़्स था उस को अमीरुल–मोमिनीन कहना जायज़ नहीं है। लेकिन फिर भी ख़ाइन ज़ुहूर अहमद और बांदी अपनी किताब में जगह–जगह यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन और उसके नाम के आगे रहमतुल्लाह लिखने की नापाक जसारत की है। हालांकि तारीख़ की मोतबर किताबों में दर्ज है कि मुजद्दिदे अव्वल हज़रत सैयदना उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने किसी शख़्स ने यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कह दिया तो आपने उसे बीस कोड़े मारने का हुक्म दिया।

असल इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाइए : **वक़ा ल नौफ़ल बिन अबिल फ़ुरात कुन्तु इन द उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ फ़ज़कुरू रजुलिन यज़ीद फ़क़ाल क़ा ल अमीरुल-मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया फ़क़ा ल तक़ूलु-अमीरुल मोमिनीन? फ़अम र बिही फ़ज़ुरिब इशरीन सौतन**

(सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३३२)

हज़रत नौफ़ल बिन फ़ुरात फ़रमाते हैं कि मैं उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ की बारगाह में हाज़िर था। बस एक शख़्स ने यज़ीद का ज़िक्र किया। उसे अमीरुल–मोमिनीन कह दिया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उसे डांटा और फ़रमाया कि तू यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कहता है। फिर आप के हुक्म से उसको बीस कोड़े मारे गए।

मुहतरम क़ारिईन! हज़रत उमर बिन् अब्दुल–अज़ीज़ बनी–उमैया यानी उमवी ख़ानदाने के चश्म व चिराग़ हैं। मगर तबीयत पर दीन ग़ालिब है तो

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन कहना भी बर्दाशत न कर सके और बतौरे सज़ा क़ाइल को बीस कोड़े लगवाए। आज के इस पुर फ़ितन दौर में यज़ीद को अमीरुल–मोमिनीन, मुत्तक़ी व परहेज़गार कहने वाले को कौन कोड़े मारे? काश! हज़रत सैयदना उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ जैसा कोई मुत्तक़ी, परहेज़गार मुजद्दिद होता जो ज़ुहूर अहमद कर्शी को कोड़े लगवाता तो उसके होश ठिकाने आ जाते।

मुहतरम क़ारिईन! आप ज़रा ठंडे दिल से ग़ौर फ़रमाइए कि यज़ीद को सिर्फ़ अमीरुल–मोमिनीन कहने पर हज़रत उमर बिन अब्दुल–अज़ीज़ ने बीस कोड़े लगवाए। अगर वह यज़ीद को रहमतुल्लाह अलैह कहता तो कितनी बड़ी सज़ा का मुस्तहिक़ होता। अलावा अज़ीं यज़ीद बिन मुआविया ही वह शख़्स है जिसके बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेशीनगोई फ़रमाई कि **अव्वलु मैंय युबद्दिलु सुन्नती रजुलुममिम बनी उमै य़्र त युक़ालु लहू यज़ीद** (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३३१)

यानी मेरी सुन्नत को बदलने वाला पहला शख़्स बनी–उमैय्या से होगा जिसको लोग 'यज़ीद' कहा करेंगे। ग़ौर फ़रमायें जिसके मुतअल्लिक़ ख़ुद पैग़म्बरे इसलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़बर दे दें कि यह मेरी सुन्नत को बदलने वाला है वह मुत्तक़ी परहेज़गार और अमीरुल–मोमिनीन कैसे हो सकता है ? नीज़ यज़ीद के सर पर नवासए रसूल को शहीद करने, मदीना पर लशकर–कुशी करके वहां के बाशिन्दों की बेइज़्ज़ती और तौहीन करने, मक्का मुकर्रमा पर लशकर–कुशी करके ख़ाना काबा पर पत्थरों की बारिश और ग़िलाफ़े काबा को जलाने, शरीअत की हराम करदा चीज़ों को जायज़ करने और ख़ुद भी हराम का इर्तिकाब करने, शराब नोशी, ज़िना जैसे घिनावने जुर्म का इरतिकाब गुनाह नहीं है ? इतना सब कुछ होने के बावजूद अब आप ख़ुद फ़ैसला कर लीजिए कि क्या ऐसे किरदार का इन्सान मुत्तक़ी, आदिल, और ख़लीफ़ए बरहक़ अमीरुल–मोमिनीन हो सकता है? और क्या ऐसे शख़्स के आगे रहमतुल्लाह अलैह लिख सकते हैं?

आओ, अब इन तमाम बातो को मद्दे नज़र रखते हुए अपने गुमराह– कुन अक़ायद और तहरीर से तौबा कर लो। अल्लाह तआला अपने महबूबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से माफ़ फ़रमाएगा। वरना कल क़यामत के दिन प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुज़ूर क्या जवाब देंगे ?

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सवाल ४ : क्या हुसैनी क़ाफ़िले पर सात मुहर्रम से दरियाए फ़ुरात का पानी बन्द किया जाना झूठ और इफ़तरा पर मबनी है ?

जवाब : नहीं हरगिज़ नहीं। बल्कि तारीखी किताबों में बड़ी ही तफ़सील के साथ यह लिखा हुआ है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके साथ आने वाले हर मर्द व औरत और मासूम बच्चों पर यज़ीदियों ने सात मुहर्रम से पानी बन्द कर दिया था और यह सिलसिला दस मुहर्रम तक क़ायम रहा। उसके बावजूद इब्न–यज़ीद ख़ाइन मुअल्लिफ़ ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में लिखता है कि –

"यह बात अकसर शहादत–नामों और करबला की दास्तानों का ख़ासुल–ख़ास मौज़ू है कि हुसैनी क़ाफ़िला पर तीन दिन तक पानी बन्द कर दिया गया; औरतें और मासूम बच्चें एक–एक बूंद पानी को तरस्ते रहे; यह बात भी सिरे से ग़लत है।" (आओ मुहर्रम..............सफ़ा ४६)

मज़कूरा बाला इबारत को बग़ौर पढ़ें जिसमें कहा गया कि इमाम आली मक़ाम पर तीन दिन तक पानी बन्द किया जाना यह शहादत–नामों का मौज़ू है जो सिरे से ग़लत है। हालांकि ऐसा नहीं है बल्कि इस बात को मुहक़्क़के मुहद्दिसीन किराम, मोतबर मुअर्रिख़ीन और मुअज़्ज़ उलमाए किराम व औलियाए इज़ाम ने इस बात को तहरीर किया है। उलमाए देवबन्द व नदवा ने भी उस बात को तहरीर किया है। हम क़दरे तफ़सील के साथ हवालजात की रौशनी में इस बात को साबित कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए और यज़ीदी ख़ाइन मुअल्लिफ़ की बद–दियानती का पर्दा चाक फ़रमाइए। जलीलुल–क़द्र मुहद्दिस हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की अलैहिर्रहमः सवाइक़े मुहर्रक़ा में फ़रमाते हैं।

अगर वह लोग तदबीर के ज़रिए आपके और पानी के दरम्यिान हायल न हो जाते तो आप पर बिल्कुल क़ाबू न पा सकते। क्योंकि आप ऐसे बहादुर सरदार हैं जो न अपनी जगह से हटाए जा सकते हैं और न हिलाए ज़ा सकते हैं। जब आपको और आप के साथियों को तीन दिन तक पानी से रोके रखा गया तो आपसे बाज़ यज़ीदियों ने कहा : गोया कि पानी आसमान के बीच में है। उससे एक क़तरा भी न चखोगे, यहां तक कि प्यासे ही मर जाओगे। (अस्सवाइकुल मुहर्रक़ा सफ़ा २६६)

ऐ इब्न–यज़ीद! यह है एक मुहद्दिस की रिवायत जो ऊपर तहरीर की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

गई। अब मत कहना कि हज़रत इमाम हुसैन और आपके साथियों पर पानी बंद करने की फ़र्ज़ी रिवायतें शहादत—नामों में गढ़ ली गई हैं। अगर उसके बावजूद तुम्हारा इन्तिक़ाम और दुशमनिए इमाम हुसैन कम नहीं हुई तो लीजिए चन्द और मज़ीद हवाले जो तारीख़े इस्लाम के सफ़हात पर रोज़े रौशन की तरह बिल्कुल अयां और साफ़ नज़र आ रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए —

मशहूर मुअर्रिख़ हज़रत अल्लामा इब्ने असीर **'तारीख़े कामिल'** में फ़रमाते हैं कि तुम हुसैन और उनके साथियों से यज़ीद की बैअ़त लो और अगर वह बैअ़त कर लें तो फिर देखा जाएगा कि क्या करें ? और हुसैन और उनके साथियों पर पानी भी बन्द कर दो। चुनांचे अमरू बिन साद ने अमरू बिन हज्जाज की हमराही में पांच सौ सवारों को नहरे फ़ुरात पर मुतय्यन कर दिया। चुनांचे यह लोग फ़ुरात और इमाम हुसैन के दरम्यान हाइल हो गए। और यह वाक़िआ इमाम की शहादत से तीन रोज़ पहले का है। यानी सात मुहर्रम को पानी बन्द किया गया। (तारीख़े कामिल सफ़ा ५३)

रईसुल—मुअर्रिख़ीन अल्लामा अब्दुर्रहमान इब्न—ख़लदून फ़रमाते हैं कि इब्न—ज़्याद ने लिखा कि हुसैन से यज़ीद की बैअ़त लो। अगर वह बैअ़त कर लें तो जो मुनासिब होगा, किया जाएगा। अगर इन्कारे बैअ़त करें तो बेतअम्मुल जंग करो और उन पर और उनके हमराहियों पर पानी बन्द कर दो। पस उमरू बिन साद उमरू बिन हज्जाज को बसर गिरोही पांच सौ सवारों के नहरे फ़ुरात पर मुतय्यन किया। चुनांचे यह लोग फ़ुरात और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के दरम्यान हाइल हो गए। यह वाक़िआ आप की शहादत से तीन रोज़ क़बल का है।

(तारीख़े इब्ने ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा १०२)

अल्लामा इब्ने जरीर तबरी फ़रमाते हैं कि इब्न—ज़्याद ने उमरू बिन साद को ख़त लिखा कि नहरे फ़ुरात और हुसैन के दरम्यान हाइल हो जा। और एक बूंद पानी भी वह पी न सकें। जो सुलूक कि तक़ी ज़की मज़लूम अमीरुल—मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ किया गया था। उस ख़त को देखकर उमरू बिन साद ने फ़ौरन उमरू बिन हज्जाज को पांच सौ सवारों का सरदार करके रवाना किया। यह लोग नहर पर जाकर ठहरे। नहरे फ़ुरात और इमाम हुसैन और आपके असहाब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

के दरम्यान हाइल हो गए कि वह बूंद भर पानी इससे न पीने पायें। यह वाकिआ आपके कत्ल से तीन दिन पहले का है। आपके सामने अब्दुल्लाह इब्न–हुसैन आया और पुकार कर कहा : ऐ हुसैन! (रज़ियल्लाहु अन्हु) ज़रा पानी की तरफ़ देखो कैसा आसमानी रंग उसका भला मालूम होता है। वल्लाह! तुम प्यासे मर जाओगे। एक क़तरा भी तुमको न मिलेगा।

(तारीखे तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३८ मतबा इदारतुत्तबलीगे दीन, देवबन्द)

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत व शहादत का सबसे मुस्तनद तज़किरा यह जुमला इस अरबी किताब के लिए लिखा हुआ है जिस का नाम **"अल-हुसैन"** है। इस किताब के मुअल्लिफ़ जनाब अबुन्नसर लेबनान के एक नामवर फ़ाज़िल हैं। अपनी किताब को मुस्तनद बनाने के लिए आप लिखते हैं कि मैंने इस अम्र की पूरी कोशिश की है कि वही वाकिआत दर्ज करूं जिनकी ताईद सिक़ा मुवर्रिख़ीन और मशहूर व मारूफ़ मुअल्लिफ़ीन ने की है। इसी **'अल-हुसैन'** नामी किताब में तहरीर है कि उमरू बिन सांद ने ७ मुहर्रम को पांच सौ सवार दरियाए फ़ुरात पर भेज दिए और उन्हें ताकीद कर दी कि हज़रत हुसैन और उनके साथियों तक पानी का एक क़तरा भी न पहुंचने पाए। (अल–हुसैन सफ़ा ११६)

क़ारिईने किराम! अब हम आपके सामने एक ऐसी किताब का हवाला दर्ज करने जा रहे हैं जो इब्न–यज़ीद ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी का हमअक़ीदा यानी नदवी, देवबन्दी है जिनका न है मौलाना शाह मुईनुद्दीन नदवी यह अपनी किताब 'सियरुस्सहाबा' जिल्द शशुम में तहरीर करते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और आपके साथियों पर यज़ीदियों ने सात (७) मुहर्रम से पानी रोक दिया।

(सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफ़ा १४६)

मुहतरम क़ारिईन ! इमाम आली मक़ाम और आपके तमाम साथियों पर सात (७) मुहर्रम ता दस (१०) मुहर्रम पानी बन्द किए जाने की रिवायत को हमने मुहद्दिस जलील अल्लामा इब्न–हजर अस्क़लानी और मोतबर व मुस्तनद मुअर्रिख़ीन के हवाले से नक़ल कर दी है जिसे हर मकतबए फ़िक्र के उलमा तसलीम करते हैं। इसके बावजूद यह लिखना की इमाम पर पानी बन्द करने की रिवायत बिल्कुल ग़लत है। यह कितनी बड़ी जिहालत, हठधर्मी और यज़ीद नवाज़ी है। क्या मैदाने महशर में जब साक़िए कौसर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उन तमाम यज़ीदियों को पेश किया जाएगा जिन्होंने आपके लाडले नवासे पर तीन रोज़ तक लगातार पानी बन्द किया था तो उस वक़्त रसूले करीम के इस्तिफ़सार पर उनके पास क्या जवाब होगा? अब अगर सच्चे दिल से तौबा करके अपनी मनगढ़त तहरीरों से रुजू कर लें तो इन्शाअल्लाह तआला अल्लाह तआला ज़रूर माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह तआला अपने हबीब पाक साक़िए कौसर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल उन यज़ीद–नवाज़ों को अक़्ले सलीम और सही इल्म अता फ़रमाए कि यह हमेशा–हमेशा के लिए हिमायते यज़ीद के अपने गंदे अक़ीदे से महफ़ूज़ व मामून हो जाएं।

सवाल ५ क्या इमामे आली मक़ाम दस मुहर्रम को करबलाए मुअल्ला पहुंचे ?

जवाब : यह बिल्कुल ग़लत और झूठ है कि हज़रत इमाम आली मक़ाम दस मुहर्रम को करबला पहुंचे। बल्कि अगर तारीख़ी किताबों का बग़ौर मुताला किया जाए तो यह हक़ीक़त बिल्कुल अयां हो जाएगी कि इमाम आली मक़ाम दो (२) मुहर्रमुल हराम को करबला पहुंचे। जैसा कि तारीख़े तबरी, इब्न–ख़लदून, इब्न–असीर और इब्न–कसीर–जैसे मोतबर व मुस्तनद मुअर्रिख़ीन की तारीख़ी किताबों से ज़ाहिर है।

लेकिन इब्न–यज़ीद ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में एक उनवान "क्या हुसैनी क़ाफ़िला सात दिन करबला में ठहरा ?" क़ायम करके इस बात को बड़ी ही होशियारी और चालाकी से करबला की तारीख़ी हैसियत को ख़तम करने की एक मज़मूम कोशिश की है। और इन्तिहाई चालाकी से इस बात को पेश करने की सई की है कि क्या इमाम आली मक़ाम हज जैसा अहम फ़रीज़ा छोड़कर सिर्फ़ ख़िलाफ़त के लिए कूफ़ा चले गए ? तो हज़रत इमाम हुसैन जैसे ज़ी–मरतबत शख़्स से कैसे तवक़्क़ो की जा सकती है कि वह बग़ैर हज किए ही एक दिन क़बल कूफ़ा रवाना हो गए होंगे? दूसरी बात यह कि कूफ़ा और मक्का की मसाफ़त को देखते हुए १० मुहर्रम तक हुसैनी क़ाफ़िले का इतना तवील फ़ासला दूर–दराज़ मनाज़िल और मराहिल को तय करके पहुंच जाना बिल्कुल लग्व और ग़लत है। ('आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें' सफ़ा ४२)

मुहतरम क़ारिईन! ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी ने यह कोई नई तहक़ीक़

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

और एतराज़ पेश नहीं किया है कि हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु हज किए बग़ैर ही मक्का मुकर्रमा से रवाना हो गए। बल्कि यह महमूद अब्बासी जैसे दुशमने रसूल व अहल–बैत अतहार की ज़ेहनी इख़तिरा है जिसे उसने किताब **'ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद'** में पेश किया था। ज़ुहूर अहमद ने इसी किताब से चोरी करके अपने नाम से शाए कर दिया।

बिला शुब्ह: अवाम जज़्बात से मग़लूब होकर यह बात बड़ी आसानी से तसलीम कर लेंगे कि ऐय्यामे हज के बिल्कुल क़रीब ही इमाम हुसैन बग़ैर हज किए रवाना हो गए तो आख़िर इतनी जल्दी क्या थी ? मगर अहले इल्म उस बात को ख़ूब अच्छी तरह जानते और समझते हैं कि फ़र्ज़ की अहमीयत नफ़्ल की बनिस्बत ज़्यादा होती है। इमाम आली मक़ाम इससे पहले २५ हज कर चुके थे।

('सियरुस्सहाबा' मुईनुद्दीन नदवी जिल्द ६ सफ़ा १६१)

इसलिए हज़रत इमाम के लिए यह हज नफ़्ल हो रहा था। दूसरी तरफ़ अहले कूफ़ा का इसरार शदीद और यज़ीद के फ़िस्क़ व फुजूर से जल्द–अज़–जल्द नजात के लिए हज़रत इमाम की पूरी–पूरी इमदाद व तआवुन की यक़ीन दहानी – यह सब बातें ऐसी थीं कि हज़रत इमाम के लिए यह लाज़िम बल्कि वाजिब हो गया था कि मख़्लूक़े ख़ुदा को एक ज़ालिम व जाबिर के ज़ुल्म व इस्तबदाद से छुड़ाएं। अगर हज़रत इमाम ऐसा न करते तो इन्दल्लाह माख़ूज़ होते।

किसी तारीख़ी बात के लिए यह कहना कि ऐसा हुआ होगा। ऐसा होना चाहिए। यह तहक़ीक़ नहीं है और न ही तारीख़ दानी है बल्कि तारीख़ गढ़ना है। और ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी ने किसी मोतबर व मुस्तनद तारीख़ से यह बात साबित भी नहीं कि इमाम आली मक़ाम हज से फ़ारिग़ हो कर मक्का मुकर्रमा छोड़ कर रवाना हुए। इसके बरख़िलाफ़ यह मोतबर रिवायत है कि इमाम आली मक़ाम ३ या ८ ज़िल–हिज्जा को मक्का मुकर्रमा से रवाना हुए।

बिलफ़र्ज़ अगर ज़ुहूर अहमद की इस मन्तिक़ को मान लिया जाए कि इमाम हुसैन दस (१०) ज़िलहिज्जा को हज करके रवाना हुए तो फिर दूसरे दिन ग्यारह बारह ज़िलहिज्जा को कंकरियां मारना हज के वाजिबात में से है, अगरचे हज नफ़्ल हो, ग्यारह बारह की रमी वाजिब है। इमाम आली

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मक़ाम अगर हज करते तो सिर्फ़ नफ़्ल का तर्क लाज़िम आता। और हज शुरू कर के ग्यारह–बारह की रमी छोड़ने में तर्के वाजिब लाज़िम आएगा। यह कहां की अक़्लमंदी है कि तर्के नफ़्ल से बचने के लिए तर्के वाजिब के वबाल में मुब्तला हों। लिहाज़ा आपकी जुग़राफ़ियाई रीसर्च और मक्का से करबला तक की मसाफ़त तीस मन्ज़िलों तक होने वाली मन्तिक़ से इमाम आली मक़ाम को १२ ज़िलहिज्जा को मक्का से रवाना होकर १२ मुहर्रम को यानी हादसा करबला गुज़र जाने के २ रोज़ बाद करबला पहुंचना चाहिए था। चलिए छुट्टी हो गई कि हादसए करबला से इमाम हुसैन और आपके रुफ़क़ा–ए–किराम का वुजूद ही ग़ायब हो गया। तो फिर करबला में किसकी शहादत हुई और कब हुई ? यह साबित करना पड़ेगा। क्या ज़ुहूर अहमद आप बता सकते हैं ?

क़ारिईने किराम! अब आइए हम ख़ुद इमाम आली मक़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु ही से पूछ लें कि ऐ इब्न–रसूल! आपने हज से चन्द यौम पहले ही मक्का मुकर्रमा से क्यों कूच फ़रमा लिया और हज़ जैसे अहम फ़रीज़े को छोड़ दिया। तारीख़ की अहम किताब जिसका हवाला ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह दिया है उसमें यह सवाल और उसका जवाब दोनों मौजूद है। मुलाहिज़ा फ़रमाइए –

फ़रज़ूक़ शायर ने कहा – सन् ६० हिजरी मैं अपनी वालिदा को लेकर हज के लिए मक्का आया। हज का वक़्त क़रीब था। मैं हरम में दाख़िल हुआ तो क्या देखा कि एक क़ाफ़िला हथियारों और सवारियों के साथ बाहर जा रहा था। मैंने लोगों से पूछा यह क़ाफ़िला किसका है तो मुझे बताया गया कि हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु का। मैंने बढ़कर उनसे मुलाक़ात की और अर्ज़ किया : मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान! ऐ इब्न– रसूलुल्लाह! आप ने इतनी जल्दी क्यों फ़रमाई कि हज छोड़कर ही जा रहे हैं। आपने फ़रमाया : फ़रज़ूक़! मैं जल्दी न करता तो गिरफ़्तार कर लिया जाता। ('तारीख़े तबरी' जिल्द ५ सफ़ा २१२)

एक दूसरी रिवायत इससे ज़्यादा वाज़ेह और साफ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न–ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब हज़रत इमाम से मक्का ही में रहने की गुज़ारिश की तो आपने फ़रमाया : वल्लाहिल अज़ीम ! हरम में क़त्ल किए जाने से ज़्यादा बेहतर मेरे नज़दीक यह अम्र है कि मैं हरम से दूर मारा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जाऊं। अगरचे एक बालिशत दूर ही सही। ख़ुदा की क़सम! अगर मैं किसी कीड़े–मकोड़े की सुराख़ में भी छुपा रहूं तो लोग मुझे उस में से भी खींच कर बाहर निकाल लेंगे और मुझसे अपनी ग़र्ज़ पूरी कर लेंगे। और वल्लाह! वह मेरे मामले में यूं ही हुदूदुल्लाह को पाश–पाश कर देंगे जैसे यहूद ने रोज़े सनीचर किया था। ('तारीख़े तबरी' जिल्द ५ सफ़ा २११)

मशहूर मुहद्दिस फ़क़ीहे मिल्लत अल्लामा इब्न–हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह सवाइक़े मुहर्रक़ा में फ़रमाते हैं कि जब इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का से कूफ़ा रवाना होने की मुकम्मल तैयारी फ़रमा ली तो सहाबा किराम ने आपको बहुत रोका। उस पर आपने फ़रमाया कि **हद्दसनी अबी इन्न लिमक्क त कबशा बिही युसतहिल्लु हुरमतुहा फ़मा अहब्बु अन अकू न अ ना ज़ालिकल कब्श।** (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा २६८)

"मेरे वालिद गिरामी ने मुझसे ब्यान फ़रमाया है कि मक्का में एक मेंढा है जिससे मक्का की हुरमत पामाल होगी। मैं नहीं चाहता मैं वह मेंढा बनूं।"

क्या मज़कूरा बाला तीनों रिवायतें चीख़–चीख़ कर यह एलान नहीं कर रही हैं कि इमाम आली मक़ाम अपनी खुली आंखों से देख रहे थे कि मेरे ख़ून की प्यासी तलवारें म्यान में तड़प रही हैं और मुझे हलाक करने वाली पूरी ताक़तें मैदान में आ चुकी हैं। तो अगर मैं हरम में रहूंगा तो बहुत मुम्किन है कि हज के दौरान यज़ीदी मौक़ा पाकर मुझे क़त्ल कर देंगे जिससे हरम काबा की बेहुरमती होगी। फिर यज़ीदी अज़मते इस्लाम को ख़त्म करने के लिए बिल्कुल आज़ाद हो जाएंगे। तो अज़मते इस्लाम और अपने नाना जान के मज़हब को बचाने के लिए इमाम हुसैन ने हज्जे नफ़्ल को छोड़ कर एक अहम फ़रीज़ा को अदा फ़रमाया जिससे आज इस्लाम की अज़मत व शौकत बाक़ी है।

अलग़र्ज़ ! ज़ुहूर अहमद के इस मफ़रूज़े में जो नक़शा पेश किया गया है इसमें कुछ भी दम–ख़म नहीं है। यह सिर्फ़ अवामुन्नास को बेवक़ूफ़ बनाने और अज़मते हुसैन को उनके दिलों से ख़त्म करने की एक सोची समझी स्कीम है। अल्लाह तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल ग़द्दाराने इस्लाम को नीस्त व नाबूद फ़रमाए और अज़मते अहले–बैत व सहाबा को बुलन्द–तर फ़रमाए। आमीन।

सवाल ६ : क्या इमाम आली मक़ाम और दीगर शोहदाए किराम को

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शहीद करने के बाद उनके सरों को जुदा करना, फिर उन्हें नेज़ों पर चढ़ाना और उनकी तशहीर करना और उनकी लाशों पर घोड़े दौड़ा कर उनको रौंदना और उन सरों को इब्ने-ज़्याद और यज़ीद के पास रवाना करना यह तमाम बातें भी झूठ ग़लत और बे-बुनियाद हैं?

जवाब : नहीं, हरगिज़ नहीं ! यह सब झूठ और बे-बुनियाद नहीं बल्कि एक न मिटने वाली हक़ीक़त और सच्चाई है कि इमाम आली मक़ाम और दीगर शोहदा को तीन दिन भूखा प्यासा रख कर शहीद किया गया। उसके बाद उनके सरों को जिस्म से जुदा किया गया। उसके बावजूद भी यज़ीदियों का जज़्बए इन्तिक़ाम ठंडा नहीं हुआ तो उनकी लाशों पर घोड़े दौड़ाए गए और जिस्में मुबारक को रेज़ा-रेज़ा करके उनके सरों को नेज़ों पर चढ़ाकर गली-गली, कूचा-कूचा उनकी तशहीर की गई। अल अयाज़ु बिल्लाह! इतना सब कुछ करने के बाद भी आज के यज़ीदी अपने गिरोह की सफ़ाई ब्यान करते हुए मज़कूरा बाला तमाम बातों को ग़लत और झूठ साबित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। चुनांचे नासबी ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी किताब में लिखता है कि –

"यह बात हर ख़ास व आम में मशहूर है कि हज़रत हुसैन और दूसरे मक़तूलीन अहले-बैत के सर उनकी लाशों से जुदा किए गए और उन्हें नेज़ों पर चढ़ाया गया। उसके बाद वह सर हज़रत यज़ीद के पास दमिश्क़ रवाना किए गए और उन मक़तूलीन की लाशों को घोड़ों के ज़रिए कुचला गया और बेग़ोर व कफ़न रहने दिया गया। इन तमाम बातों के मुतअल्लिक़ भी हालात व शवाहिद बतलाते हैं कि यह रिवायतें भी और रिवायतों की तरह महज़ ग़लत और बे-बुनियाद और इफ़तरा पर मबनी हैं। जबकि न तो कोई बाक़ायदा जंग हुई और न मक़तूलों के सर जिस्म से जुदा हुए और न उनकी तशहीर की गई। इस सिलसिले में तमाम तवारीख़ ख़ामोश हैं।

('आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें' सफ़ा ५०)

मुहतरम क़ारिईन! इब्ने यज़ीद ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी के फ़रेब और झूठ की इन्तिहा हो गई। दुश्मनिए हुसैन में क्या वह इस बात को भी भूल गए कि एक-न-एक दिन उन्हें मरना है और अल्लाह के हुज़ूर जवाबदेह होना है। उस वक़्त यह अपने झूठ और फ़रेब का क्या जवाब देंगे ? ख़ैर! अब हम इन तमाम मज़कूरा बाला बातों की हक़ीक़त और सच्चाई को

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

मुहद्दिसीने किराम व मुस्तनद मुअर्रिखीन व मुअल्लिफीन की किताबों से पेश कर रहे हैं –

मुहद्दिसे जलील इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी रहमतुल्लाह अलैहि 'तिर्मिज़ी शरीफ़' बाब अब्वाबुल–मनाक़िब में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाते हैं कि **का ल कुन्तु इन द इब्ने ज़ियादिन फ़बजिय बिरासिल हुसैनु फ़ ज अ ल यज़रिबु विक़ज़ीबिन फ़ी अनफ़िही व यक़ूलु मा रऐतु मिसलु हा ज़ा हसना।** (तिर्मिज़ी जिल्द २ सफ़ा ७३३, बुख़ारी जिल्द १ किताबुल–मनाक़िब, सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३००) में इब्न–ज़्याद के पास था कि हज़रत इमाम हुसैन का सर लाया गया तो वह आपकी नाक में छड़ी मारने लगा और कहने लगा कि मैंने इस जैसा हसीन न देखा।

मज़कूरा बाला हदीसे पाक जिसे इमाम बुख़ारी ने भी किताबुल–मनाक़िब में तहरीर फ़रमाया है। इस हदीस पाक से यह बात बिल्कुल साफ़ और अयां हो जाती है कि हज़रत इमाम हुसैन का सर जिस्म से जुदा किया गया। और उसके बाद करबला से कूफ़ा तक उसकी तशहीर की गई। बादहू वह सर मुबारक इब्न–ज़्याद के सामने पेश किया गया। इतनी वाज़ेह दलील मिलने के बाद भी अगर ज़ुहूर अहमद न माने तो उसकी अक़्ल पर मातम करना चाहिए।

उसके अलावा मशहूर मुहद्दिस और फ़क़ीह हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह 'सवाइक़े मुहर्रक़ा' में फ़रमाते हैं **फ़ख़र्रू रासिहि यौम आशूरा आमिन अ ह दुं व सित्ती न व लम्मा व ज़अ़त बै न यदैया उबैदुल्लाह बिन-ज़्याद** (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा २९९) पस इमाम आली मक़ाम को आशूरह सन् ६१ हिजरी के रोज़ शहीद करके आपका सर काट लिया और उसे उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद के पास रखा गया। एक और जगह अल्लामा इब्ने हजर मक्की फ़रमाते हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सरे मुबारक उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद के सामने पेश किया गया तो वहां हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे। जब उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद ने आपके होंठ शरीफ़ को छड़ी मारी तो आपने फ़रमाया : ऐ उबैदुल्लाह! अपनी छड़ी को उठा लो। मैंने बहुत दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके दोनों होंटों के दरम्यान

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बोसा देते देखा है। फिर उसके बाद आप रोने लगे। तो इब्ने ज़्याद ने कहा : अल्लाह तेरी आंखों को रुलाए! अगर तू बूढ़ा न होता तो तेरी इस बकवास पर मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर डालता। (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३००)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की मज़ीद फ़रमाते हैं कि कूफ़ी जब सरे इमाम को लेकर कूफ़ा की तरफ़ रवाना हुए तो जहां कहीं पड़ाव करना होता तो सरे इमाम को नेज़े पर रख देते थे। अल्फ़ाज़ यह हैं : **कुल्लमा नज़लू मनज़िलन वज़ऊहु अला रमहिन।** (सवाइक़े मुहर्रक़ा सफ़ा ३०२)

रईसुल–मुअर्रिख़ीन अल्लामा अब्दुर्रहमान बिन ख़लदून फ़रमाते हैं कि जब इमाम हुसैन सदमए ज़ख़्म से संभलने न पाए तो सनान बिन अनस ने सरे मुबारक को तन शरीफ़ से जुदा कर दिया। और यह वाक़िआ १० मुहर्रम सन् ६१ हि० यौमे जुमा का है। बादहू अमरू बिन साद के हुक्म से दस सवारों ने आपकी लाश (जिस्मे मुबारक) को घोड़ों के सुमों से पामाल किया। और अमरू बिन साद ने अपने मक़्तूलों को जमा करके उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न करके राहीए कूफ़ा हुआ। दूसरे दिन बनू–असद ग़ाज़िरया के लोग आए और उन्होंने इमाम हुसैन और उनके हमराहियों को दफ़न किया। इस इबारत से यह बात भी ज़ाहिर और वाज़ेह हो रही है कि अमरू बिन साद ने इमाम आली मक़ाम और आपके साथियों की नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ी। और उनको वैसे ही रहने दिया। फिर दूसरे दिन क़बीलए बनू–असद के लोगों ने आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफ़न किया। (इब्न–ख़लदून जिल्द २ सफ़ा १२४/२५)

इस रिवायत से झूठे ज़ुहूर अहमद को सबक़ हासिल करना चाहिए जो यह कहते हैं कि उमरू बिन साद ने इमाम और आपके साथियों की भी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी। इब्न–ख़लदून मज़ीद फ़रमाते हैं कि इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर नेज़ा पर रख कर कूफ़ा की तमाम गलियों और कूचों में तशहीर कराके अगले दिन मअ् उनके हमराहियों के सरों के शाम की तरफ़ रवाना किया। (इब्न–ख़लदून जिल्द २ सफ़ा १२७)

मशहूर मुअर्रिख़ अल्लामा तबरी जिनकी किताब के मुतअल्लिक़ कहा गया है कि इब्ने जरीर की तारीख़ **'तारीख़े तबरी'** को एक ऐसा बुलन्द मक़ाम हासिल है जहां उसका कोई मसील नहीं। यही साहबे तबरी लिखते हैं : "इमाम आली मक़ाम मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को क़त्ल हुए और सब

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

से पहले जो सर नेज़ा पर बुलन्द किया गया वह हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर था। (तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २२०)

साहिबे तबरी ही लिखते हैं कि सनान बिन अनस नख़ई ने इमाम को बरछी मारी तो आप ज़मीन पर आ गए। तो उसने ख़ौली से कहा कि सर काट ले। जब ख़ौली से यह काम न हो सका तो ख़ुद आगे बढ़ा और आपको ज़ब्ह करके आपका सर काटा। बादहू आपने जो लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया था, यज़ीदियों ने वह भी लूट लिया। और ख़ेमा–ए–इमाम में घुसकर मुक़द्दस ख़्वातीन अहले–बैत के साथ गुस्ताख़ियां कीं। और तमाम सामान व असबाब लूट लिया। जब इब्न–साद को मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि तमाम असबाब वापस कर दिए जाएं। लेकिन किसी ने कोई चीज़ भी वापस न की।

चन्द सतरों बाद फिर फ़रमाते हैं कि इब्न–साद ने अपने साथ वालों में यह मुनादी करा दी कि कौन–कौन लोग अपने घोड़ों से हुसैन को पामाल करेंगे। यह सुन कर दस शख़्स निकले। उनमें इस्हाक़ बिन हैवा हज़रमी भी था जिसने आपका क़मीज़ उतार लिया था और आख़िर मबरूस हो गया था। उन लोगों में अहबश बिन मरक़द हज़रमी भी था। यह दसों सवार आए और अपने घोड़ों से हुसैन को पामाल किया इस तरह कि उनके सीने व पुश्त को चूर–चूर कर दिया। बादहू इब्न–साद ने अपने असहाब की नमाज़ पढ़ी और असहाबे हुसैन को वैसे ही छोड़ दिया। फिर दूसरे दिन बनी–असद के लोग आए और उन लोगों ने असहाबे हुसैन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और उनको दफ़न किया।

चन्द सतरों के बाद लिखते हैं कि इब्न–साद कूफ़ा रवाना होने से पहले बक़िया लाशों से सर को जुदा किया और शिमर वग़ैरह के साथ बहत्तर (७२) सर इब्न–ज़्याद के पास रवाना किया। जब यह तमाम सर इब्न–ज़्याद के सामने पेश किए गए तो उसने सरे इमाम को छड़ी मारी।

(तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २७८ता २८१ मतबूआ इदारा तबलीग़े दीन, देवबन्द)

मशहूर मुस्तनद व मोतमद मुअर्रिख़ कामिल इब्न–असीर फ़रमाते हैं –

इब्न–साद की आवाज़ गूंजती है कि हुसैन को घोड़ों से रौंदने के लिए कौन तैयार होता है ? तो यह सुन कर यज़ीदी फ़ौज के दस सूरमा सामने आए और इमाम आली मक़ाम की नाशे मुबारक के पास पहुंच कर इमाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हुसैन की नाश को रौंद डाला। और उनके सीना व पुश्त को टुकड़े–टुकड़े कर डाला। (तारीख़े कामिल जिल्द ४ सफ़ा ८०)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि जब इमाम क़त्ल कर दिए गए तो आप का सर और आपके असहाब के सरों को इब्न–ज़्याद के पास भेज दिया गया।

(तारीख़े कामिल सफ़ा ८०)

जब हज़रत इमाम आली मक़ाम का सर यज़ीद के सामने रखा गया तो वह खुश हुआ और इब्न–ज़्याद का मरतबा और उसकी इज़्ज़त यज़ीद के पास बढ़ गई। और इब्न–ज़्याद ने जो कुछ भी किया उससे यज़ीद ख़ुश हो गया। लेकिन यह ख़ुशी बहुत देर क़ायम नहीं रह सकी। यहां तक कि लोगों का ख़ौफ़ व डर और लानत मलामत उसको पहुंच गई।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर मुहद्दिस अबीदुनिया से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत हुसैन का सर यज़ीद के सामने रखा गया तो उसके पास अबू–बुरज़ा असलमी (सहाबी) भी थे। और यज़ीद ने छड़ी से हज़रत हुसैन के मुंह पर छड़ी मारनी शुरू की तो अबू–बुर्ज़ा ने फ़रमाया कि अपनी छड़ी हटा। मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस जगह का बोसा लेते हुए देखा है। (अल–बिदाय: जिल्द ८ सफ़ा १९२)

बताइए जुहूर अहमद! तारीख़ कहती है कि इमाम हुसैन का सर यज़ीद के सामने पेश किया गया और उसने आपके होंठ को छड़ी मारी। तो एक सहाबी की गवाही के सामने आपका झूठ क्या चल सकता है ? हरगिज़ हरगिज़ नहीं।

मुहतरम क़ारिईन! हम आप के सामने देवबन्दी जमाअत के अहम उलमा के ब्यानात को पेश कर रहे हैं। मुलाहज़ा फ़रमाइए –

मौलवी क़ारी तैयब साहब मुहतमिम दारुल–उलूम, देवबन्द अपनी तसनीफ़ "शहीदे करबला और यज़ीद" में तहरीर करते हैं कि –

"बहरहाल हज़रत हुसैन के सर को तश्त में इब्ने ज़्याद के सामने लाए जाने और इब्ने ज़्याद के उसकी बेहुरमती करने और अपने अन्दुरूनी ख़ुब्स को नुमायां करने की यह तफ़सीलात जिनको मुहद्दिसीने किबार, बुख़ारी, बज़्ज़ार, तबरानी, इब्ने हजर अस्क़लानी वग़ैरह ने मुहद्दिसाना तरीक़े से पेश किया। अनस बिन मालिक और ज़ैद बिन अरक़म जैसे जलीलुल–क़द्र सहाबा से रिवायत किया, तो क्या यह हज़रत हुसैन के सर को तन से जुदा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

किए जाने के खुले–खुले दलाइल नहीं हैं ? उनके मुकाबले में क्या चन्द तारीखी टुकड़े और वह भी मुस्तशरिकीने यूरोप की इआनत से और उनसे अख़ज़ करदा इक्तिबासात किसी भी वुकअत व अहमीयत देने के मुस्तहिक हैं ? अब जबकि हज़रत हुसैन के पाक और मक़बूल इन्दल्लाह सर को जिस्म से जुदा किए जाने का सुबूत मु त वातिर साबित होता है तो फिर यह क्यों मुम्किन नहीं कि यह सर यज़ीद के दरबार में भी पहुंचाया गया हो ?

आख़िर इस वाकिआ की रिवायत से क्या वजह इन्कार की हो सकती है। ('शहीदे करबला और यज़ीद' सफ़ा १३३)

फ़ाज़िले नदवा मुअल्लिफ़ 'तारीखे इस्लाम' मौलाना मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब सियरुस्सहाबा में लिखते हैं कि जब इमाम ज़ख्मों से बिल्कुल निढाल हो गए तो शकीए अज़ली सनान बिन अनस ने उस सर को जो बोसा गाहे सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम था जिस्मे अतहर से जुदा कर लिया। १० मुहर्रमुल–हराम सन् ६१ हिजरी मुताबिक़ सितम्बर सन् ६८१ ई० में ख़ानवादए नब्वी का आफ़ताबे हिदायत हमेशा हमेशा के लिए रूपोश हो गया। इमाम को शहीद करने के बाद भी संगदिल और ख़ूनी शामियों का ज़ज्बए इनाद फ़रू न हुआ! शहादत के बाद वहशी शामियों ने उस जसदे अतहर को जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जसद का टुकड़ा फ़रमाया था, घोड़ों की टापों से पामाल किया। इस बहीमाना शक़ावत के बाद लुटेरे पर्दा नशीनाने अफ़फ़ाफ़ के ख़ेमों की तरफ़ बढ़े और अहले–बैत का कुल सामान लूट लिया और शोहदा के सर यज़ीद के पास भेज दिए गए। (सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफ़ा १७२ ता १७४)

मुअर्रिखे इस्लाम मौलाना अकबर नजीबाबादी अपनी किताब 'तारीखे इस्लाम' में लिखे हैं कि शिमर या शिमर के हुक्म से किसी दूसरे ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर जिस्म से जुदा किया और अपने घोड़ों की टापों से आप के जिस्मे मुबारक को खूब कुचलवाया। फिर ख़ेमा को लूटा। हज़रत हुसैन का सरे मुबारक और आपके अहले–बैत कूफ़ा में इब्ने ज्याद के पास भेजे गए। कूफ़ा में उनको तशहीर किया गया। उसके बाद इमाम का सर एक तश्त में रख कर इब्ने–ज्याद के सामने पेश किया गया। उसने सर को देखकर गुस्ताख़ाना कलिमात कहे। (तारीखे इस्लाम किस्त ५ सफ़ा १६२)

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

जमाअत इस्लामी के बानी अबुल–आला. मौदूदी लिखते हैं : हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर काट कर करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से दमिश्क़ ले जाया गया और उनकी लाश पर घोड़े दौड़ा कर उसे रौंदा गया। एक वरक़ के बाद लिखते हैं– कि सरे इमाम और तमाम शुहदाए करबला के सर काट कर कूफ़ा रवाना किए गए और बरसरे आम नुमाइश की गई। (ख़िलाफ़त व मुलूकियत सफ़ा १६६ ता १६८)

मुहतरम क़ारिईन! हमने इन्तिहाई मुस्तनद व मोतमद उन्हीं किताबों से, जिनके हवाले ज़ुहूर अहमद ने अपनी किताब में अकसर जगह दिए हैं, यह साबित कर दिया कि इमाम आली मक़ाम को शहीद करने के बाद आपका सरे मुबारक जुदा किया गया और फिर गली–गली, कूचा–कूचा उसकी तशहीर की गई। और इब्न–ज़्याद व यज़ीद के पास भेजे गए। अल्लाह! अल्लाह। मुसलमानों! ग़ौर करो जिस पैग़म्बरे इस्लाम ने अपनी उम्मत को दुश्मनों की नाश के मुसला करने से रोका था उसकी नाफ़रमान उम्मत उसी के नवासे को तीन दिन भूखा प्यासा रख कर ज़ब्ह कर रही है और उसके सर को जिस्म से जुदा कर के जिस्मे अक़दस को घोड़ों की टाप से रौंद रही है। जिससे यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो जाती है कि मैदाने करबला में यज़ीदियों ने अपने किरदार से यह साबित कर दिया कि यह लोग मुसलमानों के रूप में नंगे इस्लाम हैं।

सवाल ७ : क्या मैदाने करबला में पहला हमला ख़ीमा–ए–हुसैन से किया गया?

जवाब :- नहीं, बिल्कुल नहीं! यह सरासर झूठ, बुहतान और इफ़तरा बाज़ी है कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु या आपके किसी साथी ने यज़ीदियों पर हमला करने में पहल की हो। तारीख़े इस्लाम का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है। बल्कि तारीख़ी किताबों में तो यह मिलता है कि जब नैनवा के मक़ाम पर इमाम हुसैन को बहुक्मे इब्न–ज़्याद ऐसे मैदान में उतारने का हुक्म दिया गया जहां पानी न हो तो इमाम के चन्द फ़िदाइयों ने अर्ज़ किया : ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आगे जो लशकर आने वाले हैं वह इनसे बहुत ज़ायद हैं हमें इज़्न दीजिए कि इनसे लड़ें। फ़रमाया : **मा कुन त ला बदाहुम बिल-क़िताल** में उनसे क़िताल की पहल करने वाला नहीं हूं। (रिसालतुल–महज्जतुल मुतमिनह सफ़ा २०८)

इसके बावजूद नासबी, फ़र्ज़न्दे यज़ीद ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी अपनी रुसवाए ज़माना किताब में लिखता है कि –

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इब्न–साद व हुसैन में सुलह हो गई। जो हथियार इमाम के पास थे, उसे नुमाइन्दगाने हुकूमत जमा करने आए तो बिरादराने मुस्लिम, जो पहले से मुशतइल थे उस फ़ौजी दस्ता के सिपाहियों पर अचानक हमला कर दिया। अमरू बिन साद ने कोई जारिहाना अक़दाम मुतलक़ नहीं किया। उनके फ़ौजी मुदाफ़िआना पहलू इख़्तियार किए हुए थे।

(आओ मुहर्रम.....सफ़ा ४१)

नासबी ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी मज़कूरा बाला इबारत पेश करके इस बात का तअस्सुर देने की नाकाम कोशिश कर रहा है कि अव्वल हमला यज़ीद ने नहीं बल्कि इमाम हुसैन के साथियों ने किया। लानतुल्लाहि अललकाज़िबीन! जबकि हक़ीक़त उसके बरअक्स है। आइए हम आपके सामने अपनी इस बात की ताईद में मुस्तनद मुअर्रिख़ीन और मुसन्निफ़ीन के हवाले से पेश कर रहे हैं। मुलाहिज़ा फ़रमाइए –

रईसुल–मुअर्रिख़ीन अल्लामा अब्दुर्रहमान इब्न–ख़लदून फ़रमाते हैं:– अमरू बिन साद आगे बढ़ा। कमान से तीर जोड़ कर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मार कर बोला। लोगो! गवाह रहना सब से पहले मैं ने ही तीर चालाया है। (तारीख़े इब्न–ख़लदून जिल्द दोम सफ़ा ११२)

मशहूर व मारूफ़ मुअर्रिख़ अबू–जाफ़र इब्न–जरीर तबरी फ़रमाते हैं कि अमरू बिन साद लड़ने को निकला। पुकार कर कहा : ऐ ज़ुवैद! निशान को बढ़ा। उसके बाद इब्न–साद ने कमान में तीर जोड़ा और सर किया कहने लगा : तुम सब गवाह रहो सब से पहले मैं ने ही तीर मारा।

(अल–हुसैन सफ़ा १३५ तारीख़े तबरी जिल्द ५ सफ़ा २५६)

साहिबे तबरी एक और जगह लिखते हैं कि जब हुर्र हज़रत इमाम आली मक़ाम और आपके साथियों को ऐसी जगह पर उतरने पर मजबूर कर रहा था कि जहां पानी न था और न बस्ती। तो असहाबे हुसैन ने कहा: हमें नैनवा या ग़ाज़िरीया में उतर जाने दो। लेकिन हुर्र ने जब ऐसा करने से भी इन्कार कर दिया तो असहाबे हुसैन ने बारगाहे हुसैनी में हुर्र और उनके साथियों से लड़ लेने की दरख़्वास्त पेश की तो उस वक़्त भी आप ने यही फ़रमाया : मैं जंग में इब्तिदा नहीं करूंगा।

(अल–हुसैन सफ़ा ११६ तबरी जिल्द ५ सफ़ा २३५)

मुअर्रिख़े इस्लाम मौलाना अकबर नजीबाबादी लिखते हैं कि शिमर ज़िल जोशन ने उमरू बिन साद से कहा : अब देर क्यों कर रहे हो? अमरू बिन साद ने फ़ौरन एक तीर से कमान जोड़ कर हुसैन अलैहिस्सलाम के

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लशकर की तरफ़ फेंका और कहा कि तुम गवाह रहना कि सबसे पहला तीर मैं ने चलाया है। ('तारीखे इस्लाम' किस्त ५ सफ़ा १६१)

फ़ाज़िले नदवा मौलाना मुईनुद्दीन नदवी तहरीर करते हैं कि इब्न–साद अलम लेकर बढ़ा और पहला तीर चला कर एलाने जंग कर दिया।

(सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफ़ा १५८)

मुहतरम कारिईन! यह चन्द हवाले, जिसे हमने इन्तिहाई मुस्तनद व मोतमद व मोतबर उन ही मुअर्रिख़ीन व मुसन्निफ़ीन के हवालों से लिखा है जिन पर ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी को पूरा–पूरा एतमाद व भरोसा है। अब आप ग़ौर फ़रमाए कि ज़ुहूर अहमद उमरू बिन साद की तारीफ़ व तौसीफ़ में अपनी किताब के सफ़हात के सफ़हात सियाह कर दिए हैं। और तारीख़ उसके क्या करतूत बता रही है ? करबला की जंग का आग़ाज़ भी उमरू बिन साद कर रहा है और वह भी गवाह बनाकर। क्या ऐसा शख़्स जो नवासए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तीरों की बारिश करे, और इमाम आली मकाम के जिस्मे अक़दस को घोड़ों के टाप से रौंद डाले, वह शख़्स इस काबिल है कि इसकी तारीफ़ व तौसीफ की जाए? यज़ीद–नवाज़ी में क्या तुमको अपने ईमान की भी फ़िक्र नहीं है? अल्लाह तआला कामिल समझ और अकमल मुहब्बत अता फ़रमाए! आमीन।

सवाल ८:- क्या यजीद ने हजरत इमाम हुसैन के क़त्ल का हुक्म नहीं दिया था और क्या वह इसके काम से राज़ी नहीं था ?

जवाबः- यह कहना बिल्कुल ग़लत और झूठ है कि यज़ीद ने इमाम हुसैन के क़त्ल का हुक्म नहीं दिया था और न वह उससे राज़ी था। बल्कि सब कुछ उसके हुक्म और उसकी रज़ा से हुआ। लेकिन फिर भी ज़ुहूर अहमद औरंगाबादी और उसका यज़ीदी भाई निसार औरंगाबादी अपने लाड़ले यज़ीद की वकालत करते हुए लिखता है कि :

"जहां तक हज़रत हुसैन के वाक़िआ का तअल्लुक है सो इस बारे में कोई सही सुबूत मौजूद नहीं कि उनका क़ातिल इब्न–मुआविया ही है और न ही यह सुबूत मिलता है कि यह सानेहा उनके हुक्म पर पेश आया और न ही उसपर उनकी रज़ामन्दी के दलाइल मिलते हैं।"

('आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें' सफ़ा १)

मुहतरम हज़रात! मज़कूरा बाला इबारत से अवामुन्नास को यह धोखा देने की नापाक कोशिश की जा रही है कि यज़ीद इन्तिहाई शरीफ़ और नेक तबीयत का मालिक था वह इमाम हुसैन को क़त्ल करने या उनके

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शहीद होने पर कभी भी ख़ुश नहीं हुआ। और यह सब कुछ इब्न–ज़्याद की जानिब से हुआ। हालांकि ऐसा नहीं है। आइए, हम चन्द मोतबर व मुस्तनद मुअर्रिख़ीन व मुसन्निफ़ीन की किताबों से यह साबित करते हैं कि इमाम हुसैन को शहीद करने या उसका हुक्म देने में यज़ीद शामिल था और उससे ख़ुश भी हुआ था। चुनांचे अल्लामा सअ्दुद्दीन तफ़ताज़ानी रहमतुल्लाह अलैह 'शरह अक़ाइद' में फ़रमाते हैं। **वल हक़्क़ु इन्न रज़ा यज़ीदु बिक़तलिल हुसैने व इस्तबशारहू व इहानतु अहले बैतिन्नबीय अलैहिस्सलामु मिम्मा तवातुर मअ्नाहू व इन का न तफ़ासीलहू अहादा**

(शरह अक़ाइदे निस्फ़ी सफ़ा १६२)

और हक़ यह है कि यज़ीद का हज़रत हुसैन के क़त्ल पर राज़ी और ख़ुश होना और अह्ले–बैते नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इहानत करना -- उन उमूर में से है जो तवातुरे मानवी के साथ साबित हैं अगरचे उनकी तफ़ासील अहाद हैं।

हज़रत अल्लामा शैख़ अब्दुल–हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं। और बाज़ यह कहते हैं कि यज़ीद ने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल का हुक्म नहीं दिया था और न ही वह शहादते हुसैन पर रज़ामन्द था। हज़रत हुसैन और अह्ले–बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम की शहादत से वह कभी ख़ुश और मसरूर नहीं हुआ। हमारे नज़दीक यह बात मरदूद और बातिल है। क्योंकि उस शक़ी का अह्ले–बैत नुबुव्वत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अदावत रखना, और उनके क़त्ल से ख़ुश होना और उनकी इहानत करना मानवी तौर पर दरजए तवातुर को पहुंच चुका है। उसका इंकार तकल्लुफ़ व मुक़ाबिरा यानी ख़्वाह–मख़्वाह का झगड़ा है।

(तकमीलुल–ईमान सफ़ा २६२)

तारीख़े कामिल में है कि हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने भी यज़ीद को क़ातिले हुसैन क़रार दिया।

(तारीख़े कामिल जिल्द८ सफ़ा १२८)

क़ारिईने किराम! हज़रत अल्लामा तफ़ताज़ानी साहब और हज़रत मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमः जैसे मुहक़्क़िक़ बुज़ुर्गों के फ़ैसले के बाद अगरचे मज़ीद किसी हवाले की ज़रूरत नहीं रहती। लेकिन हम ख़ुद यज़ीद के दस्ते रास्त और करबला की मुहिम के लिए मुक़र्रर करदा अमीरे कूफ़ा इब्न–ज़्याद बद–निहाद की गवाही पेश करते हैं।

यज़ीद की मौत के बाद इब्न–ज़्याद ने अपने रफ़ीक़े ख़ास के साथ शाम

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

का सफ़र किया तो रास्ते में अपनी सवारी पर किसी गहरी सोच में था कि उसके रफ़ीक़े सफ़र मुसाफ़िर बिन शुरैह ने कहा : क्या आप बहुत गहरी सोच में मुब्तला होकर कोई ख़ास बात सोच रहे हैं ? क्या मैं ख़ुद बताऊं कि आप क्या सोच रहे हैं ? इब्न–ज़्याद ने कहा बताओ : रफ़ीक़े सफ़र ने कहा **कुन्त तकूल लैतनी कुन्तु लम अक़तल हुसैनन।** आप अपने दिल में कह रहे है कि ऐ काश! मैं ने इमाम हुसैन को क़त्ल न किया होता। इब्न–ज़्याद ने कहा : **अम्मा क़तलिल हुसैनु फ़इन्नहु अशारा इला यज़ीदु बिक़तलिही और क़तली फ़ख़तरतु क़तलह** जहां तक मेरे इमाम हुसैन को क़त्ल करने का तअल्लुक़ है तो वह इसलिए था कि यज़ीद ने मुझे हुक्म दिया था कि मैं उनको क़त्ल करूं वरना वह मुझे क़त्ल कर देगा। तो मैं ने उनके क़त्ल को इख़तियार किया। (इब्न–असीर जिल्द ४ सफ़ा १४०)

और सुनिए! इमाम आली मक़ाम की शहादत के बाद मदीना मनव्वरह और मक्का मुकर्रमा में यज़ीद के ख़िलाफ़ बग़ावत आम हो गई –

(कामिल इब्ने असीर जिल्द ४ सफ़ा १११)

यज़ीद ने उबैदुल्लाह इब्न–ज़्याद को मदीना पर चढ़ाई करने और मक्का मुकर्रमा में उबैदुल्लाह इब्न–ज़ुबैर का मुहासरा करने का पैग़ाम भेजा तो उसने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैं इस फ़ासिक़ (यज़ीद) के लिए इब्ने रसूलुल्लाह का क़त्ल (जो पहले कर चुका हूं) और काबा में लड़ाई, दोनों को अपने लिए जमा नहीं करूंगा, तो उसने माज़रत कर दी।

अल्लामा इब्न–कसीर फ़रमाते हैं **लम्मा क़ त ल इब्ने ज़्यादिल हुसैन व मम मअहू बअ् स बिरूऊसिहिम इला यज़ी द फ़सर्रा बिक़तलिही अव्वलन व हसनत बिज़ालि क मन्ज़िलतुहू इब्ने ज़्याद इन्दहू सुम्म लम यलबसु इल्ला क़लीला हत्ता नदि म**

(अल–बिदायः वन्निहायः जिल्द ८ सफ़ा २३२)

जब इब्न–ज़्याद ने हज़रत इमाम हुसैन और उनके साथियों को शहीद कर दिया और उनके मक़तूल सरों को यज़ीद के पास भेजा तो यज़ीद इमाम के क़त्ल से अव्वलन ख़ुश हुआ और उसकी वजह से इब्न–ज़्याद की क़द्र व मन्ज़िलत उसके नज़दीक ज़्यादा हो गई मगर वह इस ख़ुशी पर ज़्यादा देर क़ायम न रहा हत्ता कि फिर नादिम हुआ।

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमः फ़रमाते हैं : जब हज़रत हुसैन अपने तमाम साथियों के साथ शहीद हो चुके तो इब्न–ज़्याद ने उन तमाम शुहदा के सरों को यज़ीद के पास दारुस्सलतनत में भेज दिया।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

यज़ीद तो पहले तो उन सरहाए बुरीदा को देखकर बहुत खुश हुआ। मगर जब आम्मतुल–मुसलिमीन उसके इस फ़ेल पर उससे नाराज़ हुए और मलामत की तो उसको भी अफ़सोस हुआ और अपने फ़ेल पर नदामत हुई।

(तारीखुल–खुलफ़ा सफ़ा ३०५)

इन रिवायतों से बिल्कुल साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि यज़ीद अव्वलन तो इमाम के क़त्ल से खुश हुआ मगर जब बाद में अपनी ज़िल्लत और रुसवाई का अन्देशा हुआ तो नादिम हो गया। और यह नदामत इमाम के क़त्ल पर न थी बल्कि अपनी रुसवाई पर थी। अल्लामा इब्न–कसीर ने उसके जो अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं, वह यह हैं: **फ़अबग़ज़नी बिक़त्लिहि इलल मुसलिमीन वज़रुअ् ली फ़ी कुलूबिहिमुल अदावतु फ़अबग़ज़निल बर्रो वल फ़ाजिरु बिमा इस्ताज़मुन्नासु मिन क़त्ली हुसैनन माली वलिईब्ने मरजानतु** (अल–बिदायतिन्नहाया : जिल्द ८ सफ़ा २३२)

उसने हुसैन को क़त्ल करके मुझे मुसलमानों की नज़र में दुशमन बना दिया। और उनके दिलों में मेरे खिलाफ़ नफ़रत व इशतिआल का बीज बो दिया। अब मुझे हर नेक व बद अपने तईं मबग़ूज़ समझेगा क्योंकि आम लोगों की नज़रों में मेरा हुसैन को क़त्ल करना बहुत बड़ी शक़ावत है। सद हैफ़! मेरे और इब्न–मरजाना (इब्न–ज़्याद) के हाल पर !

इन्साफ़ कीजिए! यज़ीद के इस औसाफ़ व सरीह ऐतराफ़ के बाद भी उसकी बरीयत व सफ़ाई में किसी क़िस्म की कोई गुंजाइश बाक़ी रह जाती है? उसके बावजूद यह कहना कि यज़ीद क़त्ले हुसैन से राज़ी न था, खुद यज़ीद की मन्शा के खिलाफ़ है। नीज़ अगर यह मान लिया जाए कि यज़ीद को क़त्ले हुसैन पर ग़म था तो उसने अपने मुक़र्रर कर्दा कमाण्डर इब्न–ज़्याद को माज़ूल क्यों नहीं किया? तो मानना पड़ेगा कि यह ग़म और इब्न–ज़्याद पर लानत सिर्फ़ मसलहते वक़्त या अन्देशा–ए–मलामत की वजह से थी। मगर क़त्ले हुसैन पर रज़ा बहरहाल क़ल्बी थी।

सवाल ६: क्या यज़ीद जंगे कुस्तुनतुनिया के अव्वल हमलें में शरीक नहीं था? और क्या वह जन्नती है?

जवाब : यज़ीद जंगे कुस्तुनतुनिया के अव्वल हमले में शरीक नहीं था। जब वह उसमें शरीक ही नहीं था तो फिर जन्नती होने का सवाल ही क्या पैदा होता है ? लेकिन कुछ नाम व निहाद मुहक़्क़िक़ीन ऐसे भी आप को मिल जाएंगे जो यज़ीद को उस ग़ज़वे में शामिल करने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। उनही में से एक बद–निहाद, ख़ाइन ज़ुहूर अहमद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

औरंगाबादी है जो अपने पेशवा को ग़ज़वए कुस्तुनतुनिया में शरीक करवा के उसे जन्नती बनाने की नाकाम कोशिश में लगा हुआ है। चुनांचे उसने अपनी किताब में लिखा है –

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम ने हज़रत यज़ीद के लिए मग़फ़िरत की बशारत दी है। जिसका ज़िक्र हदीस में यूं आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी उम्मत की पहली फ़ौज जो क़ैसर के शहर (कुस्तुनतुनिया) पर जिहाद करेगी उनके लिए मग़फ़िरत है। शारेह बुख़ारी अल्लामा किस्तलानी ने मदीनए क़ैसर की तशरीह की है कि उससे मुराद रोमी नसरानियत का सद्र मुक़ाम कुस्तुनतुनिया है। फिर इस हदीस के हाशिया पर लिखा है कि मदीना–ए–क़ैसर (कुस्तुनतुनिया) पर सब से अव्वल जिहाद यज़ीद बिन मुआविया ने किया था और उनके साथ एक कसीर जमाअत सादात की शरीक थी। (सही बुख़ारी जिल्द १ हाशिया ४१०)

(आओ मुहर्रम की हक़ीक़त तलाश करें। सफ़ा५५)

मुहतरम कारिईन! मज़कूरा बाला इबारत जिस में बुख़ारी शरीफ़ का हवाला दिया गया है यह एक बहुत बड़ा फ़रेब और धोख़ादही है। जिस किताब का हवाला दिया गया है उसकी मुकम्मल इबारत को पेश नहीं किया गया बल्कि अधूरी और अपने मतलब की इबारत को पेश करके अवामुन्नास को अंधेरे में रख कर उनके ईमान व अक़ीदे के साथ मज़ाक़ किया जा रहा है। आइए हम बुख़ारी शरीफ़ की असल इबारत पेश कर रहे हैं –

मुलाहज़ा फ़रमाईए। बुख़ारी शरीफ़ की असल इबारत यह है। **अव्वलु जैशु मिन उम्मती यग़ज़ूना मदीन त कै स र मग़फ़ूरुहुम।**

(बुख़ारी शरीफ़ १ सफ़ा ४१०)

मेरी उम्मत का पहला लशकर जो क़ैसर के शहर में जंग करेगा उनके लिए मग़फ़िरत है। इसका जवाब अल्लामा अलहाज मुबीनुद्दीन साहब अमरोहवी अलैहिर्रम : ने इन्तिहाई मुहक़्क़िक़ाना और फ़ैसला–कुन दिया है। हम उसकी रौशनी में इस बहस का जवाब नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश कर रहे हैं।

इस हदीस पाक में बुनियादी तौर पर दो बातें ग़ौर तलब हैं। पहली बात तो यह है कि हदीस में कुस्तुनतुनिया का नाम नहीं है। मदीना–ए–क़ैसर है यानी क़ैसर का शहर। मदीना–ए–क़ैसर का तर्जुमा या मतलब किसी भी लुग़त में कुस्तुनतुनिया नहीं है। फिर मुहद्दिसीन ने इससे कुस्तुनतुनिया कैसे मुराद लिया या यह लायन्हल्ल मुअम्मा है। क़ैसर की सल्तनत में कोई

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

भी शहर मदीना–ए–कैसर हो सकता है ? दूसरी बात यह है कि कैसर के शहर पर हमला कब हुआ? तो तारीख़ व सियर का मुताला करने के बाद यह बात बिल्कुल साफ़ और वाज़ह हो जाती है कि कैसर के शहर पर हमला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में हुआ। उसके बाद हज़रत सैयदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हुआ। फिर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान की सरकरदगी में हुआ। (अलबिदायः वन्निहायः जिल्द ७ सफ़ा १५६)

अब आइए हम ज़ुहूर अहमद की इस नातमाम इबारत की तरफ़ आप की तवज्जह मबज़ूल कराएं जिसको उस ने यज़ीद की मग़फ़िरत के लिए बतौरे दलील पेश किया है। असल इबारत यह है: **क़द अजबु ऐ फ़अलू फ़ेलन लहुम बिहिल जन्नत कौलुहू कैसर-ए-मलिकर्रूम कालल कुस्तलानी काना अव्वलु मन ग़ज़ा मदीनत कैसरू यज़ीदु बिन मुआवियता व जमाअतुहू मि सादातिस्सहाबते कइब्ने उमर इब्ने अब्बास व इबनिज़्ज़ुबैरे व अबी अय्यूबुल अन्सारी व तुवफ़्फ़ि बिहा अबू अयूबु सनतिन इसनैने व ख़मसीना मिनल हिजरते इन्तहा। कज़ा कालहू फ़िल ख़ैरिल बारी व फ़िल फ़तहे कालल मुहलबु फ़ी हाज़ल हदीसु मन्क़िबतु लिमुआवियता लिअन्नहु अव्वलु मन ग़ज़ल बहरा व मुन्क़िबतु लिवलदिही लिअन्नहू अव्वलु मन ग़ज़ा मदीनता कैसरू व तअक़बहु इबनित्तीने व इबनिल मुनीरू बिमा हासिलहु इन्नहू ला यलज़िमु मिन दुख़ुलिही फ़ी ज़ालिकल उमूमु अल्ला यख़रुजू बिदलीलिन ख़ासि इज़ ला यख़्तलिफ़ु अहलुल इल्मे इन्नक़ौलु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा मग़फ़ूरू लहुम मशरूतु बिअन्ना यकूनु मिन अहलिल मग़फ़िरते हत्ता लौ इरतद्दा अहदुन मिम्मन ग़ज़ाहा बादा ज़ालिका लम यदख़ुलु फ़ी ज़ालिकल उमूमु इत्तिफ़ाक़न फ़दल्ला अला इन्नल मुरादु मग़फ़ूरू लिमन व जद्दा मशरूतुल मग़फ़िरते फ़ीहे मिन्हुम**— (बुख़ारी जिल्द १ हाशिया सफ़ा ४१०)

मज़कूरा बाला इबारत में 'व तअक्क़बह इबनित्तीने व इबनिल मुनीर' पर ग़ौर फ़रमाया जाए कि जब मोहलिब ने इस से यज़ीद की मन्क़बत मुराद लिया तो उन्हीं हज़रात ने उसका तआक़ुब किया। दूसरी बात यह कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल मशरूत है कि जो लोग ग़ज़वा–ए–अव्वल में शरीक हुए हों वह मग़फ़िरत के अहल भी हों। अब अगर कोई उनमें मुरतद हो जाता है तो फिर वह उस बशारत से ख़ारिज हो जाएगा। अब सवाल पैदा होता है कि क्या यज़ीद में इसकी

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks

Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अहलियत नहीं थी ? तो उसके बारे में हमने पहले ही बहुत तफ़सील से ब्यान कर दिया है। हमारी बात को मज़ीद क़वी–तर बनाने के लिए हम क़िस्तलानी शारेह बुख़ारी की इबारत पेश कर रहे हैं, उससे भी काफ़ी रौशनी मिल जाएगी।

व इस्तदल्ला बिहिल मुहलिबु अला सुबूते ख़िलाफ़ते यज़ीदा व इन्नहू मिन अहलिल जन्नते लिदुख़ूलिही फ़ी उमूमिन क़ौलिही मग़फ़ूरू लहुम व उजीबत बिअन्ना हाज़ा जाआ अला तरीकिल हम्मीयतु लिबनी उमैयतु वला यलज़िमु मिन दुख़ूलिही फ़ी ज़ालिकल उमूमु अन अल्ला ला यख़रुज बिदलीलु ख़ास इज़ ला ख़िलाफ़ा लिक़ौलिही अलैहिस्सलातु वस्सलाम मग़फ़ूरू लहुम मशरूतु बिकौनिही मिन अहलिल मग़फ़िरत हत्ता लौ इरतद्दा वाहिदुन मिम्मन ग़ज़ाहा बादा ज़ालिका लम यदख़ुलु फ़ी ज़ालिकल उमूमु इत्तिफ़ाक़न क़ालहू इबनुल मुनीर।

(इरशादुस्सारी शरह बुख़ारी जिल्द ५ सफ़ा १०१)

इस हदीस से मुहलिब ने यज़ीद की ख़िलाफ़त और उसके जन्नती होने का इस्तिदलाल किया है कि वह हदीस के इस जुमला मग़फ़ूर लहुम के उमूम में दाख़िल है। इसका जवाब यह दिया गया कि यह बात महज़ बनी–उमैय्या की हिमायत में कही गई है। और यज़ीद के इस उमूम में दाख़िल होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह किसी और ख़ास दलील से उससे ख़ारिज भी नहीं हो सकता। क्योंकि इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह क़ौल 'मग़फ़ूर लहुम' इस शर्त के साथ मश्रूत है कि यह लोग मग़फ़िरत के अहल हों। हत्ता कि अगर कोई शख़्स इस ग़ज़वा में मुरतद हो जाए तो वह बिल–इत्तिफ़ाक़ इस बशारत में दाख़िल नहीं रहेगा। यह बात इब्न–मुनीर ने कही है। क़रीब–क़रीब ऐसा ही फ़तहुल–बारी, अस्क़लानी वग़ैरह में भी लिखा हुआ है।

मज़कूरा बाला इबारत से यह साबित हो गया कि यज़ीद हरगिज़–हरगिज़ इस हदीस का मिस्दाक़ नहीं है। मोहलिब जैसे लोग जिन्होंने यज़ीद की फ़ज़ीलत या ख़िलाफ़त वग़ैरह इस से इस्तिदलाल किया है वह इब्न–मुनीर और क़िस्तलानी की निगाहों में मुशतबह और मख़दूश हैं कि जिसको उन्होंने बनी–उमैय्या की हिमायते बेजा पर महमूल किया है।

इससे भी ज़्यादा वज़ाहत के साथ ज़ैल की इबारत को मुलाहज़ा फ़रमाइए : **कुल्तू अला ज़हर अन्न हाऊलाइस्सादाते मिनस्सहबते कानू मअ् सुफ़ियानु हाज़ा वलम यकूनु मअ् यज़ीदु बिन मुआविया लिअन्नहु**

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

लम यकुन अहल बे एय्यूनु हाऊलाइस्सदातु फ़ी ख़िदमतिही

(उमदतुल–क़ारी जिल्द ६ सफ़ा ६४६)

हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ने 'उमदतुल क़ारी' में साफ़ फ़रमाया है कि "मैं कहता हूं खुली हुई बात यह है कि यह अकाबिर सहाबा सुफ़ियान बिन औफ़ के साथ थे। यज़ीद के साथ न थे। क्योंकि यज़ीद उसका अहल नहीं था। कि बड़े–बड़े सहाबा अकाबिर उसकी ख़िदमत में (मातेहत की हैसियत से) रहें।

मज़कूरा बाला इबारत से यह साबित हो गया कि सादाते सहाबा सुफ़ियान बिन औफ़ के ग़ज़वा में शरीक हुए थे, न कि यज़ीद की सरकरदगी में। इन तमाम शवाहिद के होने के बाद भी अगर ज़ुहूर अहमद यज़ीद की सफ़ाई और उसको जन्नती साबित करने की कोशिश में लगा रहे तो उसकी ज़िद्द और हठधर्मी होगी। जिसका कोई इलाज नहीं।

अब आइए! हम आपको तारीख़ी किताबों की सैर करवाते हैं कि मुस्तनद व मोतबर मुहक़्क़िक़ीन भी इस बारे में फ़रमाते हैं कि यज़ीद अव्वल लशकर में हरगिज़–हरगिज़ शरीक नहीं हुआ था। चुनांचे अल्लामा इब्न–असीर फ़रमाते हैं।

उसी साल सन् ४६ हिजरी में और कहा गया है कि सन् ५० हिजरी में हज़रत मुआविया ने एक लशकरे जर्रार बिलादे रोम की तरफ़ भेजा। और उस पर हज़रत अबू–सुफ़ियान बिन औफ़ को अमीर बनाया। और अपने बेटे यज़ीद को उनके साथ शरीक होने का हुक्म दिया तो यज़ीद बैठा रहा और हीले बहाने शुरू किए। तो अमीर मुआविया उसके भेजने से रुक गए। उस जंग में लोगों को भूख–प्यास और सख़्त बीमारी पहुंची तो यज़ीद ने (ख़ुश होकर) यह अशआर पढ़े:

मुझे परवा नहीं कि उन लशकरों पर बुख़ार और तंगी व तकलीफ़ की बलायें मुक़ामे फ़रक़दूना में आ पड़ीं। जबकि मैं दैर मर्रान में ऊंची मस्नद पर तकिया लगाए हुए उम्मे कुलसूम को अपने पास लिए बैठा हूं। उम्मे कुलसूम बिन्त अब्दुल्लाह इब्न–आमिर यज़ीद की बीवी थी। यज़ीद के यह अशआर अमीर मुआविया तक पहुंचे तो उन्होंने क़सम खाई कि अब मैं यज़ीद को भी सुफ़ियान बिन औफ़ के पास रोम की ज़मीन में ज़रूर भेजूंगा ताकि उसे भी वह मुसीबतें पहुंचे जो वहां लशकर वालों को पहुंची हैं।

(इब्ने असीर जिल्द ३ सफ़ा ४५८) मतबूआ बैरूत

मुन्दर्जा बाला रिवायत से चन्द उमूर साबित होते हैं कि बिलादे रोम की

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तरफ़ जिहाद करने वाला पहला लशकर जिसकी क़यादत हज़रत सुफ़ियान बिन औफ़ को सौंपी गई थी उसमें यज़ीद हरगिज़–हरगिज़ शरीक नहीं हुआ था। और बशारत पहले लशकर वालों के लिए है। जब यज़ीद उस में शामिल ही न हुआ तो फिर बशारत और जन्नती होना कैसे साबित हो सकता है ? नीज़, मुजाहिदीने इस्लाम को तकलीफ़ का सामना करना पड़ा तो वह अपनी ऐश–परस्ती में मुब्तला था। उसको ज़रा भी एहसास न हुआ। और अगर मान भी लिया जाए तो यज़ीद सज़ा के तौर पर भेजा गया। और मजबूरन बादले नख़्वास्ता कहरे दरवेश बर जाने दरवेश के तौर पर क़दम उठाना पड़ा। गर्ज़ ये कि यज़ीद उसमें शामिल नहीं था।

इमामुल–मुअर्रिख़ीन इब्ने ख़लदून ने भी इस हक़ीक़त को ब्यान फ़रमाया है कि बिलादे रोम में पहला लशकर हज़रत सुफ़ियान बिन औफ़ की सरकरदगी में रवाना किया गया। यज़ीद ने इन्कार किया था।

(इब्न–ख़लदून (अरबी) जिल्द ३ सफ़ा १०)

फ़ाज़िले नदवा मौलवी मुईनुद्दीन नदवी अपनी किताब में लिखते हैं कि हज़रत अमीर मुआविया ने सन् ४६ हिजरी में एक लशकरे जर्रार हज़रत सुफ़ियान बिन औफ़ की मातेहती में कुस्तुनतुनिया रवाना किया। उसमें हज़रत अबू–ऐय्यूब अन्सारी, अब्दुल्लाह इब्न–उमर, अब्दुल्लाह इब्न–अब्बास जैसे अकाबिर सहाबा शामिल थे। ताकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस बशारत के मुताबिक़ कि कैसी अच्छी वह फौज होगी और क्या अच्छा वह अमीर होगा जो कुस्तुनतुनिया के हमले में शिर्कत की सआदत हासिल करेगा। (सियरुस्सहाबा जिल्द ६ सफ़ा ४८)

देवबन्दी जमाअत के हकीमुल–उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी भी यज़ीद को जंगे कुस्तुनतुनिया में शरीक होने और उसकी मग़फ़िरत का इन्कार अपने फ़तवा में किया है। मुलाहज़ा फ़रमाइए।' जो लोग यज़ीद की मग़फ़िरत के लिए बुखारी शरीफ़ की हदीस से इस्तिदलाल करते हैं वह बिल्कुल ज़ईफ़ है। क्योंकि वह मशरूत है शर्ते वफ़ात अलल–ईमान के साथ (यानी ईमान पर मौत वाक़े हो) और वह अम्र मजहूल है। चुनांचे अल्लामा किस्तलानी ने नक़ले क़ौले मोहलिब के बाद लिखा है कि इब्न–तीन और इबनुल–मुनीर ने उसको रद्द फ़रमा दिया है।

(इमदादुल–फ़तावा जिल्द ५ सफ़ा ४२६)

मुहतरम क़ारिईन! मज़कूरा बाला तमाम बातों को बग़ौर पढ़ने के बाद यह बात बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह हो जाती है कि यज़ीद जंगे कुस्तुनतुनिया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

में शामिल नहीं था और वह जन्नती भी नहीं है। अफ़सोस होता है कि जिस के हाथ नवासा–ए–रसूल के ख़ून से लाल हों, जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाराज़ किया हो; मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरह पर लशकर–कुशी की हो और मस्जिद नब्वी में तीन रोज़ तक नमाज़ बा–जमाअत अदा न की गई हो। इतने तमाम जुर्म होने के बावजूद ऐसे शख़्स को जन्नती साबित करने के लिए एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाया जा रहा है। अल अयाज़ु बिल्लाह! अल्लाह तआला उनको सही समझ अता फ़रमाए और अल्लाह व रसूल के फ़रमान पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आमीन। बजाहे सैयदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

मुहम्मद अमीनुल-क़ादरी अर्रज़वी

ख़तीब व इमाम :

मीठा भाई मस्जिद,मोमिना वारड-गोपीपूरा- सूरत

१६ ज़िलहिज्ज सन् १४११ हिजरी/२६ जून सन् १९९१ ई०, सनीचर

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़ुसूसी ज़मीमा

सरज़मीने सूरत (गुजरात) में सिलसिलए क़ादरीया रिफ़ाईया की एक ख़ानक़ाह जो "ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया" के नाम से मशहूर व मारूफ़ है। इसका संगे बुनियाद माहे मुहर्रमुल–हराम में रखा गया। इसी मुनासबत से यह ख़ुसीसी ज़मीमा पेश किया जा रहा है।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

बर्रे सग़ीर व कबीर एशिया की मश्हूर व मारूफ़ 392 साला क़दीम ख़ांक़ाह कलां रिफ़ाइया सूरत

❖ तारीख़ के आईने में ❖

मुरत्तिब : (मौलाना मुहम्मद अमीनुल–क़ादरी अल-रिज़वी अल-रिफ़ाई)
हज़रत अकबर शहीद टेकरा,क़ादरी मंज़िल, सूरत

सुलतानुल–आरेफ़ीन, कुतुबुल–मुकर्रम, वाक़िफ़ असरारे शरीअ्त, माहिर रमूज़े तरीक़त, हज़रत सैयदना अबुल–अब्बास अल-शैख़ सैयद अहमद कबीर अल-रिफ़ाई अल–हसनी वल हुसैनी वल–मुसवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु जैयद सूफ़ी, वली–ए–कामिल, और मुस्तजाबुद–दावात बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। तसव्वुफ़ में अपना एक आला मुक़ाम रखते हैं। आपका नाम नामी इस्मे गिरामी सैयद अहमद और कुन्नियत अबुल–अब्बास है।

आपके जद्दे अमजद हज़रत सैय्यद हसन असग़र अल–हाशमी अल–मक्की अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः जो रिफ़ाईया के नाम से मशहूर थे इसी वजह से आप रिफ़ाई मशहूर हुए और हज़रत सैय्यदुश्शोहदा हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन और हज़रत सैय्यदना.इमाम मूसा काज़िम रज़ि. अल्लाहु अन्हुमा की औलाद में हैं इसीलिए हुसैनी और मुसवी कहे जाने लगे।

आपके वालिद गिरामी का नाम हज़रत सैय्यद सुलतान अली और वालिदा मोहतरमा का नाम उम्मुल–फ़ज़्ल फ़ातमा अंसारिया था।

नसब नामा : आपका सिलसिला–ए–नसब हज़रत अल्लामा अश्शैख़ इब्राहीम सामरानी ने अपनी किताब अस्सैय्यद अहमद अर्रिफ़ाई में यह तहरीर फरमाया है।

हुव अबुल-आलमीन अस्सैय्यद अहमद बिन अस्सैय्यद सुलतान अली बिन अस्सैय्यद यहया बिन अस्सैय्यद साबित बिन अस्सैय्यद अबुल-फ़ुवारिस अल-हाज़िम अली बिन अस्सैय्यद अहमद अल-मुर्तज़ा बिन अस्सैय्यद अली बिन अस्सैय्यद अल-हसन-अल-मुल्क़ब बेरिफ़ाआ बिन अस्सैय्यद महदी बिन अस्सैय्यद अबिल-क़ासिम मुहम्मद बिन

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

अस्सैय्यद हसन बिन अल-मुल्क्कब बेरिफ़ाआ बिन अस्सैय्यद महदी बिन अस्सैय्यद अबिल-क़ासिम मुहम्मद बिन अस्सैय्यद हसन बिन अस्सैय्यद हुसैन बिन अस्सैय्यद अहमद बिन अस्सैय्यद मूसा अस्सानी बिन अस्सैय्यद इब्राहीम मुर्तज़ा बिन इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम जाफ़र सादिक़ बिन इमाम मुहम्मद बाक़र बिन इमाम ज़ैनुल-आबिदीन बिन इमाम हुसैन शहीद करबला बिन अमीरुल-मुमेनीन अस्सैय्यदना अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। (अस्सैय्यद अहमद अर्रिफ़ाई स–६)

विलादत बासआ़दत : सुलतानुल–आरिफ़ीन हज़रत सैय्यद अहमद कबीर रिफ़ाई अलैहिर्रहमाः वर्रिज़वान बइख़्तिलाफ़ रिवायात पन्द्रह (१५) या २७ शब रजबुल–मुरज्जब ५१२ हिज. मुताबिक़ १११८ ई० बरोज़ जुमेरात को बमुक़ाम हसन जो इराक़ में उम्मे उबैदा के क़रीब शहर वास्ता में वाक़े है। यहाँ आपकी पैदाइशे मुबारका हुई।

अल्लाह तआला की जानिब से आपको ख़ुसूसी फ़ज़ीलत और शर्फ़ यह हासिल हुआ कि आपकी पैदाइशे मुबारका की ख़बर हुज़ूर ग़ैबदाँ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहे व सल्लम ने आपके मामूं जान आरिफ़े कबीर हज़रत शैख़ मंसूर बाज़ुल–अशहाब बताइही अलैहिर्रहमाः वर्रिज़वान को ख़्वाब में सुनाई कि ऐ मंसूर तुम्हारी बहन की आग़ोश में चालीस दिन बाद एक लड़का पैदा होगा उसका नाम अहमद रखना। जिस तरह मैं तमाम पैग़म्बरों का सरदार हूँ इसी तरह यह बच्चा तमाम औलिया अल्लाह का सरदार होगा। जब यह सात साल की उम्र को पहुँचे तो उसको शैख़ क़ारी अली वास्ती की ख़िदमत में बग़र्ज़ तहसीले इल्म ले जाना और उसकी तालीम व तरबियत से ग़ाफ़िल न होना। (तज़्किरा रिफ़ाई, स. १३६)

ख़्वाब में दी गई बशारत के ऐन मुताबिक़ चालीस दिन बाद आप मक़ामे हसन में पैदा होते हैं। आपके वालिद गिरामी आरिफ़ बिल्लाह हज़रत सैय्यद सुलतान अली अपने हमअस्र उलमा–ए–किराम व सूफ़िया–ए–इज़ाम में अपना एक आला मक़ाम रखते थे। वालिदा साहिबा हजरत सैय्यदा सालेहा उम्मुल–फ़ज़्ल फ़ातमा रज़ि. अल्लाहु तआला अन्हा भी अपने वक़्त की बड़ी ही आबिदा और ज़ाहिदा ख़ातून थीं। हज़रत रिफ़ाई ने इब्तिदाई तालीम अपने शफ़ीक़ वालदैन के ज़ेरे साया रहकर मुकम्मल फ़रमाई। जब आपकी उम्र शरीफ़ का सातवां साल था कि आपके वालिद माजिद हज़रत सैय्यद

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सुलतान अली किसी अहम ज़रूरत से बग़दाद मुअल्ला तशरीफ़ ले गए तो वहीं आपका इन्तिक़ाल ५१६ हिज. में हो गया। मालिक बिन मुसैय्यिब अक़ीली के महल में मदफून हुए बाद में मालिक ने क़ब्र पर कुबा तामीर करवाया और साथ ही एक मस्जिद भी बनवाई। यह जगह आज भी बग़दाद शरीफ़ में दरगाह सैय्यद सुलतान अली के नाम से मशहूर है। (अस्सैय्यद अहमद अर्रिफ़ाई – स.६)

तालीम व तरबीयत : वालिद बुज़ुर्गवार के इन्तिक़ाल फरमाने के बाद आपके मामूं जान हज़रत शैख़ मंसूर बताइही रहमतुल्लाह अलैहिर्रहमा ने आपको मअ अपने भाईयों, बहन और वालिदा माजिदा के अपने क़स्बे नेहरू क़ली बुला लिया और बहुक्मे महबूब जुलजलाल सल्लल्लाहु अलैहिर्रहमा व सल्लम अपने भांजे की किफ़ालत और तालीम व तरबियत की तरफ खुसूसी तवज्जुह फरमाई। कुरआन पाक नाज़रा व हिफ़्ज़ तो आपने बहुत ही छोटी सी उम्र में मुक़ामे हसन ही में हज़रत अब्दुस्समी हरबूनी अलैहिर्रहमा : वरिज़वान के पास मुकम्मल फरमा लिया था। फिर जब ज़रा समझदार हुए तो आपके मामूं जान ने हुज़ूर मुहसिने इन्सानियत सल्लल्लाहु अलैहिर्रहमा व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ वास्ता जो इराक़ का मदीनतुल–इल्म वलउलमा था। ज़ुब्दतुल–उलमा हज़रत शैख़ अली क़ारी वास्ती की ख़िदमत में तहसीले इल्म के लिए भेज दिया। बशारते नब्वी के मुताबिक़ हज़रत शैख़ अली क़ारी वास्ती ने खुसूसी तवज्जुह और कामिल निगरानी में तालीमी मराहिल से आपको फ़ैज़याब फरमाते रहे। यहाँ तक कि बीस साल की उम्र में आपने तमाम उलूमे नक़्लीया व अक़्लीया यानी हदीस, तफ़्सीर, फ़िक़ा, मआनी फलसफ़ा व मंतिक़ और दीगर उलूमे ज़ाहरी मुकम्मल फरमा लिया उस्ताज़े मोहतरम ने आपको सनदे हदीस और इजाज़त अता फरमाई। बादहू आपने उस्ताद मोहतरम की ज़ेरे निगरानी दर्स व तदरीस का सिलसिला शुरू फरमा दिया।

ख़िरक़ा–ए–सादगी व तक्मील उलूमे बातनी : हज़रत रिफ़ाई अलैहिर्रहमा वास्ता में मसनदे दर्स व तदरीस पर फाइज़ थे लाखों तिश्नगान उलूम परवाना वार आपके हलक़ा–ए–दर्स में शामिल हो रहे थे कि अचानक आपके मामूं जान ने आपको अपने पास उम्मे उबैदा बुलवा लिया और बातनी उलूम की तालीम शुरू फरमा दी। आप मादर ज़ाद वली थे। लुत्फ़े खुदावन्दी कि हज़रत रिफ़ाई ने बहुत ही मुख़्तसर सी मुद्दत में इरफ़ान व

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

सुलूक और मआरिफ़त के मदारिजे आलिया तय फरमा कर आरिफ़े कामिल बन गए तो आपके मामूं जान ने ५३६ हिज. में अपने इन्तिक़ाल से एक साल पहले ही आपको ख़िरक़–ए–ख़िलाफ़त व सज्जादगी से सरफ़राज़ फरमा कर ख़ानक़ाहे उम्मे उबैदा में अपना जांनशीन बना दिया। और पूरे इराक़ में एलान करवा दिया कि आइंदा से मशाइख़ व सालेकीन वास्ता व बसरा सैयदा अहमद कबीर माशकुल्लाह रिफ़ाई हुसैनी मुसवी को अपना शैख़ समझें और उन्हीं से रुजू करके फ़वाइदे दीनी व दुनियवी हासिल करें उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ २८ बरस की थी।

(अस्सैयद अहमद अर्रिफ़ाई–स.१०)

इमाम अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीने मिल्लत आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी अलैहिर्रहमाः अपने रिसाले मक़ालुल–उरफ़ा स.३६ पर चार ऐसे अलक़ाब का ज़िक्र फरमाया है जो तमाम अलक़ाब में आला व मुम्ताज़ शुमार किए जाते हैं। उनमें से एक कुतुब हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफ़ाई अलैहिर्रहमाः की ज़ाते मुबारका भी शामिल है।

ज़ियारे हरमैन तैय्येबीन और हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दस्ते अतहर का बोसा

शैख़ुल–इस्लाम वल–मुस्लेमीन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी कुद्देस सिर्रहुल–अज़ीज़ अबरुल–मक़ाल स. २६ पर और हज़रत मौलाना शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी अल–मिस्री ने नसीम रियाज़ फ़ी शरहे शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़। जि. सौम स. ४४२ मतबूआ मिस्र में और हज़रत शैख़ यूनुस इब्राहीम अस्सामरी ने "अस्सैयद अहमद आरेफ़ीन हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफ़ाई अलैहिर्रहमाः की यह क़रामत "दस्त बोसी हुज़ूर सरवरे काइनात अलैहिस्सलातु वस्सलाम" को अपनी अपनी किताबों में तहरीर फरमाया है। हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाह अलैहिर्रहमा ने ५५५ हिज. ११६० ई. ४३ साला उम्र में हरमैन तैयबीन की ज़ियारत फरमाई यह आपका पहला हज था। हज की अदाइगी के बाद अपने जद्दे आला हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम की ज़ियारत के लिए मदीनतुर्रसूल हाज़िर हुए। जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम की मुक़द्दस नगरी सरहदे मदीना क़रीब आ गई। तो अपने जूते उतार लिए औ. इश्क़ व मुहब्बत में सरशार

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

इन्तिहाई वालेहाना अन्दाज़ में आपने जद्दे आला के मवाजा शरीफ़ में हाज़िर हुए और इश्क़ व मुहब्बत में डूब कर बुलन्द आवाज़ से अर्ज़ किया। **"अस्सलामु अलैक या जद्दी"** ऐ मेरे जद्दे अमजद आपकी बारगाहे आलिया में सलाम पेश है तो फौरन रौज़ए—अनवर से यह जवाब मिला व अलैकस्सलामु या वालिदी और ऐ मेरे फ़रज़न्दे अज़ीज़ तुझ पर भी सलाम हो। जवाब सुनते ही आप पर वज्दानी कैफ़ियत तारी हो गई। और रोते हुए बेसाख़्ता वालेहाना अन्दाज़ में आपने यह रुबाई पढ़ी।

फ़ी हालतिल-बोअ्दे वहिया कुन्ता अरसलोहा
तुक़ब्बेलुल-अरज़े अन्नी वहिय नाइबती
व हाज़ेही दौलतुल-इश्बाह क़द हज़रत
फ़म्दुद यमीनोक कैय तोहज्जी बेहा शीफ़ती

ऐ मेरे आक़ा व मौला! दूरी की हालत में अपनी रूह को रौज़—ए—अतहर पर भेज दिया करता था कि वह मेरी नाइब बन कर आस्ताना मुबारका को चूमा करती थी और अब मैं रूह व जिस्म के साथ खुद हाज़िरी का शर्फ़ हासिल किया हूँ तो आप अपना दस्ते मुबारका अता फरमाइये ताकि उसका बोसा लेकर मेरे होंठ लुत्फ़ अन्दोज़ हों। बस हज़रत रिफ़ाई क़ा इतना फरमाना था कि फौरन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम का सीधा हाथ शरीफ़ क़बरे अनवर से ज़ाहिर हुआ और हज़रत रिफ़ाई ने घुटनों के बल बैठ कर बड़े ही अदब व एहतेराम के साथ दस्ते अतहर को चूमा फिर दस्ते अतहर क़ब्र शरीफ़ में वापस हो गया। जिस वक़्त आपकी यह करामते उज़्मा ज़ाहिर हुई वह दिन जुमेरात का और वक़्त बादे नमाज़े अस्र था। इस करामत को और आवाज़े मुस्तफ़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को निनवावे हज़ार आशिक़ाने मुस्तफ़ा व दीवान गान ख़ैरुल—वरा ने मुलाहिज़ा फरमाया। हाज़िरीन में आपके मामूं जान हज़रत पीराने पीर दस्तगीर सैयदना अब्दुल—क़ादिर जीलानी ग़ौसे आज़म हज़रत शैख़ ग़दी बिन मुसाफिर शामी व दीगर औलिया—ए—इज़ाम व मशाइख़ मौजूद थे। (अस्सैयद अहमद अर्रिफ़ाई अरबी। स.५६)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

क़ारिईने किराम

हज़रत रिफ़ाई की यह अज़ीमुश्शान किरामत और पैदाइश से पहले बशारते नब्वी नीज़ तसव्वुफ़ में आपका एक आला व मुम्ताज़ मुक़ाम पर फाइज़ होना यह किसी के लि बहलाने के लिए नहीं है बल्कि उन तमाम बातों से सुलतानुल-आरिफ़ीन की अज़्मत और मंज़िलत इन्दल्लाह ज़ाहिर होती हैं। वैसे अगर आपके मुकम्मल हालात क़लम बन्द किए जाएं तो दफ़्तर के दफ़्तर भी नाकाफ़ी होंगे। यहाँ पर मक़्सूद सिर्फ़ यह है कि सरज़मीने सूरत में जो बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए हैं। उनका तआरुफ़ हो जाए कि आपका तअल्लुक़ ऐसी बाबरकत ज़ाते गिरामी से है जिसके लिए अल्लाह के रसूलुल सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम ने ख़ास तौर से अपना हाथ मुबारक बोसा के लिए वअ्ज़ व नसीहत करने और अपने किरदार व अमल से लोगों की हिदायत व इसलाह फरमाते अचानक दरिया–ए–फ़्यूज़ व बरकाते आरिज़ा इस्हाल (दर्दे शिकम) में मब्तून होकर हस्बे इर्शादे नब्वी सल्लल्लाहु तआला अलैहि० व सल्लम के शहादत के दरजे पर फाइज़ होकर २२ / जिमदिल–ऊला ५७८ हिज. मुताबिक़ २३ /सितम्बर ११८२ ई० बरोज़ जुमेरात ज़ुहर के वक़्त ६६ साल की उम्र शरीफ़ पाकर इस दारे फानी से कूच फरमा गए। आपकी नमाज़ जनाज़ा में तक़रीबन नौ लाख मुहिब्बान औलिया ने शिरकत फरमाई। नमाज़ के बाद उम्मे उबैदा की ख़ानक़ाह में आपके नाना जान हज़रत शैख़ यह्या अन्सारी अलैहिर्रहमा: वर्रिज़्वान के पहलू में मदफून किए गए। आज भी आपकी मज़ार अक़्दस ज़ाइरीन से आबाद रहती है।

अल्लाह तआला आपके फ़ैज़ व बरकात से ता क़्याम क़्यामत हम सबको फैज़याब फरमाता रहे।(अस्सैय्यद अहमद अर्रिफ़ाई किताब अरबी सफ़ा ७४)

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हिन्दुस्तान के सनअ़ती शहर

सूरत में

रिफ़ाई सिलसिला के बुजुर्गों की आमद

सुलतानुल-आरिफ़ीन कसीरुल-औलाद थे। आपके विसाल फरमाने के बाद आपकी आल औलाद खानदानी उलमा व मशाइख़ और ख़ुलफ़ा मुख़्तलिफ़ शहरों और क़स्बों में इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत और सिलसिला–ए–रिफ़ाईया को फ़रोग़ देने में मस्रूफ़ हो गए। उन्हीं में से एक बुज़ुर्ग हज़रत सैय्यद मुहम्मद हबीब अब्दुर्रहीम मुहब्बतुल्लाह रिफ़ाई ६०० हिज. में शहर सूरत (बाबुल–मक्का) बमक़ाम खा़नक़ाहे कलां रिफ़ाईया तशरीफ़ लाए।

आपके बाद हज़रत सैय्यद अहमद कबीर अर्रिफ़ाई के पोते हज़रत सैय्यद अब्दुर्रहीम अल–मारूफ़ सैय्यद अहमद हबीबुल–क़ादरी अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः अपने वालिद गिरामी हज़रत सैय्यद मुहम्मद मादनुल–क़ादरी अर्रिफ़ाई (फ़रज़न्द अरजुमन्द व ख़लीफ़ा–ए–सैय्यदना अहमद कबीर अर्रिफ़ाई) यक्कुम ज़िलहिज्जः ६६७ हिज. को सूरत तशरीफ़ लाए और २० जमादिल–ऊला ७७१ हिज. में १३६ साल की उम्र शरीफ़ पाकर इन्तिक़ाल फरमाया। आपको इसी ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया में मदफून किया गया। आपके बाद तशरीफ़ ला रहे हैं। हज़रत सैयद हाज़िम अनवारुल्लाह इब्ने सैय्यद इब्राहीम कंज़ अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः ५ सफ़र ७३५ हिज.। आपके बाद शहरे सूरत में रौनक़ अफ़रोज़ होते हैं। हज़रत सैय्यद मुहम्मद ख़ुज़ैम अर्रिफ़ाई रहमतुल्लाह तआला अलैह।

ख़ुज़ेम अर्रिफ़ाई रहमतुल्लाह अलैहि अल–मुतवफ़्फ़ी ७६६ हिज. में। बादहू हज़रत अस्सैयद अब्दुल–हमीद अर्रिफ़ाई अल–मुतवफ़्फ़ी ५ / शव्वाल ८४० हिज. उनके बाद हज़रत सैयद मुहम्मद नूरुल–हसन ग़ालिब रिफ़ाई अल–मुतवफ़्फ़ी १२ / रबीउल–अव्वल शरीफ़ ८५४ हिज. उनके विसाल के बाद हज़रत सैयद अब्दुल–अज़ीज़ रिफ़ाई अल–मुतवफ़्फ़ी १४

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

/ शाबान ८६० हिज. ख़ांक़ाहे कलाँ रिफ़ाईया में फैज़ का दरिया बहाते हैं उनके बाद हज़रत सैयद मुहम्मद बदरुद्दीन उर्फ़ बद्र रिफ़ाई अल–मुतवफ़्फ़ी २७ / रमज़ानुल–मुबारक १०१५ हिज. अपने खानदानी फ़यूज़ व वरकात से फ़ैज़याब फरमाते हैं। मज़्कूरा बाला तमामी बुज़ुर्गाने दीन ने सीनत और सिलसिला–ए–रिफ़ाई को फ़रोग़ देने में मस्रूफ़ रहे लेकिन किसी ने अपना मुस्तक़िल क़्याम ख़ानक़ाही शक्ल में क़ौम को नहीं दिया। बल्कि एक चटियल मैदान में उनके मज़ारात खानक़ाहे कलां रिफ़ाईया में वाक़े रहे।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया की संगे बुनियाद और दौरे सज्जादगी का आग़ाज़

ख़ानक़ाहे रिफ़ाईया में

हिन्दुस्तान में सिलसिला–ए–क़ादरीया रिफ़ाईया के बुज़ुर्गाने दीन की आमद का दूसरा दौर शुरू होता है। हज़रत अब्दुर्रहीम महबूबुल्लाह इब्ने सैयद मुहम्मद अल–अमीन मदनी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः सूरत तशरीफ़ लाते हैं। आपकी विलादते मुबारिका २७ / रमज़ानुल–मुबारक १००० हिज. मदीना मुनव्वरा में हुई। आपके वालिद गिरामी हज़रत सैयद मुहम्मद अल–अमीन मदनी और दादा जान हज़रत सैयद मुहम्मद सालेह आफन्दी अपने हमअस्र उलमा व मशाइख़ में एक मुम्ताज़ हैसियत के हामिल थे।

हज़रत सैयद अब्दुर्रहीम महबूबुल्लाह अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई को आपके वालिदे गिरामी ने ख़िरक़ा–ए–ख़िलाफ़त व सज्जादगी से सरफराज़ फरमा कर ज़्यारते हरमैन तैयबैन के लिए मक्का मुकर्रमा रवाना फरमाया। ज़्यारत व उमरा की अदायगी के बाद आप सीधे मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए और अपने जद्दे अमजद हुज़ूर मुहसने इन्सानियत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़्यारत बाबरकत से फ़ैज़याब हुए। उसी वक़्त सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आपको सूरत जाने का हुक्म फरमाया। हज़रत महबूबुल्लाह रिफ़ाई बहुक्मे नब्वी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुख़्तलिफ़ मक़ामात की सैर फरमाते हुए और उलमा, मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन से मुलाक़ात व फ़ैज़ हासिल करते हुए १०३५ हिज. में सूरत जलवा अफ़रोज़ हुए। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ ३५ साल थी। सूरत बमक़ाम बरिया भागल तशरीफ़ लाने के बाद आपने यहीं पर मुस्तक़िल सुकूनत अख़्तियार फरमा ली। कुछ दिनों के बाद एक आली शान मस्जिद और ख़ांक़ाह शरीफ़ की बुनियाद यक्कुम मुहर्रमुल–हराम १०३५ हिज. में रखी। आप ही की ज़ाते गिरामी से ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

में सज्जादगी का दौर शुरू हुआ। अव्वल सज्जादा नशीन होने का शर्फ़ आपको ही हासिल हुआ। हिन्द व पाक में जितनी भी सिलसिला–ए–रिफ़ाईया की शाखें हैं, उन सबका सिलसिला आप ही की ज़ाते मुबारका से आकर मिलता है। उसी ख़ानक़ाह शरीफ़ के दूसरे बुज़ुर्गवार हज़रत शैख़ सैयद अब्दुर्रहीम रहम. से पहले काबा शरीफ़ में आकर मिलता है। हज़रत सैयद अब्दुर्रहीम महबूबुल्लाह अलैहिर्रहमः ६५ साल तक तब्लीगे इस्लाम और सिलसिला–ए–रिफ़ाईया को परवान चढ़ाने में एक अहम किरदार अदा फरमाया है। हज़रत की तब्लीग़ी कोशिशों ही से गुजरात की मशहूर ज़ातें मंसूरी जमाअत, राजपूत, चौहान, पटनी, मुक़राने वग़ैरा ने आपके दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम कुबूल फरमाए। हज़रत २१ / जिमादिल–ऊला ११०० हिज. में इस दारेफानी से कूच फरमा गए। आप ही की तामीर करदा ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया में आपको मदफून किया गया। विसाल के बाद उस ख़ानक़ाह को आपकी तरफ निस्बत फरमाते हुए ख़ानक़ाहे कलां हज़रत अब्दुर्रहीम महबूबुल्लाह क़ादरी अर्रिफ़ाई का नाम दे दिया गया।

आपके बाद आपके बड़े फ़रज़न्द हज़रत सैयद यूसुफ़ सैफुल्लाह अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई ११०० हिज. ता ११४० हिज. कुल चालीस बर्स तक मसनदे सज्जादगी पर जलवा अफ़रोज़ रहे। आपके विसाल फरमाने के बाद आपके बड़े साहबज़ादे हज़रत सैयद अली मस्तान बुरहानुल्लाह ११४० हिज. ता ११७४ हिज. कुल ३४ बर्स तक सज्जादा की हैसियत से ख़िदमात अंजाम देते रहे। आपके बाद आपके फ़रज़न्द हज़रत सैयद मुहीयुद्दीन अब्दुर्रहीम इज़्ज़तुल्लाह अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई ११७४ हिज. ता १२११ हिज. ३७ बर्स तक ख़िदमते सज्जादगी अंजाम दी।

आपके बाद आपके बड़े लड़के हज़रत सैयद मुहम्मद हुसैन शम्सुद्दीन सैफुल्लाह अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई १२११ हिज. ता १२४८ हिज. पाँचवें सज्जादा नशीन की हैसियत से ३७ बर्स तक मसनदे सज्जादगी पर फाइज़ रहे। आपके बाद आपके बड़े फ़रज़न्द हज़रत सैयद अली मस्तान सानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई १२४८ हिज. छठे सज्जादा की ज़िम्मेदारी १८ बर्स तक अंजाम देते रहे। आपके विसाल के बाद आपके नवासे हज़रत सैयद अमीनुद्दीन अल–मारूफ़ इरहामुद्दीन अल–हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई १२६६ हिज. ता १३१४ सातवें गद्दीनशीन की हैसियत से ४८ बर्स तक मसनद नशीन रहे। आप ही से सिलसिला–ए–हम्दानी ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया में

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

शुरू हुआ। आपके विसाल के बाद आपके बड़े फ़रज़न्द हज़रत सैयद फ़ैय्याज़ुद्दीन उर्फ शाह सिराजुद्दीन अल–हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई १३१४ हिज. ता १३६६ हिज. आठवें सज्जादा नशीन की हैसियत से ५२ वर्ष तक मसनदे सज्जादगी पर रौनक़ अफ़रोज़ रहे। आपके बाद आपके फ़रज़न्दे अकबर हज़रत सैयद मुहम्मद हुसैन बुरहानुद्दीन अल–हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहम: १३६६ हिज. ता १३७४ हिज. कुल ८ साल तक मसनदे सज्जादगी पर जलवा-अफ़रोज़ रहे। तमामी सज्जादगान ने बड़ी ही जांफ़शानी और लगन से दीन व सुन्नियत और सिलसिला–ए–रिफ़ाईया को फ़रोग़ दिया।

उन तमाम हज़राते बावक़ार को ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया, सूरत ही में मदफ़ून किया गया। हाँ, सिर्फ़ एक बुज़ुर्ग और साहिबे सज्जादा हज़रत सैयद अली मस्तान सानी, हैदराबाद (दकन) बमक़ाम लातूर ज़िला उस्मानाबाद में उनकी वसीयत के मुताबिक़ मदफ़ून किया गया। दसवें सज्जादा की हैसियत से ताजुल–मशाइख़ हज़रत अस्सैयद मुहीयुद्दीन सलीमुल्लाह शाह अल्हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई दामत बरकातुहुम अल–क़ुदसीया १३७४ हिज. ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया की मसनदे सज्जादगी पर रौनक़ अफ़रोज़ हैं। आपकी पैदाइश मुबारक २८/मुहर्रमुल–हराम १३६६ हिज. मुताबिक़ यक्कुम जनवरी १९४६ ई० को बमक़ाम बड़ौदा हुई। आपके वालिद गिरामी हज़रत अस्सैयद मुहम्मद हुसैन बुरहानुद्दीन अल–हम्दानी अल–क़ादरी अलैहिर्रहम: आलिम व आमिल और आरिफ़ उलूमे तरीक़त थे। साहिबे सरवत भी थे। वालिदा मोहतरमा हज़रत अफ़ज़लुन्निसा बेगम साहिबा अलैहिर्रहम: जो हज़रत ख़्वाजा मौदूद चिश्त रहमतुल्लाह अलैहि की औलाद से हैं।

हज़रत सैयद सलीम बाबा मद्दा ज़िल्लहुल–आली वालिदैन के ज़ेरे आतिफ़त बहुत ही कम-उम्री में कुरआन करीम नाज़िरा कर लिया और मज़ीद उलूमे ज़ाहरी व बातनी भी मुकम्मल फरमा ली। इल्मे दीन से आपका लगाव और मुहब्बत का आलम देखा तो आठ साल की मुख़्तसर-सी उम्र ही में वालिद गिरामी वक़ार ने ख़िरक़ा–ए–ख़िलाफ़त व जानशीनी अता फरमा दी। इस नेमत को अता फरमाने के बाद आपके वालिद गिरामी का इन्तिक़ाल हो गया। तो आपके हक़ीक़ी चचा हज़रत पीरज़ादा हकीम सैयद ज़ैनुल–आबिदीन उर्फ़ फ़क़ीर शाह बाबा ने साहिबे सज्जादा की तालीम व तरबियत और खानक़ाह शरीफ़ के नज़्म व नस्क़ को अपने ज़िम्मा

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ले लिया और बहुत ही ख़ुश-उस्लूबी से अंजाम दिया।

खि़रक़ा–ए–खि़लाफ़त व सज्जादगी हासिल होने के बाद भी साहिबे सज्जादा ने तालीम जारी रखी। बहुत ही क़लील मुद्दत में सूरत और बड़ौदा के कॉलेजों से इन्टर (कॉमर्स) और बी.ए.बी.कॉम की डिग्रियाँ हासिल कर लीं। साहिबे सज्जादा की शादी अहमदाबाद के मश्हूर बुज़ुर्ग हज़रत पीरज़ादा ख़्वाजा क़ाज़ी कमालुद्दीन फ़ारुक़ी चिश्ती की दुख़्तरे नेक अख़्तर सुरैया बेगम साहिबा के हमराह हुई।

हज़रत सलीम बाबा मद्द ज़िल्लहुल–आली मुसलसल ४४ बर्स से बराबर खि़दमते इस्लाम और सिलसिला–ए–रिफ़ाईया को फ़रोग़ देने में मसरूफ़ हैं। शहर सूरत की आप वाहिद ख़ानक़ाही शख़्सियत हैं जिनकी ज़ेरे सरपरस्ती सूरत की बहुत-सी दीनी व दुन्यावी अंजुमनें और समाजी व अदबी इदारे परवान चढ़ रहे हैं। हर वक़्त क़ौम व मिल्लत की बिला तफ़रीक़ मज़हब व मिल्लत खि़दमात अंजाम देते हुए नज़र आते हैं। १९९२ ई० के भयानक सूरत फ़साद में आपकी खि़दमात तारीख़ी औराक़ की ज़ीनत बन चुके हैं। हुज़ूर साहिबे सज्जादा जहाँ हालाते हाज़िरा पर हर वक़्त निगाह रखते हैं वहीं अपने मुरीदीन मुतवस्सिलीन, तालिबीन और ख़ुलफ़ा हज़रात पर भी ख़ास निगाहे करम फरमाते हुए उनकी दुन्यावी तकालीफ़ का सद्देबाब फरमाते हुए उन्हें अक़ाइदे हक़्क़ा अह्ले सुन्नत व जमाअत पर हमेशा-हमेशा क़ायम रहने और वह्हाबीयत व देवबंदियत से अपने आपको दूर रहने की हिदायत फरमाते हैं और जो तालीमात मुजद्देदीन व मिल्लत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरैलवी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने उम्मते मुहम्मदीया को कुरआने करीम व अहादीसे मुक़द्दसा और बुज़ुर्गाने दीन के ज़रिए मिलें उस पर अपने को क़ाइम रहने की ताकीद फरमाते हैं। काश! अगर गुजरात की दीगर ख़ानक़ाहों और दरगाहों के सज्जादा नशीन आपके इस अमल को अपना लें तो इंशाअल्लाह पूरे गुजरात व महाराष्ट्र में अह्ले सुन्नत व जमाअत का बोलबाला हो और हर तरफ सुन्नियत ही सुन्नियत नज़र आने लगेगी।

हुज़ूर साहबे सज्जादा के चचा साहिबान हज़रत सैयद तक़ीयुद्दीन और हज़रत सैयद रफ़ीउद्दीन और चचाज़ाद भाई अल–हाज सैय्यद मुईनुद्दीन रिफ़ाई ऐडवोकेट (बड़ौदा) और हज़रत सैय्यद कुतुबुद्दीन रिफ़ाई ऐडवोकेट (सूरत) इस ख़ानक़ाह के लिए नुमायां खि़दमात अंजाम देने में मसरूफ़ हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

आपके छोटे भाई हज़रत सैय्यद अब्दुल लतीफ़ बाबा रिफ़ाई सूरत में अपने बड़े भाई हुज़ूर साहबे सज्जादा के साथ रहकर अपने आबाई शिफ़ाखाना रिफ़ाईया को चलाते हैं और बिला तफ़रीक़ मज़हब व मिल्लत ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं। लाखों अफ़राद शिफ़ा हासिल कर रहे हैं।

इमसाल हुज़ूर साहबे सज्जादा ने अपने जानशीन और बड़े फ़रज़न्द सैय्यद अलाउद्दीन उर्फ़ रिफ़ाई साहब और छोटे फ़रज़न्द और बड़ी बच्ची और छोटी बच्ची और अपने छोटे भाई को एक अज़ीम नेमत हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मूए मुबारक जो सिलसिला दर सिलसिला ६६७ हिज. से आपके पास बतौर अमानत चला आ रहा है। इसमें से जो शाखें निकलीं तो मज़कूरा बाला हज़रात को अता फरमाया। नाचीज़ मुहम्मद अमीनुल–क़ादरी अर्रिज़वी अर्रिफ़ाई (ख़लीफ़ा–ए–क़ादरी रिफ़ाई ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया, सूरत) को भी यह शर्फ़ हासिल हुआ कि हुज़ूर साहबे सज्जादा ने इस अज़ीम नेमत से बतारीख़ २४ / रबीउल–आख़िर १४१८ हिज. मुताबिक़ २६ / अगस्त १९९७ ई० बरोज़ जुमा बवक़्त साढ़े ११ बजे नवाज़ा।

इस ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया में सालाना ५५ उर्स मनाए जाते हैं लेकिन उनमें दो बड़े उर्स पहला हज़रत सैयद अहमद कबीर रिफ़ाई और दूसरा हज़रत अब्दुर्रहीम महबूबुल्लाह और सैय्यद अमीनुद्दीन बाबा रिफ़ाई अलैहिमुर्रहमः का बड़ी ही शान व शौकत के साथ मनाया जाता है। इसी मुबारक मौक़े पर हुज़ूर साहबे सज्जादा की मोहतरमा के लिए ख़ुसूसी फ़ातिहाख़्वानी और आम न्याज़ का एहतमाम भी किया जाता है। लाखों मुरीदीन हिन्द व पाक और बैरूनी ममालिक से शिरकत फरमाते हैं।

मुहम्मद अमीनुद्दीन अल-क़ादरी अर्रिज़वी अर्रिफ़ाई
(ख़लीफ़ा क़ादरी रिफ़ाई)
हज़रत अकबर शहीद मस्जिद, सूरत

❖❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

हज़रत सैय्यद अहमद कबीर अर्रिफ़ाई अकेडमी का क़याम और इग़राज़ व मक़ासिद

सुलतानुल-आरिफ़ीन हज़रत सैय्यद अहमद कबीर अर्रिफ़ाई अलैहिर्रहमः बानी-ए-सिलसिला रिफ़ाईया की जानिब मंसूब करते हुए एक अकेडमी बनाम हज़रत सैय्यद अहमद कबीर अर्रिफ़ाई अकेडमी का क़याम सरज़मीने सूरत बमक़ाम ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया, बरिया–भागल में किया जा चुका है। इस अकेडमी का मक़सद यह है कि आज के इस पुर-फ़ितन दौर में लोगों को अक़ाइद अह्लेसुन्नत और बुज़ुर्गाने दीन की इल्मी ख़िदमात से वाक़िफ़ कराना और औलिया-ए-किराम के आरासे मुक़द्दसा के मौक़े पर उनके अक़ाइद व मसलक और हालाते ज़िन्दगी पर मुश्तमिल किताबें शाय करना। ज़ेरे नज़र किताब **तारीख़े शहनशाह सूरत,** अर्रिफ़ाई अकेडमी की अव्वलीन पेशकश है। वैसे ख़ानक़ाहे कलां रिफ़ाईया तक़रीबन ३५ साल से इशाअती काम बहुस्न व ख़ूबी अंजाम दे रहा है। **'तारीख़े करबला'**, **'फ़ज़ाइले दरूद व सलाम'**, **इस्लामी महीने** और **नूरानी रातें** किताबें और बारह महीनों के फ़ज़ाइल व नवाफ़िल पोस्टर वग़ैरा साहिबे सज्जादा के मुकम्मल तआवुन से शाय हो चुके हैं। अब बाक़ायदा अकेडमी के ज़ेरे एहतमाम इस इशाअती काम को शुरू किया गया है। अकेडमी की सरपरस्ती ख़ानदाने रिफ़ाईया की अज़ीम शख़्सियत पीरे तरीक़त हज़रत अस्सैयद मुहीयुद्दीन सलीमुल्लाह शाह बाबा अल–हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई दामत बरकातुहुम अल–क़ुदसीया सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह कलां रिफ़ाईया सूरत फरमा रहे हैं। आपके हक़ीक़ी भाई हज़रत सैय्यद लतीफ़ुद्दीन बाबा अल–हम्दानी अल–क़ादरी अर्रिफ़ाई अकेडमी के सद्रे आला हैं। हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीनुल–क़ादरी अर्रिफ़ाई जेनरल सक्रेट्री हैं।

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

तारीख़े करबला के मआख़ज़ात

क़ुरआने करीम, कन्जुल–ईमान (सुन्नी तर्जुमाए क़ुरआन), तफ़सीर ख़ज़ाइनुल– इरफ़ान, तफ़सीर नूरुल–इरफ़ान, तफ़सीरे नईमी, तफ़सीरे कबीर (अ़रबी), तफ़सीर इब्ने कसीर (अ़रबी), तफ़सीर मवाहिबुर्रहमान, तफ़सीर ज़ियाउल क़ुरआन, तफ़सीरे हुसैनी, तफ़सीरे कश्शाफ़ (अरबी), तफ़सीरुस्सआलबी (अरबी), तफ़सीरे मुरादिया, तफ़सीर मुवज़्ज़ेहुल–क़ुरआन, बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिज़ी शरीफ़, अबू–दाऊद शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, इब्ने माजा, अशअ़तुल–लम्आत, मिर्अ़तुल–मनाजीह, मज़ाहिरे हक़, तर्जुमाए मिश्कात, फ़त्हुलबारी, इरशादुस्सारी, नुज़हतुल-क़ारी, फ़ैज़ुलबारी, शरह अ़क़ाइदे निस्फ़ी, शरह फ़िक़्हे अकबर, ख़साइसुल-कुबरा, जज़्बुल–कुलूब, तक़मीलुल–ईमान, शवाहिदुन्नुबुव्वः, मदारिजुन्नुबुव्वः, शिफ़ा शरीफ़, शरहुस्सुदूर, मासबता बिस्सुन्नः, मकाशिफ़तुल–कुलूब, गुन्यतुत्तालिबीन, फ़तावा रज़वीया, फ़तावा अ़ज़ीज़ी (मुतर्जम), फ़तावा मज़हरी, फ़तावा रशीदिया, कीमयाए सआ़दत, अल–अम्न वल–उला, मलफ़ूज़ाते ख़्वाजगाने चिश्त, बहारे शरीअ़त, अहकामे शरीअ़त, हज़रत अमीर मुआविया, तारीख़ुल–ख़ुलफ़ा, तारीख़ इब्ने ख़लदून (अ़रबी–उर्दू), तारीख़े कामिल (अ़रबी), तारीख़े तबरी (अरबी–उर्दू), अल–बिदायः वन्निहायः (अरबी), सवाइक़े मुहर्रिक़ा, हयातुल–हैवान, मिन्हाजुस्सुन्नः (अरबी), सीरते रसूले (अरबी), सवानहे करबला, शामे करबला, नक़्शे करबला, रौज़तुश्शुहदा, सआ़दतुल–कौनैन, इश्क़ की सरफ़राज़ी, तारीख़े इस्लामःनजीब अकबर आबादी, तारीख़े इस्लामः अब्दुर्रहमान अमृतसरी, सीयरुस्सहाबा (नदवी), शहीदे आ़ज़म–ः आज़ाद, अल–हुसैन (अरबी–उर्दू), ख़ुतबाते मुहर्रम, हुसैन व यज़ीद : इब्ने तैमिया, औराक़े ग़म, शमशीरे सदाक़त, इमाम पाक और यज़ीद, शहीदे करबला और यज़ीद, शहीदे मुअ़ज़्ज़म, करबला का मुसाफ़िर, मनाक़िब अह्ले बैत, मक़ालाते अमजदी, रिसाला ताज़ियादारी, आले मुस्तफ़ा की कहानी, मुश्किलकुशा, शहीद इब्ने शहीद (जिल्द दोम), सफ़ीना–ए–नूह (अव्वल, दोम), हदाइक़े बख़्शिश, ताज़ीराते क़लम, ख़ुलासतुल–अ़क़ाइद, मनाक़िबुस्सादात। ❖❖

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner

Presented by: https://jafrilibrary.com

ISBN 01-89201-30-11
9780189201306
Rs. 180/-

RAZAVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Phone : 011-23264524, Mobile. 9350505879
E-mail : razavikitabghar@gmail.com

https://t.me/Ahlesunnat_HindiBooks
Scanned by CamScanner